H-44

अन्तिम सन्देष्टा



विभिन्न ग्रन्थों की दृष्टि में

भाषा के कारण बनी दूरी को समाप्त करने का प्रयास

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(शिक्षक दारुल उलूम नदवतुल् उ़लमा, लखनऊ)

जमअ़ीयत पयामे अम्न
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

H-44

नाम- अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन?

लेखक- मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

संशोधित संस्करण- 2022

पुस्तक संख्या- 1000

प्रकाशक- जमअ़ीयत पयामे अम्न

मूल्य- 500 रु०

Publisher : Jamiat Payam-e-Amn
Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India
Writer : Mufti Mohd Sarwar Farooqui Nadwi
Website : www.islamicjpamn.org
Mobile : 0091– 9919042879, 9984490150
E–Mail : maktaba.payameamnlko@gmail.com

मिलने के पते

1. मजलिसे तह़क़ीक़ात व नशरियात, नद्वतुल उ़लमा, पोस्ट बाक्स नं० 119 (लखनऊ)
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुह़म्मद अ़ली रोड, भिन्डी बाज़ार, मुम्बई
3. अल् फ़ुरक़ान बुक डिपो, नज़ीराबाद-31 (लखनऊ) (9936635816)
4. मकतबः शबाब जदीद, नदवा रोड, लखनऊ (9198621671)
5. न्यू वाटर टैंक, बंगरौली मोड़, बंगरौली ऊपरहार प्रयागराज (9457904603)

विषय सूची

सन्देश (ह़ज़रत मौलाना सय्यद अब्दुल्लाह ह़सनी नदवी रहमतुल्लाह अ़लैहि के क़लम से)... 30
प्रस्तावना 33

खण्ड 'क' भाग (1)
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के विषय में वेदों की भविष्यवाणियाँ

हिन्दू धर्म का संक्षिप्त परिचय 42
सनातन धर्म 42
वैचारिक अर्थ 43
हिन्दू धर्म की आधारशिला 43
हिन्दू धार्मिक ग्रन्थ 44
वेद 44
ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद 45
स्मृति (जो याद की गई) 46
इतिह़ास 46
पुराण 47
वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन और नरशंस 47
वेदों में "नराशंस" शब्द का उल्लेख 48
नराशंस शब्द का अर्थ 48
नरशंस शब्द का व्याकरणिक आधार 49
नरशंस शब्द की व्याख्या 49
विच्छेद 49
नराशंस किसी देवता का नाम नहीं 50
अलौकिक प्राणी 50
शब्द मुहम्मद और नराशंस में समानता 51
शब्द नराशंस 51
शब्द मुह़म्मद 52

विषय	पृष्ठ सं०
अर्थगत सम्बन्ध	52
भाषाई संघर्ष	52
नराशंस की विशेषताएँ	53
नराशंस और मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विशेषताओं में समानता	55
मनुष्यों द्वारा प्रशंसित	55
अज़ान में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्रशंसा	55
वैज्ञानिक दृष्टि से	56
नमाज़ में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्रशंसा	56
हर क्षण प्रशंसा	57
दूसरे धार्मिक गुरुओं द्वारा प्रशन्सित	58
प्रशन्सित व्यक्तियों की सूची	58
श्री प्रो० कृष्ण राव जी के अनुसार	59
एक यहूदी मनोवैज्ञानिक की दृष्टि में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)	60
एक ईसाई विद्वान के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)	61
पहली विशेषता का दूसरा भाग	62
नराशंस सबको प्रिय होगा	62
ह़ज़रत अबू बक्र के साथ घटना	62
ह़ज़रत अबू दुजाना के साथ घटना	63
ह़ज़रत तल्ह़ा के साथ घटना	63
ह़ज़रत सव्वाब के साथ घटना	63
नरशंस की सवारी	64
उष्ट्रा सवारी का उल्लेख	65
नरशंस की सवारी में समानता	65
हिज़रत का प्रसंग	65
फ़तेह़ मक्का	65
ह़ज्जतुल्-विदाअ़	66
नराशंस मधुर वाणी वाला होगा	67
नराशंस और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वाणी में समानता	67

विषय पृष्ठ सं०

मधुर वाणी या दूतम 67
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वाणी 68
नराशंस सौंदर्य, दिव्य तेज और ज्ञान का प्रसार करेगा 69
घर को रौशन करना 70
नरशंस और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुन्दरता, प्रकाश और ज्ञान में समानता .. 70
अर्थगत सामंजस्य 71
नराशंस लोगों को पापों से निकालेगा 72
पापों से निकालने में समानता 73
शक्ति प्रदान करने वाला 73
पोषण और करुणा 74
रथ की उपमा 74
नराशंस का एक सांसारिक नाम 75
"मामहे शब्द" का शोधात्मक अध्ययन 75
मामहे शब्द की विवेचना 76
प्राचीन वैदिक ऋषि 76
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और ऐतिहासिक सामंजस्य 77
शोधात्मक निष्कर्ष 78
अस्हाबे सुफ़्फ़ा 78
सहायकों की संख्या 78
डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय के अनुसार 79
लेखक के अनुसार 79
नराशंस को सौ निष्क दिये जाएँगे (शतं निष्कान्) 80
दस मालाओं वाला होगा (दश स्रजः) 81
अशरा शब्द का अर्थ 81
तीन सौ घोड़े (त्रीणि शतान्यर्वतां) 82
नराशंस-दस हज़ार "गौ" वाला होगा 83
शाँति और अनुशासक 84
मामहे के दो प्रमुख गुण 84

विषय पृष्ठ सं०

दशभिः सहस्रैः 85
प्रभावशाली ऋषि 85
"विश्वानरः" (सार्वभौमिक प्रभाव-क्षेत्र) 86
दस हज़ार की सम्बद्धता 87

भाग (2)
पुराणों की भविष्यवाणियाँ

पुराणों की भविष्यवाणियाँ 89
अवतार का अर्थ 89
सन्देष्टा का अर्थ 89
पं० श्री राम शर्मा जी के अनुसार अवतार का अर्थ 90
अवतार की परिभाषा 90
अवतार के उद्देश्य 91
डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय जी के अनुसार 92
डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव के अनुसार 92
अवतार का तात्पर्य 92
पण्डित श्री राम शर्मा जी के अनुसार 93
अवतार या सन्देष्टा की आवश्यकता और हमारी आशा 94
अन्तिम सन्देष्टा (या अवतार) के आने से पूर्व संसार की दशा 95
श्री मद्भागवत महापुराण में कल्कि अवतार का महत्व 103
भागवत पुराण के अनुसार 107
विष्णु पुराण के अनुसार 108
कल्कि अवतार 109
कल्कि का वर्णन 109
कल्कि का शाब्दिक और पारिभाषिक अर्थ 109
अन्तिम ऋषि (कल्कि अवतार) का समय 110
शम्भल स्थान या गुण 112

विषय पृष्ठ सं०

कल्कि अवतार का स्थान 112
शाँति का स्थान 114
कल्कि अवतार की विशेषताएँ 115
कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) 115
अशवारोहण करने वाला होगा 116
जगद्गुरु होगा 116
असाधुदमन करेगा 117
देव दूतों द्वारा सहायता मिलेगी 117
अनुपम क्रान्ति से युक्त होगा 117
शरीर से सुगन्ध निकलेगी 117

भाग (3)

बौद्ध धर्म के अनुसार अन्तिम ऋषि की भविष्यवाणियाँ

बौद्ध धर्म का संक्षिप्त परिचय 120
बौद्ध धर्म की अवधारणा 120
बौद्ध धर्म का विकास 121
वर्ण व्यवस्था 121
अष्टांगिक मार्ग 122
गौतम बुद्ध की भविष्यवाणियाँ 122
बौद्ध धर्म की प्रमुख पुस्तक पाली कैनन के अनुसार 123
बौद्ध धर्म की महत्वपूर्ण पुस्तक अनागतवंस के अनुसार 123
पाली में मेत्तेय संस्कृत में मैत्रेय के शब्दार्थ 124
बौद्ध परम्परा में मैत्रेय 124
एन्साइक्लोपीडिया आफ़ बुद्धिज़्म के अनुसार 124
पॉल कैरस (Paul Carus) के अनुसार 126
डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय जी के अनुसार 126
आने वाले बुद्ध (मैत्रेय) की विशेषताएँ 128

विषय पृष्ठ सं०

बुद्ध मेत्तेय्य या मैत्रेय का तुलनात्मक आधार 128
बुद्ध मैत्रेय की पृष्ठभूमि 129
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व 129
अल्लाह की उपासना 130
मानवीय हैसियत (Human Guide, Non-divine) 131
अल्लाह के बन्दे 132
एक मानव रसूल 132
समानता का बिन्दु 133
दोनों अवधारणाएँ 133
नाम की विशेषता में समानता 133
समस्त संसार के लिए रहमत 134
व्यवहारिक शैली 134
हृदय पवित्र और ज्ञान व बुद्धि से परिपूर्ण होगा 135
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का चरित्र 136
नेतृत्व की क्षमता 136
सत्य और सीधा मार्ग 137
सत्य जीवन पद्धति 138
समग्र जीवन प्रणाली 138
मूल शिक्षा की पुनर्स्थापना 139
नैतिक सच्चाई 140
पुनः प्रकट होना 141
सार्वभौमिक मार्गदर्शन 141
पवित्र अन्तःकरण वाला 141
एक सुधारक 142
हज्जतुल् विदाअ़ की घटना 143
समाजिक समानता 144
मानवता का सुधार 144
मानवीय समानता 145

विषय पृष्ठ सं०

मैत्रेय का ज्ञान 145
करुणावान 145
वैश्विक मार्गदर्शक 145
डेविड बिन्जामिन कल्दानी के अनुसार 146
भावी बुद्ध के गुण 149
बुद्ध मैत्रेय और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुलनात्मक दृष्टि से 150

भाग (4)
पारसी धर्म के अनुसार अन्तिम ऋषि की भविष्यवाणियाँ

पारसी धर्म की ऐतिह़ासिक पृष्ठभूमि 153
जरथुस्त्र या जरतुस्त्र 153
राजकीय संरक्षण 154
अर्शकानी व सासानी साम्राज्य 154
पवित्र पुस्तक 154
पारसी धर्म की प्रमुख पुस्तक 155
अवेस्ता (Avesta / Zend-Avesta) 155
ज़ेंद अवस्ता के भाग 156
दसातीर-ए-आसमान 157
दसातीर-ए-आसमानी से अभिप्राय 157
ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट की उपमा 158
पारसी ग्रंथों की भविष्यवाणियाँ 158
भविष्यवाणी का स्रोत 158
आने वाले सन्देष्टा का नाम 159
सोएश्यंत शब्द की व्याख्या 159
उद्धारकर्ता की विशेषता 159
अस्तवत-एरेता (Astvat-Ereta) का अर्थ 160
विजयी और सुधारक 160

विषय पृष्ठ सं०

तुलनात्मक समीक्षा 161
भलाई और मार्गदर्शन 162
उद्धारकर्ता की भविष्यवाणी 162
जरथुश्ती स्रोत 162
जेम्स डार्मेस्टेटर के अनुसार 163
ज़ेन्द अवेस्ता के अनुसार 164
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की करुणा 164
फ़तेह मक्का 167
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहाबाकी पवित्रता 168
नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आने पर अग्निकुंडों का ठंडा हो जाना 168
दिव्य प्रकाश का प्रतीक 169
शब्द अस्तवत-एरेता की व्याख्या 169
दसातीर-ए-आसमानी के अनुसार 170
महत्वपूर्ण धार्मिक कृति 171
ए० एच० विद्यार्थी के अनुसार 172
वर्तमान दसातीर 172
ईरानियों की नैतिक दशा 173
अग्नि कुंडो की आग 174
धर्म और राज्य की स्थापना 178
जेन्द अवेस्ता के अनुसार 180

भाग (5)

यहूदी धर्म के अनुसार अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणियाँ

यहूदी धर्म का संक्षिप्त परिचय 184
बनी इस्राईल के बारह क़बीले 184
रोमी शासन 185
मध्यकाल से आधुनिक काल तक 185

विषय पृष्ठ सं०

यहूदियत का विस्तार 186
यहूदी धर्म की पवित्र पुस्तक 186
लिखित तौरात (Written Torah) 186
तौरात की आंतरिक संरचना 187
मिश्ना (Mishnah) 187
मिश्ना की संरचना (Six Orders / Sedarim) 188
क्रमिक संरचना (Hierarchy) 188
तल्मूद (Talmud) 188
तल्मूद के दो प्रमुख संस्करण 189
तौरात में आने वाले नबी की भविष्यवाणी 190
ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के समान 191
भाई शब्द का प्रयोग 192
भाई (इस्माईली और इस्राईली) का अर्थ 192
पारान का उल्लेख—इस्माईली भूमि (मक्का) 192
सीनै और सईर 193
पारास या फ़ारान 194
ईश वचन नबी के मुख में अर्थात मौखिक वह्य की अवधारणा 194
उम्मी नबी पर वह्य (ईश्वरीय प्रकाशन) 195
क़ुर्आन की पहली वह्य और तौरात 196
दैवी सम्बोधन 197
ह़ज़रत यशूअ़ (Joshua) ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के समान नहीं 199
ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की पैग़म्बरी 199
यहूदी विद्वानों का स्वीकार 200
तौरात की स्पष्ट साक्ष्य 200
मूसा के समान 201
बनी इस्राईल के भाई में होना 202

विषय पृष्ठ सं०

भाग (6)

इन्जील के अनुसार अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणियाँ

ईसाई धर्म का संक्षिप्त परिचय 206
मन्नत के बाद 206
ह़ज़रत मरयम 206
फ़रीसी वर्ग 207
सदूकी वर्ग 207
ऐतिह़ासिक संदर्भ 208
रोमी साम्राज्य का क्षेत्र 208
शासन तंत्र और धार्मिक नेतृत्व 209
ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की शिक्षा 210
ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की दअ़वत 210
सूली की सज़ा 211
ईसाई धर्म की प्रमुख/पवित्र पुस्तक 212
चार प्रमाणिक इंजील 214
प्रेरितों के काम (Acts of the Apostles) 214
पत्रियाँ (Epistles) 215
प्रकाशितवाक्य (Revelation / Apocalypse) 216
बाइबिल की भविष्यवाणियाँ 216
कम्फ़ोर्टर (Comforter) कौन होगा? 218
पैराक्लेट (Paraclete) के अर्थ में मतभेद 219
प्राचीन विद्वानों के अनुसार 220
अत्यधिक प्रशंसित 220
ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की भाषा 221
अह़मद और मुह़म्मद 221
पैराक्लेट (Paraclete) की वास्तविकता 222
शब्दार्थ की दृष्टि से 222

विषय पृष्ठ सं०

विलियम म्यूर के अनुसार 222
इस्लामी दृष्टिकोण 223
शब्द अह़मद 223
शब्द मुह़म्मद और अह़मद का अर्थ 224
सत्य की आत्मा (Spirit of Truth) का आगमन 225
ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के बाद आने वाला गवाह 227
"वह नबी" (The Prophet) की भविष्यवाणी 229
"एलिय्याह" के बारे में क्यों पूछा गया? 229
नबी की अवधारणा 230
मूसा के समान नबी 230
द पराफ़ेट 230
"वह कौन होगा"? (दो प्रमुख विद्वतापूर्ण दृष्टिकोण) 230
शोधकर्ताओं का दृष्टिकोण 231
आने वाले नबी की प्रतिक्षा 232
तुल्नात्मक दृष्टिकोण 234

भाग (7)

इन्जील के अनुसार अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणियाँ

जाहिली अ़रब कवियों की भविष्यवाणियाँ और ह़ज़रत मुह़म्मद 237
एकेश्वरवादी स्वभाव के कवि 237
उमय्या बिन अबी सल्त की भविष्यवाणी 238
कुस्स बिन साअ़िदा अल्-इयादी की भविष्यवाणी 238
अदी बिन ज़ैद अल्-इबादी की भविष्यवाणी 239
हस्सान बिन साबित की भविष्यवाणी 240
वरक़ा बिन नौफ़ल की भविष्यवाणी 241
वरका बिन नौफ़ल का एक अन्य शेअ़र 243
वरक़ा बिन नौफ़ल का कथन 244

विषय पृष्ठ सं०

सीरत की पुस्तकों में भी 244
हुज़्र बिन मालिक की भविष्यवाणी 245
मार्ग दर्शन का प्रभुत्व 246
कअ़ब बिन लुअई की भविष्यवाणी 246
राइश अल्-हिम्यरी की भविष्यवाणी 248
अन्य स्थान पर उद्धृत पद्य (अशआ़र) 249
निष्कर्ष 250

भाग (8)
हिन्दी कवियों और सन्तों की भविष्यवाणियाँ

ह़ज़रत मुह़म्मद की भक्ति काल के 253
करुणा की महानता 253
कबीरदास जी और ह़ज़रत मुह़म्मद 254
गुरु ग्रंथ साहिब में कबीर जी का काव्य 256
रामधारी सिंह दिनकर जी 257
श्री गुरु ग्रंथ साह़िब 258
मलिक मुहम्मद जायसी—पद्मावत (मानसखण्ड) 259
रसखान (17 वीं शताब्दी) 260
महाकवि भूषण (1613–1712) 261
सारांश 262

भाग (9)
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) प्रसिद्ध ग़ैर मुस्लिम इतिहासकारों की दृष्टि में

प्रसिद्ध ग़ैर-मुस्लिम भाईयों की दृष्टि में 265
परिवर्तित शक्ति 265

विषय पृष्ठ सं०
माइकल एच०हार्ट (Michall H. Hart) की दृष्टि में 266
डॉ० लाइटनर (Leitner) की दृष्टि में 267
आर० डी० ब्ल्यूएट स्टुअर्ट की दृष्टि में 268
ला मार्टिन (Lamartine) की दृष्टि में 269
एडवर्ड गिबन (Gibbon) की दृष्टि में 270
हिगिन्स (Higgins) की दृष्टि में 271
स्टैनली लेन-पूल की दृष्टि में 272
डॉ० गुस्ताव ले बॉन की दृष्टि में 272
जॉन डेवनपोर्ट की दृष्टि में 273
मार्क्स डॉड्स की दृष्टि में 274
गाँधी जी की दृष्टि में 275
एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार 276
म्यूलर (Muller) की दृष्टि में 277
थॉमस कार्लाइल (Thomas Carlyle) की दृष्टि में 278
कार्लाइल कीदृष्टि में 278
जर्मन इतिहासकार डुश के अनुसार 280
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विशेषता 281
मिस्टर डब्ल्यू० डब्ल्यू० स्मिथ की दृष्टि में 282
एक ईसाई डा० स्प्रेंगर (Sprenger) की दृष्टि में 284
मिसेज़ एनीबेसेंट (Annie Besant) के अनुसार 285
महान शिक्षक जॉर्ज हर्बर्ट वेल्स की दृष्टि में 286
जॉर्ज बर्नार्ड शॉके अनुसार हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) 287
रेवरेंड जे० एम० रॉडवेल की दृष्टि में 288
सारांश 289

भाग (10)

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वैज्ञानिकों की दृष्टि में

वैज्ञानिकों की दृष्टि में हज़रत मुहम्मद 291

विषय	पृष्ठ सं०
क़ुर्आन के संकेत	291
ब्रहम्माण्ड के रहस्यों पर चिन्तन	291
वैज्ञानिकों का शोध और क़ुर्आन	292
माँ के ग़र्भ में मानव वृद्धि	293
एक जान (Single Life Cell) की रचना	293
गर्भाशय में कोशिकीय विभाजन	294
अण्डे का गर्भाशय (Uterus) में स्थानांतरित होना	297
क़ुर्आन में मानव सृष्टि के विभिन्न चरणों का उल्लेख	297
प्रोफ़ेसर कीथ मोरे के अनुसार	298
शैक्षणिक समानता	298
इन्सान की सृष्टि के विभिन्न चरण	299
अलक़ा की अवस्था	300
क़ुर्आन मजीद में ब्रह्मांड की सृष्टि का उल्लेख	305
रत्क़ और फ़त्क़	305
विशेषज्ञों का सिद्धान्त	306
प्रोफ़ेसर अल्फ़्रेड क्रोनर और ह़दीस-ए-नबवी	307
ह़ज़रत मुह़म्मद के विषय में	309
क़ुर्आनी आयत और समुद्री विज्ञान	309
प्रोफ़ेसर विलियम डब्लू हे के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)	311
आधुनिक शोध और प्राकृतिक सीमा	312
चित्रात्मक जानकारी	312
खारा और मीठा पानी	313
क़ुर्आन का प्रमाण	313
प्रोफ़ेसर मौरिस बुके के अनुसार	313
मिस्र के फ़िरऔन का सुरक्षित शरीर	314
वैज्ञानिक शोध	314
चिकित्सीय अध्ययन	315
ममियों के प्रमाण	315

विषय पृष्ठ सं०

फ़िरऔन का सुरक्षित शरीर 315
विशेष ममी 316
ब्रह्मांड की सृष्टि और वैज्ञानिक कथन 317
सृष्टि पर शोध 317
क़ुर्आन की आधुनिकता 318
प्रोफ़ेसर Marshall Johnson के अनुसार 319
प्रोफ़ेसर E. H. Simpson के अनुसार 320
प्रोफ़ेसर Yoshihide Kosai (Japan) के अनुसार 320
प्रोफ़ेसर Shrowder के अनुसार 321
प्रोफ़ेसर Dorja Rao के अनुसार 321
डॉ० T.V.N. Persaud के अनुसार 321

भाग (11)

ईश सन्देष्टा की धारणा पवित्र क़ुर्आन के पन्नों में

ईशदूतत्व (रिसालत) पर आस्था 324
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और दूसरे रसूल में अन्तर 324
क़ुर्आन में रसूलों का उल्लेख 325
हर क़ौम में मार्गदर्शन 327
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी 327
विश्वव्यापी पैग़म्बरी 328
मानव समाज का विकास 328
पूर्व के पैग़म्बरों की घोषणा 329
नबियों की श्रृंखला को पूर्ण करने वाले 329
सुरक्षित व्यवस्था 330
सारे संसार के लिए सन्देश 331
विकास का चरम बिन्दु 332
अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) 332

विषय	पृष्ठ सं०
उ़स्वा-ए-ह़स्ना	333
राष्ट्रवाद की श्रेष्ठता	333
आस्था की घोषणा	334
पूरी मानव जाति के नबी	334
राष्ट्रीय भाषा	334
अ़रब संस्कृति	335
मानव जीवन पद्धति	335
अन्तिम रसूल	336
भारतीय परिपेक्ष्य में एक प्रश्न	336
धार्मिक केन्द्र	337
अ़रबी पहचान	337
भारतीय समाज	338
भौगोलिक दृष्टि से	338
तीन महाद्वीपों का संगम	338
भाषाई दृष्टि से	339
हर समाज के लिए मार्गदर्शन	339
धार्मिक दृष्टि से	340
राजनीतिक दृष्टि से	340
बौद्धिक इतिह़ास के संदर्भ में	340
व्यापक नीति	341
ईशदूतत्व विश्वास	341
पवित्र क़ुर्आन के अनुसार ईशदूत की धारणा	341
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सारी मानव जाति के उद्धारक	342
परमेश्वर के भेजे हुए सन्देष्टा	343
मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अन्तिम सन्देष्टा के रूप में	344
पिछले सन्देशवाहकों की पुष्टि	345

विषय पृष्ठ सं०

खण्ड-ख (भाग-1)

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जन्म से पूर्व संसार की दशा

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जन्म से पूर्व संसार की दशा 347
क़बाईली निज़ाम 347
छठी सदी ईस्वी की दुनिया 348
समाजी अव्यवस्था 348
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व दुनिया की धार्मिक दशा 348
यहूदी धर्म की स्थिति 348
एकेश्वरवादी धर्म 349
बैबिलोनियन तलमूद 350
शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की दशा 351
महिलाओं का विरासत में हिस्सा 351
मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व ईसाई धर्म की स्थिति 352
त्रित्व का सिद्धान्त 352
मूर्ति पूजा का प्रवेश 353
छठी सदी ईस्वीं का आरम्भ 353
धर्म और राज्य का सम्बन्ध 354
टरटूलियन के अनुसार महिलाओं की स्थिति 355
महिलाओं की भूमिका 355
धार्मिक मतभेद 356
मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व मजूसी धर्म की स्थिति 356
सामाजिक वर्गीकरण 357
चार तत्वों की पूजा 357
धार्मिक कर्तव्य 357
पुरोहितों का कर्तव्य 358
अहरीमन और अहुरमज़्दा की पूजा 359
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व बौद्ध धर्म की स्थिति 360

विषय	पृष्ठ सं०
विभिन्न देवताओं का अस्तित्व	360
बुद्ध की मूर्ति बनाने की प्रकृति	362
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व हिन्दू धर्म की स्थिति	362
देवताओं की पूजा	363
मूर्ति पूजा	364
छठी सदी ईस्वीं में हिन्दू धर्म	365
विविध धार्मिक परम्परा	366
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व चीन की स्थिति	367
परम्पराओं का मिश्रण	368
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व रोमन साम्राज्य की स्थिति	369
नैतिक पतन	370
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व ईरानी सल्तनत की दशा	371
वैवाहिक व्यवस्था	374
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व भारतीय समाज की स्थिति	375
आर्या समुदाय	375
द्रविड़ समुदाय	376
चार मुख्य वर्ग	377
द्रविड़ों का स्तर	377
आर्य के देवता	378
आर्य की प्रभुता	378
महिलाओं की स्थिति	378
वंचित वर्ग	379
सामाजिक स्थिति	379
राजपूत की सामाजिक व्यवस्था	380
जाति व्यवस्था	381
बहिष्कृत समाज	382
हर क़बीले का देवता	383
नैतिक पतन	384
अ़रब समाज	386

विषय पृष्ठ सं०

जाहिलियत का दौर 386
सामाजिक दशा 387
समाजी रस्में 387
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अ़रब प्रायद्वीप में ही क्यों? 388
भौगोलिक स्थिति 388
इब्राहीमी परम्परा के अवशेष 389
अ़रबों का प्राकृतिक स्वभाव 390
अ़रबों के विचार 390
संकल्प में दृढ़ता 391
बैअ़त उ़क़्बा-ए-सानिया 391
अंसार का उत्तर 392
उ़क़्बा बिन नाफ़ेअ़ का कथन 393

खण्ड-ख (भाग-2)

अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का संक्षिप्त परिचय

अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का संक्षिप्त परिचय 395
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का वंश (नसब) 395
ह़ज़रत इब्राहीम के दूसरे पुत्र 395
अट्ठावन पीढ़ियों का अन्तराल 396
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जन्म और प्रारम्भिक जीवन 396
दादा का देहान्त 397
चाचा का देहान्त 397
आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का विवाह 398
नुबूवत (रिसालत का पद) 398
एकान्त साधना 398
रिसालत के पद की शुभ सूचना 399
ह़ज़रत ख़दीजा की सांत्वाना 399
वरक़ा बिन नौफ़ल से मुलाक़ात 400

विषय	पृष्ठ सं०
'इस्लाम' की शिक्षा	400
प्रारम्भ में इस्लाम स्वीकार करने वाले	401
हज़रत अबू बक्र की दअ़वत	401
तीन वर्षों तक गुप्त प्रचार	402
एलानिया प्रचार	402
मक्का के काफ़िरों का अत्याचार	402
कअ़बः के निकट की घटना	403
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को प्रलोभन	403
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का उत्तर	404
उ़त्बा इब्ने रबीआ़ पर प्रभाव	404
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सामाजिक बहिष्कार	405
शेअ़ब-ए-अबी तालिब में शरण	405
साथियों का धैर्य	406
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का विरोध	406
झूठा प्रचार	407
विभिन्न प्रकार की यातनाएँ	407
बस्ती से निकाल देने की धमकी	408
मुसलमानों पर शारीरिक अत्याचार	408
हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०)पर अत्याचार	409
हज़रत बिलाल (रज़ि०)पर अत्याचार	409
हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि०)पर अत्याचार	410
हज़रत सुमय्या (रज़ि०)का इस्लाम	410
हज़रत उ़स्मान-ए-ग़नी (रज़ि०) पर अत्याचार	410
हज़रत जुबैर बिन अव्वाम (रज़ि०)पर अत्याचार	410
हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०)पर अत्याचार	411
हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०)पर अत्याचार	411
हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि०)पर अत्याचार	411
हज़रत अयाश बिन अबी रबीआ़ (रज़ि०) पर अत्याचार	411

विषय	पृष्ठ सं०
ह़ज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) पर अत्याचार	412
ह़ज़रत अबू फ़क़ीह (रज़ि०) पर अत्याचार	412
Montgomery Watt के अनुसार	413
Karen Armstrong के अनुसार	414
श्री नाथूराम जी की राय	414
मुसलमानों की हिज्रत	414
हिज्रत की अनुमति	415
पहली हिज्रत	415
हब्शा का बादशाह	415
ह़ज़रत जाफर बिन अबी तालिब का भाषण	416
नजाशी की अनुमति	416
मदीना (यसरिब) में इस्लाम का विस्तार	417
ह़ज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मैर की शिक्षा	417
मदीना में इस्लाम के समर्थक	418
मदीना की ओर हिज्रत	418
क़त्ल का षडयंत्र	419
हिज्रत की तैयारी	419
एक काफ़िर अ़ब्दुल्लाह बिन उरैकित का साथ	419
मदीना में स्वागत	419
मदीना का संविधान	420
मिसाक़-ए-मदीना के मुख्य उद्देश्य	420
अहले मक्का से युद्ध	421
जंग की पहली अनुमति	422
युद्ध की अनुमति का कारण	423
आत्मरक्षा की अनुमति	423
इस्लाम में जिहाद का अर्थ	424
जिहाद और क़िताल में अन्तर	425
जिहाद का व्यापक अर्थ	425

विषय	पृष्ठ सं०
शिक्षा और बुद्धिमत्ता के माध्यम से जिहाद	426
माल और जान के माध्यम से	426
अत्याचार की सज़ा	427
इस्लाम में तलूवार का प्रयोग	427
हथियार का प्रयोग	428
तलूवार का सिद्धान्त	428
मुजाहिदीन को शिक्षा	429
De Lacy O'Leary के अनुसार	429
क़ुर्आन पर आपत्ति की वास्तविकता	431
नैतिक मर्यादाएँ	431
युद्ध को वैध करने का कारण	432
सान्य काफ़िर के लिए आदेश नहीं	432
फ़ित्ना क्या है	433
युद्ध की मनाही	433
युद्ध रोकने की शर्तें	433
क़िताल का उद्देश्य	434
अत्याचार न करो	434
युद्ध के समय आदेश	434
हत्या और विनाश	435
युद्ध का आधार	435
शाँतिपूर्ण समाज की स्थापना	435
शाँति की स्थापना	435
इस्लामी शिक्षाओं का प्रभाव	436
विरासत के नियम	436
क्षमा और उदारता	436
आचरण की तलूवार	437
महात्मा गाँधी जी के अनुसार इस्लाम की तलूवार	437
स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार	438

विषय	पृष्ठ सं०
इस्लाम की नैतिक शिक्षा	439
अत्याचार का विरोध	439
युद्ध पर रोक	440
जंग-ए-बद्र की पृष्ठभूमि	440
जंग-ए-बद्र का परिणाम और प्रभाव	441
Stanley Lane-Poole के अनुसार	442
Lawrence E- Brown के अनुसार	442
ग़ैर-मुस्लिमों के अधिकारों के सम्बन्ध में इस्लाम का सिद्धांत	444
ग़ैर-मुसलमानों के साथ न्याय और सद्व्यवहार	444
सद्व्यवहार का आदेश	444
धार्मिक बल प्रयोग का निषेध	445
शत्रु को भी शरण देने का आदेश	445
मानवाधिकार की रक्षा	446
न्याय का सार्वभौमिक आदेश	446
दुश्मन के साथ भी न्याय	447
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यावहारिक उदाहरण	447
नज़रान के ईसाइयों से समझौता	447
श्री सुन्दर लाल जी के अनुसार	448
क़ुर्आन के प्रभाव से इस्लाम स्वीकार करने वाले	448
उ़स्मान बिन मज़ऊन (रज़ि०) का इस्लाम	449
ह़ज़रत जुबैर बिन मुत्इ़म (रज़ि०) का इस्लाम	449
तुफ़ैल इब्ने अम्र अद्दौसी	450
मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रभावित होकर स्वीकार करने वाले	450
ह़ज़रत सफ़्वान बिन उमय्या का इस्लाम	450
एक यहूदी का इस्लाम	451
ह़ज़रत सुमय्या बिन आसाल का इस्लाम	451
मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के भाषण से प्रभावित होकर इस्लाम	451
ह़ज़रत जिमाद अल्-अज़दी का इस्लाम	451

विषय	पृष्ठ सं०
ह़ज़रत ह़ारिस इब्ने अ़ब्दुल् उ़ज़्ज़ा का इस्लाम	452
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को देखकर स्वीकार करने वाले	452
ह़ज़रत राफ़ेअ़ (रज़ि०) का इस्लाम	452
ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम का इस्लाम	453
सह़ाबा के नैतिक चरित्र का प्रभाव	453
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चमत्कार का प्रभाव	453
K- A- C- Creswell (क्रेसवेल) के अनुसार	454
मक्का की विजय और शत्रुओं से उत्तम व्यवहार	454
मक्का में प्रवेश के समय आ़म सुरक्षा-घोषणा	455
मक्का वालों का सम्बोधन	455
ह़ज़रत सुफ़्यान का घर शरण स्थल	456
कअ़बः का तवाफ़	457
इस्लाम का प्रसार	457
युद्ध का उद्देश्य	458
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा सेना को दिये गये निर्देश	458
मानवता और करुणा पर आधारित सिद्धान्त	459
मख़्लूक़ पर दया	460
अन्तिम ह़ज और उसका ख़ुत्बा	460
अन्तिम ह़ज का व्यापक उद्देश्य	461
ह़ज्जतुल् विदाअ़ का अन्तिम विश्वव्यापी संदेश	462
विदाई का एह़सास और ज़िम्मेदारी की ताक़ीद	462
जान, माल और सम्मान की पवित्रता	462
जाहिलियत के रक्त-विवादों का अंत	463
सूद (ब्याज) की पूर्ण मनाही	463
महिलाओं के अधिकार और पारिवारिक व्यवस्था	463
क़ुर्आन से जुड़ाव	464
दीन के मूल कर्म और सामाजिक व्यवस्था	464
पैग़म्बरी की गवाही और संदेश पहुँचाने की ज़िम्मेदारी	464

विषय	पृष्ठ सं०
दीन की पूर्णता की आयत का अवतरण	465
सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था का एलान	465
ह़ज्जतुल् विदाअ़ के ख़ुत्बे का महत्वपूर्ण सन्देश	466
क़ानून की सर्वोच्चता (Rule of Law)	466
आर्थिक न्याय (Economic Justice)	466
महिलाओं के अधिकार (Women's Rights)	467
आध्यात्मिक और नैतिक मार्गदर्शन	467
सार्वभौमिक ज़िम्मेदारी (Universal Responsibility)	467
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बीमारी	467
ह़ज़रत आ़ईशा के कक्ष में	468
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अन्तिम समय	468
आप की वसीयत	469
अन्तिम क्षण	470
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विसाल (देहान्त) के बाद	470
ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) का सम्बोधन	471
ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की बैअ़त	471
जनाज़े की नमाज़	472
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुबारक क़ब्र (रौज़ा-ए-अत्हर)	472
कफ़न-दफ़न	472
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का आचरण	475
स्वभाव में नर्मी	475
आप की मुस्कुराहट	476
स्वभाव	476
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के गुण	477
घरेलू काम	477
ज़बान की ह़िफ़ाज़त	477
ज़रूरतमन्द के साथ नर्मी	479
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का स्वभाव और आ़दतें	479

विषय	पृष्ठ सं०
बद्ज़ुबानी से परहेज़	480
तीन बातों से परहेज़	480
अजनबियों के साथ व्यवहार	481
बच्चों से प्यार	481
आप की नसीहत का तरीक़ा	482
माँ की राहत का ख़याल	482
घरवालों के साथ नर्मी	484
यहूदी की अ़यादत	484
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सादगी	485
जानवरों पर रहम करने का हुक्म	486
ख़िद्मतग़ारों के साथ मेहरबानी	486
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का लिबास	486
आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अगूँठी	487
आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का खाना	487
आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पसन्दीदा चीज़ (खुशबू)	488
आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आराम करने का तरीक़ा	489

खण्ड-ख (भाग-3)

अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सुकथनों का वर्णन

अन्तिम महाईशदूत के सुकथनों का वर्णन	491
जो अपने लिए पसन्द करो वही दूसरे के लिए	491
ज़मीन वालों पर रहम	491
वज़नी आ़माल	491
पड़ोसी से व्यवहार	492
जानवरों पर दया	492
पेड़ पौधे लगाने वाले के लिए सद्कः	493
जानवरों को कष्ट न दो	493
किसी जानदार को आग़ का अ़ज़ाब नहीं	494

विषय	पृष्ठ सं०
जानवरों को बाँधने की मनाही	494
नर्म मिज़ाज	495
तिजारत में धोखा न दे	496
नौकरों के साथ व्यवहार	496
ज़बान का सही प्रयोग	496
अच्छे व्यवहार का वज़न	497
ह़रामख़ोरी की मनाही	497
पत्नियों के साथ व्यवहार	497
अच्छे व्यवहार का दर्जा	498
झूठ की मनाही	498
नर्मी अपनाने का फ़ायदा	499
आसानी पैदा करना	499
नर्मी से महरूम	499
गुस्सा पर क़ाबू	500
रिश्तेदारों के साथ भलाई	500
न्याय का हुक्म	501
सवाल से बचो	501
ग़ैर मुस्लिम माँ की सेवा	502
ग़ैर मुस्लिम की हत्या पर जहन्नम	502
घमण्डी जन्नत में न जाएगा	502
बदला न लेने वाला	503
इन्साफ़ सब के साथ	503
मज़लूम की आह	503
नौकर को सत्तर बार क्षमा	504
पड़ोसी का ह़क़	504
रिश्तेदारों के साथ व्यवहार	505
बेटियों के साथ अच्छे व्यवहार पर जन्नत	505
मोमिन की पहचान	505

सन्देश

ह़ज़रत मौलाना सय्यद अब्दुल्लाह ह़सनी नदवी रहमतुल्लाह अ़लैहि के क़लम से

भूतपूर्व उस्ताजे हदीस दारुल उलूम, नद्वतुल उलमा, व सहसम्पादक 'अर्राइद' लखनऊ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मार्निरह़ीम

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों की रहनुमाई और ह़िदायत के लिए नबियों और रसूलों का सिलूसिला क़ायम फ़रमाया, जो ह़ज़रत आदम (अ़लै०) से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तक बराबर चलता रहा, हर-हर इलाक़े में और हर-हर क़ौम में सन्देष्टा भेजे गये उन्होंने अपने पालनहार और भेजने वाले के पैग़ाम को सम्पूर्ण रूप से पहुँचाया। सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें बर्दाश्त कीं, मारे पीटे गये, लेकिन पैग़ामे ह़क़ व सत्यता सुनाकर रहे, मानने वालों ने माना और कामियाब हुए और मानव दुश्मन ज़ालिम और जाहिल लोगों ने नहीं माना तो हलाक व बरबाद हो गये जिसका रिकार्ड आसमानी किताबों ने सुरक्षित करके आने वाली नस्लों को पेश किया ताकि वह ऐसी ग़लती न करें और इन्कार करके मुजरिमों की सूची में शामिल न हो जाएँ।

अल्लाह भला करे ऐसे लोगों का जिनके पास ह़क़ व सत्यता का सन्देश था परन्तु उन्होंने अपने स्वार्थ और दुनियावी लोभ के लिए उसको छिपाया फिर उसमें काट-छांट की, इस प्रकार नस्ल इंसानी की राह खो गई। यह लोग बराबर इन्सानियत के साथ जुल्म व ज़्यादती करते रहे और अल्लाह के भेजे हुए सन्देश ह़क़ व सदाक़त को झुठलाते रहे। अल्लाह को अपने पैदा किये हुए इन्सानों से प्यार था इस लिए वह बराबर ह़क़ की रोशनी के लिए अपने सन्देशवाहकों को भेजता रहा। अन्त में जब उन लोगों ने इस सन्देश को बिल्कुल मिटा के रख दिया और सारे दीप बुझा दिये और सारी दुनिया घटाटोप अंधेरे में बदल गई तो अल्लाह तआ़ला की रह़मत (दया) को जोश आया और अपने अन्तिम सन्देष्टा को सारे संसार की हिदायत के लिए भेजा

और उसको तमाम दुनिया के लिए रह़मत बनाकर अपने सन्देश ह़क़ व सत्यता को आम करने का हुक्म दिया, तो उसने वह पैग़ाम सुनाना शुरु किया, मानने वालों ने बढ़कर स्वागत किया और उसके आस-पास जमा हो गये और न मानने वाले जो वास्तव में मानव दुश्मन थे इन्कार करते चले गये। अतः उनका कोई नाम लेवा नहीं, कोई याद करने वाला नहीं।

उसने आकर घोषणा की कि "तमाम मख़्लूक़ अल्लाह का कुंबा है। सब आपस में भाई-भाई और एक समान हैं, नस्ली और क़ौमी बुनियाद पर किसी को श्रेष्ठता ह़ासिल नहीं। अल्लाह को प्यारा वह है जो उसकी मख़्लूक़ (सृष्टि) के साथ एह़सान करे और वह अल्लाह का लिहाज़ करता और उससे डरता हो। आ़ला ख़ानदान में होने की वजह से 'जन्नत' उसका ह़क़ नहीं बल्कि जो भी ह़क़ व सत्यता को स्वीकार करके अ़मल करेगा वह कामियाब होगा और 'जन्नत' का ह़क़्दार होगा चाहे काला हो या गोरा, चाहे आ़ला ख़ानदान का हो या मामूली ख़ानदान का"।

उसने बताया हर जानदार की ख़िद्मत करने में अज्र व सवाब है, "एक बद्कार औ़रत की बख़्शिश (क्षमा) इसलिए हो गई कि उसने प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था"। एक बार ऐसा हुआ कि वह सफ़र में थे कुछ साथी उसके साथ थे उन्होंने एक चिड़िया के बच्चे पकड़ लिये, चिड़िया बार-बार आती और पर फड़फड़ाती, उसने पूछा कि किसने इस चिड़िया को दुख दिया है, इसके बच्चों को छोड़ दो।

जंग के मौक़े पर भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ताक़ीद की कि औ़रत, बच्चों, बूढ़ों और अपनी अ़िबादत गाहों में अ़िबादत करने वालों को हाथ न लगाया जाए।

उसके ज़रिये क़ुर्आन में यहाँ तक ए़लान किया गया कि "ज़मीन पर अकड़ कर मत चलो, बल्कि अल्लाह रह़मान (महादयालु) के बन्दों की निशानी बताई गई कि वह ज़मीन पर अकड़ कर नहीं चलते हैं, आहिस्तगी से नर्मी के साथ चलते हैं"।

उसने यह भी एलान किया कि सूरज, चाँद-सितारे, आसमान, ज़मीन, जंगल, पहाड़, दरिया, समुद्र यह सब अल्लाह के बनाये हुए हैं और सब उसके हुक्म के मुताबिक़ अ़मल कर रहे हैं। उसी ने सबको पैदा किया है और

वही अकेला सबको चला रहा है, जब तक चाहेगा चलाएगा और जब चाहेगा ख़त्म कर देगा, वह खुद से कुछ नहीं कर सकते और इन सबको इन्सान का सेवक बना दिया है और इन्सान को हुक्म दिया कि अपने पैदा करने वाले के आगे झुके और सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करे।

इसी तरह़ उसने अपने रब (पालनहार) अल्लाह के सन्देश को सारे संसार में आम कर दिया जिन्होंने माना वह कामियाब हुए और जो टकराये वह चूर-चूर हो गये, परन्तु यहाँ भी ऐसे लोग पैदा हुए जो बड़े मानव दुश्मन थे उन्होंने उसको बदनाम करने की कोशिश की और ग़लत-सलत बातें उसकी ओर लगाई, इसलिए बहुत से भोले-भाले लोग नासमझी का शिकार हो गये और बिना किसी तह़क़ीक़ के उसे स्वीकार कर लिया। जबकि यह एक ह़क़ीक़त है कि उसका नाम और काम तमाम आसमानी किताबों में बता दिया गया था। उसको उन्होंने छिपाया और मिटाया परन्तु इसके बावजूद आज भी उन किताबों में उसका ज़िक्र भरपूर मौजूद है। यदि निष्पक्ष होकर हक़ (सत्य) की खोज के लिए इसे पढ़ते तो स्वीकार कर लेते और जिन्होंने इस तरह देखा उन्होंने माना और बराबर मान रहे हैं इसलिए ऐसा कौन है जो 'जन्नत' न ढूँढे, सुकून न चाहे और अच्छी ज़िन्दगी का इच्छुक न हो।

अज़ीज़-ए-गिरामी "मौलवी मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी" ने बड़ी मेह़नत से और काफ़ी वक़्त लगा कर इस अन्तिम सन्देष्टा (यानी जिसका नामे-नामी इस्मे गिरामी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) है) के विषय में आसमानी, मुक़द्दस किताबों और विभिन्न संतों, वैज्ञानिकों, इतिह़ासकारों के क़ौल को बड़े अच्छे ढंग से जमा कर दिया है। उम्मीद है कि वह तमाम भाई विशेष रूप से हिन्दुस्तानी विद्वानों और ह़क़ (सत्य) की खोज करने वाले सज्जनों तथा अन्तिम सन्देष्टा का इन्तिज़ार करने वाले तमाम इन्सानों के लिए राहे ह़िदायत होगा। अल्लाह उनके इस काम को क़ुबूल फ़रमाए और इसको हिदायत सआ़दत व निजात का ज़रिया बनाये।

अ़ब्दुल्लाह ह़सनी 'नदवी'
19 नवम्बर, 1998

प्रस्तावना

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मार्निरह़ीम

अल्लाह (परमेश्वर) ने मानव जीव को पैदा करने के बाद यूँ ही छोड़ नहीं दिया, बल्कि मनुष्य को जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने की अवश्यकता पड़ती है उससे कहीं अधिक ज़िन्दगी के हर मोड़ पर किसी मार्ग दर्शक की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए परमेश्वर ने इस का इन्तिज़ाम भी किया कि वह मनुष्यों में से अपना ईशदूत नियुक्त करता रहा जिसमें सबसे पूर्व और प्रथम ईशदूत ह़ज़रत आदम (अलै०) थे।

इस प्रकार अपने समय पर बराबर सन्देष्टा आते रहे और उस समय लोग उनका पालन करते, परन्तु कुछ समय बाद लोग उनकी शिक्षाओं को छोड़कर स्वार्थ का रास्ता अपना लेते, तो दूसरे सन्देष्टा भेजे जाते, परन्तु उनके साथ भी यही होता कि उनकी शिक्षाओं को कुछ दिनों बाद छोड़ कर स्वयं उसी सन्देष्टा को इतना सम्मान दिया जाने लगता कि उसी की पूजा, पाठ आरम्भ हो जाती और वास्तविक परमेश्वर जिसने उस सन्देष्टा सहित सारे मनुष्यों को पैदा किया है उसको उससे भी कम सम्मान मिलने लगता, यहाँ तक कि परमेश्वर को छोड़ कर अन्य की पूजा शुरु हो जाती।

इस प्रकार जैसा पवित्र क़ुर्आन द्वारा स्पष्ट हो चुका है कि परमेश्वर ने प्रत्येक समूह में नबी या सन्देष्टा भेजे और दूसरे स्थान पर यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि हर समूह में जो सन्देष्टा आता था वह उसी समूह की भाषा बोलता था, कहीं संस्कृत में, कहीं ईरानी में, कहीं सुर्यानी या फ़ारसी इत्यादि भाषा में सन्देष्टा बोलते और उसी भाषा में अपना ज्ञान या जीवन संविधान प्रस्तुत करते और लोग उनका अनुसरण करते, परन्तु वह अपने आप को अन्तिम सन्देष्टा नहीं कहते थे और न यह कहते थे कि यही संविधान क़ियामत तक रहेगा।

यह तो केवल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा है कि मैं अन्तिम सन्देष्टा हूँ और मेरा लाया हुआ संविधान क़ियामत तक के तमाम लोगों के लिए है।

ऊपर की पंक्तियों से स्पष्ट हुआ कि पवित्र क़ुर्आन के अनुसार भारत में भी ईश सन्देशवाहक हुए होंगे तथा उन पर भी ईश्वरीय शिक्षा और ज्ञान का अवतरण हुआ होगा।

पवित्र क़ुर्आन में है-

"इन्नमा अन्त मुन्ज़िरु वलिकुल्लि क़ौमिन हाद"

अर्थात "ऐ मुहम्मद तुम अधर्म के कुपरिणाम से सचेत करने वाले हो और हर क़ौम में संमार्गदर्शक हुए हैं।

वेद यद्यपि प्राचीनतम ग्रन्थ है तथा वेद विद्वानों में इसके विषय में अनेक प्रकार के मतभेद भी हैं परन्तु कुछ विद्वानों ने अनेक प्रकार की शिक्षाएँ खोज निकाली हैं।

महामान्य हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर परमेश्वर की सतत दया हो, क़ुर्आन में आपको अन्तिम सन्देष्टा कहा गया है और संसार का इतिहास इसकी पुष्टि करता है कि आप के बाद कोई ईश सन्देष्टा नहीं हुआ। महामान्य के विषय में यही बात वेदों में भी विद्यमान है जिसे एक शोधक महापण्डित ने लिखा है-

यह विद्वान हैं डाक्टर वेद प्रकाश उपाध्याय एम० ए० संस्कृत वेद डी०फ़िल धर्म शास्त्राचार्य, डिप० इन० जर्मन, बी०आई०एस०एण्ड आई०एस०पंजाब यूनिवर्सिटी।

उपाध्याय जी ने एक पुस्तक लिखी है जिसका नाम है- "नराशंस और अन्तिम ऋषि" इस पुस्तक की एक भूमिका है और छः अध्याय हैं।

इसमें से तीन अध्याय महामान्य मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आगमन सम्बन्धी भविष्यवाणयों के विषय में हैं। चौथा अध्याय मान्य मूसा की भविष्यवाणी के विषय में, पाँचवां मान्य ईसा की भविष्यवाणी के विषय में, छठा महात्मा बुद्ध की भविष्यवाणी के विषय में और पं० जी ने भूमिका में इस प्रकार लिखा है-

"ऐतिहासिक विषयों पर शोध करने की उत्कृष्ट अभिलाषा सदैव रहती हैं। वेदों में बाइबिल में तथा बौद्ध ग्रन्थों में अन्तिम ऋषि के रूप में जिसके आने की घोषणा की गई थी वह मुहम्मद साहब ही सिद्ध होते थे। अतः मेरे

अन्तःकरण ने मुझे यह प्रेरणा दी कि सत्य को खोलना आवश्यक है, भले ही वह लोगों को बुरा लगने वाला हो। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पूर्व भारत तथा अरब निवासियों का धर्म एक था। इस विषय से सम्बद्ध अनेक प्रमाण हैं जिन्हें यहाँ निर्दिष्ट करना उपयुक्त नहीं।

धर्म की संकुचित भावना का मैं पक्षपाती नहीं, कोई भी बात किसी भी स्थल में यदि उपयुक्त एवं उचित की गई है तो उसका बहिष्कार करने का मैं साहस नहीं करता।

वेदों में एक उष्ट्रारोही व्यक्ति के होने की भविष्यवाणी है, जिसका नाम "नरशंस" है। नरशंस का अर्थ सायण ने किया है कि जो मनुष्यों द्वारा प्रशंसित हो।

मेरे विचार इस स्थल में सहमत नहीं क्योंकि मेरे मत से नरशंस शब्द ऐसे नर अर्थात व्यक्ति का सूचक है जो प्रशंसित हो।

मुहम्मद शब्द नरशंस का अरबी अनुवाद है। प्रस्तुत पुस्तक में यथाशक्ति सत्य को उद्घृत करने का प्रयत्न किया गया है"।

वेदप्रकाश जी ने सायणाचार्य से उचित मतभेद किया है और नरशंस का अर्थ प्रशंसित माना है।

यही अर्थ मुहम्मद का है परन्तु सायण ने जो अर्थ किया है वह भी महामान्य हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर पूर्ण रूप से घटित होता है। महामान्य की मनुष्यों द्वारा जितनी प्रशंसा हुई है संसार के किसी धर्म गुरु की न हुई और न हो रही है।

वेद प्रकाश जी का यह विचार कि महामान्य हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व भारत तथा अरब निवासियों का धर्म एक था, अरब के प्रमाणित इतिहास के अनुसार जिसे संसार मानता है सर्वथा विरुद्ध है।

अतः किसी वैदिक धर्मी का वेद प्रकाश जी के शोध को न मानने के लिए किसी ऐसे धर्मनायक का नाम प्रस्तुत करना होगा जिस पर यह सभी भविष्यवाणियाँ घटती हों। इसलिए कि उपाध्याय जी की शोध पुस्तकों पर विद्वानों ने जो विचार प्रकट किये हैं और उसे प्रमाणित किया है, उन्हें हम संक्षेप में लिखते हैं।

विस्तार के लिए डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय की पुस्तक नरशंस और अन्तिम ऋषि के पृष्ठ 62 से 74 पर देखा जा सकता है। यहाँ संक्षेप में महत्वपूर्ण विद्वानों के नाम, पद और उनके लेख से उदाहरण स्वरूप कुछ शब्द प्रस्तुत हैं। जैसे-

(1) पण्डित राजाराम शर्मा (ग्राम-लाई पुरे कवि, डा०-आनापुर जि०-इलाहाबाद)

"नरशंस जो मुहम्मद साहब ही हैं, वेद का एक महत्वपूर्ण भावी व्यक्ति है। मैं अपनी ओर से उपाध्याय जी को धन्यवाद देता हूँ कि इस समय वह सम्पूर्ण संसार को एक नई दिशा की ओर मोड़ रहे हैं"।

(2) अशोक कुमार जायसवाल 'सारस्वत' (एम० ए० संस्थापक- कल्पना सेवक समाज, प्रयाग सदस्य कार्यकारिणी समिति, सारस्वत वेदान्त प्रकाश संघ)

"नरशंस विषयक शोध पुस्तक वर्तमान शिथिल धार्मिक युग में राष्ट्रीय एकता का एक महत्वूपर्ण कार्य है"।

(3) स्वदेशचन्द्र (अध्यक्ष, विद्यार्थी हितकारिणी समिति खुल्दाबाद, प्रयाग)

पं० वेदप्रकाश जी उपाध्याय द्वारा लिखित नराशंस विषयक ऐतिहासिक शोध पुस्तक वर्तमान धार्मिक संघर्षों का उन्मूलन करने में समर्थ है। वेदों में नराशंस नाम से जिस भावी ऋषि के होने का उल्लेख मिलता है, पुराणों में कल्कि अवतार होने के विषय में जो सूचना मिलती है और बाइबिल के पुराने नियम के अनुसार होने के विषय में जो सूचना मिलती है और बाइबिल के पुराने नियम के अनुसार जिसके होने की भविष्यवाणी मूसा ने की है तथा बाइबिल के नये नियम के अनुसार ईसा मसीह ने जिसके विषय में घोषणा की है, वह नराशंस कल्कि अवतार या पैराक्लीट मुहम्मद साहब ही हैं।

(4) बांकेलाल वैश्य 'सारस्वत' (खुल्दाबाद, इलाहाबाद)

"नराशंस और अन्तिम ऋषि' नामक शोध पुस्तक बहुत ही ज्ञान तथा तर्क से युक्त पुस्तक है, जिसे कोई काट नहीं सकता। कुछ लोगों की ओर से विरोध भी होगा क्योंकि अच्छे कामों को करने वालों का बहुत बड़ा विरोध होता रहा है। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि वे आप में शुभ काम करने

की सानर्थ्य प्रदान करें"।

(5) पं० इन्द्रजीत शुक्ल 'सारस्वत' (सदस्य- सारस्वत वेदान्त प्रकाशसंघ (भारत) 3 कन्नूलाल लेन, बड़तला स्ट्रीट, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता-7)

"लेखक ने इस पुस्तक में विश्व की धार्मिक एकता का सूत्रपात किया है, जो हमारे देश में क्या समस्त विश्व में शान्ति एवं एकता की लहर दौड़ा देगा। हम लेखक के इस स्तुत्य कार्य के प्रति बहुत ही आभारी हैं"।

(6) कुमारी रंजना मिश्रा (प्रवक्ता संस्कृत विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग)

"प्रस्तुत शोध पुस्तक 'नरशसं' श्री वेदप्रकाश जी द्वारा रचित, इनकी गवेषणा की पराकाष्ठा है। प्रस्तुत लघु, किन्तु सारगर्भित पुस्तक इनकी लगन और शोध प्रवृत्ति की परिचायक है। प्रस्तुत पुस्तक में आपने मुहम्मद साहब के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला है तथा यह सिद्ध किया है कि बाइबिल के 'पैराक्लीट' मुहम्मद साहब ही है। इनका वर्णन वेदों में भी आया है। वेदों में एक उष्ट्रारोही व्यक्ति का वर्णन आया है, जो मुहम्मद साहब के साम्य रखता है। इस आधार पर उपाध्याय जी यह तथ्य प्रकाश में लाये हैं कि यह भी मुहम्मद साहब ही थे"।

(7) राजनारायण सिंह (गरौड़ी, अदलहाट, मिर्ज़ापुर-वाराणसी का पता- राजनारायण सिंह हरिहर सिंह सी०के० 30/10 मुरली गली, चौक, वाराणसी)

"यदि उपाध्याय जी के इस परिश्रम व ग्रन्थ का अनुशीलन करके पालन किया जाये, तो पूरा संसार वेदों का अनुयायी बनकर एकता के सिद्धान्त को सफ़ल कर सकता है"।

(8) श्री सिद्धनाथ मिश्र, प्राध्यापायक (नवज्योति माध्यमिक विद्यालय, गरौड़ी, अदलहाट, मिर्ज़ापुर)

"मानवीय श्री पं० वेदप्रकाश जी के नव ज्योति विद्यालय के प्रांगण में धार्मिक एकता की ज्योति विषय पर भाषण देने के उपलक्ष्य में दिया गया स्वागत भाषण-

पं० वेदप्रकाश जी का कल्कि अवतार के विषय में गवेषणात्मक अध्ययन

है, वह अत्यन्त प्रशंसनीय हैं। इसी प्रकार आप विद्वान, प्रवक्ता यदि समय-समय पर भारत के प्रत्येक क्षेत्र में पहुँच कर मानव धर्म की शिक्षा देते रहेंगे, तो निश्चय ही मानवता का कल्याण होगा"।

(9) अभिमन्यु सिंह (सदस्य, सारस्वत वेदान्त प्रकाश वाराणसी, उ०प्र०)

"कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब' नामक शोध पुस्तक को पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। सभी मनुष्य एक हैं। जाति-पाति का विभाजन तो मात्र भौतिक और अस्थायी हैं। पुस्तक का यह अमर सन्देश निश्चय ही मानव-समाज के जीवनोन्नयन का सन्देश है"।

(10) हरिनारायण दुबे (एम०ए० प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व सदस्य कार्यकारिणी समिति, सारस्वत वेदान्त प्रकाश जौनपुर (उ०प्र०) ग्राम नारीपुर, पत्रालय बालवरगंज जिला जौनपुर)

"नराशंस और अन्तिम ऋषि' ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एक उच्च स्तरीय शोध है। ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में जिस नराशंस की भविष्यवाणी की गई है, उनकी विशेषताएँ मुहम्मद साहब पर घटित होती है"।

(11) जोगेन्द्र कुमार सिन्हा (बी०ए० आनर्स, एम० ए० मनोविज्ञान शोध छात्र मनोविज्ञान विभाग, यूनिवर्सिटी इलाहाबाद)

"श्री उपाध्याय जी की 'नराशंस और अन्तिम ऋषि' शोध पुस्तक आज की वर्तमान सामाजिक समस्याओं के लिए क्रान्तिकारी समाधान है"।

(12) ज्ञानेन्द्र मोहन (एम०ए० समाज सेवा रूहट्टा, जौनपुर उ०प्र०)

"पं० वेदप्रकाश जी उपाध्याय ने वेद, कुर्आन और बाइबिल के प्रकाण्ड विद्धान होने के कारण जो ज्ञान हिन्दू, मुसलमान और ईसाई भाईयों को दिया है, उससे लोग अपने मन के सन्देह को आसानी से दूर कर सकने में समर्थ हो सकते हैं"।

(13) रमेश कुमार जायसवाल 'सारस्वत' (सचिव सारस्वत वेदान्त प्रकाश खुल्दाबाद, इलाहाबाद उ०प्र०)

"प्रस्तुत शोध पुस्तक 'नराशंस और अन्तिम ऋषि जो वेदों के विद्वान पं० वेद प्रकाश उपाध्याय द्वारा लिखित है। इतिहास और धर्मशास्त्र की दृष्टि

से अत्यधिक महत्वपूर्ण है"।

(14) पं० शिवेन्द्र नाथ झा (सचिव सारस्वत वेदान्त प्रकाश कन्हौली, दरभंगा बिहार)

"पं० श्री वेदप्रकाश जी उपाध्याय द्वारा लिखित 'नराशंस और अन्तिम ऋषि' शोध पुस्तक को पढ़कर यह ज्ञात होता है कि भविष्य में यह समाज को अमृत के समान फल देगी"।

इस प्रकार इन सभी विद्वानों ने अपनी सहमति जताई है। इसी प्रकार इस विषय पर डॉ० एम०ए० श्रीवास्तव जी की पुस्तक और ए०एच० विद्यार्थी जी की पुस्तक "मुहम्मद इन वर्ड इस्किरिप्चर" जैसी पुस्तकों में भी नरशंस महाराज जी की तुलना हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से की गई है।

इस महत्व को सामने रखते हुए उस सन्देष्टा की खोज करना अत्यन्त ज़रूरी है कि वह है कौन और कहाँ आएगा या आ चुका है तो है कौन? इसलिए कि यदि वह पैदा हो चुका है तो उसका दिया हुआ संविधान कौन सा है, इन्हीं प्रश्नों ने मुझे तमाम धार्मिक पुस्तकों के उलटने पर विवश कर दिया और मैंने वेद, पुराण और उपनिषद आदि जैसी बहुत सी पुस्तकों को अध्ययन किया और बहुत से स्थान पर त्रुटियाँ भी समझ में आईं।

इसलिए हमने पं० जी की ही सिद्ध की हुई कुछ बातों को स्पष्ट करने की इस पुस्तक में कोशिश की है, परन्तु कोई यह न समझे कि हम इन पुस्तकों को पूर्णरूपेण प्रमाणित समझते हैं या आसमानी किताब या ईशग्रन्थ या किसी को अहले किताब साबित करना चाहते हैं, ऐसा हरगिज़ नहीं है।

इसलिए कि हमारे पास क़ुर्आन के अतिरिक्त किसी ग्रन्थ के विषय में पूर्णरूपेण प्रमाण मौजूद नहीं जिससे उस की पुष्टी की जा सके परन्तु इतना अवश्य कह सकते हैं कि इस समय पूरे विश्व में पवित्र क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई ग्रन्थ अपने वास्तविक रूप में मौजूद नहीं है। जो पूर्णरूपेण प्रमाणित ईश्वरीय ग्रन्थ हो और यही क़ुर्आन केवल क़ियामत तक प्रमाणित ग्रन्थ रहेगा, इसलिए कि इस के रक्षा की ज़िम्मेदारी स्वयं परमेश्वर ने ली है।

प्रस्तुत पुस्तक के खण्ड 'क' में अन्तिम सन्देष्टा के विषय में की गयी भविष्यवाणियों का ज़िक्र किया है। खण्ड 'ख' में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का

संक्षिप्त जीवन परिचय के साथ उनके आचरण और उनके उपदेशों से सम्बन्धित व्याख्यान को प्रस्तुत किया गया है।

आशा है कि पाठकगण शोध पुस्तक से सन्तुष्ट होंगे, इसलिए कि ईशग्रन्थ और सन्देशवाहक किसी एक वर्ग विशेष की सम्पत्ति नहीं हुआ करते, उन पर जितना अधिकार उनके अनुयायियों का होता है उतना ही अधिकार इस विश्व के प्रत्येक मनुष्य का।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक के अवलोकन से भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि निखिल भू-मण्डल में 'अम्न व अमान' का वातावरण होगा और धर्म के नाम पर होने वाले कलह शांत हो जाएँगे।

अन्त में हम अपने सभी सहयोगियों के शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने इस के प्रूफ़ पढ़ने में अपना क़ीमती समय दिया। अल्लाह पाक अपनी शान के अनुसार अज्र अज़ीम अ़ता फ़रमाए।

अल्लाह तआ़ला से यही दुआ़ है कि सभी वर्ग अपने महाईशदूत से परिचित हों ताकि उनके अन्दर सद्भावना का संचार हो विश्व में बन्धुत्व हो और मरने के बाद का जीवन सुखमय और शान्तिमय हो।

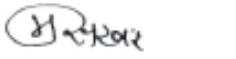

मुह़म्मद सरवर फ़रूक़ी नदवी
शिक्षक-दारुल् उलूम नद्वतुल उलमा, लखनऊ
19 नवम्बर, 1998 ई०
29 रजब, 1419 हिजूरी

खण्ड (क)

भाग–1

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विषय में वेदों की भविष्यवाणियाँ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

हिन्दू धर्म का संक्षिप्त परिचय

हिन्दू धर्म दुनिया के प्राचीनतम धर्मों में से एक है, जिसकी संगठित शुरुआ़त वैदिक काल में मानी जाती है, जिस समय ऋग्वेद और अन्य वेदों की रचना हुई। प्रारम्भिक काल में लोग अग्नि, सूर्य, वायु, इंद्र आदि प्राकृतिक शक्तियों की उपासना करते थे और यज्ञ (आहुति/बलि) को धार्मिक उपासना का महत्वपूर्ण अंग समझते थे।

बाद में उपनिषद काल में धर्म में दार्शनिक प्रवृत्ति का विकास हुआ और आत्मा, ब्रह्म (सार्वभौमिक सत्य) तथा मोक्ष (मुक्ति) जैसे गूढ़ सिद्धान्त सामने आये।

फिर समय के साथ पुराणिक काल में हिन्दू धर्म के अन्तर्गत विभिन्न देवताओं और उनके अवतारों की पूजा की परम्परा प्रचलित हुई, जिससे अनेक सम्प्रदायों का उदय हुआ। आज हिन्दू धर्म एक व्यापक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक व्यवस्था है, जिसमें विविध आस्थाएँ, धार्मिक अनुष्ठान और दर्शन सम्मिलित हैं।

सनातन धर्म

"सनातन" एक संस्कृत शब्द है। जिसका अर्थ है अनादि, प्राचीन, सदा रहने वाला, शाश्वत और "धर्म" का अर्थ है नियम, जीवन का मार्ग, सत्य का पथ, नैतिकता और न्याय की व्यवस्था। इस प्रकार "सनातन धर्म" का अभिप्राय है "अनादि और शाश्वत धर्म"।

सनातन धर्म, जिसे आज सामान्यतः हिन्दू धर्म कहा जाता है, इस को संसार का प्राचीन धर्म माना जाता है। जो हज़ारों वर्षों में विभिन्न चरणों से गुज़रते हुए→ आधुनिक हिन्दू धर्म के रूप में विकसित हुआ। आज भी इसकी

आधारशिला वेदों की दिव्य शिक्षाओं, कर्म (कर्मफल सिद्धान्त), आवागमन (पुनर्जन्म), मोक्ष (मुक्ति) और धर्म (कर्तव्य एवं न्याय) पर ही आधारित है।

वैचारिक अर्थ-

सनातन धर्म किसी एक संस्थापक या नबी से सम्बन्धित नहीं है। यह ऐसा जीवन-पद्धति है, जिसमें धर्म, नैतिकता, क़ानून, उपासना और दर्शन सब सम्मिलित हैं। इसका मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति है। इसकी बुनियाद कर्म (कर्मफल का सिद्धान्त) और धर्म (कर्तव्य/न्याय) पर आधारित है।

सनातन धर्म के भीतर विभिन्न सम्प्रदाय और धाराएँ हैं, जो एक ही मूल आधार पर अलग-अलग देवताओं की उपासना करती हैं और इन सभी को सनातन धर्म के विविध रूप कहा जाता है।

- **वैष्णव मत (Vaishnavism)** यह विष्णु, राम और कृष्ण की उपासना करते हैं।
- **शैव मत (Shaivism)** यह शिव और पार्वती की उपासना करते हैं।
- **शाक्त मत (Shaktism)** यह देवी (दुर्गा, काली, लक्ष्मी) की उपासना करते हैं।
- **स्मार्त मत (Smartism)** यह पाँच देवताओं (शिव, विष्णु, गणेश, देवी, सूर्य) की सामूहिक उपासना करते हैं।

हिन्दू धर्म की आधारशिला

हिन्दू धर्म की आधारशिला वेदों पर है। हिन्दू परम्परा में इन्हें शाश्वत ईश्वरीय ज्ञान और मार्गदर्शन का मूल स्रोत माना जाता है। हिन्दू समाज की लगभग सभी विचार धाराएँ चाहे वह दार्शनिक आन्दोलन हों या जनसामान्य के धार्मिक प्रवाह- किसी न किसी रूप में अपनी वैधता और संदर्भ वेदों से ही जोड़ते हैं।

हिन्दू विद्धानों का यह भी दावा है कि वेद मानव इतिहास का सबसे प्राचीन साहित्य हैं, जो मूल रूप से संस्कृत भाषा में है और हज़ारों वर्षों तक

मौखिक परम्परा (श्रुति परम्परा) के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रहे। इसके बाद लगभग दो शताब्दियों पहले इन्हें व्यवस्थित रूप से संकलित कर के लिखित रूप दिया गया। वेदों के संकलन, संरक्षण और अध्ययन के संदर्भ में कुछ प्रसिद्ध शोधकर्ताओं ने संस्कृत भाषा में दक्षता प्राप्त कर वेदों के संकलन, सम्पादन और अनुवाद के कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वेदों के अतिरिक्त हिन्दू धर्म की अन्य प्राचीन पुस्तकें जैसे उपनिषद, पुराण, ब्राह्मण और आरण्यक-मूलतः वेदों की ही व्याख्या, टीका या बौद्धिक विस्तार मानी जाती हैं। हिन्दू विद्वानों का एक बड़ा वर्ग इन्हें प्रत्यक्ष रूप से ईश्वरीय या दिव्य ग्रंथ नहीं मानता, बल्कि इन्हें द्वतीयक (Secondary) महत्व का साहित्य मानता है।

वेदों की वास्तविक आयु, ऐतिहासिक आरम्भ और मूल स्रोत के विषय में विद्वानों के बीच मतभेद पाये जाते हैं। इसी प्रकार, वेदों में मंत्रों (श्लोकों/ऋचाओं) की कुल संख्या को लेकर भी कोई सर्वसम्मत मत नहीं है। फिर भी यह सर्वमान्य तथ्य है कि हिन्दू धर्म में वेदों को चार संहिताओं में विभाजित किया गया है।

हिन्दू धार्मिक ग्रन्थ

हिन्दू धर्म की धार्मिक पुस्तकों को मुख्य रूप से दो बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। (1) श्रुति (जो सुनी गई) (2) स्मृति (जो याद की गई)।

1. श्रुति (जो सुनी गई)—

श्रुति वह ग्रन्थ हैं जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से दैवी या ईश्वरीय प्रकाश (प्रकाश वह्य) माना जाता है। इन्हें हिन्दू धर्म में सबसे पवित्र और मूल आधार माना जाता है। जो निम्न प्रकार है-

(क) वेद

(ख) ब्राह्मण आरणयक और उपनिषद

वेद

वेद हिन्दू धर्म के सबसे प्राचीन और मूल ग्रंथ हैं। इनकी संख्या चार है-

(1) ऋग्वेद (2) यजुर्वेद (3) सामवेद (4) अथर्ववेद

1. ऋग्वेद-

इसमें देवताओं जैसे अग्नि, इंद्र, सूर्य आदि की स्तुति में मंत्र (प्रार्थनाएँ) हैं।

2. यजुर्वेद-

इसमें यज्ञ और बलि से सम्बन्धित नियम, विधियाँ और धार्मिक अनुष्ठानों के निर्देश दिये गये हैं।

3. सामवेद-

इसमें मंत्र और श्लोक गेय रूप में हैं। यह धार्मिक संगीत और मंत्र-गायन की आधारशिला माना जाता है। इसमें अधिकांशतः ऋग्वेद के मंत्रों को विशेष रागों और मधुर स्वरों के साथ व्यवस्थित किया गया है।

4. अथर्ववेद-

इसमें जादू-टोना, रोगों के उपचार, घरेलू मंत्र और दैनिक प्रार्थनाएँ शामिल हैं। इसमें जनसामान्य के धार्मिक विश्वासों और प्रारम्भिक वैज्ञानिक सोच की झलक मिलती है।

(ख) ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद

यह ग्रंथ वेदों की व्याख्या और उनके दार्शनिक पक्ष को प्रस्तुत करते हैं-

1. ब्राह्मण- इनमें वेदों से सम्बन्धित अनुष्ठानों और यज्ञों के नियमों व विधियों की विस्तृत व्याख्या मिलती है।

2. आरण्यक- इनमें उपासना के आध्यात्मिक और आंतरिक पहलुओं पर चर्चा है। माना जाता है कि इन्हें वनवासी ऋषियों और तपस्वियों ने रचा।

3. उपनिषद- यह गहरे दार्शनिक ग्रंथ हैं, जिनमें ब्रह्म (सार्वभौमिक आत्मा), आत्मा (मानव आत्मा), मोक्ष (मुक्ति) जैसे विषयों का विवेचन किया गया है।

नोट- उपनिषदों को "वेदान्त" भी कहा जाता है। आगे चलकर इन्हीं ग्रंथों पर

आधारित होकर हिन्दू दर्शन की वेदान्त परम्परा विकसित हुई।

(2) स्मृति (जो याद की गई)

स्मृति वह ग्रन्थ हैं जिन्हें मनुष्यों ने वेदों की शिक्षाओं की रोशनी में लिखा। यह ग्रंथ हिन्दू समाज, क़ानून और परम्पराओं का एक विस्तृत संकलन हैं।

(क) धर्मशास्त्र-

अर्थात वह स्मृतियाँ जिन्हें धर्मशास्त्र स्मृतियाँ कहा जाता है। पारम्परिक हिन्दू परम्परा में नौ स्मृतियों को धर्मशास्त्र के रूप में स्वीकार किया गया है।

(1) मनुस्मृति (2) याज्ञवल्क्यस्मृति (3) नारदस्मृति (4) पाराशरस्मृति

(5) बृहस्पतिस्मृति (6) कात्यायनस्मृति (7) आपस्तम्ब धर्मसूत्र

(8) गौतम धर्मसूत्र (9) वसिष्ठ स्मृति

इसमें सबसे प्रसिद्ध मनुस्मृति है- इसमें सामाजिक क़ानून, जाति-प्रणाली, स्त्रियों के अधिकार, नैतिकता और कर्तव्यों का वर्णन मिलता है। इसे प्रायः "हिन्दू क़ानून की आधारशिला" कहा जाता है।

इतिहास

1. रामायण- इस के लेखक 'महर्षि वाल्मीकि जी' को माना गया है। इसमें श्रीराम के जीवन, सीता के प्रति निष्ठा और धर्म की रक्षा का वर्णन है।

2. महाभारत- इसके लेखक 'महर्षि वेदव्यास जी' हैं। इसमें कौरवों और पाण्डवों के बीच युद्ध-नैतिकता और अनैतिकता की संघर्षगाथा हैं।

3. भगवद्गीता- इसके लेखक 'महर्षि वेदव्यास जी' हैं। (यह महाभारत का अंश है) इसमें श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच संवाद-कर्म, भक्ति, कर्तव्य और मोक्ष का उल्लेख है।

पुराण

पुराणों की संख्या 18 महापुराण और 18 उपपुराण मानी जाती है। इनमें सृष्टि की उत्पत्ति, देवताओं की कथाएँ और नैतिक शिक्षाए शामिल हैं।

इस में प्रमुख पुराणः विष्णु पुराण, शिव पुराण, भागवत पुराण है।

अष्टादश पुराण-

इन ग्रंथों के माध्यम से आ़म लोगों को कथाओं के ज़रिये धार्मिक शिक्षा दी जाती है। यह वह अट्ठारह (18) महापुराण हैं, जिन्हें संस्कृत में अष्टादश पुराण कहा जाता है।

(1) विष्णु पुराण
(2) भागवत पुराण
(3) नारद पुराण
(4) गरुड़ पुराण
(5) पद्म पुराण
(6) वराह पुराण
(7) मत्स्य पुराण
(8) ब्रह्म पुराण
(9) ब्रह्माण्ड पुराण
(10) ब्रह्मवैवर्त पुराण
(11) मार्कण्डेय पुराण
(12) भविष्य पुराण
(13) वामन पुराण
(14) शिव पुराण
(15) लिङ्ग पुराण
(16) स्कन्द पुराण
(17) अग्नि पुराण
(18) वायु पुराण

(Radhakrishnan] The Hindu View of Life] Papge 20-&25) (Swami Vivekananda] Complete Works] Vol- 3)

वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन और नरशंस

इन्सान की सबसे बड़ी परीक्षा यह है कि वह अपने मन के मीठे धोखे में आकर अपनी इच्छाओं को ही सत्य मान लेता है, जबकि सत्य ज्ञान केवल बुद्धि या अनुभव का नाम नहीं है, बल्कि उसका अनिवार्य हि़स्सा ईश्वरीय ज्ञान है और ईश्वरीय ज्ञान का वास्तविक और सुरक्षित स्रोत हमेशा से ईशदूत रहे हैं।

वेदों का अध्ययन करने से हमें अनेक स्थानों पर "नराशंस" (नर+अशंस= जिसकी प्रशंसा की जाए) जैसे शब्द मिलते हैं। वैदिक ग्रंथों में नराशंस से सम्बन्धित जो गुण और संकेत मिलते हैं, वे पाठक के मन में यह जिज्ञासा पैदा करते हैं कि आखिर वह महान व्यक्तित्व कौन है जिसके आगमन की सूचना दी जा रही है? यह जिज्ञासा केवल भाषाई या दार्शनिक नहीं रहती, बल्कि एक अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न बन जाता है।

वेदों में "नराशंस" शब्द का उल्लेख

नराशंस मिहाप्रियं अस्मिन् यज्ञे उप ह्वये। (ऋग्वेद संहिता 1:13:3)

अनुवाद- मनुष्य द्वारा प्रशंसित प्रिय अग्नि को इस यज्ञ-स्थान में बुलाता हूँ। (ऋग्वेद संहिता भाग-1 पेज नं० 47 अनु०-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य)

व्याख्या-

इस मंत्र में नराशंस शब्द विशेषण (गुणवाचक) के रूप में आया है। ऋग्वेद के संदर्भ में इसे प्रायः अग्नि के साथ जोड़ा गया है, तथापि वैदिक साहित्य में नराशंस एक ऐसा गुणसूचक शब्द है, जो प्रशंसित और महान व्यक्तित्व के अर्थ को प्रकट करता है। इसी आधार पर कुछ शोधकर्ताओं ने इसे अन्तिम काल के महाईशदूत के संदर्भ में विचार-विमर्श का विषय बनाया है, लेकिन यह बात शुद्ध रूप से शैक्षणिक दायरे में एक सम्भावना के रूप में कही जाती है, न कि किसी अन्तिम निर्णायक रूप में।

नराशंस शब्द का अर्थ

<u>नराशंस</u> मिहप्रिय मस्यियज्ञे.....(ऋगवेद संहिता-1:13:3)

नराशंस शब्द का अर्थ विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न ढंग से किया है, परन्तु हर शब्द का अर्थ जब उसके वातावरण और सन्दर्भ में भेदभाव से ऊपर उठ कर निष्पक्षता की दृष्टि से किया जाता है, तभी उस का अपने भाव में सही अर्थ निकलता है।

नरशंस शब्द का व्याकरणिक आधार-

ऊपर के श्लोक में 'नराशंस' शब्द का जो वर्णन है। इसके कई अर्थ निकल सकते हैं, परन्तु देखना यह है कि यह शब्द किस सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है। इस नरांशस शब्द का सन्धि-विच्छेद करते हुए डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय जी ने अपनी पुस्तक "नराशंस और अन्तिम ऋषि" के प्रथम अध्याय के पेज नं० 7 पर इस प्रकार लिखा है-

नराशंस शब्द की व्याख्या-

नराशंस शब्द 'नर' और 'आशंस' दो शब्दों से मिलकर बना है। नर का अर्थ होता है मनुष्य और आशंस का अर्थ होता है प्रशंसित। **(Praised)** यह स्मरणीय है कि आशंस शब्द वैदिक भाषा का शब्द है न कि लौकिक भाषा का नराशंस शब्द का कुछ लोग अर्थ करते हैं मनुष्यों की प्रशंसा तथा कुछ लोगों के अनुसार नराशंस शब्द का अर्थ होता है मनुष्यों द्वारा प्रशंसित।

इसमें प्रथम अर्थ षष्ठी तत्पुरुष समास से निकलता है, तथा दूसरा अर्थ तृतीय तत्पुरुष समास से निकलता है। विचारणीय यह है कि वास्तव में 'नरशंस' शब्द का अर्थ होगा 'तृतीया तत्पुरुष' या 'षष्ठी तत्पुरूष' से निष्पन्न अर्थ संगत नहीं है, क्योंकि नराशंस के सूत्रों में किसी विशेष व्यक्ति की प्रशंसा है।

विच्छेद-

अतः जिसकी प्रशंसा नराशंस विषयक वर्णन में है 'नराशंस' शब्द से उसी व्यक्ति का बोध होगा। 'नराशंस' शब्द 'कर्मधारय समास' है, जिसका विच्छेद 'नरश्चासौ आशंस': अर्थात 'प्रशंसित मनुष्य' होगा। इसलिए नरशंस शब्द से किसी देवता को भी न समझना चाहिए। नरशंस शब्द स्वतः ही इस बात को स्पष्ट कर देता है कि प्रशंसित शब्द जिसका विश्लेषण है वह मनुष्य है।

यदि कोई नर शब्द को देववाचक माने तो उसके समाधान में इतना स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि नर शब्द न तो देवता का पर्यायवाची शब्द

है और न देवयोनियों के अन्तर्गत कोई विशेष जाति।

(नरशंस और अन्तिम ऋषि, प्रथम अध्याय पेज नं० 7 डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय, एम०ए० संस्कृत वेद, डी० फ़िल धर्म शास्त्राचार्य डिप० इन जर्मन बी०आई० एस०एण्ड आई०एस० पंजाब यूनिवर्सिटी)

इससे यह बात स्पष्ट होती है कि नराशंस किसी सामान्य प्रशंसा का नाम नहीं है, बल्कि वह एक विशिष्ट व्यक्तित्व (**Proper Noun**) की ओर संकेत करता है, जिसकी प्रशंसा स्वयं शब्द के भीतर निहित है।

नराशंस किसी देवता का नाम नहीं-

यह भी एक महत्वपूर्ण बिन्दु है कि नराशंस शब्द को किसी देवता के अर्थ में लेना सही नहीं है, क्योंकि नर शब्द न तो किसी देवता का पर्यायवाची है और न ही यह देव-देवताओं की किसी विशेष देवयोनि के अंतर्गत आता है।

अमरकोश तथा अन्य प्रामाणिक संस्कृत शब्दकोशों से यह बात स्पष्ट रूप से सिद्ध होती है कि नर=मनुष्य और इसका प्रयोग देवताओं के लिए नहीं किया जाता। अतः नराशंस का अर्थ स्वयं इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि "जिस व्यक्तित्व की प्रशंसा की जा रही है, वह मनुष्य है, न कि कोई देवता"।

वद्याधरोऽप्सरो यक्षरक्षोगन्धर्व किन्नरः।
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमौ देवयोनयःII (अमर कोश स्वर्ग-वर्ग 11 वाँ श्लोक)

अनुवाद-

विद्याधर, अप्सरस्, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व (गन्धर्व), किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्ध और भूत-ये सभी देवियों/ देवताओं की योनियों में गिने जाते हैं।

(अमरकोश-स्वर्गवर्ग, श्लोक संख्याः **11**)

अलौकिक प्राणी-

अमरकोश के इस श्लोक में देवता-सम्बन्धी या अलौकिक प्राणियों की एक निश्चित सूची दी गई है। यह सभी हिन्दू धर्म की शास्त्रीय परम्परा में देवताओं या देवयोनियों से सम्बन्धित अलौकिक प्राणी माने जाते हैं। इस व्यापक सूची में नराशंस का उल्लेख न होना इस बात को स्पष्ट करता है कि

नराशंस किसी देवता या अलौकिक जाति का नाम नहीं है, बल्कि शाब्दिक रूप से एक मानवीय गुण या मानव-विशेष का संकेत करने वाला शब्द है।

निष्कर्ष-

अमरकोश के स्वर्गवर्ग की प्रामाणिक वर्गीकरण-प्रणाली के आलोक में यह बात सिद्ध होती है कि नराशंस किसी भी देवता-सम्बन्धी या अलौकिक प्रजाति में सम्मिलित नहीं है।

संस्कृत शब्दकोशों और व्याकरणिक संरचना के अनुसार नराशंस का प्रयोग मनुष्य के लिए होता है। इसलिए नराशंस को देवता कहना भाषिक, पाठगत और शास्त्रीय-वैज्ञानिक सिद्धांतों के विरुद्ध है। इसी आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि नराशंस एक मानवीय गुणों से युक्त विशिष्ट व्यक्तित्व का शीर्षक है, न कि किसी देवता या अलौकिक प्राणी का नाम। नराशंस एक शुद्ध वैदिक शब्द है, जिसका अर्थ है "प्रशंसित मनुष्य"।

व्याकरण की दृष्टि से यह 'कर्मधारय समास' है। इसका प्रयोग किसी देवता के लिए नहीं, बल्कि एक महान मानवीय व्यक्तित्व के लिए किया जाता है।

इसी कारण अनेक संस्कृत विद्वानों जैसे पण्डित थेमकरण वर्मा, पण्डित राजाराम और डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय ने इसके गुणों को हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यक्तित्व से पूर्णतः मेल खाने वाला बताया है।

शब्द मुहम्मद और नराशंस में समानता

शब्द 'मुहम्मद' और शब्द 'नराशंस' के अर्थ को यहाँ शैक्षणिक, भाषाई और तर्कसंगत दृष्किोण से एक प्रामाणिक और संतुलित शैली में प्रस्तुत किया जा रहा है, ताकि बात शब्द-वैज्ञानिक तुलना के रूप में समझी जाए।

शब्द नराशंस-

संस्कृत में नराशंस दो शब्दों से मिलकर बना है-

(1) नर = मनुष्य

(2) शंस/आशंस = प्रशंसा करना, स्तुति करना।

इस प्रकार नराशंस के शाब्दिक अर्थ बनते हैं, "वह मनुष्य जिसकी प्रशंसा की गई हो" या "प्रशंसित मनुष्य"। संस्कृत के विद्वानों के अनुसार शंस शब्द वैदिक भाषा में विशष रूप से प्रशंसा और स्तुति के लिए प्रयुक्त होता है और यह अर्थगत दृष्टि से अ़रबी शब्द ह़म्द के अत्यन्त निकट है।

शब्द मुह़म्मद-

अ़रबी भाषा में मुह़म्मद शब्द का मूल धातु (ह़-म-द) है। "हम्द" के शाब्दिक अर्थ हैं, हृदय से की गई प्रशंसा, ऐसी प्रशंसा जो पूर्ण गुणों और उत्कृषता पर आधारित हो। इसी मूल धातु से मुह़म्मद शब्द इस्मे मफ़ऊल के वज़न पर बना है। जिसके अर्थ है, "वह महान व्यक्तित्व जिसकी बार-बार, अत्यधिक और पूर्ण रूप से प्रशंसा की गई हो"।

अर्थगत सम्बन्ध-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पिता का नाम 'अ़ब्दुल्लाह' और माता का नाम 'आमिना' था, जो मक्का शहर में जन्मे थे। यह तथ्य स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक मनुष्य थे, न कि कोई देवता या पौराणिक मिथकीय सत्ता।

इस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में दो मूलभूत गुण एक साथ पाये जाते हैं।

(1) मनुष्य होना।

(2) अत्यधिक प्रशंसित होना।

यह दोनों गुण नराशंस के शाब्दिक अर्थ से पूर्णतः मेल खाते हैं।

भाषाई निष्कर्ष-

भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार यह बात स्पष्ट होती है कि अ़रबी शब्द "मुह़म्मद" और संस्कृत शब्द "नराशंस" अर्थ की दृष्टि से समतुल्य हैं,

क्योंकि दोनों का प्रयोग ऐसी मानवीय हस्ती के लिए होता है जो प्रशंसा और स्तुति की पात्र हो। यह तुलना आस्था-आधारित दावा नहीं, बल्कि शब्दार्थ और भाषाई समानता पर आधारित एक शैक्षणिक विश्लेषण है, जिसे भाषा और अर्थ के सिद्धान्तों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है।

नराशंस की विशेषताएँ

नराशंस के विषय में उनकी विशेषताओं का उल्लेख विस्तारपूर्वक वेदों में मौजूद है जिनमें में से कुछ मुख्य विशेषताओं का उल्लेख पं० श्री राम शर्मा आचार्य जी द्वारा हिन्दी अनुवाद संस्करण प्रकाशक डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली 2002 से उद्धिरित किया गया है अर्थात नीचे दिये गये इन सभी श्लोकों का अनुवाद पं० श्री राम शर्मा जी के संकलन से लिया गया है।

1. नराशंस मिहाप्रिय.....(ऋग्वेद, 1:13:3 भाग-एक प्रथम खण्ड पेज नं० 47)

"मनुष्यों द्वारा प्रशंसित प्रिय"।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

2. उष्ट्रा यस्य प्रवाहरणो...(अथर्ववेद, 20:127:2 भाग-एक, द्वितीय खण्ड पेज नं० 1058)

(नराशंस सवारी के रूप में) ऊँटों को प्रयोग करेगा।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

3.....मधुजिहंव हविष्कृतम्।। (ऋग्वेद 1:13:3, भाग-एक पेज नं० 48)

"नराशंस मधुजिवंवहति के सम्पादक होंगे अर्थात मीठी वाणी वाले होंगे"।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

4. नराशंस प्रति धामान्यजन तिस्रो दिवः प्रतिमहा स्वर्चिः।

(ऋग्वेद 2:3:2 भाग-एक पेज नं० 371)

"नराशंस अत्यधिक सुन्दर एवं ज्ञान के प्रसारक होंगे"।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

5. नराशंस वाजिनं वाजयत्रिह.....(ऋग्वेद 1:106:4, भाग-एक पेज नं० 205)

"नराशंस लोगों को पापों से निकालेगा"।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

6. एषा इषाय मामहे.....(अथर्ववेद 20:127:3, भाग-2 पेज नं० 1059)

(नराशंस का) एक संसारिक नाम मामह होगा।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

7. एषा इषाय मामहे शतं निष्कान्...(अथर्ववेद 20:127:3, भाग-एक पेज नं० 1059)

(नराशंस को) सौ निष्क प्रदान किये जाएँगे।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

8. .....दश स्रजः.. (अथर्ववेद 20:127:3, भाग-एक पेज नं० 1059)

(नराशंस) दस मालाओं वाला।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

9. त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम.....

(अथर्ववेद 20:127:3, भाग-एक पेज नं० 1059)

.....(नराशंस) दस हज़ार गौओं से युक्त।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)



नराशंस और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विशेषताओं में समानता

नराशंस के गुणों में सबसे पहला महत्वपूर्ण गुण यह है कि उसकी प्रशंसा की जाएगी। जैसे-

पहली विशेषता

(1) नराशंस मिहाप्रिय.....(ऋग्वेद भाग-एक मण्डलम् 1 सूक्तम् 13, मन्त्रः 3)

अनुवाद- "मनुष्यों द्वारा प्रशंसित प्रिय"।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

मनुष्यों द्वारा प्रशंसित

इतिहास साक्षी है कि वैदिक काल से आज तक जितने भी महापुरुष या देवी देवता (अवतार अपने असली रूप में) हुए उनमें से कोई भी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के समान प्रशंसित न हुआ, न है और न होना सम्भव है। जिस की इतनी प्रशंसा हो। उदाहरणस्वरूप देखें-

अज़ान में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्रशंसा

जैसा कि मुसलमानों के यहाँ नित्य बिना नागा दिन में पाँच बार अज़ान होती है और पाँच बार नमाज़ पढ़ी जाती है। जिसमें प्रत्येक समय अज़ान कहने वाला कहता है "अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि" अर्थात हर समय की अज़ान में पाँच बार पूरी दुनिया की मस्जिदों से हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्रशंसा की जाती है।

पृथ्वी एक गोलाकार ग्रह है जो अपने अक्ष पर लगभग 24 घंटे में एक

चक्कर पूरा करती है। इसी घूर्णन (Rotation) के कारण पृथ्वी के विभिन्न भागों में एक ही समय पर दिन और रात नहीं होते, बल्कि अलग-अलग समय क्षेत्र (Time Zones) बनते हैं। इस भौगोलिक और खगोलीय व्यवस्था का सीधा प्रभाव धार्मिक समय-सारिणियों पर भी पड़ता है। इस्लाम में नमाज़ के पाँच निश्चित समय होते हैं- फ़ज्र, ज़ुह्र, अ़स्र, मग़्रिब और अ़िशा जो सूर्य की स्थिति पर आधारित होते हैं, न कि घड़ी के किसी एक वैश्विक समय पर। हर नमाज़ के समय से पहले अज़ान दी जाती है और अज़ान का एक अनिवार्य वाक्य है।

वैज्ञानिक दृष्टि से-

वैज्ञानिक दृष्टि से यदि पृथ्वी के समय-क्षेत्रों का विश्लेषण किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि जब किसी क्षेत्र में फ़ज्र की अज़ान हो रही होती है, उसी समय पृथ्वी के किसी अन्य भाग में ज़ुह्र, अ़स्र, मग़्रिब या अ़िशा का समय होता है। पृथ्वी पर लगभग हर समय किसी न किसी स्थान पर अज़ान दी जा रही होती है।

इस निरन्तरता (Continuity) का कारण पृथ्वी का घूर्णन और सूर्य के सापेक्ष उसका स्थान है। इस प्रकार यह एक खगोलीय और भौगोलिक तथ्य है कि पृथ्वी के 24 घंटे के समय-चक्र में अज़ान की ध्वनि पूरी तरह़ रुकती नहीं।

परिणामस्वरूप अज़ान में लिया जाने वाला पैग़म्बर मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नाम किसी न किसी स्थान पर लगातार उच्चरित होता रहता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो पैग़म्बर मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नाम लिया जाना एक निरन्तर वैश्विक घटना (Continuous Global Phenomenon) बन जाता है, जो प्राकृतिक नियमों (Laws of nature) के अंतर्गत संचालित होती है।

नमाज़ में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्रशंसा

जिस प्रकार अज़ान में नियमित रूप से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नाम लिया जाता है, उसी प्रकार प्रत्येक नमाज़ में भी अनिवार्य रूप से उनका

उल्लेख होता है। नमाज़ के दौरान तशह्हुद और दुरूद के माध्यम से कम से कम एक या दो बार स्पष्ट रूप से "मुहम्मद" नाम उच्चरित किया जाता है।

यह कोई वैकल्पिक (Optional) या परिस्थितिजन्य (Conditional) व्यवस्था नहीं है, बल्कि इस्लामी नमाज़ की संरचनात्मक अनिवार्यता (structural necessity) है अर्थात बिना तशह्हुद और दुरूद के नमाज़ पूर्ण (complete) नहीं मानी जाती।

यदि इसे वैश्विक समय-चक्र (global time cycle) और मानव जनसंख्या वितरण (population distribution) के संदर्भ में देखा जाए तो एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आता है-

जिस प्रकार पृथ्वी के विभिन्न भागों में अलग-अलग समय (Time zones) होते हैं, उसी प्रकार नमाज़ के समय भी एक स्थान पर समाप्त होते हैं तो दूसरे स्थान पर आरम्भ। इस कारण नमाज़ ठीक अज़ान की तरह पृथ्वी पर लगातार (continuously) होती रहती है। कहीं फ़ज्र, कहीं ज़ुह्र, कहीं अ़स्र, कहीं मग़्रिब और कहीं अ़िशा की नमाज़ चल रही होती है। इस निरन्तरता (continuity) का परिणाम यह है कि-

हर क्षण प्रशंसा

हर सेकेण्ड (every second) दुनिया के किसी न किसी हिस्से में नमाज़ के माध्यम से हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नाम लिया जा रहा होता है। यदि इसे आंकड़ों (data) और संभाव्यता (Probability) के दृष्टिकोण से समझा जाए तो यह कहना तार्किक होगा कि हर क्षण पूरी दुनिया में करोड़ों बार (Millions of repetitions) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्रशंसा होती रहती है। यह स्थिति किसी एक क्षेत्र, जाति या भाषा तक सीमित नहीं बल्कि यह एक वैश्विक धार्मिक घटना (Global religious phenomenon) बन जाती है।

जब इस निरन्तर और सार्वभौमिक (universal) प्रशंसा को देखा जाता है तो यह स्पष्ट होता है कि जिन गुणों की चर्चा "नराशंस" के संदर्भ में की जाती हैं—जैसे लगातार प्रशंसा (constant praise) विश्वव्यापी स्मरण (global

remembrance) और समय से परे निरंतरता **(timeless continuity)**— वे गुण ऐतिहासिक और व्यावहारिक **(historical & practical)** रूप से सबसे पहले और सबसे पूर्ण रूप में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर लागू होते हैं।

दूसरे धार्मिक गुरुओं द्वारा प्रशन्सित

मानव इतिह़ास के तुल्नात्मक **(comparative)** अध्यन से यह तथ्य सामने आता है कि आज तक कोई भी धार्मिक व्यक्तित्व ऐसा नहीं हुआ जिसे अपने ही अनुयायियों के साथ-साथ अन्य धर्मों के मानने वालों से भी वैसी व्यापक और सकारात्मक प्रशंसा प्राप्त हुई हो, जैसी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को हुई।

इतिह़ास, दर्शन, समाजशास्त्र और धर्मों के पारस्परिक अध्ययन **(Interfaith studies)** में यह बात दर्ज है कि विभिन्न सभ्यताओं और आस्थाओं से जुड़े विद्वानों धर्मगुरुओं और चिंतकों ने उनके चरित्र, नैतिक शिक्षाओं, सामाजिक सुधार और नेतृत्व क्षमता की खुले रूप में सराहना की है।

प्रशंसित व्यक्तियों की सूची-

यदि केवल उन व्यक्तियों के नाम संकलित किये जाएँ जिन्होंने "मुह़म्मद" की प्रशंसा की है तो वह सूची स्वयं एक स्वतंत्र ग्रंथ **(independent volume)** का रूप ले सकती है।

उदाहरण के रूप में हिंदू धर्म के विद्वान, ईसाई धर्म के विचारक, यहूदी धर्म के इतिहासकार और बौद्ध धर्म के दार्शनिक चारों परम्पराओं के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने वैचारिक ढाँचे **(intellectual framework)** के भीतर रहते हुए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को एक असाधारण मानव, महान नैतिक शिक्षक और प्रभावशाली समाज-निर्माता **(Transformational figure)** के रूप में स्वीकार किया है।

यह तथ्य इस बात को स्पष्ट करता है कि उनकी प्रशंसा किसी एक धार्मिक भावना तक सीमित नहीं, बल्कि एक व्यापक ऐतिह़ासिक और बौद्धिक वास्तविकता **(historical and intellectual reality)** है जो उन्हें विश्व इतिह़ास में एक

अद्वितीय (Unique) और हर क्षेत्र में व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करती है।

श्री प्रो० कृष्ण राव जी के अनुसार

प्रोफेसर के० एस० रामकृष्ण राव (Professor K. S. Ramakrishna Rao) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Muhammad: The Prophet of Islam में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यक्तित्व के बारे में अत्यन्त उच्च और गरिमामय शब्दों में लिखा है-

"The personality of Muhammad, it is most difficult to get into the whole truth of it. Only a glimpse of it I can catch. What a dramatic succession of picturesque scenes! There is Muhammad, the Prophet; there is Muhammad, the Warrior; Muhammad, the Businessman; Muhammad, the Statesman; Muhammad, the Orator; Muhammad, the Reformer; Muhammad, the Refuge of Orphans; Muhammad, the Protector of Slaves; Muhammad, the Emancipator of Women; Muhammad, the Judge; Muhammad, the Saint. All in all these magnificent roles, in all these departments of human activities, he is alike a hero."

(Rao, K. S. Ramakrishna. *Muhammad: The Prophet of Islam.* Hyderabad: reprinted from Islam and Modern Age, March 1978, page 9–10)

अनुवाद-

"मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यक्तित्व की पूरी सच्चाई को समझ पाना अत्यन्त कठिन है। मैं तो उसकी केवल एक झलक ही पकड़ सकता हूँ वह नबी भी हैं, योद्धा भी हैं, व्यापारी भी हैं, राजनेता भी हैं, वक्ता भी हैं, सुधारक भी हैं, अनाथों के सहारा भी हैं, दासों के रक्षक भी हैं, महिलाओं के मुक्तिदाता भी हैं, न्यायाधीश भी हैं और संत भी हैं। मानव जीवन के इन सभी महान क्षेत्रों में वे हर जगह एक नायक के रूप में दिखाई देते हैं"।

एक अन्य स्थान पर वे लिखते हैं-

"Historical records show that all contemporaries of Muhammad, both friends and foes, acknowledged the sterling qp[b ualities, the spotless honesty, the noble virtues, the absolute sincerity and trustworthiness of the apostle of Islam in all walks of life."

(Ramakrishna Rao, K. S. *Muhammad: The Prophet of Islam.* Hyderabad: Reprinted from Islam and Modern Age, March 1978, page 8)

अनुवाद-

"ऐतिहासिक अभिलेख यह दर्शाते हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सभी समकालीन—चाहे मित्र हों या शत्रु—इस्लाम के पैग़म्बर की उत्कृष्ट विशेषताओं, निष्कलंक ईमानदारी, महान नैतिक गुणों, पूर्ण निष्ठा तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी विश्वसनीयता को स्वीकार करते थे"।

एक यहूदी मनोवैज्ञानिक की दृष्टि में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

15 जुलाई 1974 को साप्ताहिक अमरीकी पत्रिका 'टाइम्स' में **"Who were History's Greater"** इतिहास में महान नायक कौन-कौन थे? जिस विषय में विभिन्न विशिष्ट व्यक्तियों के विचार छापे थे। अमरीकी मनोवैज्ञानिक जूल्स माज़र मैन **(Jules Masserman)** ने अपने मत के तीन आधार बताये हैं कि उसे-

1. जनता के लिए रहन-सहन का अच्छा प्रबन्ध करने वाला होना चाहिए।
2. एक ऐसी सामाजिक अर्थ-व्यवस्था का स्थापक होना चाहिए जिसमें लोग अपने को सुरक्षित समझें।
3. एक ही मान्यता के आधार मत पर लोगों को चला सकने वाला होना चाहिए।

श्री माज़र मैन के अनुसार-

उपर्युक्त सभी गुण हज़रत मुहम्मद में थे, जिसे श्री माज़र मैन ने इस प्रकार सिद्ध किया है-

"Leaders must fulfill three functions: First, they must provide for the well-being of the led. Second, they must provide a social organization in which people feel relatively secure. Third, they must

provide people with a set of beliefs. Those like Pasteur and Salk fulfill the first function. Gandhi and Confucius fulfilled the second. Leaders like Alexander, Caesar and Hitler fulfilled the third. Jesus and Buddha belong to the third category also. Muhammad is the only one in history who fulfilled all three functions."

(Jules Masserman, "Who Were History's Great Leaders?" *TIME Magazine*, July 15, 1974, New York, USA)

अनुवाद-

नेताओं को तीन कार्य पूरे करने होते हैंः पहला—वे अपने अनुयायियों के कल्याण की व्यवस्था करें। दूसरा—वे ऐसी सामाजिक व्यवस्था स्थापित करें जिसमें लोग स्वयं को सुरक्षित महसूस करें। तीसरा—वे लोगों को एक साझा विश्वास और विचारधारा प्रदान करें। पास्चर और सॉक जैसे लोग केवल पहला कार्य पूरा करते हैं।

गाँधी और कन्फ्यूशियस दूसरा कार्य पूरा करते हैं। सिकन्दर, सीजर और हिटलर जैसे नेता तीसरे कार्य को पूरा करते हैं। ईसा मसीह़ और बुद्ध भी इसी तीसरी श्रेणी में आते हैं।

इतिहास में केवल मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने ये तीनों कार्य एक साथ पूर्ण किये।

एक ईसाई विद्वान के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

अमेरिकी ईसाई इतिह़ासकार एवं गणितज्ञ माइकल एच० हार्ट (Michael H. Hart) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक The 100 A Ranking of the Most Influential Persons in History में इतिह़ास की 100 सबसे प्रभावशाली महान व्यक्तियों की क्रमबद्ध सूची प्रस्तुत की है।

इस सूची में उन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को प्रथम स्थान दिया है जबकि ह़ज़रत ईसा मसीह़ (अ़लैहिस्सलाम) को तृतीय स्थान पर रखा है।

"My choice of Muhammad to lead the list of the world's most influential persons may surprise some readers and may be

questioned by others, but he was the only man in history who was supremely successful on both the religious and secular levels."

(Hart, Michael H. ***The 100: A Ranking of the Most Influential Persons in History.*** **New York: Hart Publishing Company, 1978, page 3–4)**

अनुवाद–

विश्व के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को प्रथम स्थान देने का मेरा निर्णय कुछ पाठकों को आश्चर्यचकित कर सकता है और कुछ लोग इस पर प्रश्न भी उठा सकते हैं, लेकिन इतिहास में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो धार्मिक और सांसारिक दोनों स्तरों पर पूर्ण रूप से सफल रहे।

पहली विशेषता का दूसरा भाग

'नराशंसमिह मिहाप्रिय.....(ऋग्वेद, 1:13:3 भाग-एक प्रथम खण्ड पेज नं० 47)

अनुवाद– मनुष्यों द्वारा प्रशंसित प्रिय।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

नराशंस सबको प्रिय होगा–

पहली विशेषता के दूसरे भाग में बताया गया है कि वह प्रिय होगा, जिस के कुछ प्रमाण हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से सम्बन्धित निम्नलिखित हैं–

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से उनके अनुयाइयों ने जैसे प्रेम किया वैसा प्रेम किसी धर्मगुरु के साथ उनके अनुयाइयों ने नहीं किया। जिस का उदाहरण निम्न है–

हज़रत अबू बक्र के साथ घटना–

(1) एक बार हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कअ़बः में नमाज़ पढ़ रहे थे कि मक्का के विधर्मी सरदारों में से एक दुष्ट आपकी गर्दन में चादर डालकर ऐंठने

लगा जिससे आपका गला घुटने लगा। इतने में ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि०) को ख़बर पहुँची तो दौड़े हुए आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बचाने के लिए आये तो दुष्टों ने उनको इतना मारा कि वह बेहोश हो गये और उनके साथी उनको उठाकर घर ले गये, वहाँ कुछ देर के बाद जब होश आया तो सबसे पहले कहा जब तक मैं ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को देख न लूँ कुछ खा पी नहीं सकता। फिर उनकी माँ रात ही में उन्हें ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास ले आईं तब उनसे मिलने के बाद कुछ खाया पिया।

(सीरत इब्ने हिशाम-अस्सीरतुन्नबवीया भाग एक पेज नं० 49-50)

ह़ज़रत अबू दुजाना के साथ घटना-

(2) एक बार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर युद्ध में तीरों की वर्षा होने लगी तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के एक प्रेमी ह़ज़रत अबू दुजाना (रज़ि०) ने आपकी रक्षा के लिए अपनी पीठ को ढाल बना लिया और जो भी तीर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर आता उसे वह अपनी पीठ से रोक लेते थे।

(सीरतुन्नबवीया भाग-3 पेज नं० 49-50)

ह़ज़रत तल्ह़ा के साथ घटना-

(3) एक दुश्मन ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर तलूवार का वार करना चाहा तो ह़ज़रत तल्ह़ा (रज़ि०) ने उसे अपने हाथ पर रोक लिया जिससे उनका हाथ कट कर गिर गया। (तबक़ातुल कुबरा-भाग-3 पेज नं० 65-166)

ह़ज़रत सव्वाब के साथ घटना-

(4) एक बार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के एक साथी सव्वाब बिन गज़ीया अन्सारी नामक सहचर (सह़ाबी) हँसी-हँसी की बातें कर रहे थे कि अचानक ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हँसी-हँसी में उनके पेट में छड़ी कोंच दी, तो उन्होंने कहा हम आपसे बदला लेंगे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तैयार हो गये। इस पर उन्होंने कहा, जिस समय आपने मेरे पेट में लकड़ी कोंची थी है उस समय मेरे शरीर पर कपड़ा नहीं था और इस समय

आपके शरीर पर कपड़ा है। यह सुनते ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कुर्ता उलट दिया, उलटते ही तुरन्त वह आप से लिपट गये और उस स्थान को चूम लिया और कहा यही मेरी कामना थी। (सीरतुन्नबवीया भाग-2, पेज नं० 269)

उदाहरण के रूप में यह चन्द घटनाएँ लिखी गई हैं वरना आपके पूरे जीवन काल की घटना का उल्लेख किया जाए तो हज़ारों पन्ने कम पड़ जाएँगे।

केवल इन घटनाओं से अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय से आज तक का चाहे कितना बिगड़ा हुआ मुसलमान हो, सब कुछ सहन कर सकता है परन्तु आपका अपमान सहन नहीं कर सकता, तो उस समय के लोग कितना प्रेम करते रहे होंगे, इतना ही नहीं बल्कि प्रत्येक धर्म के मानने वाले भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रेम करते हैं, जिससे कुर्आन के इस आयत की पुष्टि होती है। जैसा कि कुर्आन कहता है-

"वमा अरसलनाका इल्ला रह़मतल्लिलू़आलमीन"

दूसरी विशेषता

उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो....(अथर्ववेद 20:127:2)

अनुवाद- जिसका वाहन ऊँट है।

नरशंस की सवारी-

यह बात शोधकर्ताओं के निकट सर्वमान्य है कि अथर्ववेद चारों वेदों में सबसे बाद में संकलित किया गया। इस ऐतिह़ासिक क्रम का एक महत्वपूर्ण परिणाम यह निकलता है कि अथर्ववेद में जिन व्यक्तियों या गुणों का उल्लेख मिलता है, वह या तो उसके बाद के काल से सम्बन्धित हैं या कम से कम उनका प्रकट होना अथर्ववेद की रचना के बाद किसी समय में अपेक्षित माना जाता है।

इसी सिद्धान्त के आलोक में जब हम अथर्ववेद 20:127:2 के मंत्र का अध्ययन करते हैं, तो वहाँ नराशंस से सम्बन्धित एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और अर्थपूर्ण विशेषता सामने आती है अर्थात नरशंस को सवारी के रूप में ऊँट के

प्रयोग करने का उल्लेख है।

उष्ट्र सवारी का उल्लेख-

मंत्र में जिस व्यक्तित्व का उल्लेख है, उसकी सवारी 'ऊष्ट्र' बताई गई है जो संकेत केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि एक स्पष्ट भौगोलिक संकेत है। अर्थात वह व्यक्तित्व ऐसे समय और ऐसे क्षेत्र में प्रकट होगा जहाँ ऊँट सवारी के रूप में प्रचलित हों अर्थात मरुस्थलीय (रेगिस्तानी) वातावरण।

इतिहास से यह सिद्ध होता है कि ऊँट मूलतः मरुस्थलीय क्षेत्रों (अ़रब, हिजाज, नज्द) की प्रमुख सवारी रहा है।

प्राचीन कृषि प्रधान या वैदिक क्षेत्रों में ऊँट सामान्य सवारी के रूप में प्रचलित नहीं था। इसलिए वैदिक मंत्र में ऊँट का स्पष्ट उल्लेख एक स्पष्ट भौगोलिक पहचान प्रदान करता है।

नरशंस की सवारी में समानता-

यह तथ्य प्रमाणित है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जीवन में ऊँट एक महत्वपूर्ण और निरन्तर सवारी रहा। इसके कुछ प्रमुख प्रमाण निम्नलिखित हैं-

हिज्रत का प्रसंग-

जब मक्का में विरोध चरम पर पहुँच गया और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हत्या की साजिश रची गई, तब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने सहयात्री ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि०) के साथ ऊँटनी पर सवार होकर मदीना की ओर प्रस्थान कर गये। (सीरत इब्ने हिशाम- सीरतुन्नबवीया, भाग-2 पेज नं० 91-94)

फ़तेह़ मक्का-

इस्लामी इतिह़ास का यह महान क्षण भी इस तथ्य की पुष्टि करता है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ऊँट पर सवार होकर मक्का में प्रवेश किया था। यह न केवल ऐतिह़ासिक परम्परा है, बल्कि अ़रब समाज में ऊँट की केंद्रीय

भूमिका का भी द्वयोतक है। (सीरत इब्ने हिशाम- सीरतुन्नबवीया भाग-4 पेज नं० 24-26, तब्क़ात इब्ने सअ़द भाग-2 पेज नं० 135-136)

ह़ज्जतुल-विदाअ़-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने अपने जीवन का अन्तिम ह़ज ऊँटनी पर सवार होकर अदा किया। इस अवसर पर दिये गये आपके उपदेश और ह़ज के तरीक़े पूरी उम्मत के लिए स्थायी मार्गदर्शन बन गये।

(तब्क़ात कुब्रा, इब्ने सअ़द भाग-2 पेज नं० 173-178)

इन प्रमाणों के आलोक में निम्नलिखित बिन्दु स्पष्ट होते हैं-

अथर्ववेद में नराशंस की सवारी के रूप में ऊँट का उल्लेख एक ऐतिह़ासिक और भौगोलिक संकेत है। जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के जीवनमें ऊँट की निरन्तर और प्रमुख भूमिका इसी संकेत से सामंजस्य रखती है। यह समानता मात्र संयोग नहीं, बल्कि पाठगत ऐतिह़ासिक और भौगोलिक प्रमाणों का संयुक्त परिणाम है।

शैक्षणिक रूप से इस समानता को तुल्नात्मक और संभाव्य तर्क के दायरे में रखा जाए अर्थात वैदिक पाठ एक विशेषता प्रस्तुत करता है और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का जीवन उस विशेषता की ऐतिह़ासिक अनुप्रयोग/तथ्यात्मक संगति दिखाती है।

तीसरी विशेषता

नराशंस मिध्ियम सिष्य उप ह्वये। मधुजिह्वं हविष्कृतम्।

(ऋग्वेद संहिता 1/13/3)

अनुवाद-

"मनुष्य द्वारा प्रशंसित प्रिय अग्नि को इस यज्ञ-स्थान में बुलाता हूँ। वह मधु-जिह्व और हवि के सम्पादक हैं"।

(अनुवाद- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, ऋग्वेद (प्रथम खण्ड) संस्कृति संस्थान, बरेली, संशोधित संस्करणः सन् 2002 पृष्ठ संख्या-48)

नराशंस मधुर वाणी वाला होगा

नराशंस और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वाणी में समानता–

ऋग्वेद में 'नराशंस' को 'मधुजिह्व' कहा गया है अर्थात उसमें वाणी की मधुरता होगी। मधुर-भाषिता उसके व्यक्तित्व की ख़ास पहचान होगी। सभी जानते हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वाणी में कितनी मिठास थी।

(ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रन्थ-डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव पृष्ठ संख्या-10)

ऋग्वेद के मंत्र में नराशंस के लिए जो गुण बताये गये हैं, उनमें एक अत्यन्त प्रमुख गुण "मधुजिह्वं" है। इसका शाब्दिक अर्थ है "जिसकी जीभ शहद जैसी मीठी हो" अर्थात् मधुर वाणी, कोमल हृदय को आकर्षित करने वाली भाषा।

मधु = शहद, मिठास। जिह्वा = जीभ

मधुजिह्वा = मधुर वाणी, कोमल और आकर्षक संवाद

वैदिक शैली में यह संयोग नैतिक और आमंत्रणात्मक प्रभावशीलता को दर्शाता है। ऐसी भाषा जो कठोरता के बजाय बुद्धिमत्ता, कोमलता और प्रभाव से काम ले। "मधुजिह्वं" अर्थात मधुर वाणी वाला। साथ ही उसे "दूतम" अर्थात सन्देश पहुँचाने वाला दूत भी बताया गया है, जो यज्ञ की प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभाता है।

मधुर वाणी या 'दूतम'–

यहाँ "मधुजिह्वा" को केवल एक रूपक या काव्यात्मक विशेषण नहीं समझना चाहिए बल्कि यह उस व्यक्तित्व के वचन की प्रभावशीलता, कोमलता और स्वीकार्यता की ओर स्पष्ट संकेत है।

वैदिक परम्परा में ऐसी अभिव्यक्ति उसी ह़स्ती के लिए प्रयुक्त होती है जिसकी बातचीत कठोरता के बजाय विवेक, मधुरता और नैतिक प्रभाव रखती हों अर्थात जिसकी बात श्रोताओं के हृदय में उतर जाए और जिसका सन्देश

स्वीकृति प्राप्त करे।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वाणी-

ह़दीस और क़ुर्आन दोनों इस सत्य पर स्पष्ट साक्ष्य प्रदान करते हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वाणी अत्यन्त कोमल, मधुर और हृदयों को प्रभावित करने वाली थी।

अह़ादीस की प्रामाणिक रिवायतों में बार-बार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का धैर्य करुणा, मधुर भाषण, सहनशीलता और विवेकपूर्ण वक्तव्य का उल्लेख मिलता है। ये गुण इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सन्देश केवल शब्दों का समूह नहीं था, बल्कि उसे ऐसी प्रभावशाली और मनोहर भाषा में प्रस्तुत किया जाता था, जो सीधे श्रोता के दिल में उतर जाती थी। ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस अन्दाज़ से बातचीत फ़रमाते हैं कि अगर कोई व्यक्ति शब्दों को गिनना चाहता तो आसानी से गिन सकता था।

(मुस्नदुलह़मीदी भाग-एक पेज नं० 120 ह़दीस नं० 243)

यही वह विशेषताएँ हैं जिन्हें वैदिक शब्दावली में "मधुजिह्वं"(मधुर वाणी वाला) कहा गया है और जिन्हें नराशंस के गुण के रूप में वर्णित किया गया है।

मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की कोमल और मनोहारी भाषा ऐतिह़ासिक रूप से सिद्ध है।

दोनों में साझा मूल्य वाणी की नैतिक और प्रभावकारी शक्ति है अर्थात वही बात प्रभावी होती है, जो नर्मी, विवेक और मधुरता के साथ कही जाए।

यह समानता पाठगत शाब्दिक प्रमाणों पर आधारित तुल्नात्मक तर्क है।

चौथी विशेषता

नराशंस प्रति धामानि अजनू
तिस्रो दिवः प्रति महाः स्वर्चिः॥ (ऋग्वेद-मण्डल-2, सूक्त-3, मन्त्र-2)

अनुवाद-

"नराशंस नाम वाले अग्निदेव अपनी महत्ता से प्रदीप्त हुए तीनों लोकों को व्याप्त करते हैं"। (अनुवाद- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, ऋग्वेद (प्रथम खण्ड) संस्कृति संस्थान, बरेली, संशोधित संस्करणः सन् **2002** पृष्ठ संख्या-**371**)

नराशंस सौंदर्य, दिव्य तेज और ज्ञान का प्रसार करेगा-

नराशंस को सुन्दर कान्तिवाला बताया गया है। इस विशेषता का उल्लेख करते हुए ऋग्वेद में 'स्वर्चि' शब्द आया है। 'स्वर्चि' शब्द का विच्छेद है 'शोभना अर्चिष्य सः' यानी सुन्दर दीप्ति या कान्ति से युक्त। इस शब्द का तात्पर्य यह है कि इतने सुन्दर स्वरूप का व्यक्ति जिसके चेहरे से रोशनी-सी निकलती हो, ऋग्वेद में ही बता दिया गया है कि वह अपने महत्व से घर-घर को प्रकाशित करेगा। स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने घर-घर में ज्ञान की ज्योति जलाई, अज्ञानता को ख़त्म कर दिया और अंधकार में भटक रहे लोगों को नई रौशनी दी।

(हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रन्थ-डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव पृष्ठ संख्या-**11**)

व्याख्या-

यहाँ नराशंस (नराशंस) को एक ऐसी महान हस्ती के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसका प्रभाव व्यापक दायरे में फैलता है। "महाः स्वर्चिः" का अर्थ उसकी दिव्य ज्योति, तेज़, गौरव और महानता को प्रकट करता है जो केवल स्थानीय नहीं, बल्कि सार्वभौमिक स्वरूप रखती है। जिसका संदेश आध्यात्मिक प्रकाश और नैतिक गौरव से परिपूर्ण हो।

"प्रति धामानि अजन्"-

इसी मंत्र में नराशंस के विषय में यह भी कहा गया है कि वह "प्रतिधामानि अजन्" अर्थात् प्रत्येक घर/ प्रत्येक स्थान में प्रकट होता है। यहाँ "अजन्" शब्द "अजु" धातु से बना है। जिसका मूल अर्थ प्रकट होना, प्रकाशित करना और फैलना है।

यहाँ एक शंका उत्पन्न हो सकती है कि "अग्नि" भी इसी धातु-परिवार से सम्बन्धित है और वह जलाने वाली आग है, किन्तु यह शंका प्रयोग-परिस्थिति (संदर्भ) को नज़र अन्दाज़ करने से उत्पन्न होती है। संस्कृत में शब्द अपने संदर्भ और प्रयोग-स्थल के अनुसार अर्थ देते हैं। नराशंस के साथ "अजु" धातु का प्रयोग जलाने के अर्थ में नहीं, बल्कि प्रकाशित करने और प्रकट करने के अर्थ में हुआ है। जैसा कि स्वयं मंत्र के समग्र भाव से स्पष्ट होता है।

घर-घर को रौशन करना-

नराशंस के विषय में "हर घर को रौशन करने" का अभिप्राय भौतिक अग्नि नहीं, बल्कि ज्ञान और मार्गदर्शन की रोशनी है। वैदिक शैली में प्रकाश/नूर का प्रयोग प्रायः ज्ञान, चेतना और मार्गदर्शन के रूप में किया जाता है।

स्वर्चिः= प्रकाशमय सौंदर्य और गौरव और प्रति धामानि= हर घर, हर बस्ती- इन दोनों का संयुक्त भाव यह बनता है कि नराशंस प्रत्येक घर में ज्ञान की रोशनी फैलाने वाला है।

स्वर्चिः शब्द-

ऋग्वेद में नराशंस के लिए जो अभिव्यक्ति "प्रति धामानि" (हर घर, हर बस्ती) के साथ "स्वर्चिः" (प्रकाशमय दीप्ति, गौरव) के शब्दों में आई है, उसका तात्पर्य कदापि भौतिक अग्नि या शारीरिक प्रकाश नहीं है, बल्कि ज्ञान, मार्गदर्शन और चेतना की रोशनी है। वैदिक अभिव्यक्ति-शैली में प्रकाश को प्रायः आंतरिक/आध्यात्मिक प्रकाश के रूप में प्रयोग किया जाता है-अर्थात ऐसा ज्ञान जो मनुष्य के विचार और कर्म दोनों को आलोकित कर दे।

नरशंस की सुन्दरता, प्रकाश और ज्ञान में समानता-

ऋग्वेद में नराशंस को सौंदर्य और प्रकाशमयता से युक्त, प्रत्येक घर तक प्रभाव रखने वाला तथा ज्ञान की रोशनी फैलाने वाला बताया गया है। यह सभी गुण अक्षरशः हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जीवनी में मौजूद थे। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मूल उद्देश्य भी यही था कि अज्ञान की अंधकारपूर्ण अवस्था को

दूर करके ज्ञान, मार्गदर्शन और चेतना की रौशनी हर घर तक पहुँचाई जाए। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सन्देश अरब के एक सीमित क्षेत्र से निकलकर घर-घर और क़ौम-क़ौम तक फैल गया।

अर्थगत सामंजस्य-

वैदिक मंत्र में नराशंस के लिए "हर घर को रौशन करने" की अभिव्यक्ति और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में ज्ञान और मार्गदर्शन की वैश्विक प्रसार-भावना-इन दोनों के बीच एक स्पष्ट अर्थगत सामंजस्य पाया जाता है।

यही सामंजस्य इस तुलनात्मक अध्यन को भाषिक और ऐतिहासिक प्रमाणों पर आधारित मजबूत शोधात्मक तर्क बनाता है।

यही गुण हमें हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जीवनी में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुबूवत किसी एक क्षेत्र, क़ौम या वर्ग तक सीमित नहीं थी, बल्कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को समस्त मानवता के लिए रसूल बनाकर भेजा गया।

आपका सन्देश मक्का की वादी से शुरु हुआ और मदीना में सुदृढ़ हुआ। फिर अल्प समय में अरब से बाहर फैलकर विभिन्न क्षेत्रों और समाजों तक पहुँचा। यह विस्तार और व्यापक प्रभाव उसी सत्य का द्योतक है, जिसे वैदिक मंत्र में "विभिन्न धामों" और "तीनों आकाशों" की अभिव्यक्तियों द्वारा व्यक्त किया गया है।

पाँचवीं विशेषता

<u>नराशंस वाजिनं वाजयत्रिह</u> क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे।
रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वस्मात्रो अंहसोनिष्पिपर्तनम्।।

(ऋग्वेद 1:106:4)

अनुवाद-

"मनुष्यों द्वारा स्तुत्य बलवान अग्नि को पूजते हुए हम वीरों के स्वामी

पूषा को स्तुति करते हैं। हे कल्याणकारी वस्तुदेवो! रथ को निकालने के समान हमको पापों से निकालो"।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, ऋग्वेद (प्रथम खण्ड) संस्कृति संस्थान, बरेली, संशोधित संस्करणः सन् 2002 पृष्ठ संख्या-206)

नराशंस लोगों को पापों से निकालेगा

भावार्थ-

हम नराशंस की स्तुति करते हैं, जो शक्तिशाली है, शक्तियों को बढ़ाने वाला है, वीर पुरुषों का सहारा है और पोषण करने वाला है। वह हमें अपनी कृपा और अनुग्रह प्रदान करता है। जैसे एक मज़बूत रथ मनुष्य को कठिन और दुर्गम मार्गों से बाहर निकाल ले जाता है, उसी प्रकार उदार और धर्मपरायण वसु देवता हमें चारों ओर से पाप और विपत्तियों से बचा लेते हैं।

इस श्लोक के सम्बन्ध में डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव अपनी पुस्तक "हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रंथ" में लिखते हैं-

"ऋग्वेद में नराशंस को 'लोगों को पापों से दूर करने वाला' बताया गया है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की समस्त शिक्षाएँ और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अवतरित कुर्आन मजीद सम्पूर्ण मानव जीवन को पापों से दूर कर देता है। उस पर अमल करके मनुष्य सभी पापों से छुट्कारा पा लेता है। उसका सांसारिक जीवन भी सुखद हो जाती है और मृत्यु के बाद का जीवन भी सफल और समृद्ध बन जाता है"।

(हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रंथ, डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव, पृष्ठ संख्या-12)

व्याख्या-

ऋग्वेद में नराशंस को 'पापों से लोगों को हटाने वाला' बताया गया है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की समस्त शिक्षाएँ और आप पर अवतरित कुर्आन समस्त जीवन को पापों से दूर करता देता है अर्थात उस पर अमल करके व्यक्ति को तमाम पापों से छुट्कारा मिल जाता है। उसकी दुनियावी और मरने के बाद की ज़िन्दगी खुशहाल हो जाती है। (हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रन्थ-डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव पृष्ठ संख्या-12)

नराशंस के गुणों को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रतीकात्मक और शोधात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया जा रहा है। यह तुलनात्मक और अर्थगत सामंजस्य है।

पापों से निकालने में समानता-

ऊपर दिये गये ऋग्वेद के मंत्र में नराशंस को ऐसी सत्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो मनुष्यों को पापों और विपत्तियों से निकालने वाला है, वह शक्ति प्रदान करने वाला, सुधार करने वाला और कल्याण व भलाई की ओर मार्गदर्शन करने वाला है।

मंत्र के शब्द 'रथं न दुर्गाद्' एक उपमा के माध्यम से यह भाव प्रकट करते हैं कि जिस प्रकार एक मज़बूत रथ मनुष्य को कठिन और दुर्गम मार्गों से सुरक्षित निकाल ले जाता है, उसी प्रकार नराशंस लोगों को नैतिक और व्यावहारिक भ्रांति/पथभ्रष्टता से बचा लेता है।

यह गुण ऐतिह़ासिक रूप से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

नुबूवत से पूर्व अरब समाज जाहिलियत, अत्याचार, अश्लीलता, शराब, सूद, जुआ, हत्या-और-खूनखराबा तथा क़बीलाई पक्षपात में डूबा हुआ था। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नैतिक सुधार के माध्यम से व्यक्तियों और समाज को पापों से निकालने की एक संगठित प्रक्रिया आरम्भ की। यही वह अर्थगत बिन्दु है जो नराशंस की विशेषता "अंहसो निष्पिपर्तनम" (अर्थात पापों से छुट्कारा देने वाला) के साथ प्रतीकात्मक सामंजस्य रखता है।

शक्ति प्रदान करने वाला-

नराशंस को "वाजिन" (शक्तिशाली) और "क्षयद्वीर" (वीर पुरुषों का सहारा) कहा गया है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जीवन में यह गुण इस प्रकार प्रकट होता है कि आप ने कमज़ोरों, गुलामों, स्त्रियों और पीड़ित वर्गों को सम्मान, अधिकार और साहस प्रदान किया। आपने भयभीत समाज में नैतिक साहस उत्पन्न किया और सत्य के लिए खड़े होने की शक्ति दी।

पोषण और करुणा-

मंत्र में "पोषण" (पालन-पोषण करने वाला) की अवधारणा केवल शारीरिक नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक पालन-पोषण की ओर संकेत करती है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षाओं ने मनुष्य की विचार-प्रणाली, नियत और चरित्र-तीनों का प्रशिक्षण किया। यही कारण है कि बुराई के उन्मूलन के साथ-साथ भलाई के प्रसार को जीवन-लक्ष्य बनाया गया।

रथ की उपमा-

रथ की उपमा यह स्पष्ट करती है कि सुधार की प्रक्रिया क्रमिक, सुदृढ़ और मार्गदर्शन-आधारित होती है। नबवी पद्धति भी यही थी, पहले आस्था (अ़क़ीदा) फिर नैतिकता और फिर क़ानून, ताकि मनुष्य ख़तरनाक नैतिक मार्गों से निकलकर शांति और न्याय के पथ पर आ सके।

इस प्रकार नराशंस की विशषताएँ पापों से मुक्ति, शक्ति और सहारा, पोषण तथा क्रमिक सुधार-ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नबवी पद्धति में प्रतीकात्मक और अर्थगत सामंजस्य के साथ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं।

छठी विशेषता

एषा इषाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम् ॥

(अथर्ववेद-काण्ड 20, सूक्त 127, मन्त्र 3)

अनुवाद-

"अन्न-प्राप्ति के निमित्त में सौ निष्क, तीन सौ अश्व, दस सहस्रा धेनु और दश माला दे देता हूँ"। (अनुवाद- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, अथर्ववेद (द्वितीय खण्ड) संस्कृति संस्थान, बरेली, संशोधित संस्करणः सन् 2002 पृष्ठ संख्या-1060)

"अर्थात ईश्वर मामहे ऋषि को सौ सोने के सिक्के देगा, दस हज़ार गाय देगा, तीन सौ अ़रबी घोड़े देगा और दस हार"।

(ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रन्थ-डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव पृष्ठ संख्या-13)

नराशंस का एक सांसारिक नाम

(1) शतं निष्कान (सौ निष्क)-

अर्थः सोने के सिक्के

प्रतीकात्मक भाव- नुबूवत की महानता, सम्मान, गरिमा और दैवी चयन।

(2) दश स्रजः (दस हार या मालाएँ)-

हार उस व्यक्ति का प्रतीक है जो नेता के अत्यंत निकट होता है।

प्रतीकात्मक भाव-बलिदान देने वाले चुने हुए व्यक्ति, विशष और प्राणन्यासी सहयोगी।

(3) त्रीणि शतान्यर्वता (तीन सौ घोड़े)-

"अर्वत" का शाब्दिक अर्थ घोड़ा है। वैदिक शैली में घोड़ा शक्ति, गति और वीरता का प्रतीक है।

प्रतीकात्मक भाव- वीर साथी, कर्म-शक्ति, तीव्र गति से फैलती हुई दअ़वत।

(4) सहस्रा दश गोनाम (दस हज़ार गायें)-

वैदिक साहित्य में "गो" केवल पशु नहीं, बल्कि सज्जन और धर्मपरायण मनुष्य का प्रतीक है।

प्रतीकात्मक भाव- धर्मात्माओं की बहुलता, नेक अनुयायी, ज्ञान और बरकत

इस प्रकार यह बात स्पष्ट रूप से स्थापित होती है कि ये सभी गुण और अनुदान वैदिक प्रतीकात्मक भाषा का हिस्सा हैं, न कि प्रत्यक्ष भौतिक सम्पत्ति का विवरण।

"मामहे शब्द" का शोधात्मक अध्ययन-

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपनी पुस्तक "नराशंस और अन्तिम ऋषि" में तथा डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक "हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्म ग्रंथ" में नराशंस की अवधारणा पर विशेष रूप से

अथर्ववेद, कांड 20, सूक्त 127, मंत्र 3 के संदर्भ में विस्तृत शोध प्रस्तुत किया है।

दोनों विद्वानों के अनुसार इस मंत्र में उल्लिखित "मामहे ऋषि" किसी प्राचीन वैदिक ऋषि का व्यक्तिगत नाम नहीं, बल्कि एक गुणात्मक और पदात्मक (वर्णनात्मक/अधिकारिक) उपाधि है। उनके मतानुसार-

मामहे शब्द की विवेचना-

"मामहे" संस्कृत में क्रिया-रूप है, जिसके अर्थ होते हैं- हम प्रार्थना करते हैं, जिसके लिए प्रार्थना की जाती है, जिसे प्रदान किया जाए। यह किसी विशेष नाम के रूप में नहीं, बल्कि एक पदात्मक और गुणात्मक अभिव्यक्ति के रूप में प्रयुक्त होता है।

"ऋषि" वैदिक परिभाषा में केवल "वन में रहने वाला संन्यासी" नहीं, बल्कि-दैवी प्रेरणा से युक्त, मार्गदर्शन देने वाला और मानवता का नेतृत्व करने वाला महान पथ प्रदर्शक होता है।

इस प्रकार "मामहे ऋषि" का शब्दार्थ/भावार्थ यह बनता है, वह चुना हुआ महान् मार्गदर्शक, जिसके लिए दैवी अनुग्रह की कामना की गई हो या जिसे परमेश्वर की ओर से विशेष रूप से प्रदान किया गया हो।

निष्कर्ष-

इसी आधार पर शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि "मामहे ऋषिं" किसी प्रसिद्ध प्राचीन वैदिक ऋषि (जैसे विश्वामित्र, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य आदि) का व्यक्तिगत नाम (Proper Name) नहीं है, बल्कि यह एक गुणात्मक और पदात्मक उपाधि है। यह ऐसी महान हस्ती की ओर संकेत करती है जिसका मिशन, प्रभाव और अनुयायी असाधारण रहे हों।

प्राचीन वैदिक ऋषि-

अनुसंधान और ऐतिहासिक दृष्टि से किसी भी प्राचीन वैदिक ऋषि के साथ न तो दस हज़ार शिष्यों या अनुयायियों का उल्लेख मिलता है, न ही कोई

सार्वभौमिक नैतिक और सामाजिक सुधार आन्दोलन दिखाई देता है और न ही ऐसा वैश्विक तथा दीर्घकालिक ऐतिहासिक प्रभाव मिलता है जो सदियों तक फैला हुआ हो।

इसके विपरीत अथर्ववेद के मंत्र में जिस "मामहे ऋषि" की संकल्पना प्रस्तुत की गई है, उसके गुण स्पष्ट रूप से एक विश्वव्यापी सुधारात्मक मिशन की ओर संकेत करते हैं।

मूल प्रश्न–

इसी शोधात्मक आधार पर कुछ आधुनिक हिन्दू विद्वानों–जैसे डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव और डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय ने यह मूल प्रश्न उठाया कि–

वह कौन–सी ऐतिहासिक व्यक्तित्व है, जिसके साथ व्यावहारिक रूप से दस हजार लोग एकत्र हुए?

जिसने नैतिक, धार्मिक और सामाजिक क्रांति स्थापित की। जिसके नेतृत्व में बिना रक्तपात एक महान विजय घटित हुई। जिसके साथ लगभग तीन सौ प्राणन्यासी साथी इतिहास में प्रमुख रूप से उल्लेखित हैं और जिसके दस विशेष सहचर त्याग, निष्ठा और विशिष्टता में अनुपम माने जाते हैं?

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और ऐतिहासिक सामंजस्य

इन सभी गुणों की ऐतिहासिक संगति सबसे अधिक स्पष्ट और प्रमाणिक रूप में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत में दिखाई देती है। उदाहरण के तौर पर फ़तेह मक्का के अवसर पर लगभग दस हज़ार सह़ाबा (रज़ि०) का एकत्र होना; गज़्वा–ए–बद्र में लगभग तीन सौ तेरह प्राणन्यासी साथियों की उपस्थिति और अशर–ए–मुबश्शरा–अर्थात् वे दस विशिष्ट सहाबा (रजि०) जिन्हें त्याग, निष्ठा और जन्नत की शुभ–सूचना में विशेष स्थान प्राप्त है।

यह सब मिलकर एक ऐसी सर्वव्यापी नैतिक, सामाजिक और धार्मिक सुधार–आंदोलन की तस्वीर प्रस्तुत करता है, जिसने न केवल अ़रब बल्कि सम्पूर्ण विश्व के इतिहास की दिशा को बदल दिया।

शोधात्मक निष्कर्ष-

इस शोधात्मक और तुलनात्मक अध्यन के आलोक में यह निष्कर्ष निकलता है कि अथर्ववेद के इस मंत्र में उल्लिखित "मामहे ऋषि" कोई प्राचीन वैदिक ऋषि नहीं, बल्कि एक ऐसी महान सुधारक व्यतित्व की गुणात्मक उपाधि है, जिसके वर्णित गुण, प्रतीकात्मक अनुग्रह और ऐतिहासिक प्रभाव सबसे अधिक हज़रत मुहम्मद के जीवन से साम्य रखते हैं।

डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव अपनी पुस्तक "हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रंथ" के पृष्ठ संख्या 14-15 पर लिखते हैं-

अस्हाबे सुफ़्फ़ा-

● "यहाँ मामहे ऋषि से मतलब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ईश्वर द्वारा सौ स्वर्ण मुद्राएँ देने का तात्पर्य ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति से है जो स्तुत्य महत्व के हों। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जो शिक्षाएँ लोगों को देते थे उनकी सुरक्षा का कार्य लगभग सौ व्यक्ति करते थे, यह अस्हाबे सुफ़्फ़ा कहलाते थे। यह लोगों को शिक्षाओं की जानकारी भी देते थे और शिक्षाओं की रक्षा भी करते थे।

● इसी प्रकार दस हज़ार गो प्रदान किये जाने का अर्थ 'अच्छे व्यक्ति दिये जाने से है'। 'गो' अलंकारिक शब्द है, जो साधारणतया अच्छे व्यक्ति के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

सहायकों की संख्या-

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षाओं के अनुयायियों की संख्या आपके जीवन काल के अन्तिम चरण में दस हज़ार थी। मक्का को जीतने के लिए मदीना से जाते समय आपके सहायकों की संख्या दस हजार थी। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दस हज़ार अनुयायी जब मक्का पहुँचे तो वहाँ न किसी प्रकार का युद्ध हुआ न ही किसी अनुयायी ने किसी को नष्ट किया।

इसी कारण उन दस हज़ार लोगों को गो कहा गया।

● नराशंस को तीन सौ अर्वन की प्राप्ति का अर्थ ऐसे वीर योद्धाओं की प्राप्ति है जो घोड़े की तरह तेज हों। 'अर्वन' शब्द का शाब्दिक अर्थ घोड़ा होता है। यह भी गो की भाँति अलंकारिक शब्द है। बद्र की लड़ाई में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथियों (सहाबा) की संख्या तीन सौ थी।

● नराशंस को दस स्रजः या गले का हार दिये जाने से तात्पर्य ऐसे व्यक्ति हैं जो गले के हार के समान हों और नराशंस को प्रिय हों। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दस ऐसे व्यक्ति थे, जो ऊपर अपने प्राणों को भी समर्पित करने को तैयार रहते थे। वे गले के हार की तरह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चारों तरफ़ हमेशा रहते थे। ये दसों व्यक्ति अशर-ए-मुबश्शरा कहे जाते हैं। यह हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वे साथी (सहाबा) हैं, जिन्हें जन्नत की खुशखबरी दी गई"।

(हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रन्थ-डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव पृष्ठ संख्या-14)

इस प्रकार मामहे ऋषि से तात्पर्य हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं। इसी प्रकार डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय ने भी मामहे ऋषि को मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही माना है। जैसा कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रन्थ-डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव पृष्ठ संख्या 15

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय के अनुसार-

वेदों में जिस नराशंस का उल्लेख आया है, डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपनी शोधात्मक कृति "नराशंस और अंतिम ऋषि" में इस बिंदु को विस्तार से स्पष्ट किया है। वैदिक ग्रंथों में जिसे "मामहे ऋषि" (मामहे ऋषि) के नाम से वर्णित किया गया है, उसके गुणों, लक्षणों और मिशन का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वेदों में वर्णित नराशंस की सभी विशेषताएँ हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पवित्र व्यक्तित्व पर ही पूर्णतः लागू होती हैं।

लेखक के अनुसार-

लेखक के अनुसार वैदिक ग्रंथों में नराशंस के विषय में जो विवरण आते हैं। जैसे उसकी सार्वभौमिक अह्वान, नैतिक महानता, संगठित समुदाय, प्राणन्यासी

साथी तथा उसके मिशन का अंतरराष्ट्रीय और सर्वव्यापी प्रभाव ये सभी गुण किसी भी प्रसिद्ध प्राचीन वैदिक ऋषि की जीवनी से मेल नहीं खाते जबकि यही सभी गुण हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में पूर्ण स्पष्टता के साथ दिखाई देते हैं।

इसी आधार पर डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय वैज्ञानिक और शोधात्मक आधारों पर यह मत प्रस्तुत करते हैं कि वेदों में उल्लिखित नराशंस (मामहे ऋषि) का वास्तविक प्रतिरूप हज़रत मुहम्मद ही हैं।

(विस्तार के लिए देखें नराशंस और अन्तिम ऋषि, पृष्ठ 11-20)

इस प्रकार डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय और डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव इस बात पर सहमत हैं कि इस मंत्र में "मामहे ऋषि" को जिन अनुदानों (आतियात) का उल्लेख है, वे भौतिक सम्पत्ति नहीं, बल्कि वैदिक शैली के अनुसार प्रतीकात्मक हैं।

सातवीं विशेषता

एषा इषाय मामहे.....(अथर्ववेद 20:127:3, भाग-2 पेज नं० 1059)

(नराशंस का) एक संसारिक नाम मामह होगा।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

नराशंस को सौ निष्क दिये जाएँगे (शतं निष्कान्)

"निष्क" शब्द का शाब्दिक अर्थ सोने की अशर्फ़ी है, जिसे प्राचीन काल में अत्यन्त मूल्यवान माना जाता था और संकट के समय मनुष्य के काम आती थी। वैदिक और प्रतीकात्मक शैली में निष्क का प्रयोग केवल भौतिक धन के लिए नहीं बल्कि ऐसे विशिष्ट, मूल्यवान और असाधारण व्यक्तियों के लिए भी होता है जो धर्म और नैतिक व्यवस्था के रक्षक तथा शिक्षक हों। इसी अर्थ में इस्लाम के दाइयों और मूल धर्म के संरक्षकों को निष्क से उपमा दी जा सकती है, क्योंकि जैसे सोना मूल्यवान होता है, वैसे ही सच्ची धार्मिक शिक्षाएँ और उनके वाहक भी समाज में अत्यन्त मूल्यवान स्थान रखते हैं।

इसी संदर्भ में मस्जिद-ए-नबवी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में निवास करने वाले अस्ह़ाब-ए-सुफ़्फ़ा का उदाहरण सामने आता है, जो धार्मिक शिक्षा के लिए वहाँ स्थायी रूप से ठहरे रहते थे। "अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती" के अनुसार उनकी संख्या लगभग सौ थी और उन्होंने इस विषय पर एक स्वतंत्र ग्रंथ भी लिखा है। इस तथ्य की पुष्टि अल्लामा शिबली नोमानी ने सीरतुन्नबी (भाग प्रथम, चौथा संस्करण, पृष्ठ 294) में की है।

आठवीं विशेषता

.....दश स्रजः

(नराशंस) दस मालाओं वाला। (अथर्ववेद 20:127:3, भाग-एक पेज नं० 1059)

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

दस मालाओं वाला होगा (दश स्रजः)

अथर्ववेद कांड 20, सूक्त 127, मंत्र 3 में नराशंस के लिए दस स्रजः (मालाएँ) प्रदान किये जाने का उल्लेख मिलता है। शोधकर्ताओं के अनुसार, वैदिक शैली में यह एक प्रतीकात्मक व्याख्या है, जो ऐसे दस अत्यन्त निकट, निष्ठावान और प्रिय व्यक्तियों की ओर संकेत करती है, जो नराशंस के चारों ओर माला की भाँति हों और उससे विशेष निकटता रखते हों।

इसी प्रतीकात्मक अवधारणा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत में दिखाई देती है, जहाँ अशरा-ए-मुबश्शरा-अर्थात वे दस सहाबी जिन्हें ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जन्नत की शुभ-सूचना दी। त्याग, निष्ठा और विशष निकटता में विशिष्ट थे।

अशरा शब्द का अर्थ-

"अशरा" का अर्थ दस और "मुबश्शरा" का अर्थ शुभ-सूचना है। ये दस चयनित सहाबी-ह़ज़रत अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली, तल्हा, जुबैर, सअद बिन अबी वक्कास, सईद बिन जैद, अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ और अबू उबैदा

बिन जर्राह की निकटता और स्थान, प्रतीकात्मक और शोधात्मक दृष्टि से, अथर्ववेद में उल्लिखित दस मालाओं की संकल्पना से अर्थगत सामंजस्य रखती है। यह व्याख्या आस्थागत दावा नहीं, बल्कि अंतरधार्मिक, प्रतीकात्मक और ऐतिहासिक तुलनात्मक अनुसंधान के दायरे में प्रस्तुत की जा रही है।

नवीं विशेषता

त्रीणि शतान्यर्वतां.....(अथर्ववेद 20:127:3, भाग-एक पेज नं० 1059)

.....(नराशंस) तीन सौ अर्वत (घोड़े) से युक्त।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

तीन सौ घोड़े

अथर्ववेद के इस मंत्र में "त्रीणि शतान्यर्वताम्" अर्थात् तीन सौ अर्वत (घोड़े) का उल्लेख वैदिक शैली के अनुसार प्रतीकात्मक (रूपकात्मक) अर्थ रखता है।

शाब्दिक रूप से अर्वत (अर्वत) का अर्थ घोड़ा है।

वैदिक साहित्य में घोड़ा शक्ति, गति, वीरता, क्रियाशील सामर्थ्य और अग्रसरता का प्रतीक माना जाता है।

इसी कारण शोधकर्ताओं के अनुसार यहाँ घोड़ों से अभिप्राय केवल पशु नहीं, बल्कि ऐसे साहसी, सक्रिय और प्राणन्यासी सहयोगी हैं जो नेतृत्व के मिशन को कर्म-शक्ति प्रदान करें और दअ़वत सन्देश को तीव्र गति से आगे बढ़ाएँ।

ऐतिहासिक सामंजस्य की दृष्टि से यह प्रतीक ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उन प्राण न्यासी सह़ाबा से अर्थगत रूप में मेल खाता है, जो आरम्भिक चरण में संख्या में कम होने के बावजूद असाधारण साहस, अनुशासन और व्यावहारिक शक्ति के धनी थे।

विशेषकर बद्र के अवसर पर लगभग तीन सौ सह़ाबा की वह जमाअ़त,

जिसने संख्यात्मक अल्पता के बावजूद नैतिक संयम और व्यवहारिक वीरता की अनुपम मिसाल क़ायम की।

इस प्रकार "तीन सौ घोड़े" की अभिव्यक्ति कर्म-शक्ति, वीरता और तीव्रगामी दअ़वत की प्रतीकात्मक उपमा के रूप में, अंतरधार्मिक तुलनात्मक अध्ययन में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के प्राणन्यासी साथियों पर प्रतीकात्मक और ऐतिहासिक रूप से लागू की जाती है। यह व्याख्या आस्थागत दावा नहीं, बल्कि शैक्षणिक और रूपकात्मक सामंजस्य है।

दस्वीं विशेषता

.....सहस्रा दश गोनाम (अथर्ववेद 20:127:3, भाग-एक पेज नं० 1059)

.....(नराशंस) दस हज़ार गौओं से युक्त।

(संकलन एवं अनुवादक- पं० श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान बरेली-2002)

नराशंस-दस हज़ार "गौ" वाला होगा

अथर्ववेद में नराशंस को "दस हज़ार गौ" प्रदान किये जाने का उल्लेख आता है, जिसे कुछ विद्वान प्रतीकात्मक भविष्यवाणी के रूप में लेते हैं। उनके अनुसार वैदिक भाषा में "गौ" के कई अर्थ पाये जाते हैं।

1. कुछ व्युत्पत्तिगत व्याख्याओं में इसे युद्ध और विजय लाभ के संदर्भ से जोड़ा जाता है।
2. यह प्रशंसनीय, शत्रु पर विजय पाने वाला और शक्तिशाली के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है।
3. कुछ स्थानों पर आज्ञाकारी/अनुयायी मनुष्य के लिए उपमा के रूप में आता है।
4. "गौ" का प्रयोग भलाई कल्याण के अर्थ में भी किया जाता है।

शान्ति और अनुशासक-

इन्हीं अर्थों के आधार पर आधुनिक तुलनात्मक विद्वान यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहाबा में आज्ञाकारिता, शक्ति, भलाई और नैतिक श्रेष्ठता जैसी विशेषताएँ प्रमुख थीं।

इसके अतिरिक्त, ऐतिहासिक रूप से फ़तेह मक्का के अवसर पर लगभग 'दस हज़ार सहाबा' का आपके साथ एकत्र होना भी वर्णित है और यह विजय बड़े पैमाने पर शान्ति और अनुशासन के साथ सम्पन्न हुई।

इसी समानता के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि नराशंस की "दस हज़ार गौ" वाली विशेषता को प्रतीकात्मक और ऐतिहासिक सामंजस्य के रूप में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के 'दस हज़ार सहाबा' पर लागू किया जा सकता है।

यह व्याख्या अंतरधार्मिक और तुलनात्मक अनुसंधान के दायरे में प्रस्तुत की गई है।

मामहे के दो प्रमुख गुण-

इसी प्रकार ऋग्वेद (मण्डल 5, सूक्त 27, मंत्र-1) के सम्बन्ध में डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव अपनी पुस्तक "हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रंथ" के पृष्ठ 15 पर इस प्रकार लिखते हैं-

अनस्वन्ता सतपतिर्मामहे मे
गावा चेतिठो असुरो मघोनः।
त्रैवृणो अग्ने दशभिः सहस्रैः
विश्वानरः प्रथयन् विचक्तम

(ऋग्वेद- मण्डल 5, सूक्त 27, मन्त्र 1)

"अर्थात हक़परस्त, अत्यन्त विवेकशील, शक्तिशाली, दानी मामहे ऋषि ने कलाम (वाणी) के साथ मुझे सुशोभित किया। सर्वशक्तिमान, सब खूबियाँ रखने वाला, सारे संसार के लिए कृपामय, दस हज़ार सहयोगियों (सहाबा) के साथ

मशहूर हो गया"।

इस में मामहे ऋषि के सम्बन्ध में दो प्रमुख गुण बताये गये हैं-

(1) "दशभिः सहस्रैः" अर्थात् दस हज़ार के साथ।

(2) "विश्वानरः" अर्थात् समस्त मानवता से संबंधित, सार्वभौमिक।

(1) "दशभिः सहस्रैः" (दस हज़ार के साथ)

वैदिक साहित्य में संख्याएँ प्रायः केवल गणितीय नहीं होतीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक यथार्थ की ओर संकेत करती हैं। विशेषतः तब जब संख्या के साथ शक्ति, नेतृत्व और प्रसार जैसे कार्य जुड़े हों।

यदि इसे केवल अतिशयोक्ति माना जाए तो प्रश्न उठता है कि दस हज़ार ही क्यों? और यदि इसे वास्तविक संख्या माना जाए तो आवश्यक हो जाता है कि इतिहास में कोई ऐसी व्यक्तित्व हो, जिसके साथ वास्तव में दस हज़ार का संगठित, नैतिक और प्रभावशाली समुदाय उपस्थित हुआ हो।

प्रभावशाली ऋषि-

क्या कोई प्राचीन वैदिक ऋषि ऐसा है, जिसका मिशन जाति, नस्ल और क्षेत्र की सीमाओं से परे हो? और जिसकी शिक्षाएँ सदियों बाद भी जीवित, प्रभावी और वैश्विक बनी रही हों?

ये गुण किसी भी प्रसिद्ध प्राचीन वैदिक ऋषि (जैसे विश्वामित्र, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य आदि) के ऐतिहासिक जीवन से मेल नहीं खाते।

इसके विपरीत, यह विशेषता सबसे स्पष्ट रूप में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत में दिखाई देती है। फ़तेह मक्का के अवसर पर आपके साथ लगभग दस हज़ार सहाबा उपस्थित थे।

मंत्र में जिस व्यक्तित्व के साथ दस हज़ार का उल्लेख आया है, वह मात्र संख्यात्मक नहीं, बल्कि एक सामूहिक, संगठित और नैतिक शक्ति का प्रतीक है।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह गुण सबसे अधिक हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत में परिलक्षित होता है।

फ़तेह़ मक्का के अवसर पर आपके साथ लगभग दस हज़ार सह़ाबा थे और यह समूचा आयोजन रक्तपात के बिना शान्ति, क्षमा और उच्च नैतिक संयम के साथ सम्पन्न हुआ। यह घटना मानव इतिह़ास में एक अद्वितीय उदाहरण है जहाँ विशाल संख्यात्मक शक्ति होने के बावजूद प्रतिशोध के स्थान पर करुणा को प्राथमिकता दी गई। जो मंत्र के संख्यात्मक संकेत की प्रतीकात्मक संगति को सुदृढ़ करती है।

(2) "विश्वानरः" (सार्वभौमिक प्रभाव-क्षेत्र)

शब्द "विश्वानरः" का निर्माण "विश्व" (सम्पूर्ण संसार) "नर" (मनुष्य) से हुआ है अर्थात समस्त मानवता से सम्बन्धित, सार्वभौमिक।

यह शब्द केवल ख्याति के लिए नहीं, बल्कि मिशन के दायरे **(Scope of Mission)** को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है।

विश्वनरः-

"विश्वानरः" की अर्थ-व्याप्ति एक वैश्विक सुधारात्मक मिशन की अपेक्षा करती है। जो ऐतिह़ासिक रूप से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यक्तित्व में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

"विश्वानरः" उस ह़स्ती के सार्वभौमिक मिशन की ओर संकेत करता है। अर्थात वह किसी एक जाति, नस्ल या क्षेत्र तक सीमित नहीं है।

यही गुण ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। आपका सन्देश केवल अ़रब तक सीमित नहीं रहा, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों, जातियों और नस्लों तक पहुँचा। स्वयं कुर्आन ने आपको "रहमतुल्-लिल्-आ़लमीन" कहा-

"वमा अरसलनाका इल्ला रहमतल लिल्-आ़लमीन"

(सूरः अम्बिया-107)

अनुवाद-

"हमने आपको समस्त संसारों के लिए दया बनाकर भेजा"।

यह सार्वभौमिकता केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि नैतिक और मानवीय है न्याय, करुणा और मानवीय गरिमा की सर्वव्यापी दअ़वत है।

दस हज़ार की सम्बद्धता–

अर्थात मामहे ऋषि के साथ दस हज़ार की सम्बद्धता (एक संगठित समुदाय) और सार्वभौमिक विशेषण "विश्वानरः" इन दोनों से यह स्पष्ट होता है कि ये गुण प्राचीन वैदिक ऋषियों की ज्ञात जीवनियों से ऐतिहासिक रूप से मेल नहीं खाते, जबकि यही गुण ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की सीरत में असाधारण स्पष्ता के साथ पाये जाते हैं।

यह दृष्टिकोण किसी धार्मिक आस्था का निर्णय नहीं है और न ही इसका उद्देश्य किसी को आरोपित करना है। बल्कि यह एक अंतरधार्मिक, प्रतीकात्मक और ऐतिहासिक तुलूनात्मक अध्ययन **(Interfaith, Symbolic & Historical Comparative Study)** है।

ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि यह व्याख्या कुछ आधुनिक हिन्दू शोधकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत की गई है। जिन्होंने वैदिक ग्रंथों को ऐतिह़ासिक, भाषिक और तुलूनात्मक अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया है।



भाग–2

पुराणों
की
भविष्यवाणियाँ

पुराणों की भविष्यवाणियाँ

हिन्दू धार्मिक परम्परा में 'कल्कि अवतार' की अवधारणा कलियुग के अन्तिम चरण में प्रकट होने की कल्पना की जाती है और यह मान्यता है कि वह अधर्म का विनाश और धर्म की पुनः स्थापना करने वाला होगा। जिसका विस्तृत उल्लेख इस प्रकार है-

अवतार का अर्थ

अवतार शब्द 'अव' उपसर्ग पूर्वक 'तृ' धातु में 'धञ्' प्रत्यय लगा कर बना है। अवतार शब्द का अर्थ होता है पृथ्वी पर आना। ईश्वरीय अवतार का अर्थ होता है, परमेश्वर की ओर से सन्देश लाने वाला सन्देष्टा।

परमेश्वर (अल्लाह) चूंकि सर्वव्यापी और असीमित है इसलिए किसी निश्चित स्थान में उसका रूप धारण करना, कहीं आना जाना, यह कथन उस के असीमित को सीमित बना देता है।

परमेश्वर देश काल से परे है, इसलिए वह मनुष्यों ही में से किसी व्यक्ति को चुनता है और उसे परोक्ष ज्ञान प्रदान करता है, जिससे वह सम्पूर्ण मनुष्यों को परमेश्वर का भक्त बनाता है और कहता है कि मैं परमेश्वर का सन्देष्टा हूँ।

सन्देष्टा का अर्थ-

परमेश्वर की ओर से ईश ज्ञान लाने वाले को हिन्दी भाषा में सन्देष्टा, अंग्रेज़ी भाषा में (Prophet) अ़रबी भाषा में 'रसूल' परन्तु सम्बोध एक ही ईश्वरीय सन्देष्टा की ओर होता है, परन्तु अवतार का जो अर्थ प्रचलित है कि परमेश्वर या विष्णु भगवान किसी के रूप में आ जाते हैं यह धारणा अलग है।

पं० श्री राम शर्मा जी के अनुसार अवतार का अर्थ-

अवतार की परिभाषा करते हुए पं० श्री राम शर्मा जी कल्कि पुराण के 278 पृष्ठ पर लिखते हैं, जिसका सारांश इस प्रकार है-

अवतार शब्द की व्याख्या इस प्रकार की जाए तो अनुचित न होगा कि 'समाज' की गिरी हुई दशा में उन्नति की ओर ले जाने वाला "महा मानव नेता"।

यह तो प्रत्यक्ष ही है कि ऐसा असाधारण कार्य कर सकने वाला, ईश्वरीय शक्ति से समन्वित होता है। उच्च जगत आत्माएँ ईश्वरीय आदेश को शिरोधार्य करके, परम पिता की इच्छा पूरी करने के लिए अविलम्ब तैयार हो जाती हैं और लीलापति का साधन बनकर परम सौभाग्य का अनुभव करती हैं, वे अपने पीछे अनन्त यश और अखण्ड श्रद्धा छोड़ जाते हैं। जन समुदाय उनको ईश्वर का दूत, ईशपुत्र या साक्षात भगवान ही मानने लगते हैं- वे ही अवतार कहे जाते हैं"।

अवतार की परिभाषा-

'अवतार' की इस परिभाषा में कोई ऐसी बात नहीं जिससे उसकी कोई त्रुटि या हीनता प्रकट होती हो।

"हमारी सम्मति में अवतार के विषय में यह विवाद उठाना कि वह वास्तव में 'भगवान' ही होते हैं अथवा किसी व्यक्ति में भगवद् शक्ति प्रविष्ट हो जाती है, कुछ भी महत्व नहीं रखता।

ऐसी बातों में सर खपाने वाले वे ही व्यक्ति होते हैं, जिनको कुछ करने धरने के बजाय बहस-मुबाहिसे और खण्डन-मण्डन में ही मज़ा आता है। यह तो कोई कह नहीं सकता कि जिस समय पृथ्वी पर अवतार हुए थे उस समय वैकुण्ठधाम भगवान से खाली हो गया था।

फिर सर्वव्याप्त ईश्वर के लिए यह विवाद उठाना कि वह कब कहाँ रहते हैं अपनी अज्ञानता का परिचायक है"।

इस प्रकार अवतार के सम्बन्ध में थोड़ा बहुत मतभेद तो प्राचीन काल

से ही चला आया है।

मुख्य विषय-

इस सम्बन्ध में मुख्य विचारणीय विषय यह नहीं है कि स्वयं भगवान अवतार लेने के लिए आते हैं अथवा किसी उपयुक्त जीवात्मा में अपनी विशेष शक्ति प्रविष्ट करके उसे भूतल का भार हल्का करने का उद्देश्य पूरा करते हैं? वरन् मुख्य बात यह है कि 'अवतार का जो स्वरूप पुराने रुढ़िवादी मानते हैं वह ठीक है अथवा उसका तर्क और बुद्धि संगत रूप, जो महान उद्देश्य के अनुकूल जान पड़े उसे स्वीकार किया जाये।

(कल्कि पुराण पेज नं० 278 अनुवादक पं० श्री राम शर्मा आचार्य)

अवतार के उद्देश्य-

अवतार के उद्देश्यों के सम्बन्ध में भी पं० श्री राम शर्मा आचार्य जी ने कल्कि पुराण के पृष्ठ नं० 280 पर इस प्रकार लिखा है-

1. ईश्वर एक व्यक्ति को अवतार बनाकर भेज देता है। उसमें ऐसी योग्यता और शक्ति होती है कि वह अनायास अपने अनुयायी उत्पन्न कर लेता है।
2- अवतारी के काम अत्यन्त विचित्र और चमत्कार जादू की तरह होते हैं।
3- अवतार बुरे व्यक्तियों का वध करने आता हैं। दुष्टों का संहार ही उसका उद्देश्य होता है।
4- अवतार की शरण में जाने से पाप छूट जाते हैं और अनायास स्वर्ग मिल जाता है।
5- अवतार सर्वथा स्वतन्त्र होते हैं, वे हर प्रकार के सभी काम कर सकते हैं।
6- असाधारण शीघ्रता पूर्वक जो परिवर्तन होते हैं, वे लोगों को जादू की तरह प्रतीत होते हैं पर 'अवतार' नवीन व्यवस्था बनाने आते हैं, बाज़ीगर का खेल करने नहीं आते।
7- 'अवतार' बुराइयों को हटाने आता है, वह पापों को पूर्ण विचारों से नष्ट कर देता है।

8- अवतार के उदार और आदर्श विचारों का अनुसरण करने से तत्काल संसार की बड़ी सेवा होती है।

9- 'अवतार' वर्तमान समय में प्रचलित कुप्रथाओं को तोड़ने के लिए कोई असाधारण काम कर सकते हैं पर वह मनुष्यता की मर्यादा को तोड़ने वाला कोई कार्य जिसे उद्दण्डता कहा जा सके कभी नहीं करते।

10- 'अवतार' के आदर्श और उपदेशों के अनुसार आचरण किये बिना केवल "श्रद्धा भक्ति" से किसी का कुछ लाभ नहीं हो सकता।

(कल्कि पुराण पृष्ठ 281 अनुवादक पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, संस्कृत संस्थान बरेली-1994)

आधुनिक काल में डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय और डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव जैसे विद्वानों ने "अवतार" की संकल्पना को उसके शाब्दिक और संदेशात्मक (पैग़ामी) दृष्टिकोण से समझाने का प्रयास किया है, उनके अनुसार अवतार से आशय उस महान व्यक्तित्व से है जो पृथ्वी पर अवतरित होकर मानवता को ईश्वरीय सन्देश प्रदान करता है।

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय जी के अनुसार-

"अवतार" शब्द 'अव' उपसर्गपूर्वक 'तृ' धातु में 'घत्र्' प्रत्यय लगाकर बना है। अवतार शब्द का अर्थ यह है कि पृथ्वी में आना। 'ईश्वर का अवतार' शब्द का अर्थ है कि सब को सन्देश देने वाले महात्मा का पृथ्वी में जन्म लेना।

(डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय, कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पृष्ठ संख्या-15)

डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव के अनुसार-

डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव अपनी पुस्तक "हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रंथ" में अवतार की व्याख्या करते हुए लिखते हैं-

अवतार का तात्पर्य

अवतार शब्द 'अव' उपसर्गपूर्वक 'त' धातु में 'घत्र्' प्रत्यय लगाकर बना है। इसका अर्थ पृथ्वी पर आना है। 'ईश्वर का अवतार' शब्द का अर्थ है,

सबको सन्देश देने वाले महात्मा का पृथ्वी पर जन्म लेना। कल्कि अवतार को ईश्वर का अन्तिम अवतार बताया गया है। 'ईश्वर का अवतार' शब्द में 'का' शब्द सम्बन्ध कारक चिह्न है।

अतः ईश्वर से सम्बद्ध व्यक्ति का अवतीर्ण होना। ईश्वर से सम्बद्ध कौन है? उसका भक्त ही सबसे सम्बद्ध हो सकता है। ऋग्वेद में ऐसे व्यक्ति को 'कीरि' कहा गया है।

हिन्दी में 'कीरि' शब्द का अर्थ 'ईश्वर का प्रशंसक' और अ़रबी में 'अह़मद' होता है, लेकिन क्या ईश्वर का प्रशंसक 'कीरि' या 'अह़मद' एक नहीं हो सकता।

हर देश और समय के लिए अलग-अलग अवतार हुए हैं। क़ुर्आन में है कि हर भाग में रसूल (संदेशवाहक) भेजे गये। अंतिम अवतार कल्कि की अलग विशेषता है, वह किसी एक ह़िस्से के लिए नहीं वरन् समग्र विश्व के लिए भेजे गये।

जब लोग वास्तविक धर्म से विमुख होकर अधर्म की राह पकड़ लेते हैं या धर्म को अपने स्वार्थ के लिए तोड़-मरोड़ देते हैं, तो उन्हें फिर सही मार्ग दिखाने के लिए ईश्वर अपने अवतार या पैगम्बर भेजता है।

(ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रन्थ-डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव पृष्ठ संख्या-19-20)

पण्डित श्री राम शर्मा जी के अनुसार-

पण्डित श्री राम शर्मा आचार्य अवतार की अवधारणा को शारीरिक अवतरण (Incarnation) के बजाय दैवी चेतना और उद्देश्य के प्रकट होने के अर्थ में लेते हैं। वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि परमात्मा स्वयं किसी सीमित शरीर में बंधा नहीं होता, बल्कि अपनी शक्ति, प्रेरणा और उद्देश्य को किसी महान मानव के माध्यम से प्रकट करता है।

"अवतार का तात्पर्य परमात्मा का देहधारण नहीं है। यह तो ईश्वरीय चेतना एवं शक्ति का किसी विशिष्ट महापुरुषा के माध्यम से प्रकट होना है"।

(पुस्तकः *अवतार और अवतरण,* लेखकः पंडित श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशकः अखंड ज्योति संस्थान, मथुरा, संस्करणः 1993, पृष्ठः 12-13)

सारांश

आधुनिक विद्वानों जैसे डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय और डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव ने "अवतार" के शाब्दिक अर्थ पर बल देते हुए इसे पृथ्वी पर अवतरित होने वाले किसी महान सन्देशवाहक या सुधारक के अर्थ में समझाया है और कुछ ने कल्कि को अन्तिम, वैश्विक मार्गदर्शन लाने वाली सत्ता के रूप में व्याख्यायित किया है।

तथापि पंडित श्री राम शर्मा आचार्य इस अवधारणा को शारीरिक अवतरण (Incarnation) के बजाय दैवी चेतना, उद्देश्य और नैतिक प्रेरणा के प्रकट होने के रूप में समझाते हैं।

उनके अनुसार परमात्मा स्वयं किसी शरीर में सीमित नहीं होता, बल्कि अपनी मार्गदर्शक शक्ति, चेतना और उद्देश्य को किसी महान मानव या सामूहिक आन्दोलन के माध्यम से प्रकट करता है।

इस प्रकार वे कल्कि अवतार को किसी एक ऐतिहासिक व्यक्ति से स्पष्ट रूप से सम्बद्ध नहीं करते, बल्कि उसे धार्मिक जागरण, वैचारिक क्रांति और युग परिवर्तन का प्रतीक मानते हैं, जो विभिन्न कालों में विभिन्न महान व्यक्तित्वों के माध्यम से प्रकट हो सकता है।

अवतार या सन्देष्टा की आवश्यकता और हमारी आशा

ऊपर की बातों को यदि गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाये तो उस सबका यही निष्कर्ष निकलेगा कि यदि संसार में किसी को अवतार कहा जाये तो उसका मुख्य उद्देश्य मानव जाति का मार्ग-दर्शन करना ही हो सकता है।

इसी प्रकार तमाम सन्देशवाहकों ने जिस कल्कि के आने की आशा जताई है, उन तमाम सन्देशवाहकों में सब से उत्तम गुण कल्कि में होना बताये हैं, परन्तु उस के आने से पूर्व विश्व की दशा अत्यन्त ख़राब हो चुकी होगी जैसा कि अनेक ग्रन्थों में उसके आने से पूर्व की दशा का विस्तारपूर्वक वर्णन

किया गया है।

अन्तिम सन्देष्टा (या अवतार) के आने से पूर्व संसार की दशा

महाभारत वन पर्व अ० **190** और कल्कि पुराण में दिये गये कलियुग वर्णन जिसे अनुवाद किया है पं० श्री राम शर्मा जी ने उसके कुछ श्लोक प्रस्तुत किये जाते हैं, जिससे पाठकों को हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व की दशा को समझना आसान होगा।

भर्यामित्राश्च पुरुष भविष्यन्ति युगक्षये।
मत्श्याभिषेण जीवेन्तो दहनतश्चाप्यजैपकम्।।
गोषु नष्टासु पुरुष येऽपि नित्यं घृतव्रत।
तेऽपि लोभसमायुक्ता भविष्यन्ति युगक्षये।।
अन्यान्यं परिमृष्णान्तो हिसयन्तशच मानवाः।
अजपा नास्तिकाः स्तेना भविष्यन्ति युगक्षये।।
श्राद्धे दैवे च पुरूषा येऽपि नित्यं घृतव्रताः।
तेऽपि लोभसमायुक्ता भीक्ष्यन्तीह परस्परम्।।
न व्रतानि चरिष्यन्ति ब्राह्मणा वेदनिन्दकाः।
न यक्ष्यन्ति न होष्यन्ति हेतुवाद विमोहितः।
निस्नेष्वीहां करिष्यन्ति हेतुवादविमोहिताः।।

(कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 134)

अनुवाद-

"उस समय लोग स्त्रियों से ही मित्रता करने वाले होंगे। अनेक लोग मछली माँस से जीविका चलाने वाले होंगे, गायों के नष्ट हो जाने से भेड़, बकरी का दूध व्यवहार में लाने लगेंगे, जो व्यक्ति व्रतों का पालन करने वाले

हैं वे भी युग-प्रभाव से लोभी बन जाएँगे, लोग-एक दूसरे को लूटने-मारने लगेंगे और उनमें से अधिकांश भजन-साधन से रहित नास्तिक, अपहरणकर्ता बन जाएँगे। जो लोग सदैव परान्न का त्याग करके व्रतशील रहते है वे लोभवश यव-यज्ञ और मृतक श्राद्धों में खाने लग जाएँगे। ब्राह्माण लोग व्रतों का पालन त्याग कर उल्टे वेद-निन्दक बन जाएँगे वे यज्ञ और होम को छोड़ बैठेंगे और झूठे तर्कवाद में फंसकर नीच कर्म करने को उद्यत हो जाएँगे"।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 135)

प्रायशः कृपणानां हि तथा बनधुमतामपि।
विधावानां च वित्तानि हरिष्यन्तीह मानवाः।।
स्वल्प वीर्यवलाः स्तब्धा लोभमोहपरायणाः।
तत्कथादान सन्तुष्ट दुष्टानामपि मानवाः।।
परिग्रहे करिष्यन्ति मायाचार परिगहाः।
समाह्वयन्तं कौन्तेयः राजानः पाप बुद्धयः।।
परस्परवधोद्युक्ता मूर्खः पण्डित मानिनः।
भविष्यन्ति युगस्यान्ते क्षत्रिया लोककण्टकाः।।
अरतिक्षरो लुब्धाश्य मानाहंकार दर्पिताः।
केवलं दण्डरूचयो भदिष्यन्ति युगक्षये।।

(महाभारत-वन पर्व अ० 11 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 135)

अनुवाद-

"अर्थपिशाच मनोवृत्ति के मनुष्य दोनों असहायों और विधवाओं का भी धन हड़प लेंगे। उनके शारीरिक बल और पराक्रम क्षीण हो जाएँगे, वे उद्दण्ड होकर लोभ और मोह में ग्रस्त रहेंगे, वैसी ही चर्चा प्रशंसा करने और उनसे दान लेने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे, कपटपूर्ण आचरण करते हुए वे बुरे

लोगों के दान को भी ग्रहण कर लेंगे। राजा लोग पाप-परायण होकर एक-दूसरे के प्राण लेने को उद्यत होंगे और ब्राहण मूर्ख और नीच होते हुए भी पण्डिताई का दावा करेंगे। क्षत्रिय लोग (शासक-वर्ग) जगत के लिए कंटक स्वरूप बन जाएँगे। उस समय उनको प्रजा की रक्षा की ज़रा भी चिन्ता न होगी केवल उनसे रुपये ऐंठकर अपना घर भरने का ध्यान रखेंगे। सदा मान और अहंकार से चूर रहेंगे और प्रजा को अनावश्यक रूप से दण्डित करते रहेंगे।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 136)

आक्रम्याक्रम्य साधूनां दारांश्चापि धनानि च।
भोक्ष्यन्ते निरनुक्रोशा रुदतामपि भारत।।
न कन्यां याचते कश्चिन्नापि कन्या प्रदीयते।
स्वयंग्राहा भविष्यन्ति युगान्ते समुपस्थिते।।
म्लेच्छीभूतं जगत् सर्व भविष्यति न संशयः।
हस्तो हस्तं परिमुषेद् युगान्ते समुपस्थिते।।
सत्यं संक्षिप्यते लोके नरैः पण्डितमानिभिः।
स्थविरा बालमतयो बालः स्थाविरबुद्धयः।।
एकहार्ये युगं लोभ मोह व्यवस्थितम्।
अधर्मो वर्द्धते तत्र तु धर्मः प्रवर्तते।।

(महा भारत वन पर्व 190 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 136)

अनुवाद-

"लोग इतने दुष्ट हो जाएँगे कि सीधे-साधे भले मानसों पर अकारण आक्रमण करके उनके धर्म और स्त्री आदि का बलपूर्वक अपहरण करने लगेंगे और उनके रोने-पीटने पर भी कुछ ध्यान न देंगे। उस समय न तो कोई किसी से कन्या की याचना करेगा और न कन्यादान ही करेगा। वर-कन्या स्वयं ही

एक दूसरे को पसन्द कर लेंगे तब सारा जगत म्लेच्छमय हो जाएगा और एक हाथ दूसरे हाथ को लूटेगा अर्थात सगा भाई ही भाई के धन को हड़प लेगा। अपने को पंडित मानने वाले मनुष्य संसार में से सत्य को मिटा देंगे। बूढ़ों की बुद्धि बालकों जैसी और बालकों की बूढ़ो के समान हो जाएगी। सब कोई लोभ और मोह में फंसकर भक्षामक्ष्य का विचार किये बिना सम्मिलित भोजन करने लगेंगे। अधर्म बढ़ेगा और धर्म विदा हो जाएगा।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 136)

न काश्चित् कस्याचिच्छोता न कास्याच्द्रिगुरुः।
तमोग्रस्तस्वदा लोको भविष्यति जनाधिप।।
अल्प द्रव्याअभावं च वृथालिंग प्रभविष्यति।
न कश्चित्कस्यचिद् दाता भविष्यति युगक्षये।
अट्टशूला जनपदाः शिवशूलाचतुष्पथाः।
केशशूला स्त्रियश्चापि भविष्यन्ति युगक्षये।
क्रयविक्रय काले च सर्वः सर्वस्व वच्चनम्।
युगान्ते भरतश्रेष्ठ वित्तयोभात् करिष्यन्यि।।
आरामांश्चैव वृक्षांश्च नाशयिष्यन्ति निर्व्यथाः।
र्भावना संशयो लोके जीवितस्य ही देहिनाम्।।

(महाभारत वन पर्व 190 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 137)

अनुवाद-

"उस समय कोई किसी का उपदेश नहीं सुनेगा और न कोई किसी को गुरु मानेगा। समस्त जगत एक प्रकार के अन्धकार में ग्रस्त होगा। लोगों के पास सम्पत्ति का अभाव होगा, वे दिखाने के लिए साधु वेश धारण कर लेंगे, हिंसा की भावना बढ़ जाएगी और कोई किसी को कुछ देने वाला न होगा। उस समय सभी ग्राम नगर आदि अन्न बेचेंगे, ब्राह्मण वेद-धर्म के बेचने वाले

होंगे स्त्रियाँ वेश्यावृत्ति अपना लेंगी। ख़रीदने बेचने में सब एक दूसरे को ध ोखा देने लगेंगे और बागीचों के वृक्षों को भी काट डालेंगे और इससे उनको किसी प्रकार का खेद नहीं होगा। उस समय लोगों के जीवित रहने में भी शंका हो जाएगी"।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 137)

दस्यंभिः पीडिता राजन्काका इव द्विजोत्तमः।
कुराजविश्च सततं करभार प्रपीडिताः।।
धैर्य त्यक्त्वा महीपालः दारुणे युगसंक्षये।
विकर्माणि करिष्यन्ति शूद्राणां परिचारकाः।।
निर्विशेषा जनपदास्यथा विष्टिकरार्दिताः।
आश्रमानुपलयस्यन्ति फलमुलोपजीवियनः।।
भतृणां वचने चैव न स्थास्यन्ति तत स्त्रियः।
पुत्राश्य मातापितरौ हनिष्यन्ति युगक्षये।।
जन परिजनं चापि युगान्ते पर्युपस्थिते।
अथ देसोन् दिशश्चापि पत्ततानि पुराणि च।
क्रमशः संश्रयष्यन्तिं युगानते पर्युपस्थिते।।

(महा भारत वन पर्व 190 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय पेज नं० 138)

अनुवाद-

"श्रेष्ठ ब्राह्मण भी लुटेरों से पीड़ित होकर व्याकुल-भाव से चारों ओर फिरने लगेंगे। राजाओं (शासक-वर्ग) के कर भार से दुःखी और धैर्यहीन होकर वे शूद्रों की नौकरी करने लगेंगे, उस समय सभी भूभागों के निवासी एक-सी वेषभूषा बना लेंगे। लोग बेगार लेने वालों और कर वसूल करने वालों से पीड़ित होकर निर्जन स्थानों में चले जाएँगे और घास-पात खाकर गुज़र

करने लगेंगे। स्त्रियाँ पति के वचनों पर कुछ भी ध्यान न देंगी और पुत्र माता-पिता को मारने में संकोच न करेंगे। उस समय लोग अपने परिवार वालों को भी त्याग देंगे। बहुसंख्यक लोग स्वदेश छोड़कर दूसरे देशों, दिशाओं नगरों, गावों का आश्रय लेंगे।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 138)

"श्री मद्भागवत" का कलियुग-वर्णन भी महत्वपूर्ण और मौलिकता से युक्त है। उसमें कलियुगी धर्म (स्कन्ध 12 अ० 2) का वर्णन करते हुए कहा गया है, जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आने से पूर्व की दशा थी-

ततश्चानुदिनं धर्मः सत्युं शौचं क्षमा दयाः।
कालेन बलिना राजन् नक्षयत्यायुदुर्बलं स्मृतिः।।
वित्तमेव ललौ नृणां जन्माचरगुणोदयः।
धर्मन्यायत्रयवस्थायां कारणं बलमेव ही।।
दाम्पत्येऽभिरूचिर्हेतुर्मायैव व्यावहारिके।
स्त्रीत्वे पुंस्त्वे च हि रतिर्विप्रत्वे सूत्रमेव हि।।
लिंगमेवाश्रमख्यातावन्यापत्तिणारणम्।
अवृत्या नयायदौर्बल्यं पाण्डित्ये चापल वचः।।
अनाढ्यतैवासधुत्वे साधुत्वे दम्भ एव तु।
स्वीकार एव चोद्वाहे स्नानमेव प्रसाधनम्।।

(श्री मद्भागवत महापुराण स्कन्ध 12, अध्याय-2 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 138)

अनुवाद-

"समय बड़ा बलवान है, जैसे-जैसे कलियुग बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे ही धर्म, सत्य, पवित्रता, क्षमा, दया, आयु, बल और स्मरण शक्ति का लोप होता जायेगा। कलियुग में जिसके पास धन होगा, उसी को लोग कुलीन, सदाचारी

और सद्गुणी मानेंगे। जिसके हाथ में शक्ति होगी वही धर्म और न्याय की व्यवस्था अपने अनुकूल करा सकेगा। विवाह-सम्बन्ध के लिए कुल, शील योग्यता आदि की निरख-परख नहीं रहेगी, युवक-युवकी का मन मिल जाने से ही विवाह सम्पन्न हो जाएगा, जो जितना छल-कपट कर सकेगा वह उतना ही व्यवहार-कुशल माना जायेगा। स्त्री-परुष की श्रेष्ठता का आधार उनका शील संयम न होकर उनका रति-कौशल ही रहेगा।

ब्राह्मण की पहचान उसके गुण-स्वभाव से नहीं यज्ञोपवीत से हुआ करेगी। वस्त्र-दण्ड-कमण्डल आदि से ही बह्म्चारी, संन्यासी आदि की पहचान होगी और एक दूसरे का चिन्ह स्वीकार कर लेना ही एक से दूसरे आश्रम में प्रवेश का स्वरूप होगा। जो घूस देने या ख़र्च करने से असमर्थ होगा उसे अदालत में ठीक न्याय न मिल सकेगा।

बात-चीत में चालाक होने से ही पण्डित माना जाएगा। ग़रीब होना ही असाधुता, दोषी होने का चिन्ह होगा और जो जितना अत्याचार कर सकेगा वह उतना ही साधु मान लिया जाएगा। विवाह परस्पर की स्वीकृति से हो जाएगा और श्रंगार कर लेने से ही स्नान करना मान लिया जायेगा।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत, संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 138)

दूरे वार्ययनं तीर्थ लावण्यं केशधारणम्।
उदरम्भरता स्वार्थः सतयत्वे धार्ष्ट्यमेव हि।।
दाक्ष्यं कुटुम्बभरणं यशोऽर्थ धर्मसेवनम्।
एवं प्रजाभिर्दुष्टाभिराकीर्णे क्षितिमण्डले।।
ब्रह्मविट्क्षत्रशूदाणां यो बली भविता नृपः।
प्रजा ही लुब्धै राजन्यैर्निर्घृर्णेर्दस्युधर्मभि।।
अनावृता विनंक्षयन्ति दुर्भिक्षकरपीड़ितः।
शीत वातातपप्रावृड्हिमैरन्योन्यतः प्रजाः।

क्षुतृड्भ्यां व्याधिभिश्चैव सन्तप्स्यन्ते च चिन्तया।
त्रिंशद्विंशतिवर्षाणि परमायुः कलौ नृणाम्।।

(श्रीमद भागवत महा पुराण स्कन्ध 12, अध्याय-2 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 139)

अनुवाद-

"लोग दूर के तालाब को ही तीर्थ मान लेंगे, सिर पर बड़े-बड़े बाल रखना ही सुन्दरता का चिन्ह समझा जाएगा। अपना पेट भर लेना ही बड़ा पुरुषार्थ होगा जो जितनी ढिठाई से बात कर सकेगा वह उतना ही सच्चा मान लिया जाएगा। अपने कुटुम्ब का भरण-पोषण कर लेना ही सबसे अधिक योग्यता मानी जाएगी, धर्म का सेवन यश के लिए किया जायेगा। इस प्रकार जब पृथ्वी में सर्वत्र दुष्टों की प्रधानता हो जाएगी तब राज्य व्यवस्था भी दूषित हो जायेगी।

जो भी शक्तिशाली चलता पुर्ज़ा होगा वही शासक बन जायेगा। वे शासक अत्यन्त लोभी, निर्दयी और लुटेरे होंगे। वे जनसाधारण के धन तथा स्त्रियों तक को लूटने में संकोच न करेंगे। इसके फलस्वरूप सर्वसाधारण सदैव भूख प्यास, चिन्ता, रोग आदि से दुःखी रहेंगे। उनकी आयु भी बहुत थोड़ी बीस-तीस वर्ष की ही रह जाएगी।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत, संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 139)

क्षीयमाणेषु देहेषु देहिनां कलि दोषकः।
बर्णाश्रमावतां धर्मे नष्टे वेदपथे नृणम्।
पाखण्डप्रचुचरे धर्मे राजसु।
चौर्यानृतवृथाहिंसानाना वृत्तिषु वै नृषु।
शुदप्रायेषु वर्णेषुच्छागप्रयासु धेनुषु।
गृहायेष्वाश्रमेषु यौन प्रायेषु बन्धुषे।

इत्थं कलो गतप्राये जने तु खरधर्मिर्णि

(श्री मद्भागवत महा पुराण स्कन्ध 12, अध्याय-2 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय पेज नं० 140)

अनुवाद-

"कलियुग के दोषों से लोगों के शरीर भी क्षीण हो जाएँगे और वर्णाश्रम धर्म का प्रकाशक वेद-मार्ग नष्ट हो जाएगा। धर्म में पाखण्ड बहुत अधिक बढ़ जायेगा, शासक-वर्ग लुटेरों की तरह बन जाएगा और लोग जीवन-निर्वाह के लिए प्रायः चोरी, झूठ, हिंसा का व्यवहार करने लगेंगे। सब वर्णों के मनुष्यों का आचरण शूद्रों जैसा मर्यादा रहित हो जाएगा। गायें बकरियों की तरह दूध ा देने वाली हो जाएँगी। सन्यासियों के आश्रम गृहस्थियों के घरों की तरह बन जाएँगे और जिनसे विवाह सम्बन्ध होगा उन्हीं को अपना सम्बन्धी माना जायेगा। इस प्रकार का कलियुगी वातावरण छा जाने पर लोग गधों की तरह भार ढोने वोले और विषमयी हो जायेंगे।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 140)

विष्णु पुराण में महर्षि पराशर ने बतलाया है कि जिस समय कलियुग की प्रबलता होगी तो समस्त सामाजिक व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगाी और नर-नारियों में बहुत से दोष बढ़ जाएँगे।

हर प्राचीन काल में जब उनको पाप की तरह माना जाता था, तो लोग यथासम्भव इन प्रवृत्तियों को दबाकर रखते थे पर कलियुग में छोटे-बड़े सभी लोगों में उनका प्रावल्य हो जाने से सामाजिक मर्यादा भंग हो जाएगी और लोग इन बातों में किसी प्रकार के पाप का अनुभव नहीं करेंगे।

इस प्रकार सभी पुराणों में 'कलियुगीन समाज' की भ्रष्टता के प्रति घृणा और निन्दा का भाव किया गया है।

श्री मद्भागवत महापुराण में कल्कि अवतार का महत्व

श्री मद्भगवत पुराण के बारहवें स्कन्ध के दूसरे अध्याय में कल्कि

अवतार के प्रकट होने के महत्व को बड़े श्रद्धा पूर्वक बतलाया है-

सम्भल ग्राम मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।
भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भवष्यति।।
अश्व मा शुगभारुद्वा देव दत्तं जगत्पत्तिः।
असिनासासा द्यदमनमष्टैश्वर्य गुणान्वितः।।
विचरन्ना शुना क्षोण्यां हयेना प्रतिमद्यतिः
नृपलिंगच्छदो दस्यून् कोटिशो निहनिष्यतिः।।
अथ तेषां भविष्यन्ति मनांसि विंशदानि वै।
वासुदेवांगरागतिपुणय गन्धातिलस्पृशाम्।
पोरजानपदानां वै हतेष्वखिलदस्युष।।
तेषें प्रजाविसर्गश्य स्थविष्ठः सम्भाष्यिति।
वासुदेवे भगवति सत्वमूर्तो हदि स्थिते।।
यदावतीर्णो भगवान् कलिकर्धर्मपतिर्हरिः।
कृतं भविष्यति तदा प्रजासूतिशच सात्विकी।।

(श्रीमद् भागवत महा पुराण स्कन्ध 12, अध्याय-2 व कल्कि पुराण अध्याय पाँच पेज नं० 119)

अनुवाद-

"जब अवतार के प्रकट होने का अवसर आएगा उस समय सम्भल ग्राम में विष्णुयश नाम के एक श्रेष्ठ ब्राह्मण होंगे। उनका हृदय बड़ा उदार एवं भक्तियुक्त होगा। उन्हीं के घर में कल्कि अवतार ग्रहण करेंगे। श्री कल्कि ही अष्ट सिद्धियों तथा समस्त सद्गुणों के एक मात्र आश्रय है। समस्त जगत के वे ही रक्षक हैं। वे देवदत्त नामक शीघ्रगामी अश्व पर आरुढ़ होकर दुष्टों को अपनी जगत प्रसिद्ध 'तलवार' के घाट उतारेंगे। उनके रोम-रोम से तेज छिटकता होगा।

अपने शीघ्रगामी वाहन से पृथ्वी पर पूर्ण विचार करके राजाओं (शासकों)

के वेष में प्रच्छन्न करोड़ों लुटेरों का संहार करेंगे। जब उनके अंगरोग से सुगन्धित वायु लोगों को स्पर्श करेगी तो उनका हृदय पवित्र हो जायेगा और पाप कर्मो का अन्त हो जाएगा।

इससे सब के हृदय में भगवद् भक्ति का संचार होगा और वे सुखी तथा पूर्ण स्वस्थ होने लग जायेंगे। प्रजा के नयन-मनोहारी श्री हरि ही धर्म के रक्षक और सबके स्वामी ही होंगे तो 'कलियुग' (पाप युग) का अन्त होकर 'सत्युग' (श्रेष्ठ युग) प्रारम्भ हो जाएगा और सब मनुष्य तथा उनकी सन्तान स्वयमेव सत्यगुण युक्त बन जाएँगे"।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 119)

'भविष्य-पुराण' में 'कल्कि' का उल्लेख युग परिवर्तन के सम्बन्ध में करके यह बतलाया गया है कि वे 'महायज्ञ' द्वारा जगत् को सुखी बनाएँगे-

तदास भगवान कल्किः पुराण पुराण पुरूषोद्भवः।
दिव्यं वाजिनमारुहा खंडगी बर्मी च धर्मधृक्।
म्लेच्छांस्तान दैत्यभूवांश्व हत्वा योग गमिष्यति।।
षोडशब्द सहस्राणि तद्द्वेशाग्नि प्रतापिता।
भस्मभूता कर्मभूमिर्निर्जीवा भाविता तदा।।
गते कलियुगे घोरं कर्मभूमि पुनर्हरि।
कृत्वास्थलमयी रम्यं यज्ञै र्देवान् यजिस्यति।।
यज्ञभागमुपादाय देवास्ते बल संयुता।
वैवस्वतं मनुं मत्वा कथयिष्यन्ति कारणम्।

(श्रीमद् भागवत महा पुराण 12, अध्याय-2 व कल्कि पुराण अध्याय पाँच, पेज नं० 121)

अनुवाद-

'उस अवसर पर पुराण, परुष, 'कल्कि' प्रकट होंगे, दिव्य अश्व पर

आरुढ़ और असि (तलूवार) वर्म (कवच) चर्म (ढाल) आदि समस्त शस्त्रों से सुसज्जित होंगे। वे लाखों म्लेच्छों को उनके दुष्कर्मो के फलस्वरूप नष्ट कर देंगे और उसके पश्चात् -महासमाधि' ग्रहण कर लेंगे। उनके प्राकट्य के पहले यह भूमि धर्म-कर्म रहित धर्म विमुख लोगों से भर जाएगी पर कल्कि के प्रभाव से वह फिर पुण्य-स्थली बन जाएगी। अब कल्कि धर्म रक्षार्थ महायज्ञ का अनुष्ठान करेंगे, तो देवगण अपना नियमित अंश प्राप्त करके शक्ति सम्पन्न हो जाएँगे और पृथ्वी निसासियों के कल्याण साधन में तत्पर होंगे'।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 122)

श्रौते स्मार्ते च धर्मो विप्लवमत्यन्तमुपगते क्षीणापाये च कलावशेषजगत्स्रष्टुश्चरागुरोरादि मध्यान्तर रहितस्य ब्रहामयस्यात्मरुपिणो भगवतो वासुदेवर्स्याशश्शम्बलग्राम प्रधानब्राह्मणस्य विष्णुयशयशो गृहेअष्टगुर्णाद्धसमन्वित कल्किरूपीजगत्य त्रावतीर्य सकल म्लेच्छादस्युदुष्टा चरणचेतसामशेषाणामपरिच्छिन्न शक्तिमहात्म्यः क्षयं करिष्यति स्वधर्मेषु चाखिलामेव संस्थापयिष्यति।। 98

(कल्कि पुराण अध्याय 5, पेज नं० 123)

अनुवाद-

जब श्रौत वैदिक और स्मार्त धर्म की अत्यन्त हानि हो जाएगी और कलूयुग प्रायः समाप्ति पर होगा, तभी सम्भल' ग्राम में निवास करने वाले विप्रश्रेष्ठ विष्णु यश के यहाँ सम्पूर्ण विश्व के कारण, चराचर के स्वामी, आदि-मध्य अन्त से हीन, ब्रह्मय एवं आत्मरूप अष्टगुण युक्त कल्कि रूप से म्लेच्छों, दस्युओं और दुष्ट हृदयों और दुराचारियों को नष्ट कर सभी प्रजा को अपने धर्म में स्थापित करेंगे।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 123)

'अग्नि पुराण' में भी कलियुग के कारण धर्म और समाज की दुरावस्था का चित्रण करते हुए 'कल्कि' के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

सर्वे कलियुगान्ते तु भविष्यन्ति च संकराः।
दस्यवः शीलहीनाश्चं बेदो वाजसनेयकः।।
धर्मकच्चुकसवीता अधर्मरूचयस्तथा।
मानुषात् भक्षयिष्यन्ति मलेच्छन् पार्थिव रूपिणः।
कल्कि विष्णुयशः पुत्रो याज्ञवल्क्य पुरोहितः।
उत्सादयिष्यति म्लेच्छान् गृहीतास्त्र कृतायुधः।।
कल्कि रूपं परित्यज्य हरिः स्वर्ग गामिष्यति।
तथा कृतयुगं नाम पुण्यवत् सम्भविप्यति।।

(कल्कि पुराण अध्याय 5, पेज नं० 124)

अनुवाद-

'कलियुग' का अन्त होने के समय सब लोग वर्णसंकर हो जाएँगे। वे लुटेरे, शीलरहित और वेद विरुद्ध आचरण करने वाले होंगे। उनकी रुचि धर्म की ओर से हटकर अधर्म की ओर चली जाएगी, म्लेच्छ राजागण मनुष्यों का बहुत बुरी तरह शोषण करेंगे, तब कल्कि भगवान् श्री विष्णु यश के यहाँ प्रकट होगा और याज्ञवल्क्य उनके पुरोहित होंगे, वे शस्त्र लेकर अपनी शक्ति से म्लेच्छों को नष्ट कर डालेंगे, कल्कि पुनः अपने लोक को चले जाएँगे।

(अनुवाद- पं० श्री राम शर्मा, आचार्य, प्रकाशक- डॉ० चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान, बरेली 1994 ई० पेज नं० 124)

भागवत पुराण के अनुसार

अवतारे ह्यसङ्ख्येयाः हरेः सत्त्वनिधेर्ध्विजाः।
कल्किः नाम्ना भवियामि कलौ संप्रद्रुतेऽधर्मे।

(भागवत पुराण, स्कंध 12, अध्याय 2, श्लोक 18–19)

अनुवाद-

"विष्णु के अवतार असंख्य हैं। हे ब्राह्मणों! किन्तु जब कलियुग में अधर्म अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाएगा, तब मैं कल्कि नाम से जन्म लूँगा, ताकि संसार में धर्म और सदाचार को पुनः स्थापित कर सकूँ"।

विष्णु पुराण के अनुसार-

कलौ समाप्यते युगे
धर्मो नश्यति सर्वतः।
तदा कल्किर्भवियति
विष्णुयशसि जन्मतःम
धर्मसंस्थापनार्थाय
दुष्टानां नाशनाय च।
अवतारं करियामि
कल्कि नाम्ना हरिः स्वयम्म

(विष्णु पुराण, अंश चतुर्थ (4) अध्याय 24)

अनुवाद-

"जब कलियुग का अंत हो जाएगा और चारों ओर से धर्म नष्ट हो चुका होगा, तब उस समय हरि (विष्णु) स्वयं कल्कि नाम से अवतार लेंगे। वे दुष्टों का संहार करेंगे और धर्म की पुनः स्थापना करेंगे"।

कल्किरावतरेद् विष्णुः
कलौ युगविनाशके।
अधर्म नाशयियामि
धर्मं स्थापयितुं पुनःम

(भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, अध्याय 4, सम्बन्धित श्लोक)

अनुवाद-

कलियुग के अन्त के समय विष्णु कल्कि अवतार में प्रकट होंगे। मैं अधर्म (बुराई) का नाश करुँगा और एक बार फिर धर्म की स्थापना करुँगा।

कल्कि अवतार

हिन्दू धार्मिक परम्परा में "कल्कि अवतार" की अवधारणा कलियुग के अन्तिम चरण से जुड़ी हुई है, जहाँ नैतिक पतन, अधर्म और दुष्टता अपने चरम पर पहुँच जाते हैं। इस अवस्था में ऐसी एक महान् सत्ता के प्रकट होने की कल्पना की जाती है, जो अधर्म का विनाश करेगा और धर्म की पुनः स्थापना करेगा।

कल्कि का वर्णन

गरुण पुराण (अध्याय-149) में कल्कि का वर्णन संक्षेप में इस प्रकार किया गया हैः-

कल्कि विष्णुश्च भविता शम्भल ग्रामके पुनः।
अश्वारुढ़ोअखिलान् लोकांस्तदाभीतान् करिष्यति।।
एवं स भगवान व्यास धर्मसंरक्षणाय च।
दुष्टानां च वधार्थाय सवतारं करिष्यति।।

(गरुण पुराण-अध्याय-149 व कल्कि पुराण पेज नं० 124)

कल्कि का शाब्दिक और पारिभाषिक अर्थ-

संस्कृत शब्दकोशों-विशेषकर **Monier & Williams Sanskrit Dictionary**— के अनुसार "कली" (कली) के अर्थ कलह, अव्यवस्था, झूठ, पाप और नैतिक पतन हैं। इसी कारण वर्तमान पतनशील युग को "कलियुग" कहा जाता है। इसी धातु से बना शब्द "कल्कि" (कल्कि) शाब्दिक रूप से "कली का नाश करने वाला" अर्थ देता है। इस प्रकार शब्दार्थ की दृष्टि से कल्कि केवल एक नाम नहीं, बल्कि नैतिक शुद्धि और अधर्म के अंत का प्रतीक है।

शाब्दिक अर्थ-

"कलि" यह शब्द संस्कृत भाषा से आया है, जिसकी धातु कल् है। इसके अर्थ होते हैं झगड़ा, कलह, उपद्रव, झूठ, स्वार्थपरता, बुराई, पतन अथवा अधर्म (दुराचार)। संस्कृत शब्दकोश (Monier&Williams Sanskrit Dictionary) के अनुसार Kali =Strife, quarrel, discord, contention, vice, sin, the spirit of the Iron Age.

अर्थात कलि वह शक्ति या वह काल है जो झूठ, कपट और बुराई से परिपूर्ण हो। इसी कारण वर्तमान पतनशील युग को "कलि युग" कहा जाता है।

"कल्कि" यह शब्द कलि +कि (नाशक/समाप्त करने वाला) से मिलकर बना है अर्थात "कलि का नाश करने वाला" वह जो झूठ, बुराई और अधर्म का विनाश करे।

कल्कि नाम्ना भवियामि कलौ संप्रद्रुतेऽधर्मे।

"जब कलियुग में अधर्म फैल जाएगा, तब मैं 'कल्कि' नाम से प्रकट होऊँगा"। (विष्णु पुराण 4.24.26)

अन्तिम ऋषि (कल्कि अवतार) का समय-

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय भागवत पुराण के संदर्भ से यह स्पष्ट करते हैं कि अन्तिम अवतार का प्रकट होना उस काल में होगा जब युद्धों में तलवार का प्रयोग सामान्य और प्रधान होगा और आवागमन तथा युद्ध के लिए घोड़े को मुख्य साधन माना जाएगा अर्थात वह समय आधुनिक हथियारों और यांत्रिक युद्ध का नहीं, बल्कि पारम्परिक शस्त्रों और घुड़सवारी के प्रचलन का युग होगा, जिसमें तलवार और घोड़ा युद्ध-शक्ति और सत्ता के प्रमुख प्रतीक होंगे।

अश्वमाशुगमारुह्य देवदत्तं जगत्पतिः।
असिनासाधुदमनं अष्टैश्वर्यगुणान्वितः।

(भागवतपुराण-12 स्कन्ध-2 अध्याय-19वां श्लोक)

अर्थात देवताओं द्वारा दिये गये वेगगामी अश्व पर चढ़कर आठों ऐश्वर्यों

एवं गुणों से युक्त जगपति तलवार से दुष्टों का दमन करेंगे ।

(डॉ०वेद प्रकाश उपाध्याय, कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पृष्ठ संख्या- 22-23)

नोट- यह तलवारों और घोड़ों का युग नहीं है, बल्कि यह परमाणु बमों, टैंकों और आधुनिक हथियारों का दौर है। तलवारों और घोड़ों का समय समाप्त हो चुका है। अतः अन्तिम अवतार की स्थिति तलवारों और घोड़ों के ही युग में होना सिद्ध होती है। आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पूर्व घोड़ों और तलवारों का प्रयोग सामान्य था और इसके लगभग एक सौ वर्ष बाद सोडा और कोयले के संयोजन से बारूद का निर्माण अरब क्षेत्रों में होने लगा।

(डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय, कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पृष्ठ संख्या-22)

इसी प्रकार अन्तिम अवतार के संदर्भ में डॉ०एम० ए० श्रीवास्तव अपनी पुस्तक *"हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्मग्रंथ"* के पृष्ठ संख्या 21 पर ठीक इसी दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं। वह डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय के शोध से सहमति व्यक्त करते हुए इस निष्कर्ष को सही और विश्वसनीय मानते हैं तथा स्वीकार करते हैं कि अन्तिम अवतार से सम्बन्धित उक्त कालिक और ऐतिहासिक तर्क ठोस वैज्ञानिक/शोधपरक आधारों पर स्थापित है।

(हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रंथ-डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव, पृष्ठ संख्या-21)

अन्तिम ऋषि (कल्कि) के प्रकट होने का स्थान-

शम्भले विष्णुयशसो गृहे प्रादुर्भाव्यहम।
कल्किर्नाम भवियामि जगताम् हितकाम्ययाम

(कल्कि पुराण, अध्याय-2 श्लोक-4)

अनुवाद-

"मैं शम्भल में विष्णुयशा के घर में प्रकट हूँगा और मेरा नाम कल्कि होगा। मैं समस्त लोकों के कल्याण और हित की भावना के साथ अवतरित होऊँगा"।

- इसी प्रकार भागवत पुराण में कहा गया है-

शम्भलायाम्भुवस्य ब्राह्मण्यस्य महात्मनः।

भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भवियतिम

(भागवत पुराण, द्वादश स्कंध, 2 अध्याय, 18 वाँ श्लोक)

अनुवाद-

"शम्भल में महान् कुलीन और सदाचारी ब्राह्मण विष्णुयशा के घर में कल्कि का प्रकट होना होगा"। (भागवत पुराण, द्वादश स्कन्ध, अध्याय 2, श्लोक 18)

शम्भल स्थान या गुण-

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय अन्तिम अवतार (कल्कि) के प्रकट होने के स्थान पर चर्चा करते हुए स्पष्ट करते हैं कि इस बात पर तो सामान्य सहमति है कि उसका सम्बन्ध शम्भल से है, किन्तु केवल किसी गाँव का नाम होना उसकी निश्चित पहचान के लिए पर्याप्त नहीं है।

उनके अनुसार मूल प्रश्न यह है कि शम्भल किसी विशिष्ट बस्ती का नाम है या फिर एक अर्थगत गुण/वर्णनात्मक विशेषता।

वे तर्कों के साथ इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि शम्भल किसी निश्चित गाँव का नाम नहीं हो सकता, क्योंकि पुराणों में इसकी भौगोलिक स्थिति कहीं भी स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं की गई है। इसके अतिरिक्त यदि भारत में शम्भल नाम की कोई बस्ती रही भी हो, तो इतिहास इस बात की पुष्टि नहीं करता कि वहाँ से कोई सार्वभौमिक उद्धारक प्रकट हुआ हो। वह लिखते हैं-

कल्कि अवतार का स्थान-

कल्कि के अवतार का स्थान शम्भल ग्राम में होने का उल्लेख कल्कि एवं भागवत पुराण में किया गया है। यहाँ पहले यह निश्चय करना आवश्यक है कि शम्भल ग्राम का नाम है या किसी ग्राम का विशेषण।

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय के मतानुसार 'शम्भल' किसी ग्राम का नाम नहीं हो सकता, क्योंकि यदि केवल किसी ग्राम विशेष को 'शम्भल' नाम दिया गया होता तो उसकी स्थिति भी बताई गई होती।

भारत में खोजने पर यदि कोई 'शम्भल' नामक ग्राम मिलता है तो वहाँ

आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पहले कोई पुरुष ऐसा नहीं पैदा हुआ जो लोगों का उद्धारक हो।

फिर अन्तिम अवतार कोई खेल तो नहीं है कि अवतार हो जाए और समाज में कोई परिवर्तन भी न हो। अतः 'शम्भल' शब्द को विशेषण मानकर उसकी व्युत्पत्ति पर विचार करना आवश्यक है।

(1) 'शम्भल' शब्द 'शम् ' (शांत करना) धातु से बना है अर्थात जिस स्थान में शान्ति मिले।

(2) सम् उप सर्गपूर्वक 'वृ' धातु में अप प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न शब्द 'संवर' हुआ। वबयोर्भेदः और रलयोर्भेदः के सिद्धान्त से शम्भल शब्द की निष्पत्ति हुई, जिसका अर्थ हुआ 'जो अपनी ओर लोगों को खींचता है या जिसके द्वारा किसी को चुना जाता है'।

(3) 'शम्वर' शब्द का निघण्टु (1/12/88) में उदकनामों के पाठ है। 'र' और 'ल' में अभेद होने के कारण शम्भल का अर्थ होगा जल का समीपवर्ती स्थान'।

इस प्रकार वह स्थान जिसके आसपास जल हो और वह स्थान अत्यन्त आकर्षण एव शान्तिदायक हो, वही शम्भल होगा। अवतार की भूमि पवित्र होती है। 'शम्भल' का शाब्दिक अर्थ है-शान्ति का स्थान। मक्का को अ़रबी में 'दारुल अम्न' कहा जाता है, जिसका अर्थ शान्ति का घर होता है। मक्का मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कार्यस्थल रहा है।

(डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय, कल्कि अवतार और मुह़म्मद साह़ब, पृष्ठ संख्या 23-24)

सारांश

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय जी ने अन्तिम अवतार (कल्कि अवतार) के प्रकट होने के स्थान को स्पष्ट किया है कि कल्कि अवतार के प्रकट होने के स्थान के सम्बन्ध में कल्कि पुराण और भागवत पुराण दोनों में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि यह अवतार शम्भल से सम्बद्ध होगा और विष्णुयशः के घर में प्रकट होगा।

इन ग्रंथों से यह तथ्य सामने आता है कि शम्भल केवल एक साधारण नाम नहीं, बल्कि एक गहरे अर्थगत और वैचारिक महत्व वाला संकल्पना है।

इसी संदर्भ में डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव ने विष्णुयशः शब्द की व्याख्या करते हुए उसे अ़ब्दुल्लाह का अर्थगत समकक्ष बताया है, क्योंकि विष्णु से अभिप्राय परमेश्वर (अल्लाह) और यश से दासत्व या भक्ति है।

इस प्रकार वे कल्कि अवतार के पिता के नाम और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पिता के नाम के बीच एक ध्यान देने योग्य अर्थगत समानता प्रस्तुत करते हैं।

इसी प्रकार डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय इस बात पर जोर देते हैं कि शम्भल को किसी निश्चित गाँव या भौगोलिक स्थान का नाम मानना उचित नहीं है, क्योंकि यदि यह किसी विशिष्ट बस्ती का नाम होता तो पुराणों में उसकी भौगोलिक स्थिति का स्पष्ट उल्लेख अवश्य मिलता।

वे ऐतिहासिक और तार्किक प्रमाणों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यदि भारत में शम्भल नाम की कोई बस्ती रही भी हो, तो वहाँ से किसी सार्वभौमिक उद्धारक के प्रकट होने का कोई विश्वसनीय ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

इसलिए शम्भल को किसी निश्चित स्थान के बजाय एक वर्णनात्मक गुण (विषयगत संकल्पना) के रूप में समझना अधिक तर्कसंगत है।

भाषिक और व्युत्पत्तिगत शोध के माध्यम से शम्भल के अर्थ को स्पष्ट किया गया है कि यह शब्द "शम्" (शांति, शान्ति और सुख) से निकला हुआ है और ऐसे स्थान की ओर संकेत करता है जो शान्ति, आकर्षण, संतोष से युक्त हो तथा जल के निकट स्थित हो।

शाँति का स्थान-

इस व्याख्या के आधार पर शम्भल को 'शांति का स्थान' माना गया है। इसी संदर्भ में मक्का को अ़रबी में 'दारुल-अम्न' कहा जाना और उसका ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कार्य का केन्द्र होना इस विमर्श में एक अर्थगत

और वैचारिक तुलना के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इस प्रकार यह सम्पूर्ण तर्क पुराणिक ग्रंथों, भाषिक अनुसंधान और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को एक साथ जोड़कर एक सुसंगठित और शोधपरक निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

कल्कि अवतार की विशेषताएँ

कल्कि अवतार की पुराणों में बहुत सी विशेषताएँ बताई गई हैं जिन में से मुख्य विशेषताओं का वर्णन श्री मद्भागवत महापुराण द्वितीय खण्ड (संस्करण तिरसठवाँ के पेज नं० 775) के 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वाँ श्लोक में इस प्रकार दिया गया है-

1. अशवारोहण करने वाला होगा।

(भगवत महापुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)

2. जगद गुरु होगा।

(भगवत महापुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)

3. असाधु दमन करेगा।

(भगवत महापुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)

4. देवताओं द्वारा सहायता दी जाएगी।

(भगवत महापुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)

5. अनुपम क्रान्ति से युक्त होगा।

(भगवत महापुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 20 वां श्लोक)

6. शरीर से सुगन्ध निकलेगी।

(भगवत महापुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 21 वां श्लोक)

कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

'अश्वमाशुगारूहा देवदक्त्तं जगत्पतिः।

असिनास द्युदमन मठटैश्यर्य गुणान्वितः'।।

(श्रीमद्भागवत महापुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर के द्वितीय खण्ड 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)

अनुवाद-

"वही अष्ट सिद्धियों के तथा समस्त सद्गुणों के एक मात्र आश्रय हैं। समस्त जगत के वे ही रक्षक हैं, वे देवदत्त नामक शीघ्रगामी अश्व (घोड़े) पर सवार होकर दुष्टों को अपनी तलवार से ख़त्म करेंगे"।

1. अशवारोहण करने वाला होगा-

उपरोक्त श्लोक से मालूम होता है कि अन्तिम अवतार देवताओं द्वारा दिये गये अश्व पर चढ़ कर तलवार द्वारा दुष्टों का संहार करेंगे।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने भी अश्व अर्थात घोड़े की सवारी की और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को घोड़े बहुत प्रिय थे और दूसरी बात खड्गधारी बताया गया है अर्थात अन्तिम अवतार दुष्टों का संहार तलवार द्वारा करेंगे, एटम बम द्वारा नहीं। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने भी अपने समय के दुष्टों का संहार तलवार द्वारा किया जैसे जंगे बद्र आदि। (सीरतुन्नबी)

2. जगद्गुरु होगा-

भगवत पुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय के 19 वें श्लोक में अन्तिम अवतार को जगत्पति कहा गया है। जगत का अर्थ होता है संसार और पति का अर्थ होता है रक्षक।

इस प्रकार जगत्पति का अर्थ हुआ जगत की रक्षा करने वाला अर्थात अपने उपदेशों द्वारा गिरते हुए समाज को बचाने वाला जगत गुरु और पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए कहा गया है कि "आप कह दीजिए कि मैं सारी दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजा गया हूँ"।

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि जगदगुरु वास्तव में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही हैं।

3. असाधुदमन करेगा-

ऊपर के ही श्लोक में कहा गया है कि वह दुष्टों का दमन करेंगे। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर यह भी गुण पूर्ण रूप से सिद्ध होता है जिसका उल्लेख हमने अन्तिम खण्ड में किया है और 'तारीख़े इस्लाम' में विस्तारपूर्वक देखा जा सकता है कि किस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दुष्टों का दमन किया।

4. देव दूतों द्वारा सहायता मिलेगी-

कल्कि पुराण (अध्याय 2 श्लोक 7) में उल्लेख है कि देवदूतों द्वारा कल्कि को युद्धों में सहायता मिलेगी। यही बात ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ भी हुई कि बद्र की लड़ाई में फ़रिश्तों ने उनकी सहायता की जिस का उल्लेख स्वयं कुर्आन में मौजूद है। जिसे विस्तार पूर्वक 'नबी-ए-रह़मत' नामक पुस्तक में देखा जा सकता है।

5. अनुपम क्रान्ति से युक्त होगा-

विचरन्नाशुना क्षोणायां हयेना प्रतिमद्यतिः।
तपलिंगप्तछदो दस्यून् को टिशेशनिहनिष्यति।।

(भागवत पुराण, 12 स्कन्ध 2 अध्याय 20 वां श्लोक)

कल्कि के विषय में उल्लेख है कि वे अनुपम क्रान्ति से युक्त होंगे अर्थात वे इतने अधिक सुन्दर होंगे कि उनकी उपमा नहीं की जा सकती। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विषय में बुख़ारी शरीफ़ में कहा गया है कि आप आदमियों में सबसे अधिक सुन्दर तथा आदर्शवान एवं योद्धा थे।

6. शरीर से सुगन्ध निकलेगी-

अथ तेषां भविष्यन्ति मनांसि विशदानि वै।
वासुदेवाद्ध रगाति पुरायगन्धानित स्पृशाम्।।

(भगवत पुराण, 12 स्कन्ध 2 अध्याय, 21 वां श्लोक)

श्रीमद् भागवत पुराण के अनुसार कल्कि के शरीर से निकली हुई सुगन्ध से लोगों के मन निर्मल हो जाएँगे। उनके शरीर की सुगन्ध हवा में मिलकर लोगों के मन को निर्मल करेगी।

ठीक इसी प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी जिससे मिलते सुगन्ध आती रहती थी यहाँ तक कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पसीने से भी सुगन्ध आती। (शमायले तिर्मिज़ी)



भाग–3

बौद्ध धर्म के अनुसार अन्तिम ऋषि की भविष्यवाणियाँ

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बौद्ध धर्म का संक्षिप्त परिचय

बौद्ध धर्म (Buddhism) विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से एक है, जिसकी स्थापना गौतम बुद्ध जी ने की। ऐतिहासिक परम्पराओं के अनुसार गौतम बुद्ध का जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व लुम्बिनी (वर्तमान नेपाल) में हुआ था। वे एक राजपरिवार से सम्बन्ध रखते थे, किन्तु मानव जीवन में पाये जाने वाले दुःख, रोग, बुढ़ापा और मृत्यु के अनुभवों ने उन्हें गहन चिंतन में डाल दिया और सत्य की खोज के लिए प्रेरित किया।

शिक्षा–

लगभग 35 वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध ने बोधगया (Bodh Gaya) में बोधि वृक्ष के नीचे निर्वाण (ज्ञान-प्राप्ति) प्राप्त की।

इसके बाद उन्होंने सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया, जिसे बौद्ध परम्परा में "धर्मचक्र प्रवर्तन" कहा जाता है।

बुद्ध की शिक्षाओं का मूल सार चार आर्य सत्य (Four Noble Truths) और अष्टांगिक मार्ग (Eightfold Path) में निहित है, जिनका उद्देश्य मानव दुःख के कारणों को समझना, उनका निवारण करना और नैतिक व आध्यात्मिक शुद्धि का मार्ग दिखाना है।

बौद्ध धर्म की अवधारणा–

बौद्ध धर्म में सृष्टि के किसी सृष्टा की अवधारणा को केंद्रीय स्थान नहीं दिया गया है, बल्कि नैतिक आचरण७, करुणा, मैत्री (प्रेम) अहिंसा और सजगता (Mindfulness) पर विशेष बल दिया गया है।

गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात उनकी शिक्षाएँ एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में फैलीं।

विशेषकर तीसरी शताब्दी ईसा-पूर्व में सम्राट अशोक के काल में बौद्ध धर्म को राज्य संरक्षण प्राप्त हुआ। अशोक महान के प्रयासों से बौद्ध धर्म भारत से बाहर निकलकर श्रीलंका, मध्य एशिया, चीन, कोरिया, जापान तथा दक्षिण-पूर्व एशिया तक फैला और एक वैश्विक धर्म के रूप में स्थापित हुआ।

(Sarvepalli Radhakrishnan, Indian Philosophy, Vol. 1, George Allen & Unwin, London, pp. 360--365, Romila Thapar, Aœoka and the Decline of the Mauryas, Oxford University Press, pp. 250--262, Hajime Nakamura, Gotama Buddha: A Biography Based on the Most Reliable Texts, Oxford University Press, pp. 67--92)

बौद्ध धर्म का विकास-

बौद्ध धर्म का विकास उस काल में हुआ जब प्रारम्भिक वैदिक धर्म **(Early Vedic Religion)** अपने विकासात्मक चरणों **(Evolutionary Stages)** से गुज़रते हुए उत्तर वैदिक/ब्राह्मणीय व्यवस्था **(Later Vedic Religion / Brahmanical System)** का रूप ले चुका था।

इस दौर में धार्मिक जीवन धीरे-धीरे जटिल यज्ञों **(Complex Sacrificial Rituals)** बलिदानों और मंत्रोच्चार तक सीमित होता जा रहा था। इसके परिणामस्वरूप धार्मिक ज्ञान और कर्मकांडों पर ब्राह्मण वर्ग का प्रभुत्व स्थापित हो गया और सामान्य जन के लिए मुक्ति का मार्ग कठिन होता चला गया।

वर्ण व्यवस्था-

इसी ऐतिहासिक प्रक्रिया के दौरान समाज को संगठित करने के लिए वर्ण व्यवस्था **(Varna System)** का निर्माण हुआ, जिसके अन्तर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का विभाजन सामने आया। आगे चलकर यही विभाजन जाति-प्रथा के रूप में विकसित हुआ, जिससे सामाजिक असमानता बढ़ी और निम्न वर्ग सामाजिक वंचना का शिकार बने।

इसी पृष्ठभूमि में छठी शताब्दी ईसा-पूर्व के दौरान, महाजनपद काल **(Mahajanapada Period)** की सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों की परिस्थितियों में गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी।

अष्टाँगिक मार्ग-

बुद्ध ने निर्वाण-प्राप्ति के बाद चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग प्रस्तुत करके मानव दुःख की समस्या का समाधान नैतिकता, ध्यान और प्रज्ञा (ज्ञान) के माध्यम से करने का सन्देश दिया।

उन्होंने वैदिक कर्मकांडों, पशु-बलि और जाति-आधारित भेदभाव को अस्वीकार किया तथा यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि मोक्ष/निर्वाण प्रत्येक मनुष्य के लिए सम्भव है चाहे उसका सामाजिक स्थान कुछ भी हो।

इस सुधारात्मक आन्दोलन के परिणामस्वरूप हिन्दू परम्परा पर गहरे प्रभाव पड़े। अहिंसा, करुणा, नैतिक शुद्धता और आन्तिरक अनुभूति को अधिक महत्व दिया जाने लगा।

यज्ञ और बलि की परम्पराओं में कमी आई, भक्ति आन्दोलन और उपनिषदिक चिंतन को बल मिला, जहाँ बाह्य कर्मकांडों के बजाय आंतरिक अनुभव और ज्ञान पर ज़ोर दिया गया।

इसके अतिरिक्त कुछ हिन्दू दर्शनों में बुद्ध को विष्णु का अवतार भी स्वीकार किया गया। कुल मिलाकर बौद्ध धर्म ने हिन्दू धर्म में सादगी, करुणा, अहिंसा और नैतिकता जैसे मूल्यों को अधिक सुदृढ़ किया।

गौतम बुद्ध जी की भविष्यवाणियाँ-

बौद्ध परम्पराओं में भविष्य में आने वाले एक महान बुद्ध की स्पष्ट भविष्यवाणी मिलती है, जिसे पालि भाषा में मेत्तेय और संस्कृत में मैत्रेय कहा जाता है। बौद्ध मत के अनुसार गौतम बुद्ध के बाद एक लम्बा काल ऐसा आएगा जब उनकी शिक्षाएँ जिन्हें धर्म कहा जाता है, धीरे-धीरे कमज़ोर पड़ जाएँगी या संसार से लुप्त हो जाएँगी। इसी नैतिक और आध्यात्मिक पतन के काल में मैत्रेय का आगमन होगा।

मूल विशेषता-

बौद्ध ग्रंथों के अनुसार मेत्तेय (Metteyya) या मैत्रेय (Maitreya) की मूल

विशेषता प्रेम और करुणा है। वह मानवता को पुनः सत्य, नैतिक शुद्धता और सदाचार की ओर आमंत्रित करेगा और धर्म को पुर्नजीवित करेगा। उसका उद्देश्य किसी नई शिक्षा का परिवर्तन नहीं होगा, बल्कि बुद्ध की मूल नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षाओं को पुनर्जीवित करना होगा।

यह तथ्य विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि बौद्ध धर्म में मैत्रेय को "अंतिम बुद्ध" नहीं, बल्कि "भविष्य का बुद्ध" कहा गया है अर्थात बुद्धों की परम्परा में अगला भविष्य में आने वाला बुद्ध वह होगा, जो नैतिक पतन के बाद मानवता का सुधार करेगा और धर्म की पुर्नस्थापना का कार्य करेगा।

बौद्ध धर्म की पुस्तक पाली कैनन के अनुसार-

मेट्टेयो नाम भगवा लोके उप्पज्जिस्सति,
अरहं सम्मासम्बुद्धा.....

"Metteyyo nama bhagava loke uppajjissati,araham sammasambuddho..."

अनुवाद-

"एक समय ऐसा आएगा जब संसार में एक भगवान प्रकट होगा, जिसका नाम मेत्तेय या मैत्रेय होगा। वह पूर्णतः सिद्ध, जाग्रत (बुद्ध) और सच्चे ज्ञान से सम्पन्न बुद्ध होगा"।

(Digha Nikaya 26 (DN 26) Cakkavatti-Sihanada Sutta, Tipimaka)Pali Canon)

बौद्ध धर्म की पुस्तक अनागतवंस के अनुसार-

अजितो नाम नामेन, मेट्टेयो भविस्सतिय
बुद्धो धम्मं पकासेन्तो, लोकानुकम्पको।

"Ajito nama namena, Metteyyo bhavissati; buddho dhamma pakasento, lokanukampako".

(Anagatavamsa, verses on Metteyya (Pali text) Metteyya (Maitreya)

अनुवाद- "वह अजित नाम का होगा और मेत्तेय (मैत्रेय) कहलाएगा। वह

ऐसा बुद्ध होगा जो धर्म को स्पष्ट करेगा और संसार पर करुणा (दया/अनुकम्पा) करेगा"।

सारांश

बौद्ध धर्म के पालि स्रोतों विशष रूप से Digha Nikaya के Cakkavatti-Sihanada Sutta तथा स्वतंत्र ग्रंथ अनागतवंस (Anagatavamsa) में भविष्य के बुद्ध का नाम मेत्तेय Metteyya (मैत्रेय) (Maitreya) स्पष्ट रूप से उल्लिखित है, जो नैतिक पतन के पश्चात धर्म की पुनर्स्थापना के लिए प्रकट होगा।

पाली में मेत्तेय संस्कृत में मैत्रेय के शब्दार्थ-

पाली में मेत्तेय और संस्कृत में मैत्रेय शब्द पाली के मेत्ता (metta) तथा संस्कृत के मैत्री (मैत्री) शब्द से बना है। इन शब्दों के अर्थ प्रेम, करुणा, मित्रता, सद्भाव, परोपकार और दया। इसी मूल से मित्र/mitta (दोस्त) का भाव भी जुड़ा हुआ है।

अतः मैत्रेय का शाब्दिक अर्थ हुआ "प्रेम और करुणा से युक्त, परोपकारी, मित्र-स्वभाव वाली महान हस्ती"।

बौद्ध परम्परा में "मैत्रेय"

बौद्ध धर्म में मैत्रेय उस महान सत्ता को कहा जाता है, जो भविष्य में आने वाला बुद्ध होगा अर्थात् वर्तमान बुद्ध गौतम बुद्ध के बाद आएगा। जब संसार में धर्म (सत्य) क्षीण या लुप्त हो जाएगा, तब वह पुनः सत्य, नैतिकता और सम्यक मार्ग की शिक्षा देगा।

बौद्ध परम्पराओं में उसे सामान्यतः "Future Buddha" (आने वाला बुद्ध) कहा जाता है।

एन्साइक्लोपीडिया आफ़ बुद्धिज़्म के अनुसार-

एन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ बुद्धिज़्म (Encyclopaedia of Buddhism) श्रीलंका के अनुसार, मेत्तेय Metteya (Pali: Maitreya) बौद्ध धर्म में भविष्य का बुद्ध है, जो वर्तमान बुद्ध गौतम बुद्ध के बाद प्रकट होगा। वह इस समय तुषित

(Tusita) देवलोक में एक बोधिसत्त्व के रूप में निवास कर रहा है और उचित समय आने पर मानव लोक में जन्म लेकर बुद्ध बनेगा।

"Metteyya is the Buddha of the future, at present dwelling in the Tusita heaven as a Bodhisatta, destined to appear in the human world when the teaching of the present Buddha has disappeared." *(Encyclopaedia of Buddhism, Volume V, Article Maitreya)*

अनुवाद–

"मेत्तेय (मैत्रेय) भविष्य का बुद्ध है, जो वर्तमान में तुषित स्वर्ग में एक बोधिसत्त्व के रूप में निवास करता है और उसका भाग्य है कि वह उस समय मानव लोक में प्रकट होगा जब वर्तमान बुद्ध की शिक्षाएँ लुप्त हो चुकी होंगी"।

● एन्साइक्लोपीडिया स्पष्ट करती है कि Maitreya / Metteyya का व्युत्पत्ति-स्रोत maitri / metta है, जिनके अर्थ प्रेम, करुणा और परोपकार हैं। यही नैतिक मूल्य बौद्ध धर्म में केंद्रीय महत्व रखता है। जैसे–

"The name Metteyya is derived from metta (maitri) loving-kindness, a fundamental virtue in Buddhism."
(Encyclopaedia of Buddhism, Volume V, Article Maitreya)

अनुवाद–

"मेत्तेय (मैत्रेय) नाम की उत्पत्ति 'मेत्ता' 'मैत्री' (metta / maitri) से हुई है, जिसके अर्थ प्रेम और करुणा है और यही बौद्ध धर्म की एक नैतिक मूल्य मानी जाती है"।

एन्साइक्लोपीडिया के अनुसार मैत्रेय का आना उस समय होगा जब बुद्ध शास्त्र धम्म (Dhamma) संसार से लुप्त हो चुके होंगे, नैतिक पतन व्यापक हो जाएगा और मानव आयु फिर से बढ़ने लगेगी। उसी चरण में वह धर्म की पुर्नस्थापना करेगा। जैसे–

"When the Buddha's teaching has disappeared and moral decline prevails, Metteyya will arise to rediscover and proclaim the Dhamma." *(Encyclopaedia of Buddhism, Volume V, Article Maitreya)*

अनुवाद– "जब बुद्ध की शिक्षाएँ लुप्त हो चुकी होंगी और नैतिक पतन

सामान्य हो जाएगा तब मेत्तेय (मैत्रेय) प्रकट होगा, ताकि धर्म को पुनः खोजे और उसका उद्घोष करे"।

एन्साइक्लोपीडिया इस बात पर ज़ोर देती है कि मैत्रेय कोई देवता नहीं, बल्कि मानव बुद्ध होगा। जैसा कि बौद्ध परम्परा के अनुसार सभी बुद्ध मानव ही होते हैं।

"Like all Buddhas, Metteyya will be a human being and not a divine incarnation". ***(Encyclopaedia of Buddhism, Volume V, Article Maitreya)***

अनुवाद-

"जैसे अन्य सभी बुद्ध मानव होते हैं, वैसे ही मेत्तेय (मैत्रेय) भी मानव होगा, वह कोई देवता या ईश्वर नहीं होगा"।

पॉल कैरस (Paul Carus) के अनुसार-

जर्मन मूल के अमेरिकी दार्शनिक और लेखक पॉल कैरस ने बौद्ध धर्म को पश्चिमी विश्व में एक ग़ैर-ईश्वरवादी किन्तु नैतिक धर्म के रूप में प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **The Gospel of Buddha** में वे भविष्य के बुद्ध के सम्बन्ध में लिखते हैं-

'' There will come another Buddha in the future,whose name will be Maitreya, the Buddha of kindness and love.He will appear when the teaching of the present Buddha has disappeared, and he will reveal again the eternal truth.'' **(Paul Carus, The Gospel of Buddha, Open Court 1894, Future Buddha (Maitreya) Page 216-218)**

अनुवाद-

"भविष्य में एक और बुद्ध आएगा, जिसका नाम मैत्रेय होगा। वह प्रेम और करुणा (दया) का बुद्ध होगा। वह उस समय प्रकट होगा जब वर्तमान बुद्ध की शिक्षाएँ लुप्त हो चुकी होंगी और वह पुनः शाश्वत सत्य को प्रकट करेगा"।

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय जी के अनुसार-

संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान और शोधकर्ता पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय जी

ने अपनी पुस्तक "नराशंस और अन्तिम ऋषि" के अध्याय 6 पृष्ठ संख्या 40 पर पॉल कैरस की प्रसिद्ध पुस्तक "The Gospel of Buddha" के सन्दर्भ से गौतम बुद्ध की भविष्यवाणियों के आधार पर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अन्तिम बुद्ध सिद्ध किया है।

वह लिखते हैं-

'ऋषि' को बौद्ध धर्म की भाषा में 'बुद्ध' कहा जाता है। उस बुद्ध के विषय में भविष्यवाणी का स्वरूप प्रस्तुत है, जिसे गौतम बुद्ध ने अपने मृत्यु काल के समय अपने प्रिय शिष्य नन्दा से बताया था।

नन्दा-

इस संसार में मैं न तो प्रथम बुद्ध हूँ और न तो अन्तिम बुद्ध हूँ। इस जगत में सत्य तथा परोपकार की शिक्षा देने के लिए अपने समय पर एक और 'बुद्ध' आएगा। वह पवित्र अन्तःकरण वाला होगा, उसका हृदय शुद्ध होगा। ज्ञान और बुद्धि से सम्पन्न तथा समस्त लोगों का नायक होगा। जिस प्रकार मैंने जगत को अनश्वर सत्य की शिक्षा प्रदान की है, उसी प्रकार वह भी जगत को सत्य की शिक्षा देगा। जगत को वह ऐसा जीवन मार्ग दिखाएगा, जो शुद्ध (अमिश्रित) तथा पूर्ण भी होगा। नन्दा ! उसका नाम मैत्रेय होगा।'

'बुद्ध' का अर्थ 'बुद्धि से युक्त' होता है। बुद्ध मनुष्य ही होते हैं, देवता आदि नहीं। (डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय, नराशंस और अंतिम ऋषि, पृष्ठ 11-20)

नोट-

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय जी के इस शोध की पुष्टि करते हुए डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव अपनी पुस्तक "हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और भारतीय धर्मग्रंथ" में पृष्ठ संख्या 33 से 37 तक विस्तार से चर्चा करते हैं और अंत में लिखते हैं- "इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि बौद्ध धर्म की पुस्तकों में जिस मैत्रेय के आगमन की भविष्यवाणी की गई है, वही हज़रत मुहम्मद हैं"।

(हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्मग्रंथ- डॉ० एम० ए० श्रीवास्तव, पृष्ठ संख्या-37)

आने वाले बुद्ध (मैत्रेय) की विशेषताएँ

● वह अपने निर्धारित समय पर आएगा अर्थात उस समय जब वर्तमान बुद्ध की शिक्षाएँ लुप्त हो चुकी होंगी और नैतिक पतन व्यापक हो जाएगा।

● मैत्रेय कोई देवता नहीं, बल्कि मानव होगा। जैसे सभी बुद्ध मानव होते हैं, वैसे ही मेत्तेय (मैत्रेय) भी मानव होगा, वह कोई देवता या ईश्वर नहीं होगा।

● उसका नाम मैत्रेय (मैत्रेय) होगा, पालि में मेत्तेय्य **(Metteyya)** और संस्कृत में मैत्रेय कहा जाता है। जिसका अर्थ प्रेम, करुणा और परोपकार से युक्त है।

● उसका हृदय पवित्र होगा और वह ज्ञान व बुद्धि से परिपूर्ण होगा। ग्रंथों में उसे अरहंत **(Arahant)** अर्थात बुद्धिमान **(wise)** और पवित्र हृदय वाला **(pure & hearted)** बताया गया है।

● वह संसार को सत्य और भलाई की शिक्षा देगा। बौद्ध धर्म में इसे धम्म **(Dhamma)** की शिक्षा तथा **metta/karuna** (प्रेम और दया) के प्रचार के रूप में बताया गया है।

● वह लोगों को सत्य और सम्यक मार्ग दिखाएगा। इससे अभिप्राय शुद्ध और पूर्ण धम्म **Dhamma** की राह **(Right Path)** से है।

● वह संसार का मार्गदर्शक होगा। बौद्ध ग्रंथों में मैत्रेय को सम्मासंबुद्ध **(Sammasambuddha)** और लोकनायक **lokanayaka** (लोगों का मार्गदर्शक) कहा गया है।

बुद्ध मेत्तेय्य या मैत्रेय का तुलनात्मक आधार-

बौद्ध धर्म की शास्त्रीय परम्पराओं में एक भविष्य के बुद्ध **(Metteyya / Maitreya)** के प्रकट होने की भविष्यवाणी मिलती है, जबकि इस्लाम में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़ातिमुन्नबिय्यीन (अन्तिम नबी) घोषित किया गया है। कुछ आधुनिक विद्वानों जैसे डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय और डॉ०एम० ए० श्रीवास्तव ने बौद्ध ग्रंथों में वर्णित गुणों और इस्लामी स्रोतों में उल्लिखित गुणों

के बीच अर्थगत समानताओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है। नीचे इन्हीं गुणों के आधार पर एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

1. बुद्ध मैत्रेय की पृष्ठभूमि-

बौद्ध धर्म की प्रामाणिक परम्पराओं के अनुसार भविष्य का बुद्ध मैत्रेय (Metteyya) उस समय आएगा, जब गौतम बुद्ध की मूल शिक्षाएँ (धम्म) संसार से लगभग लुप्त हो चुकी होंगी, संन्यासी अनुशासन (विनय) कमज़ोर पड़ जाएगा और समाज में नैतिक पतन, लोभ, हिंसा तथा पथभ्रष्टता आ़म हो जाएगी।

'पालि कैनन' और बाद के बौद्ध ग्रंथों में यह धारणा स्पष्ट रूप से मिलती है कि जब मनुष्य आध्यात्मिक मूल्यों से दूर होकर केवल भौतिक इच्छाओं का दास बन जाएगा और सत्य व न्याय का प्रकाश मंद पड़ जाएगा तब मैत्रेय आएगा, ताकि वह पुनः शुद्ध धम्म की शिक्षा दे, नैतिक सुधार करे और मानवता को शांति, करुणा और सदाचार की ओर लौटाये।

यह आना किसी एक समुदाय तक सीमित नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक नैतिक पुनर्जागरण के रूप में वर्णित है, जिसका उद्देश्य बिगड़े हुए मानव समाज को फिर से नैतिक सन्तुलन प्रदान करना है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व-

मनुष्यों के लिए अपने सृष्टा को पहचानना और केवल उसी की उपासना व भक्ति करना सबसे बड़ी और मूल सत्यता है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी से पूर्व संसार गंभीर सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक बुराईयों में डूबा हुआ था।

एकेश्वरवाद के स्थान पर बहुदेववाद प्रचलित था और लोग मूर्तियों, तारों, सूर्य-चंद्रमा, अवतारों तथा विभिन्न प्राणियों की पूजा करते थे। नैतिक स्तर पर अत्याचार, दमन और अन्याय आ़म थे।

शक्तिशाली लोग कमजोरों को कुचलते थे, दासता सामान्य थी, स्त्रियों के

अधिकारों का हनन होता था और कन्याओं को जीवित दफ़न करने जैसी क्रूर प्रथाएँ मौजूद थीं।

समाज में अश्लीलता, मद्यपान, जुआ, रक्तपात और कबीलाई पक्षपात ने मानवीय मूल्यों को नष्ट कर दिया था, जबकि धार्मिक नेतृत्व अक्सर स्वार्थपरता और अंधविश्वासों में फँसा हुआ था। कुल मिलाकर, मानवता बौद्धिक भ्रम, नैतिक पतन और सामाजिक अव्यवस्था के अंधकार में भटक रही थी, जहाँ सत्य और न्याय का प्रकाश मंद पड़ चुका था।

अल्लाह की उपासना-

क़ुर्आन और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अल्लाह की उपासना के साथ-साथ मनुष्यों के साथ भलाई और परोपकार की समग्र शिक्षा दी। क़ुर्आन में एकेश्वरवाद के तुरन्त बाद माता-पिता के साथ सद्व्यवहार, रिश्तेदारों, अनाथों, निर्धनों, पड़ोसियों, यात्रियों और ज़रूरतमंदों के अधिकारों को निभाने का आदेश दिया गया है।

इसी प्रकार न्याय और निष्पक्षता स्थापित करने, सत्य बोलने, अमानतें लौटाने, वचन निभाने, नाप-तौल में ईमानदारी रखने तथा अत्याचार, धोखा और अश्लीलता से बचने की हिदायत दी गई है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने आचरण से इन शिक्षाओं को साकार किया। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दया, क्षमा, नम्रता, माफ़ी, ग़रीबों की सहायता, अनाथों की देखभाल, रोगियों की सेवा, भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, पड़ोसी के अधिकारों का सम्मान और यहाँ तक कि पशुओं के साथ भी सद्व्यवहार की शिक्षा दी।

इस प्रकार आपने एक ऐसा व्यावहारिक जीवन-तंत्र प्रदान किया जिसमें अल्लाह की बन्दगी के साथ मानवता की सेवा, नैतिक पवित्रता और सामाजिक कल्याण को केंद्रीय स्थान प्राप्त है।

समानता का बिन्दु

मैत्रेय के प्रकट होने का उद्देश्य शुद्ध धम्म की पुर्नस्थापना, मानव को

लोभ, हिंसा और भौतिकतावाद से निकालकर शांति, करुणा और सदाचार की ओर लौटाना है। जबकि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी ने एकेश्वरवाद के उद्घोष के साथ मानव को सृष्टिकर्ता की उपासना और सृष्टि की सेवा पर आधारित सन्तुलित व्यवस्था से परिचित कराया।

दोनों में केंद्रीय सन्देश यह है कि वास्तविक सुधार केवल बाह्य कानूनों से नहीं, बल्कि हृदय और बुद्धि की शुद्धि, नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना, न्याय, करुणा, सत्य और मानवीय गरिमा के पुर्नजागरण से सम्भव है।

इस प्रकार यह दोनों अवधारणाएँ मानवता के लिए वैश्विक नैतिक नवचेतना का सन्देश देती हैं, जिसका उद्देश्य बिगड़े हुए समाज को आध्यात्मिक जागरण और नैतिक सन्तुलन की ओर वापस लाना है।

2. मानवीय हैसियत (Human Guide, Non-divine)

Encyclopaedia of Buddhism के अनुसार बौद्ध धर्म की प्रामाणिक परम्परा में मेत्तेय्य या मैत्रेय **(Metteyya/Maitreya)** को किसी देवता, अवतार या दैवी सत्ता के रूप में नहीं, बल्कि एक मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया है। बौद्ध धर्म के मूल सिद्धान्त के अनुसार सभी बुद्ध चाहे वे अतीत के हों, वर्तमान के (गौतम बुद्ध) हों मानव ही होते हैं और जो भविष्य का बुद्ध होगा वह भी मानव ही होगा, जो अपनी व्यक्तिगत साधना, नैतिक शुद्धता और प्रज्ञा के माध्यम से बोधि **(Enlightenment)** प्राप्त करता है।

इसी क्रम में मैत्रेय भी एक मानवीय अस्तित्व होगा, जो उस समय प्रकट होगा जब गौतम बुद्ध की मूल शिक्षाएँ (धम्म) संसार में क्षीण हो चुकी होंगी।

एन्साइक्लोपीडिया स्पष्ट करती है कि बौद्ध धर्म में मुक्ति या सुधार किसी अलौकिक ईश्वर के अवतरण से नहीं, बल्कि एक पूर्ण मानव की नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शना से जुड़ा माना जाता है।

अतः मैत्रेय की भूमिका भी मानवीय नैतिक-आध्यात्मिक पुनर्जागरणकर्ता की है, न कि किसी देवता या ईश्वर की।

विश्वास-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विषय में इस्लाम का मूल और निश्चित विश्वास यह है कि मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मानव रसूल हैं, परमेश्वर हैं और न ही ईश्वरत्व का कोई दावा रखते हैं। क़ुर्आन बयान करता है-

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ

अनुवाद-

"कह दीजिए! मैं तो तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूँ मेरी ओर वह़्य की जाती है कि तुम्हारा उपास्य केवल एक अल्लाह है"। (सूरः अल्-कहफ़, आयत-110)

अल्लाह के बन्दे-

इस आयत से यह निर्णायक रूप से सिद्ध होता है कि इस्लाम में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ह़ैसियत अल्लाह के बन्दे, उसके चुने हुए रसूल और मानवता के लिए एक व्यावहारिक आदर्श की है न कि किसी दैवी या ईश्वरीय सत्ता की। यही इस्लामी तौह़ीद (एकेश्वरवाद) की शुद्ध और विशिष्ट धारणा है।

एक मानव रसूल-

ह़दीस में भी इस तथ्य को पूर्ण स्पष्टता के साथ बताया गया है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मानव रसूल हैं और आपने कभी भी ईश्वरत्व या अति मानव होने का दावा नहीं किया।

सह़ीह़ बुख़ारी में वर्णित है-

अनुवाद-

"मैं तो तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूँ। जैसे तुम भूलते हो, वैसे ही मैं भी भूल जाता हूँ"। (बुख़ारी, ह़दीस नं० 401)

इस प्रामाणिक ह़दीस से भी यह निर्णायक रूप से स्पष्ट होता है कि इस्लाम में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ह़ैसियत अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल की है न कि किसी दैवी या ईश्वरीय सत्ता की और यही इस्लामी

अक़ीदा-ए-तौह़ीद की बुनियाद है।

समानता का बिन्दु-

बौद्ध धर्म में मेत्तेय्य या मैत्रेय की अवधारणा और इस्लाम में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के रिसालत के सिद्धान्त के बीच एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और स्पष्ट बिन्दु यह है कि दोनों परम्पराएँ मानवता के सुधार के लिए किसी देवता या दैवी सत्ता के बजाय एक पूर्ण मानवीय आदर्श को केंद्र में रखती हैं। बौद्ध परम्परा मैत्रेय को एक मानव मानती है, जो नैतिक साधना, आध्यात्मिक जागरण और बोधि (प्रबोधन) के माध्यम से मानवता का मार्गदर्शन करेगा न कि किसी अलौकिक सत्ता के रूप में अवतरित होगा।

इसी प्रकार इस्लाम में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को स्पष्ट रूप से मानव रसूल स्वीकार किया गया है, जो मानव समाज के भीतर रहते हुए मानवीय कमजोरियों और समस्याओं के बीच व्यावहारिक आदर्श बनकर नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक सुधार का दायित्व निभाते हैं।

दोनो अवधारणाएँ-

दोनों अवधारणाएँ इस सत्य पर सहमत हैं कि मानवता का वास्तविक सुधार किसी दैवी शक्ति के दबाव से नहीं, बल्कि ऐसे मानवीय मार्गदर्शक के माध्यम से होता है जो स्वयं आचरण, नैतिकता, न्याय, करुणा और सदाचार का जीवंत उदाहरण हो।

इस प्रकार मैत्रेय और ह़ज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दोनों को मानव इतिह़ास में नैतिक और आध्यात्मिक पुर्नजागरण के लिए अनुकरणीय मानवीय मॉडल **(Human Model of Guidance)** के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

3. नाम की विशेषता में समानता

मैत्रेय **(Metteyya)** शब्द संस्कृत और पालि के मैत्री मूल से निकला है, जिसके मूल अर्थ प्रेम, करुणा, मित्रता, परोपकार और दया हैं। इसी धातु से मित्र **(Mitta)** शब्द भी बना है, जो आपसी निकटता और सहानुभूति के भाव

को प्रकट करता है। बौद्ध धर्म की नैतिक शिक्षाओं में मेत्ता (प्रेम और करुणा) को एक विशेष दर्जा प्राप्त है। इसी कारण **Encyclopaedia of Buddhism** के अनुसार मैत्रेय के नाम की उत्पत्ति भी इसी नैतिक अवधारणा से जुड़ी मानी जाती है। शाब्दिक दृष्टि से मैत्रेय का अर्थ इस प्रकार है-

> "प्रेम और करुणा से युक्त, परोपकारी और मित्र-स्वभाव वाली महान सत्ता"।

भारतीय उपमहाद्वीप के एक प्राचीन पत्रकारिक अध्ययन में भी यही अर्थ सामने आता है। **16** अक्टूबर **1930** के समाचार-पत्र **Leader** में प्रकाशित लेख **"A Study of Buddhism"** (पृष्ठ **7**, स्तम्भ **3**) में बौद्ध सन्दर्भ में मैत्रेय का अर्थ "दया (करुणा) से युक्त" बताया गया है, जो इस नाम के नैतिक आधार की और अधिक पुष्टि करता है।

समस्त संसार के लिए रह़मत

इसी अर्थगत सन्दर्भ में जब इस्लामी स्रोतों में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यक्तित्व को देखा जाता है तो क़ुर्आन मजीद ने आपको स्पष्ट रूप से "रह़मतुल्लिल आ़लमीन" (समस्त संसारों के लिए रह़मत) कहा है।

وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۰۷﴾

अनुवाद-

"और हमने आपको समस्त संसारों के लिए केवल रह़मत बनाकर ही भेजा है"। (सूरः अल्-अम्बिया-**107**)

व्यवहारिक जीवन शैली-

यह विशेषण केवल एक आस्था-सम्बन्धी उपाधि नहीं, बल्कि आपकी व्यावहारिक जीवन-शैली (सीरत) का सार है, जिसमें करुणा, क्षमा, परोपकार और सम्पूर्ण मानवता के लिए व्यापक दया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस आयत में यह भी स्पष्ट किया गया है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी किसी एक जाति या समूह तक सीमित नहीं, बल्कि समस्त मानवता यहाँ तक

कि समस्त सृष्टि के लिए रह़मत है।

आपकी शिक्षाओं में आस्था, उपासना, नैतिकता, न्याय, करुणा, शान्ति, सामाजिक कल्याण और यहाँ तक कि पशुओं के अधिकार भी शामिल हैं।

इसी व्यापक करुणा के कारण आपको "रह़मतुल्लिल् आ़लमीन" कहा गया अर्थात ऐसी हस्ती जिसकी जीत और सन्देश से पूरी दुनिया लाभान्वित हो।

समानता का बिन्दु

बौद्ध धर्म में मैत्रेय (Maitreya) का शाब्दिक और नैतिक अर्थ प्रेम, करुणा, दया और परोपकार से गहराई से जुड़ा है, और बौद्ध स्रोतों में भविष्य के बुद्ध को इन्हीं नैतिक गुणों के साथ मानवता के सुधार के लिए आने वाला बताया गया है।

दूसरी ओर इस्लाम में क़ुर्आन मजीद ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को स्पष्ट रूप से "रह़मतुल्लिल आ़लमीन" घोषित किया है, जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आपकी पैग़म्बरी का मूल उद्देश्य समस्त मानवता के लिए दया, करुणा और भलाई का सन्देश देना था।

मूलभूत गुण-

इस प्रकार दोनों धार्मिक परम्पराओं में करुणा (रह़मत) एक केंद्रीय और मूलभूत गुण के रूप में उभरकर सामने आती है।

अतः तुल्नात्मक धर्म-अध्ययन के शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म में भविष्य के बुद्ध मैत्रेय की अवधारणा जो अपने शाब्दिक और नैतिक अर्थ में प्रेम, दया और परोपकार पर आधारित है और इस्लाम में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का "रह़मतुल्लिल् आ़लमीन" होना आपस में गहरी अर्थगत और नैतिक सामंजस्य रखते हैं।

ह़ालाँकि इस सामंजस्य को उपमा और तुल्नात्मक अध्ययन के स्तर पर समझना चाहिए आस्था या व्यक्तित्व की समानता का दावा समझकर नहीं।

4. हृदय पवित्र और ज्ञान व बुद्धि से परिपूर्ण होगा-

बौद्ध स्रोतों में भविष्य के बुद्ध मैत्रेय को उच्च नैतिक गुणों से युक्त, पवित्र

हृदय और प्रज्ञा व विवेक से परिपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में वर्णित किया गया है। ग्रंथों में उसे अरहंत (Arahant) कहा गया है, जो बौद्ध परम्परा में उस सत्ता के लिए प्रयुक्त होता है जिसने आंतरिक शुद्धि, बौद्धिक अंतदृष्टि और नैतिक पूर्णता के सर्वोच्च स्तर को प्राप्त कर लिया हो।

अरहंत (Arahant) की संकल्पना केवल बाह्य ज्ञान तक सीमित नहीं बल्कि उसमें हृदय की पवित्रता, वासनाओं पर नियंत्रण, न्यायपूर्ण दृष्टिकोण और मानवता के प्रति परोपकारपूर्ण व्यवहारिक बुद्धि शामिल है। इसी कारण बौद्ध परम्परा मैत्रेय को ऐसे नैतिक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करती है, जो ज्ञान और विवेक के सन्तुलन के साथ मानव समाज में नैतिक सुधार का माध्यम बनेगा और जिसकी व्यक्तित्व-केन्द्रिता पवित्रता और प्रज्ञा है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का चरित्र-

इस्लामी स्रोतों के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उत्कृष्ट चरित्र, परिपक्व बुद्धिमत्ता (ह़िक्मत) अमानतदारी, सत्यनिष्ठा और ईमानदारी का पूर्ण एवं समग्र आदर्श बताया गया है।

क़ुर्आन मजीद अत्यन्त स्पष्टता के साथ आपके नैतिक स्थान को असाधारण महानता के साथ प्रस्तुत करता है, जिससे यह तथ्य उजागर होता है कि उत्कृष्ट नैतिकता आपकी पैग़म्बरी का कोई गौण पक्ष नहीं, बल्कि पूरे नबवी मिशन की आधारशिला और केंद्र है।

प्रामाणिक सीरत-वृत्तांत इस बात की पुष्टि करते हैं कि आपकी व्यक्तित्व में हृदय की पूर्ण पवित्रता, ज्ञान और विवेक का सन्तुलित व गहन समन्वय, वासनाओं पर पूर्ण नियंत्रण, न्यायपूर्ण और निष्पक्ष दृष्टि तथा मानवता के प्रति परोपकारपूर्ण व्यवहारिक बुद्धि स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

नेतृत्व की क्षमता-

यही गुण आपकी नेतृत्व-क्षमता को केवल वैचारिक दायरे तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे सार्वभौमिक नैतिक आदर्श बना देते हैं जो व्यक्ति सुधार, सामाजिक सन्तुलन और समस्त मानवता के कल्याण के लिए स्थायी और

अनुकरणीय मानक प्रदान करता है।

समानता का बिन्दु

बौद्ध परम्परा में भविष्य के बुद्ध मैत्रेय और इस्लामी स्रोतों में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों के गुणों में अनेक मूल नैतिक और अर्थगत मूल्य समान हैं।

दोनों परम्पराएँ हृदय की पवित्रता, ज्ञान और विवेक का सन्तुलित समन्वय, व्यवहारिक बुद्धि, वासनाओं पर नियंत्रण, न्यायपूर्ण सोच और मानवता के प्रति परोपकार को आदर्श मानवीय व्यक्तित्व के केंद्रीय तत्व के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

बौद्ध धर्म में अरहंत **(Arahant)** की संकल्पना जिस आंतरिक शुद्धि, बौद्धिक अंतदृष्टि और नैतिक पूर्णता का प्रतिनिधित्व करती है, वही गुण इस्लामी परम्परा में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चरित्र के सन्दर्भ में उत्कृष्ट नैतिकता, सत्यनिष्ठा, अमानतदारी और परिपक्व बुद्धिमत्ता के रूप में उजागर होते हैं।

दोनों व्यक्तित्वों को केवल सैद्धांतिक या वैचारिक मार्गदर्शक नहीं, बल्कि व्यावहारिक नैतिक आदर्श माना गया है, जिनके जीवन व्यक्ति-सुधार, सामाजिक न्याय और मानव कल्याण के लिए ठोस मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, तथापि इस समानता को नैतिक मूल्यों और व्यक्तित्वगत गुणों के स्तर पर एक तुलनात्मक अध्ययन के रूप में समझा जाना चाहिए। धार्मिक आस्थाओं या व्यक्तित्वों की पहचान का दावा मानकर नहीं।

5. सत्य और सीधा मार्ग-

बौद्ध परम्पराओं के अनुसार गौतम बुद्ध ने भविष्य के बुद्ध मैत्रेय के विषय में स्पष्ट किया कि वह मानवता को सत्य और सीधा मार्ग दिखाएगा। इससे अभिप्राय शुद्ध और पूर्ण धम्म **(Shuddha Dhamma / Right Path)** की राह है।

बौद्ध मत में "जीवन का मार्ग" केवल कुछ नैतिक उपदेशों का संकलन

नहीं, बल्कि एक समग्र धार्मिक आचार-संहिता (Way of Life) है, जो मनुष्य के विचार, कर्म और चरित्र तीनों को समाहित करती है।

सत्य जीवन पद्धति-

ग्रंथों में यह भी वर्णित है कि मैत्रेय की शिक्षा स्वच्छ, निष्कलुष और शुद्ध मार्ग पर आधारित होगी, जिसमें आंतरिक पवित्रता, नैतिक सत्यता और सही जीवन-पद्धति को मूल महत्व प्राप्त होगा।

इस अवधारणा में देवी-देवताओं की पूजा, कर्मकांड-प्रधानता या मध्यस्थताओं की केन्द्रीयता नहीं, बल्कि मानव की नैतिक शुद्धि और सत्यनिष्ठ जीवन को ही मुक्ति और कल्याण का साधन माना गया है।

इस प्रकार मैत्रेय की शिक्षा का केंद्र शुद्ध सत्य, सीधा मार्ग और लोक-कल्याण है, जो मनुष्य को वैचारिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर सही दिशा प्रदान करता है।

इसी सिद्धान्त को तो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने भी मानवता को एक सच्चा, शुद्ध और सीधा धार्मिक मार्ग दिखाया जिसे क़ुर्आन मजीद ने सिरात-ए-मुस्तक़ीम कहा है।

समग्र जीवन प्रणाली-

इस्लाम में जीवन का मार्ग केवल कुछ आस्थाओं या अ़िबादतों तक सीमित नहीं, बल्कि एक समग्र जीवन-प्रणाली है जो आस्था, उपासना, नैतिकता, सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक न्याय सबको अपने दायरे में समेटती है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की दअ़वत की मूल विशेषता यह थी कि उसमें अल्लाह की शुद्ध उपासना (तौह़ीद) पर बल दिया गया और हर प्रकार की शिर्कयुक्त रस्मों, देवी-देवताओं की आराधना तथा मानव-निर्मित मध्यस्थताओं को स्पष्ट रूप से अस्वीकार किया गया।

इस दृष्टि से इस्लाम का सन्देश भी शुद्ध एकेश्वरवाद, सत्य और लोक-कल्याण पर आधारित है जिसका उद्देश्य मनुष्य को वैचारिक भ्रांति से

निकालकर स्वच्छ, सीधे तथा न्याय व नैतिकता पर आधारित मार्ग पर अग्रसर करना है।

समानता का बिन्दु

बौद्ध धर्म में भविष्य के बुद्ध मैत्रेय और इस्लाम में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षाओं का तुल्नात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि दोनों का केंद्रीय उद्देश्य मानवता को सत्य और सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन प्रदान करना है।

बौद्ध धर्म में इस मार्ग को शुद्ध धम्म (Right Path) कहा गया है जो एक पूर्ण जीवन-संहिता है और मनुष्य के विचार, कर्म और चरित्र तीनों का परिष्कार करती है। जबकि इस्लाम में इसी अर्थ को सिरात-ए-मुस्तक़ीम कहा गया है जो आस्था, उपासना, नैतिकता और सामाजिक न्याय से युक्त समग्र जीवन-व्यवस्था है।

दोनों शिक्षाओं में आंतरिक पवित्रता, नैतिक सत्यता और शुद्ध मार्ग पर जोर दिया गया है तथा कर्मकांड-प्रधानता, अनावश्यक मध्यस्थताओं और स्वनिर्मित अतिरिक्तताओं का निषेध किया गया है।

इसी प्रकार दोनों का लक्ष्य केवल व्यक्ति-सुधार नहीं बल्कि लोक-कल्याण, मानव-कल्याण और सामाजिक उन्नति है, ताकि मनुष्य वैचारिक भ्रांति से निकलकर स्वच्छ, सीधी और नैतिक जीवन-पद्धति को अपनाये।

6. मूल शिक्षा की पुनर्स्थापना-

बौद्ध परम्पराओं और Encyclopaedia of Buddhism के अनुसार भविष्य का बुद्ध मैत्रेय (Maitreya / Metteyya) किसी नई धार्मिक शिक्षा का संस्थापक नहीं होगा।

वह उस समय प्रकट होगा जब वर्तमान बुद्ध की शिक्षाएँ अर्थात धम्म (Dhamma) संसार से लुप्त हो चुकी होंगी और नैतिक पतन व्यापक हो जाएगा। उसका मूल मिशन शाश्वत सत्य (Eternal Truth) को पुनः खोजकर मानवता के सामने फिर से प्रस्तुत करना होगा। बौद्ध ग्रंथों में स्पष्ट है कि मैत्रेय

धम्म (Dhamma) को पुनः उद्घाटित करेगा अर्थात मूल बौद्ध नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षाओं को उनकी शुद्ध और निष्कलुष अवस्था में बहाल करेगा।

इस प्रकार मैत्रेय की भूमिका किसी नई शास्त्र-व्यवस्था या नये धर्म की स्थापना की नहीं, बल्कि सुधार, पुर्नजागरण और नवीनीकरण की है वह प्रेम, करुणा और नैतिक पवित्रता के आधार पर मानवता को फिर से सही मार्ग पर लौटाएगा।

नैतिक सच्चाई-

इसी सिद्धान्त को हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी में देखें तो यह है कि उन का उद्देश्य भी किसी बिल्कुल नई नैतिक सच्चाई का आविष्कार करना नहीं था, बल्कि पूर्ववर्ती नबियों की मूल शिक्षाओं की पुष्टि और पूर्णता था।

कुर्आन मजीद के अनुसार आपने तौहीद (एकेश्वरवाद) न्याय, नैतिकता और लोक-कल्याण के उस संदेश को पुनर्जीवित किया जो समय के साथ विकृत या भुला दिया गया था।

जैसे बौद्ध धर्म में मैत्रेय उस समय प्रकट होगा जब धम्म (Dhamma) लुप्त हो चुका होगा, उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी ऐसे समाज में भेजे गये जहाँ इब्राहीमी एकेश्वरवाद व्यवहार में समाप्त हो चुका था। आपने उसी आदि और शाश्वत सत्य को फिर से स्पष्ट किया और उसे समग्र जीवन-प्रणाली के रूप में मानवता के सामने रखा।

इस प्रकार इस्लामी विश्वास में भी आपका चरित्र मूलतः नवीकरण, सुधार और पूर्णता का है न कि किसी असम्बद्ध या विभिन्न धार्मिक परम्परा की शुरुआ़त का।

समानता का बिन्दु

बौद्ध धर्म के भविष्य के बुद्ध मैत्रेय और इस्लाम के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के तुलनात्मक अध्ययन से यह साझा पक्ष स्पष्ट होता है कि दोनों का प्रकट होना ऐसे समय में बताया गया है जब समाज गम्भीर धार्मिक,

नैतिक और आध्यात्मिक पतन का शिकार हो चुका हो। दोनों का मूल उद्देश्य किसी नये धर्म का निर्माण नहीं, बल्कि भुलाये गये आदि और शाश्वत सत्य को फिर से जीवित करना है।

दोनों की शिक्षाएँ शुद्ध और सार्वभौमिक हैं, जो मनुष्य के पूरे जीवन विचार, कर्म और चरित्र का परिष्कार करती हैं और दोनों की दअ़वत लोक-कल्याण और मानवता की भलाई पर केंद्रित है।

पुनः प्रकट होना-

बौद्ध धर्म में मैत्रेय धम्म को उसकी मूल अवस्था में पुनः प्रकट करेगा जबकि इस्लाम में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने स्पष्ट किया कि वे कोई नया धर्म लेकर नहीं आये, बल्कि पूर्व नबियों की मूल शिक्षाओं की पुष्टि और पूर्णता करते हुए तौह़ीद, न्याय और उच्च नैतिकता पर आधारित एक समग्र जीवन-प्रणाली प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार इस्लाम में भी आपका चरित्र मूलतः नवीनीकरण, सुधार और पूर्णता का ही है।

7. सार्वभौमिक मार्गदर्शन-

बौद्ध परम्पराओं और विश्वकोशीय विवरणों के अनुसार भविष्य का बुद्ध मैत्रेय एक ऐसी सार्वभौमिक व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसकी दअ़वत और मार्गदर्शन किसी विशेष जाति, क्षेत्र या नस्ल तक सीमित नहीं होंगे, बल्कि सम्पूर्ण विश्व उसके सम्बोधन और लाभ का पात्र होगा।

ग्रंथों में बताया गया है कि उसका प्रकट होना उस चरण में होगा जब गौतम बुद्ध की मूल शिक्षाएँ (धम्म) संसार में कमजोर पड़ जाएँगी या लुप्त होने लगेंगी, नैतिक और आध्यात्मिक पतन सामान्य हो जाएगा और मानव समाज को फिर से आंतरिक सुधार और सत्य के पुनर्जागरण की आवश्यकता होगी।

पवित्र अन्तः करण वाला-

इसी सन्दर्भ में मैत्रेय को "पवित्र अंतःकरण वाला" "शुद्ध हृदय" "ज्ञान

और विवेक से परिपूर्ण" तथा "सही दिशा दिखाने वाला नायक" कहा गया है अर्थात वह मानवता की बौद्धिक और नैतिक दिशा को दुरुस्त करने के लिए शुद्ध और निष्कलुष धम्म को पुनः स्पष्ट करेगा।

पालि परम्परा के अनुसार उसकी पहचान इस कथन से भी की जाती है कि वह 'अजित' नाम का होगा और "मेत्तेय" कहलाएगा। वह ऐसा बुद्ध होगा जो धम्म को प्रकट करेगा और संसार को करुणा (दया) और परोपकार के आधार पर मार्गदर्शन देगा।

एक सुधारक-

इस प्रकार बौद्ध अवधारणा में मैत्रेय केवल एक धार्मिक नेता नहीं, बल्कि नैतिक शुद्धि, मानव कल्याण और सार्वभौमिक मार्गदर्शन का ध्वजवाहक वैश्विक मार्गदर्शक है, जो पूरी दुनिया के लिए सुधार का मार्ग निर्धारित करेगा।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुबूवत भी सम्पूर्ण मानवता के लिए है जो आपकी वैश्विक मार्गदर्शकता का स्पष्ट और उज्ज्वल प्रमाण है। क़ुर्आन मजीद स्पष्ट रूप से घोषित करता है कि अल्लाह तआ़ला ने आपको सभी मनुष्यों के लिए शुभ-सूचक और चेतावनी देने वाला बनाकर भेजा और यह कि आप आकाशों और पृथ्वी के वास्तविक स्वामी की ओर से सम्पूर्ण मानव जाति के रसूल हैं।

इस सार्वभौमिक दअ़वत में जाति, नस्ल, भाषा और भूगोल की कोई सीमा नहीं, बल्कि मानवता समग्र रूप से इसकी सम्बोधित है।

इसी आधार पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) न केवल अपने युग के बल्कि सभी युगों के लिए विश्व-मार्गदर्शक ठहरते हैं, क्योंकि आपकी शिक्षाएँ नैतिकता, न्याय, समानता और ईश-भय (तक़्वा) जैसे सार्वकालिक और सार्वभौमिक सिद्धान्तों पर आधारित हैं, जो हर समाज और हर काल में मानवता की बौद्धिक और व्यावहारिक दिशा निर्धारित करती हैं जिसकी पुष्टि क़ुर्आन मजीद ने इस प्रकार की है-

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۙ﴿۱﴾

(सूरः फ़ुरक़ान आयत नं० 1)

अनुवाद- "बड़ी बरकत वाला है वह जिसने अपने बन्दे पर फ़ुर्क़ान (क़ुर्आन) उतारा, ताकि वह समस्त संसारों के लिए चेतावनी देने वाला बने"।

وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيۡرًا وَّنَذِيۡرًا وَّلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۸﴾

(सूरः सबा आयत नं० 28)

अनुवाद-

(ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)) "हमने आपको समस्त लोगों के लिए शुभ सन्देश देने वाला और चेतावनी देने वाला बनाकर भेजा है, किन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते"।

قُلۡ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ اِلَيۡكُمۡ جَمِيۡعًا الَّذِىۡ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

(सूरः अअ़राफ़ आयत नं० 158)

अनुवाद-

"ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप कह दीजिए हे लोगों! मैं तुम सब की ओर अल्लाह का रसूल हूँ। वह अल्लाह जो आकाशों और धरती का मालिक है, उसके सिवा कोई उपास्य नहीं"।

ह़ज्जतुल् विदाअ़ की घटना-

नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जीवन की सबसे महान, निर्णायक और इतिहास-निर्माता घटना 'ह़ज्जतुल् विदाअ़' है। जो धार्मिक, सामाजिक और मानव इतिहास में एक सर्वव्यापी सुधारात्मक घोषणा पत्र का दर्जा रखती है। इस महान ख़ुत्बे में आपने मानव समाज की वैचारिक, मानसिक और नैतिक बुनियादों का पुनर्निर्माण किया और स्पष्ट रूप से घोषणा की कि सभी मनुष्य एक ही रब के बन्दे और एक ही पिता की सन्तान हैं।

इसलिए नस्ल, रंग, भाषा और क़ौम के आधार पर किसी को किसी पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त नहीं है, बल्कि वास्तविक श्रेष्ठता का मानदंड केवल तक़्वा, नैतिकता और चरित्र है।

यह शिक्षा मनोवैज्ञानिक स्तर पर मानवीय अहंकार, नस्ली घमंड और

वर्गीय अभिमान का उन्मूलन करती है।

सामाजिक समानता-

सामाजिक स्तर पर समानता, न्याय और मानवीय गरिमा को बढ़ावा देती है और धार्मिक दृष्टि से मानव एकता (तौह़ीद-ए-इन्सानी) तथा आदमीयत की एकता की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। ऐतिह़ासिक रूप से यह ख़ुत्बा उस समय दिया गया जब दुनिया नस्लवाद, दासता और वर्गीय अत्याचार में जकड़ी हुई थी। अतः यह घोषणा एक क्रांतिकारी सुधारात्मक सन्देश बनकर उभरी।

इस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मानवता को ऐसी पूर्ण और सार्वभौमिक मार्गदर्शना प्रदान की जो हर युग और हर समाज के लिए व्यावहारिक है और यही वे गुण हैं जो उस भविष्यवाणी की व्यावहारिक व्याख्या बन जाते हैं कि अन्तिम मार्गदर्शक पूरी दुनिया की नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक नेतृत्व करेगा। यह विशेषता पूर्ण रूप से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पवित्र व्यक्तित्व पर खरी उतरती है।

समानता का बिन्दु

- सार्वभौमिक मार्गदर्शन का क्षेत्रः बौद्ध मत के अनुसार मैत्रेय पूरी दुनिया के लिए मार्गदर्शक होगा, जबकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नबूवत भी समस्त मानवता के लिए है। दोनों अवधारणाओं में सन्देश किसी विशेष जाति, नस्ल या क्षेत्र तक सीमित नहीं, बल्कि समग्र मानवता के लिए है।
- नैतिक और आध्यात्मिक पतन के बाद प्रकट होनाः बौद्ध परम्पराओं में मैत्रेय का प्रकट होना उस समय बताया गया है जब धम्म कमजोर पड़ चुका होगा और नैतिक पतन व्यापक होगा। इसी प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रिसालत भी ऐसे दौर में हुई जब संसार वैचारिक, नैतिक और सामाजिक पतन का शिकार था। दोनों व्यक्तित्वों का प्रकट होना सुधार और पुनर्जागरण के लिए बताया गया है।

मानवता का सुधार-

- नैतिक नवीकरण और मानवता का सुधार मैत्रेय का मूल मिशन शुद्ध

और निष्कलुष धम्म की पुनर्स्थापना है, जबकि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने नैतिकता, न्याय, समानता और तक़्वा पर आधारित पूर्ण जीवन-व्यवस्था प्रस्तुत की। दोनों में व्यक्ति-सुधार और समाज-सुधार को केंद्रीय महत्व प्राप्त है।

मानवीय समानता-

● मानवीय समानता और मानवता की एकता मैत्रेय की अवधारणा में सभी मनुष्यों के लिए समान करुणा (दया) और परोपकार है और ह़ज्जतुल् विदाअ़ के ख़ुत्बे में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने स्पष्ट किया कि सभी मनुष्य एक ही रब के बन्दे और एक ही पिता की सन्तान हैं। इस प्रकार दोनों अवधारणाएँ नस्ल, रंग और क़ौम के आधार पर श्रेष्ठता का खण्डन करती हैं।

मैत्रेय का ज्ञान-

● ज्ञान, बुद्धि और अंतदृष्टि का नेतृत्व बौद्ध ग्रंथ मैत्रेय को ज्ञान और प्रज्ञा से परिपूर्ण "नायक" बताते हैं, जबकि इस्लामी स्रोत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ह़िक्मत, दानाई और पूर्ण अंतदृष्टि से युक्त वैश्विक मार्गदर्शक सिद्ध करते हैं। दोनों का नेतृत्व केवल सत्ता का नहीं, बल्कि वैचारिक और नैतिक मार्गदर्शन का है।

करुणावान-

● करुणा और लोक कल्याण मैत्रेय को संसार पर करुणा (दया) करने वाला बताया गया है और क़ुर्आन ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को "रह़मतुल्लिल् आ़लमीन" के रूप में प्रस्तुत करता है। दोनों की शिक्षाएँ मानवता की भलाई और लोक-कल्याण पर केंद्रित हैं।

वैश्विक मार्गदर्शक-

● भविष्य की वैश्विक नेतृत्व की अवधारणा बौद्ध धर्म में मैत्रेय को भविष्य का वैश्विक मार्गदर्शक कहा गया है, जबकि इस्लामी चिन्तन में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षाओं को क़ियामत तक के लिए मार्गदर्शन का स्रोत माना गया है। इस प्रकार दोनों अवधारणाओं में वैश्विक और कालगत विस्तार समान रूप

से पाया जाता है।

नोट-

इन बिन्दुओं से स्पष्ट होता है कि बौद्ध धर्म में मैत्रेय की अवधारणा और इस्लाम में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नबूवत दोनों में सार्वभौमिक मार्गदर्शन, नैतिक सुधार, मानवीय समानता और लोक-कल्याण जैसे मूल सिद्धान्त समान रूप से पाये जाते हैं, यद्यपि उनकी धार्मिक व्याख्या और ऐतिह़ासिक सन्दर्भ भिन्न हैं। यही समानताएँ तुलनात्मक अध्ययन में इन दोनों व्यक्तित्वों को वैश्विक नैतिक नेतृत्व के परिपेक्ष्य में विचारणीय बनाती हैं।

डेविड बिन्जामिन कल्दानी के अनुसार-

डेविड बिन्जामिन कल्दानी एक ईसाई पादरी और पूर्वी धर्मों के विद्वान थे, बाद में उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया और अपना नाम अ़ब्दुल-अ़हद दाऊद रख लिया। उन्होंने अपनी पुस्तक **Muhammad in the Buddhist Scripture** के अध्याय **"The Future Buddha"** और **"Buddhism and Islam"** में भविष्य के बुद्ध अर्थात मैत्रेय के बारे में लिखा है-

"The Buddhist expectation of Maitreya points to a future world-teacher who will restore righteousness and proclaim the eternal truth; these characteristics find their historical fulfillment in Muhammad."

(Muhammad in the Buddhist Scriptures, Abdul Ahad Dawud, (London edition) Chapter on Maitreya)

अनुवाद-

"बौद्ध धर्म में मैत्रेय से सम्बन्धित यह अपेक्षा एक ऐसे भविष्य के वैश्विक शिक्षक (नेता) की ओर संकेत करती है, जो धर्मपरायणता (न्याय और सत्य) को पुनः स्थापित करेगा और शाश्वत तथा सनातन सत्य की घोषणा करेगा और ये सभी गुण ऐतिह़ासिक रूप से **Muhammad (Saw)** की व्यक्तित्व में अपनी व्यावहारिक और ऐतिह़ासिक पूर्णता प्राप्त करते हैं"।

- इसी प्रकार लेखक आगे लिखते हैं-

Maitreya is not described as the founder of a new truth, but as the revealer of the eternal Dhamma—precisely the role played by Muhammad in restoring pure monotheism and moral law."

(Muhammad in the Buddhist Scriptures, Abdul Ahad Dawud (London edition) Chapter, The Future Buddha)

अनुवाद–

"मैत्रेय को किसी नई सच्चाई का प्रवर्तक नहीं बताया गया है, बल्कि उसे शाश्वत और सनातन धम्म (सत्य) को प्रकट करने वाला कहा गया है, ठीक उसी प्रकार जैसे **Muhammad (Saw)** ने शुद्ध एकेश्वरवाद (तौह़ीद) और नैतिक विधान को पुनः स्थापित किया"।

- इसी प्रकार वे आगे लिखते हैं–

"The scope of Maitreya's mission is universal; likewise Muhammad's message addresses mankind as a whole, beyond race and geography."

(Muhammad in the Buddhist Scriptures, Abdul Ahad Dawud , (London edition) Chapter, Buddhism and Islam)

अनुवाद–

"मैत्रेय के मिशन का क्षेत्र सार्वभौमिक बताया गया है। इसी प्रकार मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सन्देश भी वंश और भौगोलिक सीमाओं से परे सम्पूर्ण मानवता को सम्बोधित करता है"।

- इसी प्रकार वे आगे लिखते हैं–

"The emphasis on compassion in the Maitreya prophecies corresponds to the Qur'anic description of Muhammad as a mercy to the worlds."

(Muhammad in the Buddhist Scriptures, Abdul Ahad Dawud (London edition) Chapter, Buddhism and Islam)

अनुवाद–

"मैत्रेय से सम्बन्धित भविष्यवाणियों में करुणा और दया पर जो विशेष बल दिया गया है, वह क़ुर्आन-ए-करीम में मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को समस्त संसारों

के लिए रह़मत (दया का स्रोत) कहे जाने के कथन से पूर्णतः सामंजस्य रखता है"।

नोट– **David Benjamin Keldani** जिन्हें अ़ब्दुल-अ़हद दाऊद के नाम से भी जाना जाता है, अपनी पुस्तक **Muhammad in the Buddhist Scriptur** में यह दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं कि बौद्ध ग्रन्थों में भविष्य के बुद्ध मैत्रेय के सम्बन्ध में वर्णित जिन गुणों का उल्लेख मिलता है—जैसे नैतिक पतन के बाद उसका प्रकट होना, शाश्वत सत्य का पुनरुद्धार, सन्देश का सार्वभौमिक स्वरूप, प्रेम और करुणा पर आधारित शिक्षा तथा सम्पूर्ण मानवता का मार्गदर्शन वे सभी ऐतिह़ासिक और व्यावहारिक रूप से मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी और शिक्षाओं में पूर्ण रूप से साकार दिखाई देते हैं।

लेखक के अनुसार मैत्रेय किसी नई सच्चाई का प्रवर्तक नहीं है, बल्कि वह अजली और शाश्वत सत्य को प्रकट करने वाला है और यही भूमिका ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने शुद्ध एकेश्वरवाद (तौह़ीद) और नैतिक विधान की पुनः स्थापना के माध्यम से निभाई।

इसी आधार पर अ़ब्दुल-अहद दाऊद बौद्ध धर्म की मैत्रेय-सम्बन्धी भविष्यवाणियों को तुल्नात्मक और शोधात्मक दृष्टि से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर लागू करते हैं, हालाँकि यह अनुप्रयोग उनका विद्वतापूर्ण मत है न कि बौद्ध धर्म का सर्वसम्मत विश्वास।

सारांश

बौद्ध स्रोतों विशेष रूप से पाली कॅनन **(Digha Nikaya Cakkavatti & Sihanada Sutta)** तथा स्वतंत्र ग्रंथ **Anagatavamsa**—के अनुसार भविष्य में आने वाला बुद्ध मैत्रेय एक ऐसी सार्वभौमिक सुधारक व्यक्तित्व होगा, जो उस समय प्रकट होगा जब गौतम बुद्ध की मूल शिक्षाएँ (धम्म) संसार से लगभग लुप्त हो चुकी होंगी और नैतिक व आध्यात्मिक पतन व्यापक रूप से फैल चुका होगा।

उसकी मूल विशेषताओं में प्रेम **(metta/maitri)** करुणा **(karuna)** अंतःकरण की पवित्रता, ज्ञान एवं प्रज्ञा तथा सम्पूर्ण मानवता का मार्गदर्शन शामिल है।

बौद्ध ग्रंथ स्पष्ट करते हैं कि मैत्रेय कोई देवता नहीं होगा, बल्कि एक मानव होगा, जो शुद्ध और अविकृत धर्म को पुनः प्रकट करेगा और मानवता को सत्य, नैतिक शुद्धता तथा सही मार्ग की ओर आमंत्रित करेगा। एन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ बुद्धिज़्म तथा पाश्चात्य विद्वान जैसे **Paul Carus**— भी इसी अवधारणा की पुष्टि करते हैं कि मैत्रेय का प्रकट होना नैतिक पुनर्जागरण और लोक-कल्याण के लिए होगा, न कि किसी नई शिक्षा की स्थापना के लिए।

दूसरी ओर इस्लाम में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुबूवत को स्पष्ट रूप से सम्पूर्ण मानव जाति के लिए घोषित किया गया है।

आपकी पवित्र जीवन-गाथा विशेष रूप से ख़ुत्बा-ए-हज्जतुल्-विदाअ़ मानव समानता, न्याय, करुणा और नैतिक नेतृत्व का एक समग्र एवं व्यावहारिक घोषणापत्र प्रस्तुत करती है। तुलनात्मक अध्ययन से यह तथ्य सामने आता है कि मैत्रेय के बारे में वर्णित गुण सार्वभौमिक मार्गदर्शन, नैतिक पुनरुत्थान, मानवता के लिए करुणा, ज्ञान एवं प्रज्ञा पर आधारित नेतृत्व तथा नस्ली और वर्गीय भेदभाव का निषेध वही गुण हैं, जो ऐतिहासिक और व्यावहारिक रूप से हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की व्यक्तित्व और शिक्षाओं में पूर्ण रूप से परिलक्षित होते हैं।

भावी बुद्ध के गुण-

इसी सन्दर्भ में भारतीय उपमहाद्वीप के आधुनिक संस्कृत और तुलनात्मक धर्म-अध्ययन के विद्वान **Ved Prakash Upadhyay** तथा **M. A. Shrivastava** ने बौद्ध ग्रंथों—विशेष रूप से पाली कॅनन और **Anagatavamsa**— में वर्णित भावी बुद्ध के गुणों और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में वर्णित गुणों के बीच एक सादृश्यात्मक और अनुप्रयोगात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार दोनों में नैतिक सुधार, सार्वभौमिक मार्गदर्शन, आदर्श मानवीय चरित्र तथा प्रेम और करुणा जैसे पहलुओं में स्पष्ट अर्थगत समानता पाई जाती है।

हालाँकि शैक्षणिक ईमानदारी की माँग यही है कि इन समानताओं को

विद्वतापूर्ण और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए न कि बौद्ध धर्म या इस्लाम की ओर से किसी आधिकारिक या आस्थागत एकरूपता की घोषणा के रूप में।

इस प्रकार यह अध्ययन तुलनात्मक धार्मिक अध्ययन के क्षेत्र में रहते हुए नैतिक और बौद्धिक साझे तत्वों को उजागर करता है।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म की मैत्रेय-अवधारणा और इस्लाम की नबवी मार्गदर्शन के बीच नैतिक और मानवीय स्तर पर गहरी समानता पाई जाती है और वैश्विक सुधार एवं नेतृत्व के गुण ऐतिहासिक और व्यावहारिक रूप से हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पवित्र व्यक्तित्व में पूर्ण रूप से साकार दिखाई देते हैं।

बुद्ध मैत्रेय और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुलनात्मक दृष्टि से

बुद्ध मैत्रेय के विषय में दी गयी विशेषताएँ पूर्ण रूप से मुहम्मद पर ही सिद्ध होती हैं जिसे हम तुलनात्मक दृष्टि से इस प्रकार देख सकते हैं-

1. बुद्ध मनुष्य होते हैं देवता आदि नहीं, महामान्य हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी मनुष्य थे।
2. बुद्ध स्त्री और शासन से युक्त होता है। महामान्य हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी स्त्री और शासन से युक्त थे।
3. बुद्ध अपनी पूर्ण आयु तक जीवित रहता है महामान्य हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी पूर्ण आयु तक जीवित रहे।
4. बुद्ध अपना कार्य स्वयं करता है, महामान्य हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी अपना कार्य स्वयं करते थे।
5. बुद्ध धर्म प्रचारक होता है महामान्य हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी धर्म प्रचारक थे।
6. बुद्ध अपनी पूर्ववर्ती बुद्ध का स्मरण करता है महामान्य ने भी अपने पूर्ववर्ती

ईशदूतों का स्मरण कराया।

7. बुद्ध के अनुयायी पक्के अनुयायी होते हैं, उनको कोई उनके मार्ग से विचलित नहीं कर सकता। महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों को भी उनके मार्ग से कोई विचलित नहीं कर सका।
8. बुद्ध के लिए अवश्यक है कि संसार का कोई व्यक्ति उसका गुरु न हो। महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का भी कोई व्यक्ति गुरु न था।

निष्कर्ष

इस प्रकार गौतम बुद्ध जी द्वारा की गई भविष्यवाणियों को यदि निष्पक्ष होकर निर्णय लिया जाये तो वह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर सिद्ध होती है। यहाँ पर तो केवल संक्षेप में उल्लेख कर दिया गया है, परन्तु कोई सज्जन यदि विस्तारपूर्वक तुलना करना चाहें तो वह नबी-ए-रह़मत (लेखक-मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी की पुस्तक) द्वारा तुलना कर सकते हैं।

आशा है कि पाठक उपरोक्त बातों को समझ कर अवश्य ही सत्य की खोज कर के उसका अनुपालन करेंगे।



भाग-4

पारसी धर्म के अनुसार अन्तिम ऋषि की भविष्यवाणियाँ

पारसी धर्म की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पारसी धर्म, जिसे विद्वानों की भाषा में जरथुश्त्र धर्म (**Zoroastrianism**) कहा जाता है, प्राचीन ईरानी सभ्यता का मूल धर्म है और इसे दुनिया के सबसे पुराने व्यवस्थित धार्मिक प्रणालियों में गिना जाता है।

इस धर्म की स्थापना ईरानी धार्मिक सुधारक **(Zarathustra / Zoroaster)** ने की थी। यह ईरान का सबसे प्राचीन धर्म है और इसे सामान्य रूप से अग्नि-पूजक या मजूसी धर्म भी कहा जाता है।

इन के समय को लेकर विद्वानों के बीच मतभेद हैं, लेकिन आधुनिक पश्चिमी और ईरानी विद्वानों की अधिकांश राय के अनुसार उनका काल लगभग **1500** से **1000** ईसा पूर्व के बीच माना जाता है। उनका सम्बन्ध मध्य एशिया या पूर्वी ईरान के क्षेत्रों से बताया जाता है।

जरथुश्त्र धर्म की शिक्षाओं के अनुसार मनुष्य एक स्वतंत्र, विवेकशील और उत्तरदायी प्राणी है, जिसे भलाई (स्पेंता मैन्यु) और बुराई (अंग्रा मैन्यु) के बीच स्वयं चुनाव करना होता है और अपने कर्मों के लिए वह स्वयं जवाबदेह होता है।

जरथुस्त्र या जरतुस्त्र-

जरथुस्त्र या जरतुस्त्र **(Zarathustra / Zoroaster)** प्राचीन ईरान के एक धार्मिक सुधारक और दार्शनिक थे, जिन्हें जरथुस्त्र धर्म **(Zoroastrianism)** का प्रवर्तक माना जाता है। इनका उदय ऐसे समय में हुआ जब ईरानी समाज में बहुदेववाद, जादुई रस्में और बलि-प्रथाएँ व्यापक रूप से प्रचलित थीं। जरतुस्थ ने इन धारणाओं के विपरीत एक ईश्वर अहुरा मज़्दा **(Ahura Mazda)** की उपासना का सन्देश दिया, जिसे वे ज्ञान, प्रकाश और सत्य का मूल स्रोत मानते थे।

जरथुस्त्र की विचारधारा में ब्रह्मांड एक नैतिक क्षेत्र है, जहाँ सत्य (Asha) और असत्य बुराई (Druj) के बीच निरंतर संघर्ष चलता रहता है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह सद्विचार (Good Thoughts) सद्वाणी (Good Words) और सद्कर्म (Good Deeds) के माध्यम से सत्य का साथ दे। बाद के कालों में जरतुस्त्र या जरथुश्त्र की शिक्षाओं ने ईरानी साम्राज्यों विशेष रूप से हखामनी (Achaemenid) और सासानी (Sasanian) के वैचारिक और राज्य-व्यवस्था के ढाँचे पर गहरा प्रभाव डाला। इसी कारण जरतुस्त्र या जरथुश्त्र को ईरान के धार्मिक और नैतिक इतिहास का एक विशेष व्यक्तित्व माना जाता है।

राजकीय संरक्षण-

ऐतिहासिक रूप से जरथुस्त्र धर्म (Zoroastrianism) को पहली बार राजकीय संरक्षण हखामनी साम्राज्य (Achaemenid Empire) के काल में प्राप्त हुआ (लगभग 550-330 ईसा पूर्व) विशेष रूप से साइरस महान (Cyrus the Great) और दारायवहुष प्रथम (Darius I) के शासनकाल में।

हखामनी अभिलेखों विशेषकर बेहिस्तून अभिलेख में अहुरा मज़्दा का स्पष्ट उल्लेख मिलता है, जो इस बात का प्रमाण है कि जरथुस्त्र धर्म के विश्वास राजकीय विचारधारा का हिस्सा बन चुके थे।

अर्शकानी व सासानी साम्राज्य-

इसके बाद अर्शकानी (पार्थियन) Arsacid (Parthian) और फिर सासानी साम्राज्य Sasanian Empire (224–651 ईस्वी) के समय में जरथुस्त्र धर्म एक सुव्यवस्थित राज्य धर्म के रूप में स्थापित हो गया। सासानी काल में धार्मिक कानूनों का विकास हुआ, अग्नि-मन्दिरों की संगठित व्यवस्था बनी और मोबदान (जरथुस्त्र धर्म के विद्वानों) का एक सशक्त संस्थान स्थापित हुआ। इसी अवधि में धार्मिक ग्रंथों के संकलन और सम्पादन को भी विशेष प्रोत्साहन मिला।

पवित्र पुस्तक-

जरथुस्त्र धर्म की पवित्र पुस्तक अवेस्ता (Avesta) है, जिसके सबसे

प्राचीन भाग गाथाएँ (Gathas) माने जाते हैं और इन्हें स्वयं जरतुस्त्र से सम्बद्ध माना जाता है।

सासानी काल में अवेस्ता को संकलित और सुरक्षित करने के प्रयास किये गये, ह़ालाँकि इसका एक बड़ा हिस्सा नष्ट हो गया है। सातवीं शताब्दी ईस्वीं में ईरान में इस्लाम के प्रभुत्व के बाद जरतुस्त्र धर्म को राजकीय दर्जा प्राप्त नहीं रहा, जिसके परिणामस्वरूप कुछ जरतुस्त्र परिवार ईरान से पलायन कर भारत आये, विशेष रूप से गुजरात के तटीय क्षेत्रों में आकर बसे। यही प्रवासी समुदाय आगे चलकर पारसी कहलाया।

भारत में पारसियों ने अपनी धार्मिक पहचान को सुरक्षित रखते हुए व्यापार, उद्योग, शिक्षा और सामाजिक सेवाओं में उल्लेखनीय भूमिका निभाई और आज भी वे एक प्रभावशाली किन्तु संख्यात्मक रूप से सीमित धार्मिक समुदाय माने जाते हैं।

(Mary Boyce, Zoroastrians: Their Religious Beliefs and Practices, Routledge, London Ehsan Yarshater (ed.), The Cambridge History of Iran, Vol. 3, Cambridge University Press, Mary Boyce, Zoroastrians: Their Religious Beliefs and Practices, Routledge

पारसी धर्म की प्रमुख पुस्तक

पारसी धर्म (जरथुस्त्र धर्म) की धार्मिक और वैचारिक परम्परा में अनेक ग्रंथ पाये जाते हैं, किन्तु प्रथम श्रेणी और द्वितीय श्रेणी के ग्रंथों के बीच स्पष्ट अन्तर करना अत्यन्त आवश्यक है। विद्वत् दृष्टि से पारसी धर्म की मूल और प्रामाणिक पवित्र पुस्तक अवेस्ता (Avesta) है, जबकि दसातीर-ए-आसमानी अवेस्ता के बाद की एक फ़ारसी रचना है। इसे प्राचीन जरथुस्त्री मूल ग्रंथ का ह़िस्सा नहीं माना जाता, यद्यपि ऐतिह़ासिक रूप से पारसी परम्परा में इसका उल्लेख मिलता है।

अवेस्ता (Avesta / Zend-Avesta)

अवेस्ता जरथुस्त्र धर्म की मूल और सबसे प्राचीन पवित्र ग्रंथ है, जिसमें

जरथुस्त्र की शिक्षाएँ सुरक्षित हैं। इसके सबसे प्राचीन भाग गाथाएँ (Gathas) कहलाते हैं, जिन्हें स्वयं जरथुस्त्र से सम्बद्ध माना जाता है। यह अत्यन्त प्राचीन अवेस्ताई (Avestan) भाषा में पद्यात्मक उपदेशों के रूप में रचित हैं।

अवेस्ता के अन्य महत्वपूर्ण भागों में यस्ना (Yasna) विस्पेरद (Visperad) वेंदिदाद (Vendidad) यश्त (Yashts) और खोर्दे अवेस्ता (Khordeh Avesta) शामिल हैं।

संकलन-

सासानी काल में अवेस्ता का संकलन किया गया, किन्तु इस्लामी विजयाओं के बाद इसका एक बड़ा भाग नष्ट हो गया। पश्चिमी प्राच्यविद (Orientalists) प्रायः Zend-Avest शब्द का प्रयोग इसलिए करते हैं, क्योंकि Zend वास्तव में अवेस्ता की व्याख्या है, जो मध्य फारसी (Middle Persian) भाषा में लिखी गई है। अतः Zend-Avesta से अभिप्राय अवेस्ता का मूल पाठ उसके अनुवाद और व्याख्या सहित है न कि कोई अलग स्वतन्त्र दिव्य ग्रंथ।

ज़ेंद अवस्ता के भाग-

जेंद-अवस्ता मूल रूप से पाँच बड़े भागों में विभाजित है-

(1) यस्ना (Yasna) इसमें कुल 72 (Ha/अध्याय) हैं।

(2) विस्परद (Visperad) इसमें लगभग 23 अध्याय हैं।

(3) यश्त (Yashts) इसमें कुल 21 यश्त हैं, जिनके 21 नाम हैं। ये काव्यात्मक (पद्य) रूप में हैं और इनमें भविष्वाणियाँ तथा उद्धारकर्ता (Saoshyant/ Astvat-ereta) का उल्लेख मिलता है।

(4) वेंदिदाद (Vendidad) इसमें कुल 22 फरगर्द (Fargards) हैं। इसमें जरथुस्त्री शरीअ़त (धार्मिक विधि) के आदेश और नियम वर्णित हैं।

(5) खुर्दे अवेस्ता (Khordeh Avesta) इसमें दुआएँ, प्रार्थनाएँ, उपासना के समय तथा आतश न्यायिश (Atash Nyayish) जो जरथुस्त्री धर्म की एक विशेष प्रार्थना है का उल्लेख है, इसमें कोई नियमित अध्याय-विभाजन नहीं है।

दसातीर-ए-आसमानी (Dasatir-i Asmani)-

दसातीर-ए-आसमानी एक फ़ारसी भाषा में लिखी गई पुस्तक है, जो स्वयं को प्राचीन ईरानी सुधारक के ग्रंथों का संग्रह बताती है। इस पुस्तक में विभिन्न काल्पनिक या अर्ध-पौराणिक सुधारकों, राजाओं तथा भविष्यवाणियों का उल्लेख मिलता है।

हालाँकि आधुनिक शोधकर्ताओं, जरथुस्त्री विद्वानों और प्राच्यविदों (Orientalists) की बहुसंख्यक राय के अनुसार-

- दसातीर अवेस्ता का हिस्सा नहीं है।
- यह सासानी काल या उससे पहले की रचना नहीं है।
- प्रबल सम्भावना है कि इसका संकलन 16 वीं या 17 वीं शताब्दी ईस्वीं में किया गया हो।

"इसी कारण दासातीर को जरतुश्ती धर्मग्रंथों (Canonical Zoroastrian Scriptures) में प्रामाणिक स्थान प्राप्त नहीं है, लेकिन उत्तर-जरथुस्त्री फ़ारसी धार्मिक साहित्य (Post-Zoroastrian Persian Religious Literature) में इसे एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में माना जाता है"।

दसातीर-ए-आसमानी से अभिप्राय-

पारसी धर्म की पवित्र पुस्तक अवेस्ता (Avesta) के बाद दूसरी सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक के रूप में "दसातीर-ए-आसमानी" (Dasatir-i Asmani) को माना जाता है। दसातीर फ़ारसी शब्द दस्तूर का बहुवचन है, जिसके अर्थ नियम और आदेश होते हैं।

इसी कारण दसातीर-ए-आसमानी से अभिप्राय "आकाशीय"या "दैवी निर्देश" लिया जाता है।

यह शब्दावली बाद के फ़ारसी धार्मिक साहित्य में उन ग्रंथों के लिए प्रयुक्त हुई है, जिन्हें प्राचीन ईरानी ज्ञानियों से सम्बद्ध किया गया।

इस पुस्तक में ईश्वर की एकेश्वरवादी (तौहीद नुमा) अवधारणा, ब्रह्मांड

की सृष्टि, प्रकाश और अंधकार का द्वंद्व, नैतिक सिद्धांत, मानव कर्मों का लेखा-जोखा, आत्मा और परलोक की धारणा तथा एक अन्तिम सुधारक (उद्धारकर्ता) के आगमन का उल्लेख मिलता है, जो संसार में न्याय और सत्यनिष्ठा स्थापित करेगा।

इसके साथ ही उपासना, नैतिक आचार-संहिता और सामाजिक व्यवस्था के सिद्धांत भी वर्णित हैं।

यह एक फ़ारसी धार्मिक ग्रंथ है, जिसे कुछ ईरानी समूहों में पवित्र माना जाता था, किन्तु इसे अवेस्ता के समकक्ष या अवेस्ताई धर्मग्रंथ के रूप में स्वीकार नहीं किया गया।

इस प्रकार दबीस्तान (Dabistan) दसातीर को दस्तावेज़ी रूप में प्रस्तुत करता है, न कि जरतुश्ती धर्म की मूल आधारशिला के रूप में।

ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट की उपमा-

कुछ लेखकों ने आसान बनाने के लिए यह उपमा दी है कि अवेस्ता को पारसी धर्म का Old Testament और दसातीर को New Testament कहा जा सकता है, लेकिन यह उपमा पूर्णतः व्याख्यात्मक (Illustrative) है। यह विद्वतापूर्ण या आस्थागत दृष्टि से इसे अन्तिम और निश्चित नहीं माना जा सकता।

पारसी ग्रंथों की भविष्यवाणियाँ

पारसी धार्मिक साहित्य में भी अन्य प्राचीन धर्मों की तरह अन्तिम समय में प्रकट होने वाले एक महान मार्गदर्शक (पैग़म्बर) के आगमन की अवधारणा मिलती है, किन्तु इस विषय पर चर्चा करते समय प्रामाणिक (Canonical) और अप्रामाणिक अथवा उत्तरवर्ती (Post-Canonical) ग्रंथों के बीच स्पष्ट भेद रखना अत्यन्त आवश्यक है।

भविष्यवाणी का स्रोत-

इबिद (IBID) XXVIII:129 यह न तो अवेस्ता है और न ही उसके किसी प्रमाणित अध्याय या खण्ड का संदर्भ है, बल्कि वास्तव में यह

दसातीर-ए-आसमानी से उद्धृत अंशों को अंग्रेजी संदर्भ शैली में प्रस्तुत किया गया एक द्वितीयक (Secondary) संदर्भ है। IBID दरअसल लैटिन शब्द Ibidem से निकला है। जिसका अर्थ होता है, "उसी पूर्व स्रोत में"।

अतः इबिद (IBID) XXVIII:129 कोई स्वतंत्र पुस्तक या अवेस्ता का अध्याय नहीं है, बल्कि प्राच्यविदों या अनुवादकों की रचनाओं में प्रयुक्त एक संदर्भात्मक शैली मात्र है।

आने वाले सन्देष्टा का नाम-

पारसी धार्मिक साहित्य में अंतिम युग में आने वाले एक महान उद्धारकर्ता (पैग़म्बर) की अवधारणा मौजूद है। कुछ उत्तरवर्ती फ़ारसी ग्रंथों, विशेष रूप से दसातीर-ए-आसमानी में इस आने वाली महान हस्ती के लिए विशिष्ट नामों का भी उल्लेख मिलता है।

संदर्भ इबिद (IBID) XXVIII:129 के अनुसार इस अंतिम संदेशवाहक के दो नाम बताये गये हैंः-

- सोएश्यंत/साओश्यंत (SOESHYANT / SAOSHYANT)
- अस्तवत एरत/अस्तवत एरेता (ASTVAT ERAT / ASTVAT&ERETA)

सोएश्यंत शब्द की व्याख्या-

Saoshyant शब्द अवेस्ताई भाषा की मूल धातु saus / saosसे निकला है। जिसके अर्थ हैं लाभ पहुँचाना, उपकार करना, बचाना, उद्धार करना। इसी आधार पर Saoshyant का शाब्दिक अर्थ होता है, "जो लाभ पहुँचाये, उद्धार करने वाला, भलाई और कल्याण फैलाने वाला"।

उद्धारकर्ता की विशेषता-

अवेस्ता की प्रामाणिक पुस्तक अवेस्ता (विशेष रूप से फरवर्दीन यश्त (Farvardin Yasht) और जाम्याद यश्त (Zamyad Yasht) जो अवेस्ता के महत्वपूर्ण भाग हैं) में Saoshyant को अंतिम युग में आने वाले उस उद्धारकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो-

- असत्य और झूठ (Druj) का नाश करेगा।
- सत्य और न्याय (Asha) को प्रधानता देगा।
- अत्याचार और भ्रष्टाचार से ग्रस्त संसार में नैतिक एवं आध्यात्मिक सुधार करेगा।
- मानवता को अंतिम मुक्ति की ओर मार्गदर्शित करेगा।

दयालु विजेता-

बाद की फारसी परम्परा जैसे दसातीर-ए-आसमानी में इसी **Saoshyant** की व्याख्या "दयालु विजेता" के शब्दों में की गई है। यह व्याख्या यद्यपि अवेस्ताई मूल पाठ का शब्दशः अनुवाद नहीं है, किन्तु अर्थ की दृष्टि से **Saoshyant** के चरित्र अर्थात् सुधार, सत्य की विजय और मानवता की मुक्ति, के साथ पूर्णतः संगत है।

अस्तवत-एरेता (Astvat-Ereta) का अर्थ-

दूसरा नाम अस्तवत-एरेता (**Astvat-Ereta**) (अवेस्ताईः **Astvat-ereta**) भी जरतुश्ती आख़िरत (परलोक) की अवधारणा में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

Astvat = शारीरिक अस्तित्व, साकार या मूर्त रूप।

Ereta / Asha = सत्य, सच्चाई, न्याय।

इस प्रकार **Astvat-Ereta** का अर्थ होता है, "सत्य का साकार अवतरण" या "न्याय और सत्य का व्यावहारिक तथा शारीरिक रूप में प्रकट होना"।

(L.H. Mills; The Gathas of Zarathushtra, (Introduction & Notes)

विजयी और सुधारक-

जरथुश्ती स्रोतों में यह धारणा इस ओर संकेत करती है कि उद्धारकर्ता केवल एक आध्यात्मिक कल्पना नहीं होगा, बल्कि वह वास्तविक रूप से संसार में जन्म लेकर सत्य और न्याय को लागू करेगा।

इसी कारण बाद की पुस्तकों में उसे एक विजयी और सुधारक नेतृत्वकर्ता के रूप में वर्णित किया गया है।

शोधात्मक दृष्टि से अवेस्ता, जो जरतुश्तियत का प्रामाणिक धर्मग्रंथ है, उसमे **Soshyant** और **Astvat-Ereta** की अवधारणा मूलतः प्रतीकात्मक तथा परलोक से सम्बन्धित उद्धारकर्ता के रूप में मिलती है, जहाँ ज़ोर नैतिक पुनरुत्थान, सत्य की विजय और अन्तिम मुक्ति पर है।

इसके विपरीत दसातीर-ए-आसमानी जो अवेस्ता के बाद का फ़ारसी धार्मिक साहित्य है, उसमें इन्हीं शब्दों को अधिक व्यक्तिगत, ऐतिहासिक और भविष्यवाणी परक स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है।

आधुनिक जरतुश्ती और पश्चिमी विद्वानों के अनुसार दसातीर को **Canonical Scripture** नहीं माना जाता, किन्तु इसे **Post-Zoroastrian Persian Religious Literature** का एक महत्वपूर्ण उदाहरण अवश्य स्वीकार किया जाता है।

इसी आधार पर विद्वानों ने **Saoshyant / Astvat- Ereta** के गुणों को हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत, विजयों और वैश्विक सुधारक भूमिका से तुलनात्मक रूप से समान ठहराया है। यह अनुप्रयोग आस्थागत नहीं बल्कि तर्कात्मक है।

तुलनात्मक समीक्षा-

यदि **Saoshyant** और **Astvat-Eret** के गुणों, नामों के अर्थों और उनके अपेक्षित चरित्र को तुलनात्मक **(Comparative)** दृष्टिकोण से देखा जाए तो वे अनेक पहलुओं से हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत, उनकी दअ़वत और उनके ऐतिहासिक किरदार से स्पष्ट समानता रखते हैं। जरतुश्ती स्रोतों में **Saoshyant** का शाब्दिक अर्थ "लाभ पहुँचाने वाला, उद्धार करने वाला, भलाई फैलाने वाला" है, जबकि **Astvat-Ereta** का अर्थ "सत्य और न्याय का साकार अवतरण" बनता है।

यह दोनों अर्थ पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बेअ़सत के मूल उद्देश्यों अर्थात् मानवता की नैतिक सुधार, अत्याचार और असत्य का अन्त, सत्य और न्याय की स्थापना तथा वैश्विक स्तर पर भलाई और मार्गदर्शन की दअ़वत से

स्पष्ट रूप से सामंजस्य रखते हैं।

व्यावहारिक स्तर पर भी जरतुश्ती अवधारणा में उद्धारकर्ता केवल एक आध्यात्मिक उपदेशक नहीं, बल्कि ऐसा नेतृत्वकर्ता है जो सत्य को प्रभुत्व दिलाता है।

भलाई और मार्गदर्शन-

यही गुण सीरत-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में दअ़वत, राज्य-व्यवस्था, क़ानून, सामाजिक सुधार और विजय अभियानों के माध्यम से प्रकट होता है। यद्यपि अवेस्ता में ये अवधारणाएँ मुख्यतः प्रतीकात्मक हैं, जबकि दसातीर में इन्हें अधिक व्यक्तिगत और ऐतिहासिक स्वरूप दिया गया है।

इसी कारण विद्वान इस समानता को एक तुलनात्मक संकेत (Comparative indication) के रूप में प्रस्तुत करते हैं न कि जरतुश्ती ग्रंथों की किसी निश्चित भविष्वाणी के रूप में।

Farvardin Yasht, Avesta-Zamyad Yasht Dasatir-i Asmani The Dabistân or School of Manners, Vol. I, Appendix Mary Boyce, Zoroastrians: Their Religious Beliefs and Practices

उद्धारकर्ता की भविष्यवाणी-

पारसी धर्म (जरथुश्तियत) की पवित्र पुस्तक अवेस्ता (Avesta) में अस्तवत-एरेता (Astvat-Ereta) (अवेस्ताई Astvat-Ereta) की अवधारणा के अंतर्गत एक ऐसे उद्धारकर्ता की भविष्यवाणी मिलती है, जो संसार में आशा (Asha) अर्थात् सत्य, सच्चाई और न्याय को व्यावहारिक रूप से स्थापित करेगा। इस पद में Astvat का अर्थ शारीरिक एवं साकार प्रकट होना है, जबकि Ereta/Asha का अर्थ सत्य और न्याय है।

इस प्रकार Astvat-Ereta का आशय "सत्य का साकार और व्यावहारिक अवतरण" होता है।

जरथुश्ती स्रोत-

जरथुश्ती स्रोत इस बात पर सहमत हैं कि यह उद्धारकर्ता केवल एक

आध्यात्मिक या प्रतीकात्मक कल्पना नहीं होगा बल्कि ऐतिहासिक और व्यावहारिक रूप से संसार में प्रकट होकर नैतिक पतन का अन्त, न्याय की स्थापना और सत्यनिष्ठा की पुनर्बहाली का दायित्व निभाएगा।

इसी कारण बाद की जरथुश्ती परम्पराओं में उसे एक सुधारक और प्रभुत्वशाली नेतृत्वकर्ता के रूप में वर्णित किया गया है, जो अन्तिम युग में मानव समाज को सत्य के शासन-तंत्र से परिचित कराएगा।

इस उद्धारकर्ता का उल्लेख पारसी धर्म की पवित्र पुस्तक अवेस्ता में विस्तार से मिलता है।

(अवेस्ता Avesta भाग जाम्याद यश्त (Zamyad Yasht), यश्त 19, Yasht 19 स्थलः §§ 89–96; विशेष रूप से Saoshyant/Astvat-Ereta के संदर्भ में)

जेम्स डार्मेस्टेटर के अनुसार-

● जेम्स डार्मेस्टेटर (James Darmesteter) एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी शोधकर्ता तथा ईरानी और अवेस्ताई अध्ययन के विशेषज्ञ थे। वे जरतुश्ती धर्म की पवित्र पुस्तक अवेस्ता (Avesta) के प्रमाणिक अंग्रेज़ी अनुवाद और व्याख्या के कारण विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अवेस्ता का अंग्रेजी अनुवाद किया, जो "द ज़ेन्द-अवेस्ता" (The Zend-Avesta) के नाम से प्रकाशित हुआ और व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त कर सका।

● पारसी धर्म की पवित्र पुस्तक अवेस्ता (Avesta) में जिस उद्धारकर्ता अस्तवत-एरेता (Astvat-Ereta) के बारे में भविष्यवाणी की गई है, उसके सम्बन्ध में वे अपनी पुस्तक में लिखते हैं-

.....The victorious Saoshyant, the Astvat-YrYta, shall arise,who will smite the Lie and establish Righteousness (Asha)

(The Zend-Avesta, Vol. 23, part- Zamyad Yasht, Yasht 19, §§ 89-96, Oxford, 1883)

अनुवाद-

"विजयी साओश्यंत अर्थात् अस्तवत-एरेता, प्रकट होगा, जो असत्य (द्रुज) का पूर्णतः नाश करेगा और सत्य तथा धर्म (अशा) की स्थापना करेगा"।

- इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर वे लिखते हैं-

…....we worship the Fravasis of the Saoshyants,who shall make the world progress unto perfection". ***(The Zend-Avesta, Sacred Books of the East, Vol. 23, Part- Farvardin Yasht, Yasht 13, §§ 128-142, Oxford, 1883)***

अनुवाद-

"हम साओश्यंतों की फरवशों की उपासना करते हैं, जो संसार को पूर्णता और सिद्धि की ओर ले जाएगी"।

ज़ेन्द अवेस्ता के अनुसार-

इसी प्रकार **A-H-Vidyarathi** अपनी पुस्तक **"Muhammad in Parsi Hindu & Buddhist Scriptures"** में पृष्ठ संख्या **19** से **21** तक लिखते हैं कि पारसी धर्म की पवित्र पुस्तक "ज़ेन्द-अवेस्ता" **(Zend-Avesta)** के विभिन्न अंशों-विशेष रूप से फ़रवर्दीन यश्त, जाम्याद यश्त और आतश न्यायश में अन्तिम काल में आने वाले एक सुधारक उद्धारकर्ता की एक सामान्य और प्रतीकात्मक अवधारणा मिलती है।

अर्थात् ऐसे भावी सुधारक उद्धारकर्ता की कल्पना प्रस्तुत की गई है, जिसे साओश्यंत **(Saoshyant)** और अस्तवत-एरेता **(Astvat-ereta)** कहा गया है। इसके गुणों में वैश्विक सुधार, असत्य का विनाश, नैतिक पुनर्जागरण तथा पवित्र और सत्यनिष्ठ साथियों की संगति शामिल बताई गई है।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की करुणा-

इन्हीं गुणों के आधार पर कुछ शोधकर्ताओं ने इस अवधारणा को हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर लागू किया है। विशेष रूप से आपकी सार्वभौमिक करुणा, फ़तेह-ए-मक्का के बाद सामान्य क्षमा और एकेश्वरवाद के पुनरुद्धार के संदर्भ में साथ ही **Astvat-Ereta** शब्द के शाब्दिक अर्थ "प्रशंसनीय" को नाम मुहम्मद के अर्थ से भावात्मक रूप से सामंजस्यपूर्ण माना गया है।

हालाँकि जरतुश्ती परम्परा इसे अपने धार्मिक विश्वास के अंतर्गत एक अन्तकालीन **(Eschatological / भविष्यकालीन)** उद्धारकर्ता के रूप में ही

समझती है। जैसे कि-

GOD Almighty addressed the Prophet Zoroaster in the Zend Avesta in the following terms: 'The most powerful amongst the Companions of the Muslims, O Zaratushtra, are those of the men of the primitive law, or those of the 'Soeshyant' (not yet born), who are to restore the world. ***(Zend Avesta, Farvardin Yasht (Yasht 13) verse 17)***

Just as the followers of Zoroaster, by walking in his footsteps, attained the height of glory, similarly, a nation of believers will come into existence at a later date who will give a new life to the world and its reli-gions; and who will stand for the help of their Prophet in the most fearful battles.

Again was said with more explicitness: 'Whose name will be, the Victorious, 'Soeshyant' and whose name will be 'Astvat-ereta.' He will be Soeshyant (the beneficent one) because he will benefit the whole bodily world. He will be Astvat-ereta (he who makes the people rise up) because as a bodily creature and as a living being he will stand against the destruction of the bodily being to withstand the idolaters and the like and the errors of the Mazdaynians.

(Zend Avesta, Farvardin Yasht (Yasht 13) verse 129)

There is no other prophet but the Prophet Moham-mad on whom this prophecy applies with true appro-priateness. His being a beneficent victorious is clearly illustrated from the treatment he meted out to his blood-thirsty opponents, after the fall of Mecca, whom he let go just by saying 'There shall be no reproof against you this day." His name Mohammad (the praised one) his being a 'mercy for the worlds' while the preceding prophets were only a 'mercy unto their own people' and his correcting the errors of both the idolaters and the Mazdaynians—are characteristic signs found in no other prophet save the Prophet of Arabia (peace and the blessings of Allah be upon him.)

THE FOURTH PROPHECY

The remarkable sanctity of the Prophet's Companions "AND there shall his friends come forward, the friends of Astvat-ereta, who are fiend-smitting, well-thinking, well-speaking, well-doing, following the good law and whose tongues have never uttered a word of falsehood". **(Zend Avesta, Zamyad Yasht (Yasht 19) verse 95)**

Along with the Holy Prophet, a mention is also made of the piety and sanctity of the companions of the Prophet in various prophecies. In the Bible also we find a reference to the ten thousand saintly people. In fact, the holiness of the life of his companions and followers, is the greatest proof of the truth and success of a prophet. He himself must be the truest man who can make his followers so truthful and honest. Itisa well-known fact to the student of Islamic Traditions, that whichever hadith is

narrated by a companion of the Holy Prophet, is decidedly taken to be true, for falsehood can in no way be ascribed to the blessed com-panions of the Holy Prophet. Their veracity and truth-fulness is a matter of fact.

THE FIFTH PROPHECY

Fire in the Temples would cool down with the advent of the Prophet.

The following prophecy is also very striking . and worthy of notice and deep thought by every serious student. The prophet Zoroaster remarked: ''Mayest thou burn in this house! Mayest thou ever burn in this house! Mayest thou blaze in this house! Mayest thou increase in this house! Even for a long time, till the powerful restoration of the world, till the time of the good, powerful restoration of the world.'' *(Zend Avesta, Khordeh Avesta, Atash Nyayish, verse 9)*

This verse is quite plain and hardly needs comment. It was foretold that the fire would cease to burn when the restoration of the world would take place. The Zoroastrian prophet had taken a covenant from his followers to burn fire in the house of God as a symbol of the appearance of Divine Light; and they were to keep it burning till the Promised Prophet, who was to bring about a complete restoration of the world. appeared. And the world has seen that when the Promised Prophet came into the world, the fire in the temples was extinguished.

In the foregoing prophecies, one word, however, needs an explanation. We have translated the word 'Astvat-ereta' as 'the praised one' or 'Mohammad' (in Arabic). The root of this word is 'Astu,' which means, both in Sanskrit and Zend, 'to praise'. The infinitive "Sitaudan' used in the present day Persian also means 'praising'. Some lexicographers, however, have trans-lated it as 'one who makes a thing rise up' and have derived it from the root 'Istadan'. But as Sanskrit is nearer to Zend than Persian therefore the word 'Astvat-ereta' according to the common root in both Zendi and Sanskrit, would mean 'the praised one' which is just the translation of the Arabic name 'Mohammad'.

(A.H. Vidyarathi- Muhammad in Parsi, Hindu & Buddhst Scriptures, Page 19-21)

अनुवाद-

परमेश्वर ने ज़ेन्द-अवेस्ता में जरतुश्त से इन शब्दों में सम्बोधन किया है, "हे जरतुश्त! अपने अनुयाईयों में सबसे अधिक शक्तिशाली वे होंगे जो प्रारम्भिक शरीअ़त के अनुयायी होंगे या वे जो 'साओश्यंत' (जो अभी जन्मा नहीं है) के साथी होंगे जिसे संसार की सुधार के लिए उठाया जाएगा"।

(जेन्द-अवेस्ता, फ़रवर्दीन यश्त, अध्याय-13, अनुच्छेद-17)

जिस प्रकार जरतुश्त के अनुयायी उनके पदचिह्नों पर चलकर उत्कर्ष और महानता के शिखर तक पहुँचे, उसी प्रकार बाद के समय में ईमान वालों की एक ऐसी उम्मत अस्तित्व में आएगी, जो संसार और उसके धर्मों को नई जीवन-शक्ति प्रदान करेगी और जो अत्यन्त भयानक तथा निर्णायक संघर्षों में अपने नबी की सहायता के लिए दृढ़ता से खड़ी होगी।

● इसी बात को और अधिक स्पष्ट रूप में इस प्रकार बयान किया गया है-

"जिसका नाम 'फ़ातेह' होगा अर्थात् 'साओश्यंत' और जिसकी उपाधि 'अस्तवत-एरेता' होगी। उसे 'साओश्यंत' (लाभ पहुँचाने वाला) इसलिए कहा जाएगा कि वह सम्पूर्ण भौतिक संसार को लाभ पहुँचाएगा और उसे 'अस्तवत-एरेता' (लोगों को उठाकर खड़ा करने वाला) इसलिए कहा जाएगा कि वह एक शारीरिक प्राणी और जीवित सत्ता के रूप में भौतिक अस्तित्व के विनाश के विरुद्ध खड़ा होगा, मूर्तिपूजकों और उनके जैसे लोगों का सामना करेगा तथा मज़्दायनी (जरथुश्ती) लोगों की त्रुटियों का सुधार करेगा"।

(ज़ेन्द-अवेस्ता, फ़रवर्दीन यश्त, अध्याय-28, अनुच्छेद-129)

फ़तेह़ मक्का-

इस भविष्यवाणी का सह़ी और पूर्ण प्रतिरूप ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अतिरिक्त कोई अन्य नबी नहीं है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का विजयी और सर्वथा कल्याणकारी होना उस आचरण से स्पष्ट होता है जो आपने फ़तेह-ए-मक्का के बाद अपने शत्रुओं के साथ अपनाया, जब आपने उन्हें केवल यह कहकर मुक्त कर दिया, "आज तुम पर कोई दोष नहीं"।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नाम मुह़म्मद (अर्थात् अत्यधिक प्रशंसित) आपका रह़मतुल्लिल्-आ़लमीन होना। जबकि पूर्ववर्ती नबी अपनी-अपनी क़ौमों के लिए रह़मत थे और मूर्तिपूजकों के साथ-साथ मज़्दायनियों की भी सुधार करना।

वे विशिष्ट गुण हैं जो अ़रब के नबी मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अतिरिक्त किसी और में एकत्र नहीं होते।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सह़ाबाकी पवित्रता-

"और उसके मित्र आगे बढ़कर आएँगे। अस्तवत-एरेता के मित्र जो देवों को कुचलने वाले, शुभ विचार रखने वाले, शुभ वाणी बोलने वाले, शुभ कर्म करने वाले होंगे। अच्छे क़ानून का पालन करने वाले होंगे और जिनकी ज़बान से कभी झूठ का कोई शब्द नहीं निकला होगा"।

(ज़ेन्द-अवेस्ता, जाम्याद यश्त, यश्त संख्या 19, पद/अनुच्छेद 95)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ-साथ, विभिन्न भविष्यवाणियों में आपके सह़ाबाका तक़्वा, पवित्रता और निर्मलता का भी उल्लेख मिलता है। बाइबिल में भी दस हज़ार पवित्र लोगों का संदर्भ मौजूद है। वास्तव में किसी नबी की सत्यता और उसकी दअ़वत की सफ़लता का सबसे बड़ा प्रमाण उसके सह़ाबा और अनुयायियों का पवित्र जीवन होता है। नबी स्वयं निश्चय ही सबसे अधिक सत्यवादी होता है, जो अपने मानने वालों को भी उसी स्तर की सत्यनिष्ठा और ईमानदारी तक पहुँचा देता है।

इस्लामी परम्पराओं के अध्ययनकर्ता के लिए यह तथ्य भली-भाँति ज्ञात है कि रसूल-ए-अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जिस सह़ाबीसे कोई ह़दीस वर्णित हो, उसे बिना किसी संदेह के सत्य स्वीकार किया जाता है, क्योंकि किसी भी स्थिति में झूठ को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पवित्र सह़ाबाकी ओर आरोपित नहीं किया जा सकता, उनकी सत्यनिष्ठा और ईमानदारी एक सर्वस्वीत सत्य है।

नबी के आने पर अग्निकुंडों का ठंडा हो जाना-

निम्नलिखित भविष्यवाणी अत्यन्त अर्थपूर्ण है और प्रत्येक गम्भीर विद्यार्थी के लिए चिंतन का आमंत्रण रखती है। जरतुश्त ने कहा-

तो उस घर में जलता रहे!
तो उस घर में सदैव जलता रहे!
तो उस घर में प्रज्वलित बना रहे!
तो उस घर में बढ़ता रहे!
एक दीर्घ अवधि तक यहाँ तक कि संसार का महान सुधार घटित हो जाए।

यहाँ तक कि संसार के शुभ और शक्तिशाली सुधार का समय आ जाए।

(ज़ेन्द-अवेस्ता, ख़ुर्दा अवेस्ता, आतश न्याएश, अनुच्छेद-9)

दिव्य प्रकाश का प्रतीक-

यह कथन पूर्णतः स्पष्ट है और किसी विशेष व्याख्या का मोहताज नहीं। इसमें भविष्यवाणी की गई है कि जब संसार का पूर्ण और निर्णायक सुधार घटित होगा, तब आग का जलना समाप्त हो जाएगा।

जरतुश्ती ने अपने अनुयायियों से यह प्रतिज्ञा ली थी कि वे ईश्वर के घर में आग प्रज्वलित रखें। इसे दिव्य प्रकाश के प्रकट होने का प्रतीक मानते हुए और उसे तब तक जलाये रखें जब तक वह प्रतिज्ञात नबी प्रकट न हो जाए जो संसार का सम्पूर्ण सुधार करेगा और इतिहास ने यह तथ्य भी देखा कि जब वह प्रतिज्ञात नबी संसार में अवतरित हुए तो अग्निकुंडों की आग बुझ गई।

शब्द अस्तवत-एरेता और मुहम्मद-

इन भविष्यवाणियों में एक शब्द की स्पष्ट व्याख्या आवश्यक है। हमने "अस्तवत-एरेता" **(Astvat-ereta)** का अनुवाद "प्रशंसनीय" किया है या अरबी में इसे "मुहम्मद" के समकक्ष माना है। इस शब्द की मूल धातु "अस्तु" **(Astu)** है, जिसके अर्थ संस्कृत और जन्द दोनों भाषाओं में प्रशंसा करना बताये गये हैं।

आधुनिक फ़ारसी में प्रचलित क्रिया "सितौदन" **(Sitaudan)** भी प्रशंसा करने के ही अर्थ में प्रयुक्त होती है।

कुछ कोशकारों ने इसका अर्थ "किसी वस्तु को उठाकर खड़ा करने वाला" भी बताया है और इसे "इस्तादन" **(Istadan)** से व्युत्पन्न माना है, किन्तु चूँकि संस्कृत, फ़ारसी की अपेक्षा जन्द भाषा के अधिक निकट है, इसलिए जन्द और संस्कृत के साझा मूल के आधार पर "अस्तवत-एरेता" का अर्थ "प्रशंसनीय" ही ठहरता है और यही अरबी नाम "मुहम्मद" का शाब्दिक अर्थ भी है।

(ए० एच० विद्यार्थी, पारसी, हिन्दू और बौद्ध धर्मग्रंथों में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पृष्ठ **19–21**)

दसातीर-ए-आसमानी के अनुसार-

दसातीर-ए-आसमानी फ़ारसी भाषा की एक पुस्तक है, जो स्वयं को प्राचीन ईरानी/पारसी ज्ञानियों के ग्रंथों का संग्रह बताती है।

दसातीर-ए-आसमानी की पारसी धार्मिक परम्परा में महत्ता को समझने के लिए आवश्यक है कि इसे आस्थागत **(canonical)** और ऐतिहासिक-साहित्यिक **(Post-canonical)** इन दोनों दृष्टिकोणों से अलग-अलग देखा जाए।

1. आस्थागत दृष्टि से-

आस्था के स्तर पर दसातीर-ए-आसमानी को अवेस्ता के समान दर्जा प्राप्त नहीं है और जरतुश्ती उपासना, फिक्ह (धार्मिक विधि) तथा धार्मिक आदेशों में इससे तर्क (इस्तिदलाल) नहीं किया जाता। इसी कारण **Encyclopaedia Britannica** और कुछ विद्वानों (जैसे **E- G- Browne**) ने इसे मूल धार्मिक ग्रंथ के रूप में स्वीकार नहीं किया है।

2. ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टि से-

ऐतिहासिक व साहित्यिक स्तर पर दसातीर का महत्व समाप्त नहीं होता, बल्कि उसकी प्रकृति बदल जाती है। यह पुस्तक फ़ारसी धार्मिक चिंतन के विकासात्मक इतिहास को समझने में सहायता देती है और यह स्पष्ट करती है कि इस्लामी काल के बाद कुछ ईरानी/पारसी वृत्तों में जरतुश्ती अवधारणाओं को नए बौद्धिक और ऐतिहासिक ढाँचों में किस प्रकार प्रस्तुत किया गया।

इसी आधार पर इसे **Post-Zoroastrian Persian Religious Literature** का एक महत्वपूर्ण नमूना माना जाता है।

दसातीर-ए-आसमानी का सबसे विश्वसनीय परिचय हमें **The Dabistan or School of Manners** के **Appendix** में मिलता है, जहाँ विभिन्न ईरानी धर्मों और सम्प्रदायों के साथ-साथ दसातीर के विश्वासों, पारिभाषिक शब्दों और भविष्यवाणियों को सुरक्षित किया गया है।

इस कारण दसातीर धार्मिक इतिहास के शोधकर्ताओं के लिए एक

Primary Source (द्वितीयक स्तर का) बन जाती है और तुलनात्मक धर्म-अध्ययन में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ का स्थान प्राप्त करती है।

महत्वपूर्ण धार्मिक कृति-

The Dabistan or School of Manners एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तुलनात्मक धार्मिक कृति है, जो 17 वीं शताब्दी में फ़ारसी भाषा में लिखी गई। इसके लेखक मोहसिन फ़ानी कश्मीरी थे।

यह पुस्तक इस दृष्टि से विशिष्ट है कि यह विभिन्न धर्मों और बौद्धिक परम्पराओं का वर्णन विवादात्मक नहीं, बल्कि प्रेक्षणात्मक और दस्तावेज़ी शैली में करती है।

इसी कारण इसे उपमहाद्वीप और ईरान में धार्मिक इतिहास के अध्ययन का एक मौलिक स्रोत माना जाता है।

दबिस्ता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह इस्लाम, जरतुश्तियत, हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, यहूदी धर्म, ईसाई धर्म तथा कुछ गुप्त या अर्ध धार्मिक सम्प्रदायों (जैसे सूफ़ी सिलसिले और ईरानी बातिनी आन्दोलनों) के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्रदान करती है।

लेखक ने विभिन्न धार्मिक समूहों के अनुयायियों से मिलकर उनके विश्वासों, उपासनाओं और रीतियों को उन्हीं की भाषा और दृष्टिकोण से संकलित किया।

जिससे यह कृति मात्र धार्मिक वाद-विवाद न रहकर एक ऐतिहासिक और सामाजिक दस्तावेज़ बन गई।

प्रभावशाली नेता-

अतः **Dabistan** में **Saoshyant/Astvat-Ereta** को एक व्यक्तिगत, ऐतिहासिक और प्रभुत्वशाली नेता के रूप में प्रस्तुत किया गया है अर्थात् वह जो वास्तव में प्रकट होकर असत्य को पराजित और सत्य को स्थापित करेगा। **Dabistan** में ये दोनों नाम अवेस्ता की तरह केवल प्रतीकात्मक नहीं रहते,

बल्कि उन्हें व्यक्तिगत (Personal) ऐतिहासिक (Historical) और विजयी प्रभुत्वशाली नेता (Victorious Leader) के रूप में दिखाया गया है, जो वास्तविक रूप से प्रकट होकर असत्य को पराजित और सत्य को लागू करेगा। जैसे कि-

"A man will be born from among the Arabs,who will destroy the houses of idols,and instead of them will establish the house of worship of Abraham (the Qibla). His followers will capture Madâyin (Ctesiphon) Balkh, and Tus, and his religion and kingdom shall prevail over Persia."

(The Dabistân or School of Manners, Vol. I, Appendix (Dasâtîr-i Âsmânî), London, 1843 , — pp. 292—295)

अनुवाद-

"अ़रबों में से एक व्यक्ति उत्पन्न होगा, जो मूर्तियों के घरों को नष्ट करेगा और उनके स्थान पर इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के अ़िबादत-खाने (क़िब्ला) को स्थापित करेगा। उसके अनुयायी मदायन (Ctesiphon) बल्ख़ (Balkh) और तूस (Tus) को जीतेंगे और उसका धर्म तथा उसकी सत्ता फ़ारस पर प्रभुत्व स्थापित कर लेगी"।

ए० एच० विद्यार्थी के अनुसार-

इसी प्रकार A- H- Vidyarathi अपनी पुस्तक "Muhammad in Parsi Hindu & Buddhist Scriptures" के पृष्ठ संख्या 19 से 21 तक पारसी धर्म की दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तक "दसातीर-ए-आसमानी" (Dasatir-i Asmani) के संदर्भ में लिखते हैं कि जरतुश्ती धार्मिक ग्रंथों के दो भाग माने जाते हैं। इन पुस्तकों की प्रामाणिकता और विश्वसनीयता के विषय में विद्वानों के मत भिन्न-भिन्न हैं।

कुछ विद्वानों के अनुसार जेन्द-अवेस्ता अधिक प्रामाणिक है, जबकि कुछ के मत में दसातीर अधिक विश्वसनीय है।

वर्तमान दसातीर-

दसातीर के वर्तमान मुद्रित संस्करणों में कुल पंद्रह पत्रिकाएँ (Epistles)

सम्मिलित हैं, जिनकी शुरुआ़त महाबाद की पत्रिकाओं से होती है और समापन सासान पंचम की पत्रिकाओं पर होता है।

इन पत्रिकाओं में सासान प्रथम की पत्रिका अत्यन्त महत्वपूर्ण और ध्यान देने योग्य है, क्योंकि इसमें ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में अत्यंत स्पष्ट शब्दों में भविष्यवाणी दर्ज है।

वास्तव में इस भविष्यवाणी के मूल लेखक जरथुश्त ही थे, न कि सासान प्रथम क्योंकि सासान केवल जरतुश्ती धर्म के एक सुधारक थे।

ईरानियों की नैतिक दशा-

मूल भविष्यवाणी के आरम्भ से पहले ईरानियों की नैतिक दुर्दशा और पतन का उल्लेख किया गया है। इसका मूल पाठ पहलवी भाषा में है, जबकि साथ में उसका फ़ारसी अनुवाद भी दिया गया है। जैसे कि-

We have stated before that Zend Avesta and Dasatir are two separate scriptures and different sects hold their own respective book to be authentic. Not-withstanding their differences, both the books agree in the prophecies about the Holy Prophet. Both the scrip-tures clearly declare that a man will be raised in Arabia whose name will be Mohammad, who will be a mercy unto the world, who will testify to the truth and religion of Zoroaster and whose companions will be pious and saintly people. Fire in the temples will cool down with his advent, idols will be removed from the Ka'ba of Abraham, the Persian chiefs will turn towards the Ka'ba, and that he will correct the errors of both the idol-worshippers and Zoroastrians. It is hardly possi-ble for any Zoroastrian to deny such a clear, vivid and illustrative prophecy.

(A.H. Vidyarathi- Muhammad in Parsi, Hindu & Buddhst Scriptures, Page 23)

अनुवाद-

हम इससे पहले यह बात स्पष्ट कर चुके हैं कि जेन्द-अवेस्ता और दसातीर दो अलग-अलग धार्मिक ग्रंथ हैं और विभिन्न समुदाय अपनी-अपनी पुस्तकों को प्रामाणिक मानते हैं।

अग्नि कुंडो की आग–

यद्यपि इन दोनों ग्रंथों में कुछ मतभेद पाये जाते हैं, फिर भी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से सम्बन्धित भविष्यवाणियों के विषय में दोनों में पूर्ण सहमति मौजूद है। दोनों ग्रंथ अत्यंत स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा करते हैं कि अ़रब में एक व्यक्ति को भेजा जाएगा जिसका नाम मुह़म्मद होगा, जो समस्त संसार के लिए रहमत (करुणा) होगा, जो जरतुश्त के धर्म और उसकी शिक्षाओं की पुष्टि करेगा और जिसके साथी अत्यंत नेक, सदाचारी और पवित्र लोग होंगे। उनके आगमन के साथ ही अग्निकुंडों की आग ठंडी पड़ जाएगी।

ह़ज़रत इब्राहीम के कअ़बा से मूर्तियाँ हटा दी जाएँगी, ईरान के सरदार कअ़बा की ओर मुख करेंगे और वह मूर्तिपूजकों तथा जरतुश्तियों दोनों की त्रुटियों का सुधार करेगा।

ऐसी स्पष्ट, साफ़ और अत्यन्त प्रभावशाली भविष्यवाणी के बाद किसी भी जरतुश्ती के लिए इसका इन्कार करना लगभग असम्भव हो जाता है।

(ए०एच० विद्यार्थी, पारसी, हिन्दू और बौद्ध धर्मग्रंथों में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पृष्ठ 23)

There is no other alter- native for the Parsis; either they should believe in the Prophet and take him to be 'Astvat-ereta' (the praised one or Mohammad) or should point out any other man on whom these descriptions could apply, who would have exterminated idol-worship, produced truthful and saintly followers, and according to Avesta, must have corrected Mazdaynians as well as idol-worshippers, and who would have become the master of the Persian reli-gion, crown and kingdom.

(A.H. Vidyarathi- Muhammad in Parsi, Hindu & Buddhst Scriptures, Page 23)

अनुवाद–

"पारसियों के लिए इसके सिवा कोई अन्य मार्ग शेष नहीं रहता कि वे या तो उस नबी पर ईमान लाएँ और उसी को "अस्तवत–एरेता" (अर्थात् प्रशंसित मुह़म्मद) स्वीकार करें अथवा फिर किसी ऐसे दूसरे व्यक्ति की पहचान करें जिस पर ये सभी गुण समान रूप से लागू होते हों, जो मूर्तिपूजा का पूर्णतः

उन्मूलन करने वाला हो, जिसने सत्य और तक़्वा पर आधारित नेक, सदाचारी और पवित्र अनुयायी तैयार किये हों।

जो अवेस्ता की व्याख्याओं के अनुसार मद्दा-परस्तों और मूर्तिपूजकों दोनों की त्रुटियों का सुधार करने वाला हो और जो अन्ततः ईरान के धर्म, ताज और साम्राज्य का वास्तविक स्वामी और विजेता बन गया हो"।

(ए० एच० विद्यार्थी, पारसी, हिन्दू और बौद्ध धर्मग्रंथों में हज़रत मुहम्मद ﷺ पृष्ठ 23)

नोट-

दसातीर का वह संस्करण, जिससे यह उद्धरण लिया गया है, 'मुल्ला फ़िरोज़' ने अनेक प्रसिद्ध जरतुश्ती पुरोहितों की सहायता से ईरान के शाह 'नासिरुद्दीन काजार' के शासनकाल में प्रकाशित किया था।

वास्तव में इस भविष्यवाणी के मूल लेखक जरथुश्त ही थे न कि सासान प्रथम क्योंकि सासान केवल जरतुश्ती धर्म के एक सुधारक थे।

मूल भविष्यवाणी के आरम्भ से पहले ईरानियों की नैतिक दुर्दशा और पतन का उल्लेख किया गया है।

इसका मूल पाठ पहलवी भाषा में है, हालांकि इसके साथ फ़ारसी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है। जिसकी मूल प्रति अगले पृष्ठों पर देखी जा सकती है-

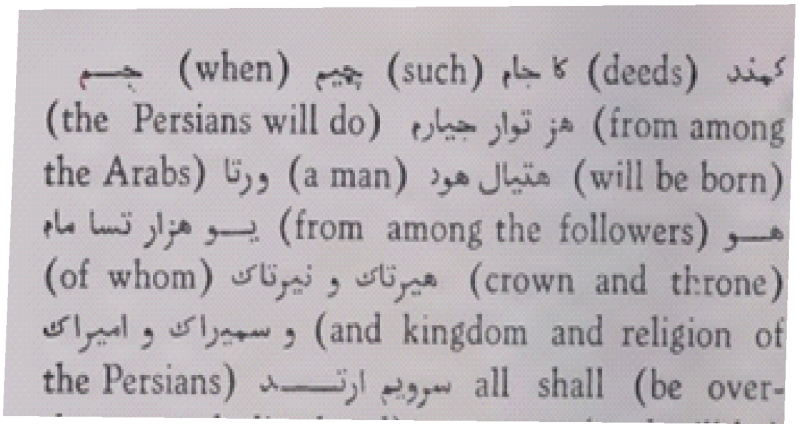

thrown and dissoluted). و هونـد (And will be) هر در کتام (the arrogant people) یتود ام (subjugated). بیرن (They will see) فه شای (instead of) نیمـار (the house of idols) و سیمار (and the temple of fire) کسوار (the house of worship) آبـاد (of Abraham) بـی جـوارهده (without any idols in it) نیموستا (the Qibla).

هـوش شینشور (And they will be) و هـوزد (a mercy tor the worlds) وتد (and then) راهند (they will capture) شای ها (places) سیما رام (of the temples of fire) مـدیر (Madain or Ctesiphon) هـام (and of the surrounding places) و انتو رام (and Tüs) و نیواک (and Balkh) (of it) و نیفود (and other places) شهناد (of eminence and sacred) — و (and) هاپیم هار (religious leader) هیّال (will be a man) ورتا پاند (their's) هشیام (eloquent) وسمین هو (and his message or what he will say) دم هن نلزیده (will be well-connected).

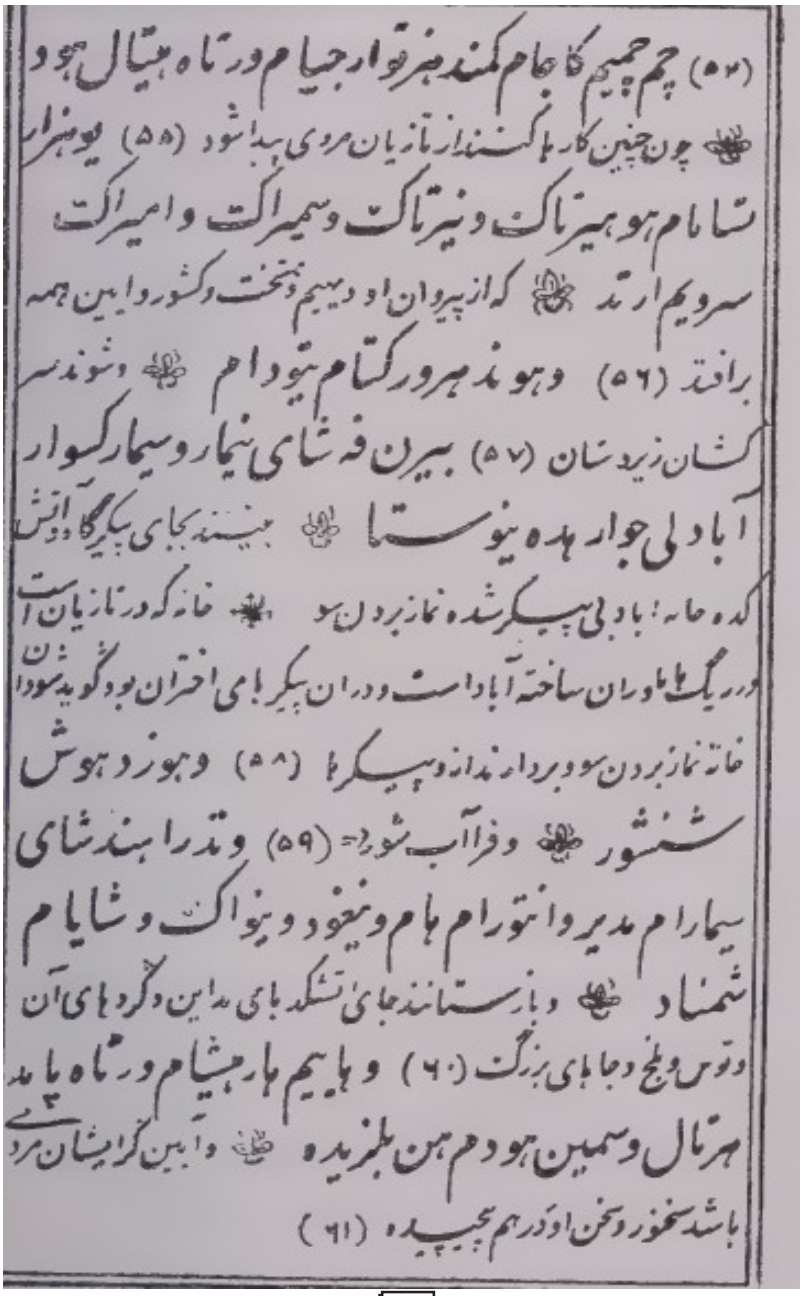

(۵۴) چم چمیم کا جام کمند هنر توار جیام در تاه هیتال هجود
چون چنین کارها کنند از تازیان مردی پیدا شود (۵۵) یوهنرار
تسا نام هوهیر تاک و نیر تاک و سمیر اک و امیر اک
سرویم ارتد که از پیروان او دیهیم و تخت و کشور و این همه
برافتد (۵۶) وهوند هرورکتام تیودام و شوند سر
کشان زیردستان (۵۷) بیرن فه شای نیمار و سیمار کسوار
آبادلی جوار هده نیوستا نشینند بجای پیکرگاه و آتش
کده خانه آبادلی پیکر شده نماز بردن سو خانه که در تازیان است
در ریگ ها و ران ساخته آباد است و در ان پیکرهای اختران بود گویند شود ان
خانه نماز بردن سو و بردارند و پیکرها (۵۸) وهوزد هوش
شنشور و فراآب شود (۵۹) وتدرا هندشای
سیمارام مدیر وانتورام هام و نیغود و نیواک و شایام
شمناد و بازستانند جای تشکدهای مدان و گردهای آن
دتوس و بلخ و جاهای بزرگ (۶۰) وهایم هارهیشام در تاه پامد
هرتال و سمین هودم هن بلزیده و این گرایشان مردی
باشد سخنور و سخن او در هم پیچیده (۶۱)

व्याख्या-

यह कथन स्पष्ट करता है कि **Saoshyant** को केवल एक प्रतीकात्मक या पारलौकिक उद्धारकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि एक निश्चित ऐतिहासिक और मानवीय व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है अर्थात् ऐसा मनुष्य जो अ़रब में जन्म लेगा, मूर्तिपूजा की व्यवस्था का अंत करेगा और इब्राहीमी उपासना (क़िब्ला) को व्यवहारिक रूप से स्थापित करेगा।

ये गुण उसे स्पष्ट रूप से व्यक्तिगत **(Personal)** ऐतिहासिक **(historical)** तथा विजयी और प्रभुत्वशाली नेता **(Victorious Leader)** बनाते हैं।

धर्म और राज्य की स्थापना-

इसके अतिरिक्त इसी विवरण में असत्य साम्राज्यों के पतन, सत्य की व्यवस्था के प्रभुत्व तथा धर्म और राज्य **(Religion and kingdom)** के एक साथ स्थापना को एक समग्र अवधारणा के रूप में जोड़ा गया है, जो **Astvat-Ereta** अर्थात् सत्य का साकार और व्यावहारिक अवतरण की संकल्पना से पूर्णतः सामंजस्य रखता है।

इस प्रकार **Saoshyant / Astvat- Ereta** का चरित्र केवल आध्यात्मिक सुधार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह एक ऐसे विजयी और सुधारक नेता के रूप में सामने आता है, जो सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक स्तर पर सत्य को लागू करता और असत्य को पराजित करता है।

यही कारण है कि तुलनात्मक अध्ययन में इन गुणों को ऐतिहासिक रूप से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत, उनकी दअ़वत और उनके वैश्विक सुधारक चरित्र से समान माना जाता है यह समानता तर्कात्मक है, न कि आस्थागत।

तुलनात्मक अध्ययन-

Helena Petrovna Blavatsky की प्रसिद्ध पुस्तक "आइसिस अनवील्ड" **(Isis Unveiled)** दो खण्डों में 1877 ईस्वीं में न्यूयार्क से प्रकाशित हुई थी। यह पुस्तक थियोसोफ़ी **(Theosophy)** की प्रारम्भिक और मूलभूत कृति मानी

जाती है।

इसमें लेखिका ने हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जरतुश्तियत, यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम सहित विभिन्न धर्मों की शिक्षाओं और भविष्यवाणियों का तुल्नात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। विशेष रूप से इस पुस्तक में प्राचीन धर्मों में आने वाले उद्धारकर्ता या वैश्विक सुधारक की अवधारणा को प्रमुखता के साथ रेखांकित किया गया है।

लेखिका लिखती हैं-

"The Zoroastrian doctrine of the Saoshyant, or Astvat-ereta, has been greatly misunderstood by later interpreters. He is not a purely metaphysical or abstract principle, but a real future agent in the moral history of mankind. Astvat-ereta is described as the world-restorer, the one who shall gather together the scattered nations, overthrow Druj) falsehood) and re-establish Asha (truth and righteousness) upon earth. He is to appear in a time of moral darkness, when mankind shall have strayed far from the ancient law, and his mission is to renew the primitive faith and restore harmony between the divine and the human ".

(Is Unveiled, Volume II, Page 236)

अनुवाद-

"जरथुश्ती विश्वास में साओश्यंत (Saoshyant) या अस्तवत-एरेता (Astvat-ereta) की धारणा को बाद के व्याख्याकारों ने गम्भीर रूप से गलत समझा है। यह कोई मात्र आधिभौतिक या काल्पनिक विचार नहीं है, बल्कि मानव नैतिक इतिहास में प्रकट होने वाला एक वास्तविक और क्रियाशील व्यक्तित्व है।

अस्तवत-एरेता को एक वैश्विक सुधारक के रूप में वर्णित किया गया है, जो बिखरी हुई मानव जाति को एकत्र करेगा, द्रुज (असत्य/अधर्म) का नाश करेगा और पृथ्वी पर अशा (सत्य और धर्मनिष्ठा) को पुनः स्थापित करेगा। उसका प्रकट ऐसे समय में होगा जब संसार नैतिक अंधकार में डूब चुका होगा और मानव प्राचीन दैवी नियम से बहुत दूर जा चुका होगा। उसका मिशन प्रारंभिक धर्म को पुनर्जीवित करना और ईश्वर तथा मानव के बीच सामंजस्य

को बहाल करना होगा"।

व्याख्या-

ब्लावात्स्की **Astvat-ereta / Saoshyant** को **World-Restorer** (वैश्विक पुनर्स्थापक) **Gatherer of mankind** (मानवता को एकत्र करने वाला) और **Destroyer of falsehood** (असत्य का विनाश करने वाला) के रूप में प्रस्तुत करती हैं। ये गुण इस्लामी अवधारणा रह़मतुल्लिल्-आ़लमीन और वैश्विक सुधार के विचार से अर्थगत सामंजस्य रखते हैं। इसी आधार पर कुछ विद्वान इस भविष्यवाणी को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर लागू करते हैं।

सारांश

पारसी धर्म (जरथुश्तियत) में जिस उद्धारकर्ता की अवधारणा **Saoshyant / Astvat-Ereta** के नाम से मिलती है, उसके गुणों पर विचार किया जाए तो वे अनेक पहलुओं से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत, उनकी दअ़वत और उनके ऐतिह़ासिक चरित्र से स्पष्ट समानता रखते हैं।

अवेस्ता के अनुसार **Astvat-Ereta** केवल एक आध्यात्मिक या प्रतीकात्मक व्यक्तित्व नहीं है, बल्कि वह शारीरिक और व्यावहारिक रूप से प्रकट होने वाला उद्धारकर्ता है, जो संसार में अशा (सत्य, सच्चाई और न्याय) की स्थापना करेगा, द्रुज (झूठ और असत्य) को पराजित करेगा और नैतिक पतन से ग्रस्त मानवता का सुधार करेगा।

यही गुण सीरत-ए-मुह़म्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में पूर्ण स्पष्टता के साथ दिखाई देते हैं, जहाँ आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) न केवल उच्च नैतिकता की शिक्षा दी, बल्कि व्यावहारिक रूप से एक बिगड़े हुए समाज को न्याय, क़ानून और सत्यनिष्ठा की व्यवस्था में ढाला।

जेन्द अवेस्ता के अनुसार-

पारसी धर्म की पवित्र पुस्तक जेन्द-अवेस्ता **(Zend-Avesta)** में अन्तिम समय में आने वाले भविष्यगत सुधारक/उद्धारकर्ता की एक सामान्य और

प्रतीकात्मक धारणा मिलती है, जिसे साओश्यंत (Saoshyant) और अस्तवत-एरेता (Astvat-ereta) कहा गया है।

इस प्रतिज्ञात व्यक्तित्व के गुणों में वैश्विक सुधार, असत्य का अंत, नैतिक पुनर्जागरण, एकेश्वरवाद की पुर्नस्थापना तथा नेक, सत्यवादी और पवित्र साथियों की संगति शामिल है।

इन्हीं कारणों से कुछ विद्वानों ने इन गुणों को हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर लागू किया है। विशेष रूप से आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सार्वभौमिक करुणा, फ़तेह-ए-मक्का के बाद सामान्य क्षमा और एकेश्वरवाद की व्यावहारिक विजय के संदर्भ में और Astvat-ereta शब्द के शाब्दिक अर्थ "प्रशंसनीय" को नाम "मुहम्मद" के अर्थ के साथ भावात्मक रूप से संगत माना है।

प्रभुत्वशाली नेता-

इसी प्रकार Dabistan / Dasatir की परम्परा में Saoshyant को एक व्यक्तिगत, ऐतिहासिक और प्रभुत्वशाली नेता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ऐसा मनुष्य जो अरब में जन्म लेगा, मूर्तिपूजा का अन्त करेगा, इब्राहीमी उपासना (क़िब्ला) को स्थापित करेगा और जिसके अनुयायी असत्य साम्राज्यों को पराजित कर एक नये धार्मिक और राजनीतिक तंत्र की स्थापना करेंगे। यह गुण भी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बेअसत, कअबः की शुद्धि, इस्लामी राज्य की स्थापना और फ़ारस सहित व्यापक क्षेत्रों में सत्य के प्रभुत्व से गहरी संगति रखते हैं।

यहाँ धर्म और राज्य (Religion and kingdom) के परस्पर जुड़े हुए विचार का उद्भव होता है, जो Astvat-Ereta के "सत्य के साकार और व्यावहारिक अवतरण" की अवधारणा से पूर्णतः मेल खाता है।

तथापि शोधात्मक का तक़ाजा है कि इस समानता को आस्थागत पहचान नहीं, बल्कि तुलनात्मक और तर्कात्मक समानता के रूप में समझा जाए अर्थात् पारसी स्रोत अपने धार्मिक संदर्भ में Saoshyant / Astvat-Ereta का उल्लेख करते हैं।

जबकि इस्लामी संदर्भ में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अन्तिम नबी हैं, किन्तु गुणों, कार्यों और ऐतिह़ासिक प्रभावों के तुल्नात्मक अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि जिस उद्धारकर्ता के प्राकट्य की आकांक्षा और छवि पारसी परम्परा में मिलती है, उसकी व्यावहारिक पूर्णता इतिहास में सीरत-ए-मुह़म्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के माध्यम से उजागर होकर सामने आती है।



भाग-5

यहूदी धर्म के अनुसार अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणियाँ

यहूदी धर्म का संक्षिप्त परिचय

यहूदी धर्म प्राचीन एकेश्वरवादी धर्मों में से एक माना जाता है। यहूदी परम्परा के अनुसार इसकी नींव ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से जुड़ी हुई है, जिन्हें एकेश्वरवाद का प्रवर्तक माना जाता है। ह़ज़रत इब्राहीम के दो प्रमुख पुत्र थे— इस्ह़ाक़ और इस्माईल।

ह़ज़रत इस्माईल जो ह़ज़रत इब्राहीम के दूसरे पुत्र थे, अल्लाह के आदेश से हिजाज क्षेत्र में मक्का में बसाये गये। वहीं उनकी सन्तानें लम्बे समय तक फलती-फूलती रहीं। इसी इस्माईली वंश में सदियों बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का जन्म हुआ, जिनके माध्यम से एकेश्वरवाद का सन्देश पूरी दुनिया में फिर से जीवित हुआ और नुबूवत (पैग़म्बरी) की परम्परा अपने पूर्ण रूप तक पहुँची।

बनी इस्राईल के बारह क़बीले-

ह़ज़रत इस्ह़ाक़ के पुत्र ह़ज़रत याक़ूब थे। ह़ज़रत याक़ूब का दूसरा नाम इस्राईल था और उनकी सन्तानें बाद में "बनी इस्राईल" कहलाईं। ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) के बारह पुत्र थे, जिनसे बनी इस्राईल के बारह क़बीले अस्तित्व में आये। प्रारम्भ में यह परिवार कनआन क्षेत्र में रहता था, लेकिन ह़ज़रत यूसुफ़ के समय पड़े अकाल के कारण सभी मिस्र चले गये।

मिस्र में बनी इस्राईल की संख्या बढ़ने लगी तो धीरे-धीरे वे फ़िरऔनी सत्ता के अत्याचार का शिकार हो गये और उन्हें दासता का जीवन जीना पड़ा। इसी दौर में बनी इस्राईल में ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का जन्म हुआ।

अल्लाह के आदेश से ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने बनी इस्राईल को फ़िरऔन की गुलामी से मुक्त कराया, उन्हें मिस्र से बाहर निकाला और एक लम्बे रेगिस्तानी सफर (Exodus) के बाद फिर से कनआ़न की ओर ले गये। इसी

यात्रा के दौरान पर्वत सीने पर ह़ज़रत मूसा को तौरात प्रदान की गई, जो यहूदी धर्म की धार्मिक विधि और क़ानून की बुनियाद मानी जाती है।

रोमी शासन-

रोमी शासन के दौर में दूसरा हैकल (Second Temple) भी 70 ईस्वीं में नष्ट कर दिया गया। जिसके बाद यहूदी दुनिया के अलग-अलग ह़िस्सों में फैल गये। इसी को यहूदियों का निर्वासन या डायस्पोरा (Diaspora) कहा जाता है।

चूँकि अब हैकल मौजूद नहीं था, इसलिए क़ुर्बानियों की व्यवस्था समाप्त हो गई। इसके स्थान पर उपासना-गृह (Synagogue) इबादत और शिक्षा का केंद्र बन गया। इस काल में सिनेगॉग, रब्बानी परम्परा और धार्मिक-क़ानूनी चर्चाओं को विशेष बढ़ावा मिला।

अब धार्मिक नेतृत्व नबियों या याजकों के बजाय विद्वानों (रब्बी) के हाथों में आ गया। उन्होंने तौरात की व्याख्या की और दैनिक जीवन के विभिन्न मामलों में धार्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया। बाद की शताब्दियों में तल्मूद का संकलन किया गया, जिसमें उपासना, सामाजिक जीवन और क़ानून से सम्बन्धित विस्तृत नियम निर्धारित किये गये। इसी चरण पर यहूदियत ने एक सशक्त रब्बानी धर्म का स्वरूप ग्रहण कर लिया।

मध्यकाल से आधुनिक काल तक-

यूरोप और मुस्लिम दुनिया में यहूदियों ने अलग-अलग दौरों में कभी शैक्षिक, आर्थिक और बौद्धिक उन्नति ह़ासिल की तो कभी भेदभाव, निर्वासन और सामाजिक दबाव जैसी कठोर परीक्षाओं से गुज़रना पड़ा। यूरोप में मध्यकाल और उसके बाद के समय में उन्हें अक्सर पूर्वाग्रह और दमन का सामना करना पड़ा। इन्हीं ऐतिह़ासिक अनुभवों की पृष्ठभूमि में आधुनिक यूरोप में राष्ट्रवाद के प्रभाव और प्रसार के साथ सियोनवाद (जायोनिज़्म) आन्दोलन उभरा, जिसका मूल उद्देश्य यहूदियों के लिए एक सुरक्षित राष्ट्रीय गृह की स्थापना करना था। इसी विचार के परिणामस्वरूप 1948 ईस्वी में इज़राइल राज्य की स्थापना हुई, जिसने यहूदी इतिह़ास में एक नया और निर्णायक अध्याय जोड़ दिया।

यहूदियत का विस्तार-

आज यहूदियत केवल एक धर्म नहीं है, बल्कि धर्म, राष्ट्रीय पहचान और संस्कृति तीनों रूपों में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में मौजूद है, जहाँ यहूदी अपनी पहचान को धार्मिक आस्थाओं, ऐतिहासिक चेतना और सांस्कृतिक परम्पराओं के समन्वय के रूप में बनाये हुए हैं।

यहूदी धर्म की पवित्र पुस्तक-

तौरात इब्रानी धर्मग्रंथों (Hebrew Bible) की सबसे प्राचीन यहूदी धार्मिक पुस्तक है। तौरात यहूदियों की सबसे पुरानी और मूल पवित्र पुस्तक मानी जाती है। इसमें हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारी गई शरीअत, धार्मिक आदेश, ऐतिहासिक घटनाएँ और नैतिक शिक्षाएँ शामिल हैं। यह यहूदी धार्मिक जीवन की बुनियाद मानी जाती है।

यहूदी विचारधारा में तौरात की दो प्रमुख स्वरूप माने जाते हैं-

(1) लिखित तौरात (2) मौखिक तौरात

(1) लिखित तौरात (Written Torah)

अर्थात वह तौरात जो पाँच पुस्तकों पर आधारित है। इन पाँच पुस्तकों को मूसा की पाँच पुस्तकें या पेंटाट्यूक (Pentateuch) कहा जाता है, क्योंकि यह पाँच ग्रंथों का संग्रह है-

(1) उत्पत्ति की पुस्तक (Genesis)

(2) निर्गमन की पुस्तक (Exodus)

(3) लैव्यव्यवस्था की पुस्तक (Leviticus)

(4) गिनती की पुस्तक (Numbers)

(5) व्यवस्थाविवरण की पुस्तक (Deuteronomy)

मुख्य पवित्र ग्रन्थ-

यहूदियों की पवित्र पुस्तकें मुख्य रूप से दो मानी जाती है। तौरात और

तलमूद। इन दोनों को वे "पुराना विधान" (Old Testament) कहते हैं, ताकि यहूदियों की धार्मिक पुस्तकों और ईसाई धर्म की पुस्तक इन्जील के बीच अंतर स्पष्ट किया जा सके। इसी कारण ईसाइयों की पुस्तकों को "नया विधान" (New Testament) कहा जाता है।

तौरात की आंतरिक संरचना (Conceptual Structure)

तौरात को उसकी विषय वस्तु के आधार पर इस प्रकार भी समझा जाता है-

(1) ऐतिहासिक विवरण (Genesis, Exodus, Numbers)

(2) कानूनी और धार्मिक विधान (Exodus, Leviticus, Deuteronomy)

(3) नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षाएँ (विशेष रूप से Deuteronomy)

टिप्पणी- हर पुस्तक के भीतर कई अध्याय (Chapters) होते हैं और प्रत्येक अध्याय में अनेक पद (Verses) शामिल होते हैं।

(2) मौखिक तौरात (Oral Torah)

मिश्ना (Mishnah) और तलमूद (Talmud) ये बाद की व्याख्यात्मक परम्पराएँ हैं।

मिश्ना (Mishnah)

मिश्ना यहूदी धार्मिक परम्परा की सबसे प्राचीन लिखित रूप है, जिसमें मौखिक तौरात (Oral Torah) को पहली बार व्यवस्थित रूप से पुस्तक के रूप में संकलित किया गया। इसकी लगभग 200 ईस्वी में यहूदी विद्वान यहूदा हा-नासी (Judah ha-Nasi) ने की। मिश्ना की भाषा मिश्नाईक हिब्रू (Mishnaic Hebrew) है।

मिश्ना मूल रूप से यहूदी व्यावहारिक जीवन के सभी प्रमुख पहलुओं को समेटे हुए है। जैसे- इसमें शामिल हैं उपासना से सम्बन्धित नियम (प्रार्थना, उपवास, पर्व और बलिदानों के नियम) हलालहराम से जुड़े आदेश (विशेष रूप से भोजन, पवित्रता और अपवित्रता) पारिवारिक क़ानून (विवाह, तलाक़,

विरासत और पारिवारिक दायित्व) तथा न्यायिक और सामाजिक नियम (लेन-देन, गवाही, दण्ड और सामाजिक न्याय)।

मिश्ना की संरचना (Six Orders / Sedarim)

(1) जेराइम (Zeraim) — कृषि दशांश, दान और आजीविका से सम्बन्धित धार्मिक नियम

(2) मोएद (Moed) — उपासना, सब्त (शनिवार) पर्व और धार्मिक समय

(3) नशीम (Nashim) — विवाह, तलाक़ और पारिवारिक विषय

(4) नेजिकीन (Nezikin) — नागरिक और आपराधिक क़ानून, न्यायालय, हानि-नुक़्सान

(5) कोदाशिम (Kodashim)— बलिदान, हैकल (मंदिर) मन्नतें

(6) तोहोरोट (Tohorot) — पवित्रता और अपवित्रता से सम्बन्धित विस्तृत नियम

क्रमिक संरचना (Hierarchy)

मिश्ना एक ही ग्रंथ है, लेकिन यह छह बड़े भागों (Six Orders / Sedarim) में विभाजित है। प्रत्येक सिदर (Order) के भीतर कई ग्रंथ/प्रकरण (Tractates / Masekhtot) होते हैं। हर ग्रंथ—अध्याय (Chapters) में और हर अध्याय—अनुच्छेदों (Mishnayot) में विभाजित होता है।

संरचना क्रमः मिश्ना —सिदर (Order)— ग्रंथ (Tractate)—अध्याय (Chapter)—अनुच्छेद (Mishnah)

तल्मूद (Talmud)

तल्मूद यहूदी धर्म की सबसे व्यापक और प्रामाणिक धार्मिक-क़ानूनी तथा बौद्धिक पुस्तक है। यह मूल रूप से मिश्ना और उस पर की गई विस्तृत व्याख्याओं और चर्चाओं—जिन्हें जेमारा (Gemara) कहा जाता है—का संयुक्त

संग्रह है। जेमारा इन्हीं धार्मिक नियमों की व्याख्या करती है।

मिश्ना में मौखिक तौरात के मूल नियम संक्षिप्त और सिद्धांतात्मक रूप में प्रस्तुत किये गये हैं, जबकि जेमारा उन्हीं नियमों की विस्तार से व्याख्या करती है। इसमें विद्वानों की चर्चाएँ, प्रश्न-उत्तर, मतभेद, व्यावहारिक अनुप्रयोग, उदाहरण और क़ानूनी तर्क **(Legal Reasoning)** को विस्तारपूर्वक बताया गया है।

इस प्रकार तल्मूद यह स्पष्ट करती है कि धार्मिक आदेशों को दैनिक जीवन में कैसे समझा जाए और कैसे लागू किया जाए। इसी कारण तल्मूद को यहूदी धार्मिक क़ानून, उपासना और सामाजिक जीवन को समझने की आधारशिला माना जाता है। यही वजह है कि यहूदी धार्मिक कानून हलाखा **(Halakha)** की रचना और समझ में तल्मूद को केंद्रीय स्थान प्राप्त है।

इस तरह तल्मूद = मिश्ना उसकी व्याख्याएँ (जेमारा)

अर्थात तल्मूद, मिश्ना की विस्तृत व्याख्या, चर्चा और क़ानूनी निष्कर्षों का संग्रह है।

तल्मूद के दो प्रमुख संस्करण

(1) येरूशलम तल्मूद (Jerusalem Talmud)

येरूशलम तल्मूद का संकलन चौथी शताब्दी ईस्वीं में फ़िलिस्तीन के यहूदी विद्वानों द्वारा किया गया। यह अपेक्षकृत संक्षिप्त है और इसमें मिश्ना पर की गई व्याख्याएँ शामिल हैं, लेकिन इसकी चर्चाएँ सीमित हैं और कुछ स्थानों पर अधूरी मानी जाती हैं। ऐतिहासिक महत्व के बावजूद व्यावहारिक यहूदी क़ानून में इसकी भूमिका सीमित रही है।

(2) बाबिलोनियन तल्मूद (Babylonian Talmud)

बाबिलोनियन तल्मूद का संकलन पाँचवीं शताब्दी ईस्वीं में बाबिलोन (वर्तमान ईराक़) के विद्वतापूर्ण केंद्रों में हुआ। यह अत्यन्त विस्तृत, सुव्यवस्थित और गहन धार्मिक-क़ानूनी तथा बौद्धिक चर्चाओं पर आधारित है। इसी कारण यहूदी धार्मिक क़ानून (हलाखा) में इसे अधिक प्रामाणिक और अधिकारपूर्ण

स्थान प्राप्त है और व्यावहारिक यहूदी क़ानून की नींव अधिकांशतः इसी पर आधारित है।

धार्मिक व्यवस्था का आधार-

यहूदी परम्परा के अनुसार धार्मिक क़ानून और शिक्षा का एक स्पष्ट विद्वतापूर्ण क्रम मौजूद है। तौरात मूल और दिव्य कानून है, जिस पर पूरी यहूदी धार्मिक व्यवस्था आधारित है। उसी तौरात की व्यावहारिक व्याख्या और दैनिक जीवन में उसके अनुप्रयोग को विद्वानों ने पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से आगे बढ़ाया, जिसे बाद में मिश्ना के रूप में संकलित किया गया। समय के साथ मिश्ना के नियमों की विस्तृत व्याख्या, तार्किक चर्चा, धार्मिक-क़ानूनी तर्क और विभिन्न मतों को एकत्र करके तल्मूद तैयार की गई, जो मिश्ना की व्याख्यात्मक और व्यावहारिक व्याख्या है।

इस प्रकार यहूदी परम्परा में यह सिद्धान्त स्वीकार किया जाता है कि तौरात के बिना मिश्ना का अस्तित्व नहीं है और मिश्ना के बिना तल्मूद की रचना सम्भव नहीं यानी यह तीनों एक ही बौद्धिक और कानूनी परम्परा की आपस में जुड़ी हुई कड़ियाँ हैं।

तौरात में आने वाले नबी की भविष्यवाणी

तौरात (पुराना विधान/**Old Testament**) में विभिन्न स्थानों पर आने वाले नबी/रसूल से सम्बन्धित भविष्यवाणियाँ पाई जाती हैं। उत्पत्ति **3:15** में एक ऐसी महान हस्ती का उल्लेख है जो असत्य पर विजय प्राप्त करेगी। उत्पत्ति **49:10** में ऐसी नेतृत्व शक्ति की सूचना दी गई है जिसकी आज्ञा का पालन अनेक जातियाँ करेंगी। व्यवस्थाविवरण **18:15** और **18:18** में हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) एक ऐसे नबी की शुभ सूचना देते हैं जो बनी इस्राईल के "भाइयों" में से होगा और जिसके मुँह में अल्लाह अपना वचन रखेगा।

इसी प्रकार यशायाह **42** में एक ऐसे वैश्विक रसूल का वर्णन मिलता है जो क़ानून (शरीअ़त) और न्याय की स्थापना करेगा। इस्लामी दृष्टिकोण से यह

भी विशेषताएँ अपने पूर्ण और व्यावहारिक रूप में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पवित्र व्यक्तित्व में एकत्र दिखाई देती हैं। इसी कारण अनेक विद्वान इन भविष्यवाणियों को नबुव्वत-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर स्पष्ट संकेत मानते हैं।

(1) हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के समान-

I will raise them up a Prophet from among their brethren, like unto thee, and will put my words in his mouth; and he shall speak unto them all that I shall command him.

(Eng. Translation: King James Version- KJV)

अनुवाद-

"मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच से तुम्हारे ही समान एक नबी उठाऊँगा और अपना वचन उसके मुख में डालूँगा और जो कुछ मैं उसे आदेश दूँगा, वही वह उनसे कहेगा"।

व्याख्या-

इस कथन में आने वाले नबी की एक समग्र और स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत की गई है।

"भाईयों के बीच से" की अभिव्यक्ति तौराती प्रयोग के अनुसार बनी इस्राईल के नस्ली भाईयों की ओर संकेत करती है अर्थात हज़रत इस्माईल (अलै०) की सन्तान की ओर क्योंकि हज़रत इस्हाक़ और हज़रत इस्माईल दोनों हज़रत इब्राहीम (अलै०) के पुत्र थे।

"तुम्हारे ही समान" से अभिप्राय हज़रत मूसा (अलै०) जैसे नबी की भविष्यवाणी है, जो शरीअत, क़ानून और सामूहिक जीवन की व्यावहारिक नेतृत्व करेगा।

यह सभी गुण पूर्ण रूप से हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जीवन और कार्य में दिखाई देते हैं न कि हज़रत ईसा (अलै०) की पैग़म्बरी में। इसी प्रकार "मैं अपना वचन उसके मुख में रखूँगा" मौखिक और शब्दशः वही (ईश्वरीय प्रकाशन) की ओर स्पष्ट संकेत करता है, जो कुर्आन और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्रचार-प्रणाली पर पूरी तरह लागू होता है। इसलिए यह आयत

नबूवत-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर एक सशक्त संकेत बन जाती है।

भाई शब्द का प्रयोग-

इस में हज़रत इस्माईल (अलै०) और उनकी संतान के बारे में स्पष्ट रूप से 'भाईयों' (Brethren) शब्द का प्रयोग किया गया है, जो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि तौरात की शब्दावली में इस्माईली और इस्राईली नस्ली रूप से भाई माने जाते हैं। यही पाठ्य प्रमाण आगे चलकर व्यवस्थाविवरण (18:18) में 'भाईयों के बीच से नबी' की अभिव्यक्ति को समझने में मूलभूत महत्व रखता है।

(2) भाई (इस्माईली और इस्राईली) का अर्थ-

And he shall dwell in the presence of all his brethren.

(Eng. Translation: King James Version – -KJV)

अनुवाद-

"और वह अपने सभी भाइयों के सामने उनके बीच निवास करेगा"। (तौरात, पुस्तक उत्पत्ति, अध्याय 16, आयत 12)

व्याख्या-

इस आयत में हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) और उनकी सन्तान के बारे में कहा गया है कि वे अपने सभी भाइयों के बीच निवास करेंगे। तौरात के हिब्रानी मूल पाठ में भाइयों शब्द नस्ली सम्बन्ध को स्पष्ट करता है। चूँकि हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) और हज़रत इस्हाक़ (अलैहिस्सलाम) दोनों हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पुत्र थे, इसलिए बनी इस्माईल और बनी इस्राईल को तौराती परिभाषा में वास्तविक भाई माना जाता है। यही तथ्य व्यवस्थाविवरण 18:18 में प्रयुक्त "भाइयों के बीच से एक नबी" की अभिव्यक्ति को समझने के लिए एक सशक्त और ठोस आधार प्रदान करता है।

(3) पारान का उल्लेख— इस्माईली भूमि (मक्का)

The Lord came from Sinai, and rose up from Seir unto them; he

shined forth from mount Paran, and he came with ten thousands of saints: from his right hand went a fiery law for them.

(Eng. Translation: King James Version – -KJV)

अनुवाद–

"प्रभु सीनै से आया और उनके लिए सईर से प्रकट हुआ। वह पारान पर्वत से प्रकाशित हुआ और वह हज़ारों पवित्र जनों के साथ आया या उसके दाहिने हाथ से उनके लिए अग्निमय विधि (शरीअ़त) निकली"।

(तौरात, पुस्तक व्यवस्थाविवरण/**Deuteronomy**, अध्याय **33**, आयत **2**)

व्याख्या–

इस आयत में तीन स्थान सीनै, सईर और पारान एक निरन्तर दैवी प्रकटाव के चरणों के प्रतीक के रूप में सामने आते हैं।

सीनै और सईर–

सीनै वह स्थान है जहाँ ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को तौरात की शरीअ़त प्रदान की गई। इसलिए यह बनी इस्राईल में दैवी कानून के प्रथम महान प्रकटाव का प्रतिनिधित्व करता है।

सईर फ़िलिस्तीन और उसके आसपास के क्षेत्र की ओर संकेत करता है, जहाँ ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की पैग़म्बरी हुई। उनकी शिक्षा आंतरिक सुधार और नैतिक पुनर्जागरण पर केंद्रित रही और उन्होंने पूर्ववर्ती शरीअ़त की पुष्टि की।

इसके बाद पारान का उल्लेख आता है, जो तौराती और ऐतिह़ासिक प्रयोग में ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) की भूमि से जुड़ा हुआ है और भौगोलिक रूप से अ़रब के उस क्षेत्र पर लागू होता है जहाँ मक्का स्थित है।

यहाँ से ऐसे नबी के प्रकट होने की ओर संकेत समझा जाता है जो पूर्ण शरीअ़त के साथ आये 'हज़ारों पवित्र जनों' के साथ प्रकट हो और जिसके माध्यम से दैवी क़ानून व्यवहार में लागू हो।

सभी विशेषताएँ–

कुछ विद्वानों के अनुसार ये सभी विशेषताएँ नबूवत-ए-मुह़म्मदी पर पूरी

तरह़ लागू होती हैं। इस प्रकार यह आयत दैवी मार्गदर्शन के एक क्रमिक और परिपूर्ण होने वाले सिलूसिले को प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत करती है।

पारान या फ़ारान-

प्राचीन यहूदी और ईसाई स्रोतों में 'पारान' को दक्षिणी फ़िलिस्तीन और अ़रब के मरुस्थलीय क्षेत्र से जोड़ा गया है, जो ऐतिह़ासिक रूप से हिजाज (जहाँ मक्का स्थित है) से मेल खाता है। इसी आधार पर माउंट पारान (Mount Paran) का प्रयोग अ़रब क्षेत्र के लिए समझा गया।

कुछ विद्वान तौरात में उल्लिखित पारान (Paran) को सामान्यतः फ़ारान कहते हैं, जो उसका अ़रबी नाम है।

व्याख्या-

इसकी व्याख्या इस प्रकार की जाती है-

अ़रबी स्रोतों, विशेष रूप से सीरत और तफ़्सीरी साहित्य में पारान को फ़ारान लिखा और पढ़ा जाता है। इब्रानी शब्द Paran अ़रबी ध्वनि-प्रणाली में Faran (फ़ारान) बन जाता है, क्योंकि इब्रानी भाषा का अक्षर P अ़रबी में प्रायः फ़ (F) से रूपांतरित होता है। मुस्लिम मुफ़स्सिरों और इतिह़ासकारों के अनुसार फ़ारान से अभिप्राय वही इस्माईली क्षेत्र है जहाँ मक्का स्थित है।

इसी कारण सीरत और इतिह़ास की पुस्तकों में मक्का को वादी-ए-फ़ारान भी कहा गया है, क्योंकि ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) की बसावट उसी वादी में बताई जाती है।

(4) ईश वचन नबी के मुख में अर्थात वह्य की अवधारणा-

And it shall come to pass, that whosoever will not hearken unto my words which he shall speak in my name, I will require it of him.

(Eng. Translation: King James Version—KJV)

अनुवाद-

"और ऐसा होगा कि जो व्यक्ति मेरे उन वचनों को नहीं सुनेगा, जिन्हें वह

नबी मेरे नाम से कहेगा, तो मैं उससे उसका हिसाब लूँगा"।

(तौरात, पुस्तक व्यवस्थाविवरण/Deuteronomy, अध्याय 18, आयत 19)

व्याख्या-

इस वाक्य में वह्य (ईश्वरीय प्रकाशन) की प्रकृति को अत्यन्त स्पष्ट और निर्णायक रूप में बयान किया गया है। वाक्यांश "मेरे वचन जिन्हें वह मेरे नाम से कहेगा" इस बात की ओर संकेत करता है कि आने वाला नबी अपनी ओर से कोई बात गढ़कर प्रस्तुत नहीं करेगा, बल्कि वही शब्द बोलेगा जिन्हें ईश्वर उसके मुख में रखेगा।

इस प्रकार नबी केवल दैवी संदेश का अमीन (विश्वासी संरक्षक) और प्रवक्ता होगा न कि स्वयं लेखक या चिंतक। इसी कारण आयत में यह कठोर चेतावनी भी सम्मिलित है कि जो व्यक्ति उस नबी के वचनों को नहीं सुनेगा, उससे स्वयं ईश्वर हिसाब लेगा।

यह बात उस वचन के दैवी, अनिवार्य और आज्ञापालन-योग्य होने का स्पष्ट प्रमाण है।

यह अवधारणा तौरात में बार-बार दोहराये गये मौखिक वह्य (Verbal Revelation) के सिद्धान्त को स्पष्ट करती है, जिसके अनुसार दैवी मार्गदर्शन शब्दशः प्रकट होता है और नबी उसमें किसी प्रकार का व्यक्तिगत परिवर्तन या जोड़ नहीं करता। यही सिद्धान्त आगे चलकर क़ुर्आन की वह्य और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्रचार-पद्धति में अपनी पूर्ण और व्यावहारिक रूप में प्रकट होता है।

(5) उम्मी नबी पर वह्य (ईश्वरीय प्रकाशन)

And the book is delivered to him that is not learned, saying, Read this, I pray thee: and he saith, I am not learned.

(Eng. Translation: King James Version – KJV)

अनुवाद-

"और पुस्तक उस व्यक्ति को दी जाती है जो पढ़ना नहीं जानता और

उससे कहा जाता है, इसे पढ़ो, तो वह कहता है मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ"।

(तौरात, पुस्तक यशायाह/ अध्याय 29, आयत 12)

व्याख्या-

इस वाक्य में एक अत्यंत अर्थपूर्ण रूपक प्रस्तुत किया गया है, जिसमें ऐसे व्यक्ति का उल्लेख है जो पढ़ना नहीं जानता, फिर भी उसके सामने पुस्तक रखकर उससे कहा जाता है कि वह उसे पढ़े।

अर्थात (इस्लामी परिप्रेक्ष्य में) जिब्रईल (अ़लै०) कहते हैं—'पढ़ो' (इक़्रा) और वह उत्तर देता है "मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ"—'मा अना बि-क़ारिअ़'।

(सहीह बुख़ारी, ह़दीसः 3)

इस्लामी दृष्टिकोण से यह दृश्य आश्चर्यजनक रूप से उस घटना से मिलता-जुलता है जो ग़ारे हिरा में पहली वह़्य के समय घटी, जब वह़्य के फ़रिश्ते ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से 'इक़्रा' कहा और आपने उत्तर दिया कि मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ।

समानता-

यह समानता केवल शब्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि अर्थ की दृष्टि से भी गहरी है, क्योंकि दोनों ही प्रसंगों में उद्देश्य किसी लिखित पाठ को पढ़ना नहीं, बल्कि दैवी संदेश का मौखिक रूप से संप्रेषण है, जो सीधे ऐसे नबी के हृदय और जिह्वा पर उतारा जाता है जो औपचारिक साक्षरता नहीं रखता।

इसी कारण इस्लामी विद्वान इस आयत को एक प्रतीकात्मक और पूर्वसूचक संकेत मानते हैं कि अन्तिम वही ऐसे नबी पर अवतरित होगी जो शिक्षित न होने के बावजूद ईश्वर के वचन का विश्वसनीय संरक्षक और प्रवक्ता होगा।

इस प्रकार यह आयत नबूवत-ए-मुह़म्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर एक अर्थपूर्ण और बौद्धिक संकेत बन जाती है।

क़ुर्आन की पहली वह़्य और तौरात-

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ﴿۳﴾

الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۭ (सूरः अ़लक़ आयत नं० 1-5)

अनुवाद-

"पढ़ो अपने रब के नाम से, जिसने पैदा किया। उसने इंसान को जमे हुए खून से पैदा किया। पढ़ो और तुम्हारा रब अत्यंत कृपालु है। जिसने कलम के द्वारा सिखाया, उसने इन्सान को वह सिखाया जो वह नहीं जानता था"।

कुर्आन मजीद की पहली वह्य सूरः अलु-अ़लक में अवतरित हुई, जिसकी शुरुआ़त आदेश 'इक़रा' (पढ़ो) से होती है। यह घटना तौरात में वर्णित भविष्यवाणियों विशेष रूप से यशायाह **29:12** और व्यवस्थाविवरण **18:18–19**—की व्यावहारिक पूर्ति के रूप में सामने आती है।

ग़ारे हिरा में अवतरित इन आयतों में ऐसे नबी को सम्बोधित किया गया है जो औपचारिक रूप से पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे, फिर भी उन्हें अपने रब के नाम से पढ़ने का आदेश दिया गया।

दैवी सम्बोधन-

इससे स्पष्ट होता है कि यहाँ अभिप्राय किसी लिखित पाठ का पठन नहीं, बल्कि दैवी वचन की मौखिक शिक्षा और उसके प्रसार से है। इसके अतिरिक्त "जिसने क़लम के द्वारा सिखाया" और "इन्सान को वह सिखाया जो वह नहीं जानता था" जैसे वाक्य इस बात की ओर संकेत करते हैं कि यह वह्य केवल मौखिक नहीं, बल्कि ज्ञान, मार्गदर्शन और सभ्यतागत विकास का भी स्रोत है।

इस प्रकार कुर्आन की पहली वह्य उस तौराती धारणा की पूर्ण व्यावहारिक अभिव्यक्ति बन जाती है कि ईश्वर अपना वचन नबी के मुख में रखेगा और वह्य शब्द वह लोगों तक पहुँचाएगा।

इसी आधार पर इस्लामी विद्वान इसे पूर्ववर्ती दिव्य ग्रंथों की भविष्यवाणियों की समग्र और प्रामाणिक पूर्ति मानते हैं।

सूरः अलु-अ़लक की ये प्रारम्भिक आयतें दैवी वह्य की वास्तविकता, उसके अवतरण की विधि और उसके उद्देश्य को अत्यन्त स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती हैं।

मौखिक वह्य-

आदेश 'इक़रा' इस बात का प्रमाण है कि नुबूवत की शुरुआ़त किसी दार्शनिक चिंतन से नहीं, बल्कि सीधे दैवी सम्बोधन से हुई। चूँकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) औपचारिक रूप से साक्षर नहीं थे, इसलिए यहाँ पढ़ने से आशय मौखिक वह्य को स्वीकार करना और आगे पहुँचाना है।

"रब के नाम से" की शर्त इस वह्य के शुद्ध एकेश्वरवादी स्रोत को स्पष्ट करती है, जबकि "क़लम के द्वारा सिखाने" का उल्लेख इस ओर संकेत करता है कि यही वही आगे चलकर ज्ञान, लेखन, सभ्यता और मानव चेतना की आधारशिला बनेगी।

अपना वचन नबी के मुख से-

इस प्रकार यह आयतें तौरात में वर्णित उस भविष्यवाणी की व्यावहारिक पूर्ति के रूप में दिखाई देती हैं कि ईश्वर अपना वचन नबी के मुख में रखेगा और वह नबी मानवता को वह ज्ञान प्रदान करेगा जिसे वह पहले नहीं जानती थी।

इसी प्रकार दूसरी आयत में है-

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۴۸﴾

(सूरः अ़न्कबूत आयत नं० 48)

अनुवाद-

"और इससे पहले तुम न तो कोई पुस्तक पढ़ते थे और न ही अपने हाथ से लिखते थे। यदि ऐसा होता तो असत्य के अनुयायी अवश्य ही संदेह में पड़ जाते"।

औपचारिक शिक्षा-

यह आयत स्पष्ट रूप से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उम्मी (औपचारिक शिक्षा) होने को सिद्ध करती है और इस तथ्य की पुष्टि करती है कि कुर्आन किसी पूर्व अध्ययन, लिखित परम्परा या व्यक्तिगत बौद्धिक प्रयास का परिणाम नहीं है, बल्कि सीधे ईश्वरीय वह्य है।

यही विषय पहले से तौरात की पुस्तक यशायाह में उल्लिखित भविष्यवाणी में भी मिलता है। जहाँ कहा गया है-

अनुवाद-

"और पुस्तक उस व्यक्ति को दी जाती है जो पढ़ना नहीं जानता और उससे कहा जाता है, इसे पढ़ो तो वह कहता है मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ"।

(तौरात, पुस्तक यशायाह/ **Isaiah**, अध्याय **29**, आयत **12**)

इस प्रकार क़ुर्आन की यह आयत तौरात की उस भविष्यवाणी की व्यावहारिक पुष्टि बन जाती है, क्योंकि दोनों ग्रंथ ऐसे नबी की ओर संकेत करते हैं, जो औपचारिक शिक्षा से वंचित होने के बावजूद ईश्वर के वचन का विश्वसनीय संरक्षक है और जिस पर अवतरित होने वाली वह्य अपनी सत्यता के लिए किसी मानवीय ज्ञान-स्रोत पर निर्भर नहीं है।

यशूअ (Joshua) मूसा (अ़लै०) के समान नहीं-

ह़ज़रत यशूअ़ (अ़लै०) अवश्य ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के उत्तराधिकारी थे, लेकिन न तो वे कोई नई शरीअ़त लेकर आये और न ही उनकी नुबूवत सार्वभौमिक या स्वतंत्र क़ानून-निर्माता स्वरूप की थी। उन्होंने तौरात में दिये गये आदेशों के अनुसार ही बनी इस्राईल का नेतृत्व किया और उसी शरीअ़त के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाया, जो पहले से ह़ज़रत मूसा को प्रदान की जा चुकी थी।

इसी कारण तौरात में उल्लिखित "तुम्हारे समान एक नबी" (व्यवस्थाविवरण **18:18**) की भविष्यवाणी ह़ज़रत यशूअ़ पर लागू नहीं होती। ह़ज़रत मूसा की विशिष्टता इस बात में थी कि वे नई शरीअ़त लाए स्वतंत्र रूप से क़ानून स्थापित किया और प्रत्यक्ष वह्य के माध्यम से एक सम्पूर्ण धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था की स्थापना की जबकि ये विशेषताएँ ह़ज़रत यशूअ़ के पद और कार्यक्षेत्र में शामिल नहीं थीं।

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की पैग़म्बरी-

इसी प्रकार ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की पैग़म्बरी भी स्पष्ट रूप से बनी

इस्राईल तक सीमित थी। स्वयं इंजीलों के अनुसार उन्होंने अपनी दअ़वत को 'भटकी हुई भेड़ों' अर्थात बनी इस्राईल तक ही विशेष रखा। इसके अतिरिक्त ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने कोई नई शरीअ़त प्रस्तुत नहीं की, बल्कि तौरात की पुष्टि और नैतिक सुधार पर बल दिया।

इसके विपरीत व्यवस्थाविवरण 18:18 में 'उनके भाइयों के बीच से' नबी उठाये जाने का उल्लेख है और तौरात की अन्य आयतों (जैसे उत्पत्ति 16:12) से यह सिद्ध होता है कि बनी इस्राईल के भाई बनी इस्माईल हैं, न कि स्वयं बनी इस्राईल।

सीमित पैग़म्बरी-

इसलिए न तो भौगोलिक दायरा, न शरीअ़त की प्रकृति और न ही भाइयों की यह व्याख्या ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) पर पूरी तरह़ लागू होती है।

ह़ज़रत यशूअ (अ़लै०) न तो कोई नई शरीअ़त लाए और न ही ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की तरह़ स्वतंत्र और स्थायी नबी थे, जबकि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की पैग़म्बरी बनी इस्राईल तक सीमित थी और 'भाइयों' की शर्त पर खरी नहीं उतरती।

इसके विपरीत नई शरीअ़त, सार्वभौमिक पैग़म्बरी और बनी इस्राईल के भाइयों (बनी इस्माईल) में प्रकट होना यह सभी विशेषताएँ इस्लामी दृष्टिकोण से नुबूवत-ए-मुह़म्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में एक साथ दिखाई देती हैं।

यहूदी विद्वानों का स्वीकार-

यह एक महत्वपूर्ण और निर्णायक तथ्य है कि स्वयं यहूदी विद्वान, तौरात की ही व्याख्याओं के आधार पर इस बात को स्वीकार करते हैं कि बनी इस्राईल में ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के बाद उनके समान कोई नबी दोबारा उत्पन्न नहीं हुआ।

तौरात की स्पष्ट साक्ष्य-

Israel never again had a prophet like Moses. (Deuteronomy 34:10)

अनुवाद-

"और इस्राईल में मूसा के समान कोई नबी फिर कभी नहीं उठा, जिससे प्रभु आमने-सामने बात करता था"। (व्यवस्थाविवरण/Deuteronomy 34:10)

यहूदी दर्शन और फ़िकह के सबसे महान विद्वान Maimonides (रब्बी मूसा बिन मैमोन, 1138–1204) अपनी प्रसिद्ध कृति मिश्नेह तौरात (Mishneh Torah) में लिखते हैं कि-

"मूसा (अ़लै०) की नुबूवत अपने स्वरूप में अद्वितीय (Unique) थी और बनी इस्राईल में कोई भी नबी उस स्तर तक नहीं पहुँच सका"।

(Maimonides:Mishneh Torah,Section: Hilchot Yesodei HaTorah,Chapter: 7)

मूसा के समान-

तौरात कहती है कि बनी इस्राईल में मूसा (अ़लै०) के समान कोई नबी दोबारा नहीं आया और यहूदी विद्वान भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। इसके बावजूद तौरात यह वादा करती है कि "तुम्हारे समान एक नबी आएगा"।

अतः यह नबी बनी इस्राईल में से नहीं, बल्कि उनके भाइयों अर्थात बनी इस्माईल में से होगा।

जे. एच. डेनिसन (J. H. Denison) अपनी प्रसिद्ध कृति Emotion as the Basis of Civilization में लिखते हैं-

"In the case of Muhammad, we have a man who was at once a prophet, a lawgiver, a statesman, and a reformer—like Moses".

(Emotion as the Basis of Civilization, Chapter on Islam,London edition Page 269)

अनुवाद-

"ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के मामले में हमें ऐसी व्यक्तित्व दिखाई देता है, जो एक साथ नबी शरीअ़त देने वाले, राज्य के नेता और समाज-सुधारक थे, बिल्कुल ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की तरह़"।

David Benjamin Keldani (पूर्व ईसाई पादरी) अपनी पुस्तक Muhammad in the Bible में व्यवस्थाविवरण 18:18 की भविष्यवाणी को सीधे तौर पर

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर लागू करते हैं।

वह लिखते हैं-

"The prophet like unto Moses, spoken of in Deuteronomy 18:18, cannot be Jesus, but fits Muhammad perfectly, because he was a law-giver, a statesman, and the founder of a religious polity."

(Abdul Ahad Dawud, Muhammad in the Bible, London Edition, Chapter: The Prophet Like unto Moses, Page 31-33)

अनुवाद-

"व्यवस्थाविवरण 18:18 में जिस मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के समान नबी का उल्लेख किया गया है, वह ह़ज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) नहीं हो सकते, बल्कि यह भविष्यवाणी पूरी तरह़ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर लागू होती है, क्योंकि वे शरीअ़त देने वाले राज्य के नेता और एक सुव्यवस्थित धार्मिक व्यवस्था के संस्थापक थे"।

स्पष्टीकरण-

तौरात स्वयं (व्यवस्थाविवरण 34:10) यह घोषणा करती है कि बनी इस्राईल में मूसा (अ़लै०) के समान कोई नबी फिर उत्पन्न नहीं हुआ।

यहूदी विद्वानों विशेष रूप से Maimonides (रब्बी मूसा बिन मैमोन) ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है कि मूसा (अ़लै०) की नबूवत अपने स्वरूप में अद्वितीय थी, जबकि तौरात ही (व्यवस्थाविवरण 18:18) में "तुम्हारे समान एक नबी" के आने का वादा करती है।

बनी इस्राईल के भाई में होना-

इस प्रकार तार्किक रूप से यह नबी बनी इस्राईल के भीतर नहीं, बल्कि उनके भाइयों (बनी इस्माईल) में होना चाहिए। ऐतिह़ासिक और सैरतात्मक तुल्ना इस निष्कर्ष को और सुदृढ़ करती है।

ग़ैर-मुस्लिम इतिह़ासकार J. H. Denison ने स्वीकार किया कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में नुबूवत, शरीअ़त, राज्य-नेतृत्व और सामाजिक सुधार

यानी मूसा (अ़लै०) की नुबूवत की समग्र विशेषताएँ एक साथ विद्यमान हैं।

जबकि न तो ह़ज़रत यशूअ़ (अ़लै०) कोई नई शरीअ़त लेकर आए और न ही ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की पैग़म्बरी बनी इस्राईल से बाहर सार्वभौमिक थी।

इसी आधार पर पूर्व ईसाई विद्वान **Abdul Ahad Dawud** ने स्पष्ट रूप से कहा कि व्यवस्थाविवरण **18:18** की भविष्यवाणी ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) पर नहीं, बल्कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर पूरी तरह़ लागू होती है। इस प्रकार तौरात में वर्णित "मूसा (अ़लै०) के समान नबी" की पूर्ण समानता सीरत-ए-मुह़म्मदी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) में साकार होती है।

निष्कर्ष-

तौरात में आने वाले नबी की जो मूल विशेषताएँ बताई गई हैं, ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के समान होना, नई शरीअ़त लाना, ईश्वर के वचन को शब्दशः प्रस्तुत करना और बनी इस्राईल के 'भाइयों' में से होना। यह सभी एक समग्र और सार्वभौमिक नुबूवत की ओर संकेत करती हैं।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की सीरत में यह चित्र पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है, आपने नई और पूर्ण शरीअ़त प्रदान की, एक सामाजिक और राज्य-व्यवस्था की स्थापना की और वह़्य को ठीक उसी प्रकार लोगों तक पहुँचाया जैसा कि ईश्वरीय आदेश था।

यही वह विशिष्टता है जो ह़ज़रत यशूअ़ (अ़लै०) या ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) में इस व्यापकता के साथ नहीं पाई जाती, क्योंकि न तो ह़ज़रत यशूअ़ कोई नई शरीअ़त लेकर आए और न ही ह़ज़रत ईसा की पैग़म्बरी बनी इस्राईल से बाहर सार्वभौमिक रूप में प्रकट हुई।

तौराती अभिव्यक्ति 'भाइयों के बीच से' सीरत-ए-मुह़म्मदी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) में इस प्रकार रूप लेती है कि आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) बनी इस्माईल में भेजे गये, जो नस्ली दृष्टि से बनी इस्राईल के भाई हैं।

इसी प्रकार "पारान या फारान" का उल्लेख जिसे मुस्लिम विद्वान मक्का और वादी-ए-फ़ारान से जोड़ते हैं, इस भौगोलिक सत्य का प्रतीक है कि

अन्तिम नुबूवत इस्माईली भूमि से उदित हुई।

सीरत में यह प्रतीक तब व्यावहारिक रूप लेता है जब मक्का से एकेश्वरवाद की दअ़वत उठती है और "हज़ारों पवित्र जनों" के साथ दैवी क़ानून व्यवहार में लागू होता है।

इसके अतिरिक्त "मैं ईश्वर का वचन नबी के मुख में रखूँगा" और "पुस्तक उस व्यक्ति को दी जाती है जो पढ़ना नहीं जानता" जैसे कथन, नबवी सीरत में वह्य के आरम्भ के साथ पूरी तरह स्पष्ट हो जाते हैं।

ग़ारे हिरा में 'इक़्रा' का आदेश और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का उत्तर "मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ" इस प्रतीक की व्यावहारिक पूर्ति है कि वह्य किसी लिखित पाठ का पठन नहीं, बल्कि मौखिक दैवी संप्रेषण है।

इस प्रकार सीरत-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में तौरात की भविष्यवाणियाँ केवल सैद्धांतिक दावे नहीं रह जातीं, बल्कि इतिहास में एक जीवंत, स्पष्ट और समग्र सत्य के रूप में सामने आती हैं।



भाग-6

इंजील के अनुसार अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणियाँ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ईसाई धर्म का संक्षिप्त परिचय

इस्लामी परम्परा के अनुसार ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का मूल नाम इब्रानी भाषा में येशुआ (Yeshua) था, जिसे अ़रबी में ईसा कहा जाता है। उनका उपनाम मसीह़ है, जो "मसह" शब्द से निकला है, जिसका अर्थ होता है अल्लाह की अनुमति से बीमारी को दूर करना"।

इन्हें ईसा नासरी भी कहा जाता है, क्योंकि इनका सम्बन्ध फ़िलिस्तीन के क़स्बे नासिरा से था।

'इब्ने मरियम' इनकी विशेष पहचान है, जो बिना पिता के इनकी चमत्कारिक पैदाइश की ओर संकेत करती है।

ह़ज़रत मरियम अ़लैहास्सलाम के पिता 'ह़ज़रत इमरान' अपने समय के बहुत नेक और अ़िबादत करने वाले व्यक्ति थे, इनकी पत्नी 'हन्ना बिन्ते फ़ाक़ूद' भी बहुत धर्मपरायण और अल्लाह की अ़िबादत करने वाली महिला थीं। इनके यहाँ कोई संतान नहीं थी, इस कारण इन्होंने मन्नत मानी कि अगर अल्लाह उन्हें संतान देगा, तो वे उस बच्चे को बैतुल् मुक़द्दस (मस्जिद) की सेवा के लिए समर्पित कर देंगी।

मन्नत के बाद-

मन्नत के बाद अल्लाह ने उन्हें सन्तान दी, लेकिन वह बच्ची थीं अर्थात मरियम अ़लैहास्सलाम। जबकि वे बेटे की उम्मीद कर रही थीं, इसलिए उन्होंने दुःख के साथ कहा कि यह तो लड़की है, मस्जिद की सेवा पूरी तरह़ नहीं कर पाएगी और मेरी मन्नत भी पूरी नहीं होगी, लेकिन अल्लाह ने स्वयं उस बच्ची का नाम मरियम रखा और उसी को स्वीकार कर लिया।

ह़ज़रत मरियम-

ह़ज़रत मरियम अ़लैहास्सलाम के पैदा होने से पहले ही उनके पिता का

इन्तिक़ाल हो चुका था, इसलिए क़ौम के लोग चाहते थे कि मरियम की परवरिश वह करें। इस पर क़ुर्रह (पर्ची) डाली गई, जिसमें ह़ज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम का नाम निकला।

ह़ज़रत ज़करिया (अ़लैहिस्सलाम) ह़ज़रत मरियम (अ़लैहास्सलाम) के खालू (मौसा) भी थे। ह़ज़रत ज़करिया (अ़लैहिस्सलाम) ने मस्जिद में ही मरियम के लिए एक अलग जगह ठहरने की तय कर दी, जहाँ कोई और नहीं जाता था, ताकि उनकी बहुत अच्छी परवरिश और देखभाल हो।

ह़ज़रत ईसा मसीह **(Jesus of Nazareth)** के जन्म से पहले बनी इस्राईल/यहूदिया **(Judea)** में धार्मिक व्यवस्था की बुनियाद तौरात **(Torah)** और ह़ज़रत मूसा की शरीअ़त **(Mosaic Law)** पर आधारित थी।

लेकिन इतिह़ास में उस दौर को सेकंड टेंपल पीरियड या द्वितीय हैकल अ़िबादतगाह काल की यहूदियत **(Second Temple Judaism)** कहा जाता है।

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के समय में बनी इस्राईल की धार्मिक और फ़िक़्ही (क़ानूनी) नेतृत्व कुछ प्रभावशाली वर्गों के हाथों में सिमट चुकी थी। इनमें फ़रीसी **(Pharisees)** सदूकी **(Sadducees)** और कातिबीन/स्क्राइब्स **(Scribes)** प्रमुख थे।

फ़रीसी वर्ग–

फ़रीसी वर्ग शरीअ़त की बारीक क़ानूनी व्याख्याओं और ज़बानी परम्परा **(Oral Law)** पर बहुत ज़ोर देता था। वे रोज़मर्रा की ज़िन्दगी को धार्मिक नियमों के अधीन लाने के समर्थक थे, लेकिन उनकी कठोर और जटिल व्याख्याएँ आ़म लोगों के लिए धर्म को बोझ बना देती थीं।

सदूकी वर्ग–

इसके विपरीत सदूकी वर्ग जो अधिकतर यरुशलम के मन्दिर **(Temple of Jerusalem)** के उच्च पुजारियों और अभिजात वर्ग से बना था— धार्मिक और राजनीतिक सत्ता पर क़ाबिज़ था।

यह वर्ग रोमी शासकों से समझौता करके अपनी सामाजिक और राजनीतिक स्थिति बनाये रखता था। 'कातिबीन' वे विद्वान थे जो तौरात की नक़्ल करने, उसकी शिक्षा देने और क़ानूनी व्याख्या करने के ज़िम्मेदार थे। व्यवहार में आ़म लोगों के धार्मिक फैसले इन्हीं के फ़त्वों और निर्णयों के अधीन होते थे।

इन वर्गों के प्रभुत्व के कारण धर्म की आध्यात्मिक और नैतिक आत्मा पीछे चली गई। बाहरी दिखावा, औपचारिक अ़िबादतें, वर्गीय भेदभाव और धार्मिक एकाधिकार को बढ़ावा मिला। आ़म लोग शरीअ़त की जटिल व्याख्याओं और सख़्त धार्मिक प्रतिबन्धों के बोझ तले दब गये, जबकि धार्मिक अभिजात वर्ग को विशेष सुविधाएँ प्राप्त रहीं।

इसी धार्मिक और सामाजिक जड़ता के माहौल में लोगों के दिलों में यह गहरी आशा पैदा हुई कि कोई निजात देने वाला/मसीह (Messiah) आएगा, जो न केवल रोमी राजनीतिक गुलामी से मुक्ति दिलाएगा, बल्कि शरीअ़त की मूल आत्मा को पुनर्जीवित करेगा, न्याय स्थापित करेगा और धार्मिक शोषण का अंत करेगा।

यही मसीहाई अपेक्षाएँ आगे चलकर ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की दअ़वत को समझने का एक बुनियादी ऐतिह़ासिक और सामाजिक संदर्भ प्रदान करती हैं।

ऐतिह़ासिक संदर्भ-

उस समय यहूदी उ़ल्मा और फ़ुक़्हा ने तौरात की व्याख्या में मानवीय राय और वर्गीय हितों को काफी ह़द तक शामिल कर लिया था। सेकंड टेंपल जूडाइज़्म (Second Temple Judaism) के दौर में कातिबीन (Scribes) और फ़रीसी विद्वानों ने शरीअ़त-ए-मूसा के साथ ज़बानी परम्पराओं (Oral Traditions) और फ़िक़्ही बढ़ोत्तरी को इस सीमा तक फैला दिया था कि मूल पाठ और उसकी नैतिक व आत्मिक भावना पीछे चली गई।

रोमी साम्राज्य का क्षेत्र-

राजनीतिक रूप से उस समय फ़िलिस्तीन/यहूदिया (Palestine/Judea)

रोमी साम्राज्य (Roman Empire) के अधिकार क्षेत्र में था। ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की पैदाइश के आसपास इस क्षेत्र पर हेरोदेस महान (Herod the Great) की हुकूमत थी, जिसे रोम का कर देने वाला "क्लाइंट किंग" (Client king) माना जाता है।

इसके बाद प्रशासनिक व्यवस्था बदल गई और आगे चलकर यहूदिया (Judea) सीधे रोमी शासन के अधीन आ गया। ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की सार्वजनिक दअ़वत (घोषित प्रचार) के समय रोमी शासक/प्रिफेक्ट पोंतियुस पिलातुस (Pontius Pilate) था, जिसकी शासन-अवधि आ़मतौर पर 26–36 ईस्वींमानी जाती है।

शासन तंत्र और धार्मिक नेतृत्व-

इस दोहरे शासन-तंत्र में एक ओर रोमी राजनीतिक सत्ता, जिसके पास प्रशासन, कर-व्यवस्था, सेना और दण्ड देने का पूरा अधिकार था और दूसरी ओर आंतरिक रूप से हैकल/मन्दिर और यहूदी उच्च धार्मिक नेतृत्व (High Priesthood / Temple authorities) जिन्हें धार्मिक और सामाजिक मामलों में प्रभाव प्राप्त था। समाज में गहरा धार्मिक और सामाजिक तनाव पैदा हो चुका था।

सामान्य यहूदी लोग रोमी गुलामी, भारी करों और राजनीतिक बेबसी से परेशान थे, जबकि धार्मिक नेतृत्व पर यह आरोप लगाया जाता था कि उसने रोमी सत्ता से समझौता करके जनता से दूरी बना ली है।

ऐसे माह़ौल में कोई भी आन्दोलन जो राज्य, मसीह़ाई या निजात देने वाले (Messiah) के विचार से जुड़ा हो, तुरन्त ख़तूरे की निशानी समझा जाता था। इस तरह़ हर वह आन्दोलन जिसमें राजकीय या मसीह़ाई रंग दिखाई देता था, राजनीतिक और धार्मिक दोनों वर्गों के लिए संवेदनशील बन जाता था।

रोमी शासकों की नज़र में वह राजनीतिक विद्रोह की सम्भावना रखता था और धार्मिक अभिजात वर्ग के लिए वह उनके अधिकार, परम्परा और सत्ता के लिए एक सीधी चुनौती था।

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की शिक्षा-

इसी ऐतिह़ासिक पृष्ठभूमि में ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी सार्वजनिक दअ़वत और शिक्षा की शुरुआ़त की। ईसाई स्रोतों में उनकी इस शिक्षा को ईश्वर की बादशाही (Kingdom of God) नैतिक पुर्नजागरण और धार्मिक पाखंड पर आलोचना के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

उनकी दअ़वत का केंद्र नैतिक सुधार और ईश्वर की बादशाही की अवधारणा था, लेकिन दोनों शक्तिशाली वर्गों ने इसे अपने-अपने हितों के संदर्भ में एक ख़त्रा मह़सूस किया।

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की दअ़वत-

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) (Jesus of Nazareth) की दअ़वत और सुधार का मूल सन्देश परमेश्वर की बादशाही, तौबा (Repentance) आंतरिक पवित्रता और नैतिक सुधार था।

ईसाई इंजीलों के अनुसार उन्होंने शरीअ़त की वास्तविक आत्मा यानी रह़मत, न्याय और निष्कपटता को उजागर किया और पाखंड, बाहरी दिखावे तथा धार्मिक एकाधिकार पर कड़ी आलोचना की।

इसी कारण उनकी दअ़वत आ़म लोगों में लोकप्रिय हो गई, लेकिन धार्मिक नेताओं के कुछ वर्गों में उनके प्रति विरोध बढ़ता चला गया। चूँकि उस समय यहूदिया रोमी शासन (Roman rule) के अधीन था, इसलिए 'मसीह़' या 'राजा' होने का कोई भी दावा राजनीतिक विद्रोह के रूप में देखा जा सकता था। यही आशंका ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के विरोध का एक बड़ा कारण बनी।

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की दअ़वत-

ईसाई और ऐतिह़ासिक वर्णनों के अनुसार जब ह़ज़रत ईसा मसीह़ की दअ़वत आ़म जनता में फैलने लगी और धार्मिक नेताओं की सत्ता तथा पाखंड पर सीधी चोट पड़ने लगी, तो यहूदी उच्च धार्मिक नेतृत्व (High Priests / Temple Authorities) ने उन्हें एक गम्भीर ख़त्रे के रूप में देखना शुरु कर

दिया, क्योंकि रोमी क़ानून के तहत केवल धार्मिक मतभेद के आधार पर किसी को मृत्यु-दंड देना सम्भव नहीं था, इसलिए पहले उन पर धार्मिक आरोप लगाये गये। जैसे-

1. शरीअ़त-ए-मूसा (मौसवी कानून) का उल्लंघन।
2. सब्त (Sabbath) की बेअदबी।
3. अपने आप को "ईश्वर का पुत्र" या "मसीह़" कहना, जिसे कुफ़्र और ईशनिंदा (Blasphemy) माना गया।

लेकिन ये आरोप रोमी अ़दालत में दंडनीय नहीं थे, इसलिए मामले को राजनीतिक रूप दिया गया।

आरोप-

ईसाई इंजीलों के अनुसार धार्मिक नेताओं ने ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को रोमी गवर्नर पोंतियुस पिलातुस के सामने इस आरोप के साथ पेश किया कि वे अपने आप को "यहूदियों का राजा" (King of the Jews) कहते हैं, लोगों को भड़काते हैं और रोमी सत्ता के ख़िलाफ़ विद्रोह की सम्भावना रखते हैं।

रोमी दृष्टिकोण से यह आरोप राज्य-द्रोह (Sedition) की श्रेणी में आता था, जिसकी सज़ा मृत्यु थी।

इन्जील के वर्णन के अनुसार पोंतियुस पिलातुस ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को पूरी तरह दोषी नहीं मानता था, लेकिन जन-दबाव, धार्मिक नेतृत्व के ज़ोर और संभावित विद्रोह के भय के कारण उसने रोमी क़ानून के तहत सूली (Crucifixion) की सज़ा सुना दी।

सूली की सज़ा-

ऐतिह़ासिक रूप से सूली की सज़ा रोमी साम्राज्य में विद्रोहियों, दासों और ख़तरनाक अपराधियों के लिए निर्धारित एक अत्यन्त कठोर दंड थी। इस प्रकार धार्मिक नेतृत्व और रोमी शासन के साझा हितों के कारण ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को गिरफ़्तार किया गया, मुकदमा चलाया गया और ईसाई

परम्परा के अनुसार उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया।

ह़ालाँकि इस्लामी आस्था इस पूरे घटनाक्रम की मूल धारणा को अस्वीकार करती है। क़ुर्आन के अनुसार न तो ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को क़त्ल किया गया और न ही उन्हें सूली दी गई, बल्कि मामला लोगों पर संदिग्ध कर दिया गया और अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी ओर उठा लिया। (सूरः अन्-निसा **4:157**)

इस प्रकार एक ही ऐतिह़ासिक घटना ईसाई और इस्लामी परम्परा में बिल्कुल अलग-अलग रूप में प्रस्तुत होती है।

ईसाई धर्म की प्रमुख पवित्र पुस्तक

बाइबिल (Bible)-

बाइबिल ईसाई धर्म की मूल और पवित्र पुस्तक है, जिसे ईसाई परमेश्वर का प्रेरित (ईलाही) वचन मानते हैं, जो ह़ज़रत ईसा मसीह़ से सम्बन्धित बताया जाता है। बाइबिल वास्तव में एक ही पुस्तक नहीं है, बल्कि अलग-अलग कालों में लिखी गई कई पवित्र रचनाओं का एक संग्रह है। यह दो बड़े भागों में विभाजित है।

(1) पुराना नियम **(Old Testament)**

(2) नया नियम **(New Testament)**

समग्र रूप से बाइबिल ईसाई आस्थाओं, उपासनाओं और नैतिक मार्गदर्शन का मुख्य स्रोत है और इसी पर ईसाई धर्म की धार्मिक और वैचारिक संरचना आधारित है।

(1) पुराना नियम (Old Testament)

पुराना नियम बनी इस्राईल के नबियों और शरीअ़त-ए-मूसा पर आधारित पवित्र ग्रंथों का संग्रह है। इसमें सृष्टि की रचना, बनी इस्राईल का इतिह़ास, नैतिक आदेश और नबूवी शिक्षाएँ शामिल हैं। ईसाई इसे ईश्वर की पूर्वकालीन मार्गदर्शन (पूर्व ह़िदायत) मानते हैं और यहूदी धर्म भी इसे पवित्र स्वीकार करता है।

पुराना नियम जिसे विशेष रूप से तौरात (Torah / Law) कहा जाता है, ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की शरीअ़त पर आधारित पाँच पुस्तकों का समूह है, जिन्हें निम्न नामों से जाना जाता है-

(1) उत्पत्ति (Genesis)

(2) निर्गमन (Exodus)

(3) लैव्यव्यवस्था (Leviticus)

(4) गिनती (Numbers)

(5) व्यवस्थाविवरण (Deuteronomy)

(2) नया नियम (New Testament)

नया नियम ईसाई धर्म का मूल और केंद्रीय भाग है, जिसमें ह़ज़रत ईसा मसीह के जीवन, दअ़वत (प्रचार, शिक्षाएँ, उनके अंत से जुड़े घटनाक्रम और उनके बाद स्थापित हुई प्रारम्भिक कलीसा (Early Church) का इतिह़ास और शिक्षाएँ शामिल हैं।

ईसाई आस्था के अनुसार ये ग्रंथ परमेश्वर की मुक्ति-योजना (Salvation History) की पूर्णता को प्रस्तुत करते हैं। जबकि ऐतिह़ासिक दृष्टि से यह पहली शताब्दी ईस्वीं में लिखी गई लिखित परम्पराओं का एक संग्रह है। नया नियम के चार प्रमुख भाग हैं-

(1) इंजीलें (Gospels)

इंजीलों में ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की पैदाइश दअ़वत (प्रचार), चमत्कार, नैतिक शिक्षाएँ और उनके अंत से जुड़े घटनाक्रम को अलग-अलग दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया गया है।

ईसाई और ऐतिह़ासिक शोध के अनुसार, इन्जील अपनी वर्तमान रूपरेखा में किसी एक समय पर उतरी हुई एक ही पुस्तक नहीं है, बल्कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के जीवन, शिक्षाओं, कथनों और घटनाओं का वर्णन पहले मौखिक परम्परा (Oral Tradition) के रूप में उनके शिष्यों और प्रारम्भिक ईसाई

समुदाय में फैलता रहा, बाद में पहली शताब्दी ईस्वीं के उत्तरार्ध में इन परम्पराओं को लिखित रूप दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप चार प्रामाणिक (Canonical) इंजीलें अस्तित्व में आईं-

चार प्रमाणिक इंजीलें-

(1) मरकुस (Mark)— लगभग 70 ईस्वीं में लिखी गईः कुल अध्यायः 16, कुल पद (आयतें) लगभग 678 ।

(2) मत्ती (Matthew)— लगभग 80–90 ईस्वीं में लिखी गई; कुल अध्यायः 28, कुल पदः लगभग 1071 ।

(3) लूका (Luke)— लगभग 80–90 ईस्वीं में लिखी गई; कुल अध्यायः 24, कुल पदः लगभग 1151 ।

(4) यूहन्ना (John)— लगभग 90–100 ईस्वीं में लिखी गई; कुल अध्यायः 21, कुल पदः लगभग 879

नोट-

यह इन्जीलें ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की जीवन-गाथा, उनकी दअ़वत और उनके अंत को विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करती हैं। प्रारम्भिक कलीसा ने इन्हें प्रामाणिक मानकर नये नियम (New Testament) का ह़िस्सा बना लिया। इस प्रकार ऐतिह़ासिक दृष्टि से वर्तमान इन्जील एक संकलित और सम्पादित ईसाई परम्परा है, जबकि इस्लामी आस्था के अनुसार मूल दिव्य इन्जील बाद के समय में मानवीय सम्पादन और व्याख्या के चरणों से गुज़री और अपनी शुद्ध दिव्य अवस्था में सुरक्षित न रह सकी।

(2) प्रेरितों के काम (Acts of the Apostles)

प्रेरितों के काम (Acts of the Apostles) नया नियम (New Testament) की एक महत्वपूर्ण ऐतिह़ासिक पुस्तक है। ईसाई परम्परा के अनुसार यह पुस्तक लूका द्वारा लिखी गई मानी जाती है, जिन्हें लूका के सुसमाचार (Gospel of

Luke) का लेखक भी माना जाता है।

इसी कारण प्रेरितों के काम को प्रायः लूका के सुसमाचार का दूसरा भाग समझा जाता है। इस पुस्तक की रचना का काल सामान्यतः 60 से 70 ईस्वीं के बीच माना जाता है। प्रेरितों के काम का मुख्य विषय यह है कि हज़रत ईसा मसीह़ (यीशु मसीह़) के बाद प्रेरितों, विशेष रूप से पत्रस और पौलुस की शिक्षा और प्रचार, प्रारम्भिक कलीसिया (Early Church) की स्थापना और उसका विस्तार और पवित्र आत्मा (Holy Spirit) के मार्गदर्शन में मसीह़ी आन्दोलन के प्रसार का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में कुल 28 अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में कई पद (Verses) शामिल हैं।

(3) पत्रियाँ (Epistles)

पत्रियाँ (Epistles) नया नियम (New Testament) का एक महत्वपूर्ण संग्रह हैं। यह कोई एक पुस्तक नहीं है, बल्कि अनेक पत्र (Letters) हैं, जिन्हें प्रारम्भिक ईसाई नेताओं ने विभिन्न कलीसियाओं और व्यक्तियों को लिखा था।

इन पत्रियों का उद्देश्य ईसाई आस्थाओं की व्याख्या, नैतिक मार्गदर्शन, कलीसियाई व्यवस्था तथा व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करना था।

ईसाई परम्परा के अनुसार पत्रियों को तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया जाता है-

(क) पौलुस की पत्रियाँ (Pauline Epistles)

ये वे पत्र हैं जो प्रेरित पौलुस से सम्बन्धित माने जाते हैं। कुल संख्याः 13 (कुछ विद्वान इब्रानियों/Hebrew को भी इसमें शामिल करके संख्या 14 मानते हैं)।

(ख) सामान्य/कैथोलिक पत्रियाँ (General or Catholic Epistles)

ये पत्र विभिन्न प्रेरितों द्वारा सामान्य मसीही समुदाय के नाम लिखे गये थे। कुल संख्याः 7

(ग) प्रेरितों से सम्बन्धित विवादित पत्री-

इब्रानियों की पत्री (Hebrews) अध्यायः 13 लेखकः अनिश्चित (कुछ इसे पौलुस की ओर से मानते हैं) विषयः मसीह़ की श्रेष्ठता तथा पुराने नियम से नये नियम की व्याख्या।

नोट- हर पत्री = एक अलग पुस्तक है। हर पुस्तक में अध्याय (Chapters) होते हैं और हर अध्याय में पद (Verses) होते हैं।

(4) प्रकाशितवाक्य (Revelation / Apocalypse)

यह पुस्तक प्रतीकात्मक शैली में अन्तिम समय, ईश्वरीय निर्णय और सत्य की विजय की भविष्यवाणी प्रस्तुत करती है। प्रकाशितवाक्य (Revelation) नया नियम (New Testament) की अन्तिम पुस्तक है।

यह एक ही पुस्तक है, लेकिन इसके भीतर अनेक प्रतीकात्मक और विषयगत भाग पाये जाते हैं। ईसाई परम्परा के अनुसार इसके लेखक यूहन्ना माने जाते हैं, जिन्होंने यह पुस्तक पत्मोस द्वीप (Patmos) में निर्वासन के समय लिखी। इसका लेखन-काल सामान्यतः 90–95 ईस्वीं के बीच माना जाता है।

मुख्य विषय-

प्रकाशितवाक्य का मुख्य विषय यह है कि अंततः ईश्वर/परमेश्वर की सत्ता विजयी होगी असत्य, अन्याय और बुराई की शक्तियाँ पराजित होंगी और सत्य के पक्ष में रहने वालों को मुक्ति और सफ़लता प्राप्त होगी।

इस पुस्तक में अन्तिम समय की परीक्षाएँ, अत्याचारी शक्तियों पर ईश्वरीय निर्णय और सत्य की अन्तिम विजय को प्रतीकात्मक भाषा में व्यक्त किया गया है न कि सरल ऐतिह़ासिक शैली में। इसमें कुल अध्याय (Chapters) 22 और कुल पद (Verses) 404 हैं।

बाइबिल की भविष्यवाणियाँ

मूल यूनानी (कोइने ग्रीक/Koine Greek) पाठः

Κἀγὼ ἐρωτήσω τὸν Πατέρα, καὶ ἄλλον Παράκλητον δώσει

QμÕν, 5να μένÃ μεθ' Qμõν ε0ς τxν α0õνα

(Gospel of John 14:16)

(Translation: King James Version –)

And I will pray the Father, and he shall give you another Comforter, that he may abide with you for ever.

(The Holy Bible,Gospel according to John,Chapter 14, Verse 16)

अनुवाद–

"और मैं पिता से प्रार्थना करुँगा, तो वह तुम्हें एक और सहायक (Comforter) देगा, ताकि वह सदा तुम्हारे साथ रहे"।

व्याख्या–

"और मैं पिता से प्रार्थना करुँगा" यह वाक्य स्पष्ट करता है कि ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम स्वयं उस सहायक को नहीं भेजते, बल्कि वे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। इससे ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की बन्दग़ी (दासत्व) और रसूलियत प्रकट होती है, न कि उनकी ईश्वरता।

यहाँ "एक और शब्द" का अर्थ है उसी प्रकार का दूसरा अर्थात जैसे- ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम लोगों के लिए मार्गदर्शक, शिक्षक और सहायक थे, उसी प्रकार एक नया मार्गदर्शक, सहायक आने वाला है।

इससे यह संकेत मिलता है कि आने वाला व्यक्ति ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के मिशन को आगे बढ़ाने वाला होगा और मानव समाज के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन देने वाली भूमिका निभाएगा।

इन्जील के यूनानी मूल पाठ में प्रयुक्त शब्द है अर्थात **Paraklçtos/ Paraclete** के बीच शब्दार्थ, रूपात्मक/संरचनात्मक **(morphological)** और अर्थगत **(semantic)** अंतर इस प्रकार है-

- **/Paraklçtos / Paraclete** इसकी मूल यूनानी संरचना दो भागों से मिलकर बनी है-

Para का अर्थ हैः निकट, साथ

(Kaleô — का अर्थ हैः बुलाना, पुकारना

शब्दार्थ-

बुलाया गया सहायक, सहायता के लिए पास बुलाया गया व्यक्ति, मार्गदर्शन करने वाला।

Paraclete शब्द कार्य या भूमिका **(Function)** को दर्शाता है, अर्थात वह क्या काम करेगा?

● — **Periklutos** इसकी मूल यूनानी संरचना भी दो भागों से बनी है।

Peri — जिसका अर्थ हैः चारों ओर हर दिशा में।

Klutos — जिसका अर्थ हैः प्रसिद्ध, प्रशंसनीय

शब्दार्थ-

अत्यन्त प्रसिद्ध, अत्यधिक प्रशंसनीय, चारों ओर प्रसिद्ध **(Highly Praised/ Glorious)**

अर्थगत पक्ष-

Periklutos शब्द गुण या विशेषता **(Attribute)** को दर्शाता है, अर्थातः वह कैसा होगा?

कम्फ़ोर्टर (Comforter) कौन होगा?

मूल यूनानी **(Koine Greek)** पाठ-

I δr Παράκλητος, τx Πνεæμα τx
γιον, Cπέμψει A Παττρ ντ÷ @νόματί μου, κεÕνος Qμ¶ς διδάξει
πάντα καν Qπομνήσει Qμ¶ς πάντα εδπον QμÕν.

(Gospel of John 14:26)

(Translation: King James Version –)

"But the Comforter, which is the Holy Ghost, whom the Father will send in my name, he shall teach you all things, and bring all things to your remembrance, whatsoever I have said unto you." (The Holy Bible, Gospel of John, Chapter 14, Verse 26)

अनुवाद- "लेकिन वह सहायक अर्थात पवित्र आत्मा, जिसे पिता

मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें हर बात सिखायेगा और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण करा देगा"।

व्याख्या-

यह आयत हज़रत ईसा (अ़लै०) की विदाई शिक्षाओं **(Farewell Discourse)** का हिस्सा है, जो उन्होंने अपने शिष्यों से अपनी जुदाई से पहले दीं। इस अवसर पर शिष्य दुःख, भय और मानसिक व्याकुलता में थे। इसी पृष्ठभूमि में हज़रत ईसा (अ़लै०) उन्हें एक ऐसे सहायक की शुभ सूचना देते हैं, जो उनके बाद भी उनके साथ रहेगा।

पवित्र आत्मा-

यूनानी शब्द **(Paraklçtos) / ÐáñÜêëçôïò** ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है जो सहायता करने वाला हो, मार्गदर्शन प्रदान करे, सांत्वना दे।

अर्थात यह केवल भावनात्मक दिलासा देने वाली सत्ता नहीं है, बल्कि शिक्षा, मार्गदर्शन और समझ प्रदान करने वाली है। इस में वर्तमान ईसाई ग्रंथों के अनुसार सहायक को स्पष्ट रूप से पवित्र आत्मा के रूप में बताया गया है, जो ईश्वर की ओर से भेजा जाएगा।

हज़रत ईसा (अ़लै०) के मिशन का विस्तार करेगा, शिष्यों को धार्मिक सत्यों की गहरी समझ प्रदान करेगा।

यहाँ पवित्र आत्मा को नई शिक्षा लाने वाला नहीं, बल्कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की शिक्षाओं को समझाने और सुरक्षित रखने वाला बताया गया है। ईसाई आस्था इसे पवित्र आत्मा मानती है, जबकि मुस्लिम विद्वान इसे एक मानव नबी (हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)) के आगमन की सूचना समझते हैं।

पैराक्लेट (Paraclete) के अर्थ में मतभेद

यूहन्ना के सुसमाचार में जिस यूनानी शब्द का प्रयोग हज़रत ईसा (अ़लै०) के बाद आने वाली हस्ती के लिए किया गया है, वह **(ðáñÜêëçôïò)— Paraklçtos / Paracletus** है। ईसाई विद्वानों का बहुमत इस बात पर ज़ोर देता

है कि मूल शब्द **Paracletus** ही है, लेकिन इसी शब्द के अर्थ-निर्धारण को लेकर स्वयं ईसाई विद्वानों के बीच गहरा मतभेद पाया जाता है।

यूनानी शब्द **parakaleô** से निकले इस शब्द के कई अर्थ बताये गये हैं, जैसे- सहायता के लिए बुलाना, पास बुलाना, भय दिलाना या चेतावनी देना, उपदेश और प्रेरणा देना, विनती या प्रार्थना करना, हालाँकि आलोचकों के अनुसार यूहन्ना के सुसमाचार में जहाँ-जहाँ यह शब्द प्रयुक्त हुआ है, वहाँ ये सभी अर्थ संदर्भ के साथ पूरी तरह सामंजस्य नहीं बैठाते।

प्राचीन विद्वानों के अनुसार-

प्राचीन ईसाई विद्वान **Origen** (मृत्यु **254** ई०) के यहाँ कुछ स्थानों पर इसका अनुवाद **Consolator** (सांत्वना देने वाला) किया गया है और कुछ जगह **Deserter / Disputer** भी मिलता है, लेकिन बाद के व्याख्याकारों ने इन दोनों अनुवादों को यूनानी व्याकरण और कथन के संदर्भ के विरुद्ध बताकर अस्वीकार कर दिया।

इसी प्रकार **Tertullian** (मृत्यु **220** ई०) और **Augustine of Hippo** (मृत्यु **430** ई०) ने **Advocate** (वकील/रक्षक) शब्द को अधिक उपयुक्त माना, जबकि कुछ अन्य विद्वानों ने **Assistant, Comforter, Consoler** जैसे अनुवाद अपनाये। ये सभी मतभेद स्वयं इस बात का प्रमाण हैं कि **Paraclete** का अर्थ निश्चित और अन्तिम रूप से तय नहीं रहा। जैसा कि **Encyclopaedia of Biblical Literature esa Paraclete** शीर्षक के अंतर्गत विस्तार से वर्णित है।

अत्यधिक प्रशंसित-

भाषाविदों ने यह भी संकेत किया है कि यूनानी भाषा में एक दूसरा शब्द **(ðåñéêëõôüò)—Periklutos** भी मौजूद है, जिसका अर्थ है "अत्यधिक प्रशंसित/**Highly Praised** यह शब्द ध्वन्यात्मक और अर्थगत दृष्टि से **Parakletos** से काफी मिलता-जुलता है।

इसी आधार पर कुछ शोधकर्ताओं ने यह भाषायी संभावना प्रस्तुत की है कि कहीं ऐसा न हो कि मूल अभिप्राय **Periklutos** हो, जिसका समानार्थी

अ़रबी शब्द अह़मद/मुह़म्मद बनता है।

हालाँकि यह बात स्पष्ट रहनी चाहिए कि वर्तमान में उपलब्ध प्रामाणिक यूनानी पांडुलिपियों में **Parakletos** ही सुरक्षित है।

इसलिए **Periklutos = Ahmad** को किसी निश्चित पाठीय दावे के रूप में नहीं, बल्कि व्याख्यात्मक और तुलनात्मक आधार के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की भाषा–

इसके अतिरिक्त, यूहन्ना का सुसमाचार अपने आप में निर्णायक नहीं है, क्योंकि ऐतिह़ासिक रूप से यह एक स्वीकृत तथ्य है कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की मातृभाषा यूनानी नहीं, बल्कि अरामी **(Aramaic)** थी और यूहन्ना का सुसमाचार एक यूनानी अनुवाद/सम्पादन है।

इसलिए यह प्रश्न स्वाभाविक है कि ईसा (अ़लै०) ने मूल रूप से कौन-सा शब्द प्रयोग किया था।

इसी बिन्दु के आधार पर प्रारम्भिक कुछ इतिह़ासकारों ने यह मत अपनाया कि ईसा (अ़लै०) ने अपनी मूल भाषा में ऐसा शब्द इस्तेमाल किया होगा, जिसका अर्थ 'अत्यधिक प्रशंसित' था, जिसे बाद में यूनानी भाषा में **Parakletos** के रूप में ढाल दिया गया।

इस ऐतिह़ासिक समझ की पुष्टि इस पृष्ठभूमि से भी होती है कि सातवीं शताब्दी के मध्य तक फ़िलिस्तीन इस्लामी शासन के अन्तर्गत आ चुका था और नौवीं शताब्दी तक वहाँ के ईसाइयों की एक बड़ी संख्या यूनानी भाषा का ही प्रयोग करती थी।

अतः मुसलमानों और ईसाइयों के बीच धार्मिक संवाद और पाठ्य (ग्रंथीय) बहसें सम्भव थीं।

अह़मद और मुह़म्मद–

प्रसिद्ध अ़रब इतिह़ासकार इब्ने हिशाम (मृत्यु 218 हिजरी/833 ई०) ने

अपनी कृति सीरत इब्ने हिशाम में ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की भविष्यवाणी का उल्लेख करते हुए ऐसे शब्द नक़्ल किये हैं जिनसे यह स्पष्ट होता है कि वह अपने बाद आने वाले एक नबी की सूचना दे रहे थे, जिसे इस्लामी परम्परा में अह़मद/मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर लागू किया गया है।

Bible, Gospel of John 14–-16, Origen, Commentaries
Tertullian, Latin writings
Augustine of Hippo, Tractates on John
Encyclopaedia of Biblical Literature, article "Paraclete"

पैराक्लेट (Paraclete) की वास्तविकता

बाइबिल के यूनानी मूल पाठ (नया नियम, कोइने ग्रीक) (New Testament, Koine Greek) में ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने अपने बाद आने वाली जिस हस्ती का उल्लेख किया है उसे (ðáñÜêëçôïò) — Paraklçtos कहा गया है। अंग्रेज़ी अनुवादों में इसका सामान्यतः Comforter (सांत्वना देने वाला, सहायक, वकील, समर्थक) के रूप में अनुवाद किया जाता है और उर्दू में मुआ़विन/मददगार जैसे शब्दों से व्यक्त किया जाता है।

शब्दार्थ की दृष्टि से-

शब्दार्थ की दृष्टि से Paraklçtos यूनानी क्रिया parakaleô से निकला है, जिसके अर्थ है, सहायता के लिए बुलाया गया व्यक्ति, सत्य का समर्थन करने वाला, मार्गदर्शन प्रदान करने वाला।

यूहन्ना के सुसमाचार (John 14:16, 14:26, 15:26, 16:7–13) में यह शब्द बार-बार प्रयुक्त हुआ है, जहाँ इस आने वाली हस्ती के बारे में बताया गया है कि वह लोगों को सम्पूर्ण सत्य की ओर मार्गदर्शन करेगा, अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की पुष्टि करेगा।

विलियम म्यूर के अनुसार-

प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान सर विलियम म्यूर Sir William Muir ने ह़ज़रत

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जीवनी पर अपनी पुस्तक **Life of Mahomet** में अ़रबी नाम मुह़म्मद और अह़मद की भाषायी वास्तविकता पर चर्चा करते हुए लिखा है कि अ़रबों में यद्यपि ये नाम बिल्कुल अज्ञात नहीं थे, लेकिन न तो बहुत सामान्य थे और न ही व्यापक रूप से प्रचलित।

ये दोनों नाम अ़रबी मूल "ह-म-द" से निकले हैं, जिसका अर्थ है "अत्यधिक प्रशंसा किया गया"।

इसी आधार पर कुछ मुस्लिम शोधकर्ताओं ने यह बिंदु प्रस्तुत किया है कि यूनानी शब्द **(ðåñéêëõôüò) — Periklutos**, जिसका अर्थ "अत्यधिक प्रशंसित" है। अर्थ की दृष्टि से अ़रबी अह़मद के अनुरूप है।

इसी से यह सम्भावना व्यक्त की गई कि प्रारम्भिक काल में **Paraclete** के अर्थ को इसी अर्थगत दायरे में समझा गया होगा।

ह़ालाँकि वर्तमान में उपलब्ध प्रामाणिक यूनानी पांडुलिपियों में **Paraklçtos** शब्द ही प्रमाणित है, फिर भी भाषायी और तुलनात्मक अध्ययन के दृष्टिकोण से **Paraclete** और अह़मद **(Highly Praised)** के बीच अर्थगत साम्यता पर विद्वानों के बीच अकादमिक चर्चा पाई जाती है।

इस्लामी दृष्टिकोण-

इसी क्रम में इस्लामी दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि जिस पैराक्लेट **(Paraclete)** की भविष्यवाणी इंजील में की गई है—जिसके गुणों में पूर्ण मार्गदर्शन, सत्य की गवाही, निरंतर शिक्षा और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के बाद प्रकट होना शामिल हैं।

वह क़ुर्आन मजीद की रौशनी में पूरी तरह़ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर लागू होती है, क्योंकि क़ुर्आन स्वयं ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का यह कथन उद्धृत करता है कि वे अपने बाद आने वाले एक रसूल की शुभ सूचना दे रहे हैं, जिसका नाम अह़मद होगा। (सूरः सफ़्फ़ः 6)

शब्द अह़मद-

इस प्रकार बाइबल का सिद्धान्त और क़ुर्आन में अह़मद की भविष्यवाणी,

रूपकात्मक और अर्थगत स्तर पर एक ही वास्तविकता की ओर संकेत करती हैं—अर्थात एक आने वाला, सत्य की पूर्ण मार्गदर्शन करने वाला और परमेश्वर की ओर से नियुक्त अन्तिम रसूल।

The name Muhammad was not unknown among the Arabs, but it was rare. It had not been in common use before the Prophet, and its assumption was remarkable.

(Sir William Muir, Life of Mahomet, Vol. I (London edition,19th century)

अनुवाद–

"अ़रबों में 'मुह़म्मद' नाम बिल्कुल अज्ञात तो नहीं था, लेकिन बहुत दुर्लभ था। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पहले यह नाम आ़म प्रचलन में नहीं था और इस नाम का अपनाया जाना ध्यान देने योग्य था"।

Muhammad and Ahmad are both derived from the Arabic root h-m-d, signifying praise.

(Sir William Muir, Life of Mahomet, Vol. I, London edition,19th century)

अनुवाद–

"मुह़म्मद और अह़मद दोनों अ़रबी मूल ह़-म-द से निकले हैं, जिसका अर्थ प्रशंसा और स्तुति है"।

The meaning of the name is 'the Praised One' and it thus expresses a title rather than a mere personal name.

(Sir William Muir, Life of Mahomet, Vol. I, London edition, 19th century)

अनुवाद–

"इस नाम का अर्थ 'अत्यधिक प्रशंसित' है और इस दृष्टि से यह केवल एक व्यक्तिगत नाम नहीं, बल्कि एक अर्थपूर्ण उपाधि की हैसियत रखता है"।

शब्द मुह़म्मद और अह़मद का अर्थ–

सर विलियम म्यूर स्पष्ट करते हैं कि मुह़म्मद और अह़मद दोनों अ़रबी मूल ह़-म-द से निकले हैं, जिसका अर्थ प्रशंसा और स्तुति है और यह कि

अ़रब समाज में नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से पहले ये नाम कम प्रचलित थे, जबकि इनका अर्थ "अत्यधिक प्रशंसित" (Highly Praised) बनता है।

हालाँकि वे सीधे तौर पर यह दावा नहीं करते कि बाइबल के यूनानी शब्द Paraklçtos का अनुवाद अह़मद है, बल्कि भाषायी और तुलनात्मक अध्ययन में यह बिन्दु रखा जाता है कि अ़रबी अह़मद और यूनानी Periklutos (ðåñéêëõôüò= (Highly Praised) अर्थगत स्तर पर एक-दूसरे के अनुरूप हैं, लेकिन चूँकि वर्तमान में उपलब्ध प्रामाणिक यूनानी पांडुलिपियों में Paraklçtos ही प्रमाणित है।

इसलिए Periklutos =Ahmad को एक भाषायी/व्याख्यात्मक सम्भावना के रूप में प्रस्तुत किया जाता है न कि किसी निश्चित पाठीय दावे के रूप में।

सत्य की आत्मा (Spirit of Truth) का आगमन

मूल यूनानी (dksbus xzhd / Koine Greek) पाठ-

Μταν δr—λθÃ κεÕνος τx Πνεæμα τÆς ληθείας Αδηγήσει Qμ¶ς ε0ς π¶σαν τtν λήθειαν S oP γρρ λαλήσει φ' αυτοæ λλ' Εσα κούει λαλήσειτ καν τp ρχόμενα ναγγελεÕ QμÕν (Gospel of John 16:13)

(Translation: King James Version –)

"Howbeit when he, the Spirit of truth, is come, he will guide you into all truth: for he shall not speak of himself; but whatsoever he shall hear, that shall he speak: and he will shew you things to come.

(The Holy Bible, Gospel of John, Chapter 16, Verse 13)

अनुवाद-

"लेकिन जब वह सत्य की आत्मा आएगी, तो वह तुम्हें सम्पूर्ण सत्य की ओर मार्गदर्शन करेगी क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगी, बल्कि जो कुछ वह सुनेगी वही बताएगी और आने वाली बातों की भी तुम्हें सूचना देगी"।

व्याख्या-

यह आयत ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की विदाई बातचीत का ह़िस्सा है, जिसमें

वे अपने शिष्यों को अपनी जुदाई के बाद मिलने वाले आध्यात्मिक मार्गदर्शन की सूचना देते हैं।

शिष्य उस समय बहुत-सी बातों को पूरी तरह़ समझने की क्षमता नहीं रखते थे, इसलिए ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) एक ऐसे मार्गदर्शक की शुभ सूचना देते हैं, जो भविष्य में उन्हें सत्य की पूर्ण समझ प्रदान करेगा।

यहाँ **"Spirit of Truth"** (सत्य की आत्मा) की अभिव्यक्ति उस हस्ती के मूल गुण को स्पष्ट करती है। वह पूर्णतः सत्य और सच्चाई से जुड़ी होगी, उसका कार्य भटकाना नहीं बल्कि सह़ी दिशा देना होगा, वह सत्य को स्पष्ट, परिष्कृत और समझने योग्य बनाएगी अर्थात यह मार्गदर्शन भावनात्मक नहीं, बल्कि बौद्धिक और वैचारिक प्रकृति का है।

"He will guide you into all truth" — इस वाक्य से स्पष्ट होता है कि शिष्यों को सत्य क्रमिक रूप से समझाया जाएगा। 'सम्पूर्ण सत्य' से तात्पर्य धर्म की पूर्ण समझ, व्यावहारिक मार्गदर्शन और नैतिक बोध है। यह कोई नया धर्म गढ़ना नहीं, बल्कि सत्य की पूर्ति और उसकी स्पष्ट व्याख्या है।

"He shall not speak of himself "— यह अत्यंत महत्वपूर्ण बिन्दु है कि सत्य की आत्मा अपनी व्यक्तिगत इच्छा या मत से बात नहीं करेगी, उसका संदेश अधिकृत और प्राप्त (मौजून व माखूज) होगा, वह एक संदेश-वाहक (अमानतदार) के रूप में कार्य करेगी। यह गुण नबूवत की वह्यात्मक शैली से गहरी समानता रखता है।

"Whatsoever he shall hear, that shall he speak" — इससे यह स्पष्ट होता है कि संदेश किसी उच्च सत्ता से स्थानांतरित होगा, बोलने वाला स्वयं स्रोत नहीं बल्कि माध्यम होगा, सत्य को बिना विकृति के आगे पहुँचाया जाएगा।

"He will shew you things to come"— यह वाक्य भविष्य से सम्बन्धित मार्गदर्शन की ओर संकेत करता है। सत्य की आत्मा भविष्य के महत्वपूर्ण धार्मिक और नैतिक तथ्यों से अवगत कराते हुए उनकी ओर मार्गदर्शन करेगी।

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के बाद आने वाला गवाह

मूल यूनानी (कोइने ग्रीक/ Koine Greek) पाठ–

Μταν δ ρ —λθ Α Παράκλητος Cν γ| πέμψω Qμ Ον παρ τοæ Πατρός τx Πνεæμα τÆς ληθείας C παρ τοæ Πατρς κπορεύεται κε Ονος μαρτυρήσει περ μοæ. (Gospel of John 15:26)

(Translation: King James Version –)

"But when the Comforter is come, whom I will send unto you from the Father, even the Spirit of truth, which proceedeth from the Father, he shall testify of me.

(The Holy Bible, Gospel of John, Chapter 15, Verse 26)

अनुवाद–

"लेकिन जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूँगा अर्थात सत्य की आत्मा, जो पिता की ओर से निकलती है तो वह मेरी गवाही देगा"।

व्याख्या–

"He shall testify of me" अर्थात 'गवाही का केंद्र' यह इस आयत का मुख्य बिन्दु है। सहायक एक ईश्वरीय रूप से नियुक्त गवाह है। वह ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की शिक्षाओं की सत्यता को स्पष्ट करेगा। वह शिष्यों के हृदयों और समाज में उनके सन्देश को सुदृढ़ करेगा।

यहाँ ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) अपने बाद आने वाले सहायक **(Paraklçtos)** का परिचय कराते हैं, जो ईश्वर की ओर से अधिकृत होकर आएगा और सत्य की आत्मा कहलाएगा।

इस पंक्ति का आशय यह है कि यह सहायक ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के मिशन की निरन्तरता होगा। वह अपनी ओर से कोई नई बात नहीं कहेगा, बल्कि ईश्वर की ओर से दी गई मार्गदर्शना के अनुसार ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की शिक्षाओं की सत्यता, उनके मर्तबा और उनके सन्देश की गवाही देगा ताकि

शिष्य विरोध, परीक्षाओं और वैचारिक उथल-पुथल के समय सत्य पर दृढ़ रहें और ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की शिक्षाएँ सही रूप में आगे पहुँचती रहें।

मैं स्वयं नहीं वह बाद में आएगा

मूल यूनानी (कोइने ग्रीक/ Koine Greek) पाठ-

λλ• γ| τν λήθειαν λέγω Qμ͂Ν͂ς συμφέρει Qμ͂Ν͂ ἵνα γ| πέλθῶς pν γρρ μt πέλθῶ Α Παράκλητος οP μt —λθ͂Α πρχς Qμ¶ς pν δr πορευθ͂ πέμψω αPτν πρχς Qμ¶ς (Gospel ofJohn 16:7)

(Translation: King James Version –)

"Nevertheless I tell you the truth; It is expedient for you that I go away: for if I go not away, the Comforter will not come unto you; but if I depart, I will send him unto you.

(The Holy Bible, Gospel of John, Chapter 16, Verse 7)

अनुवाद-

"लेकिन मैं तुमसे सच कहता हूँ कि तुम्हारे लिए यही अच्छा है कि मैं चला जाऊँ, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा और यदि मैं चला जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा"।

व्याख्या-

इस पंक्ति में ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) अपने शिष्यों को स्पष्ट रूप से यह समझाते हैं कि उनकी शारीरिक जुदाई वास्तव में शिष्यों के लिए हानि नहीं बल्कि लाभ है, क्योंकि उनके जाने के बाद जो सहायक (Paraklçtos) आएगा, वह अधिक व्यापक और स्थायी आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करेगा। "यदि मैं न जाऊँ तो सहायक नहीं आएगा" का अर्थ यह है कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का सांसारिक मिशन एक विशेष चरण तक सीमित था, जबकि उनके बाद आने वाला सहायक सत्य की व्याख्या, मार्गदर्शन और हृदयों में दृढ़ता उत्पन्न करने का कार्य करेगा।

इस प्रकार शिष्य व्यक्तित्व-आधारित निर्भरता से निकलकर एक सार्वभौमिक,

बौद्धिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन के चरण में प्रवेश करेंगे, जो ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के सन्देश की निरंतरता और पूर्णता है न कि उसका खण्डन।

"वह नबी" (The Prophet) की भविष्यवाणी

मूल यूनानी (कोइने ग्रीक/ Koine Greek) पाठ-

και ρώτησαν αΡτόνς Τί οVνν σz)λείας εδν και λέγειs ΟΡκ
ε0μί¤ Ι προφήτης εδ σύν και πεκρίθηS ΟΤ. (Gospel of John 1:21)

(Translation: King James Version –)

"And they asked him, What then? Art thou Elias? And he saith, I am not. Art thou that prophet? And he answered, No.

(The Holy Bible, Gospel according to John, Chapter 1, Verse 21)

अनुवाद-

"और उन्होंने उससे (अर्थात यह्या से) पूछा, फिर तुम कौन हो? क्या तुम एलिय्याह हो? उसने कहा नहीं। क्या तुम 'वह नबी' हो? उसने उत्तर दिया नहीं"।

व्याख्या-

ये प्रश्न यरुशलेम के यहूदी धार्मिक नेताओं (Priests/Levites) की ओर से यह्या/यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (John the Baptist) से पूछे जा रहे थे कि क्या तुम मसीह़ (Christ) हो? (यह बात पहले की आयतों 19-20 में आती है) यदि नहीं, तो क्या तुम एलिय्याह हो? और यदि यह भी नहीं, तो क्या तुम "वह नबी" हो? अर्थात उनके मन में तीन अलग-अलग संभावनाएँ थीं-

(1) मसीह (Christ)

(2) एलिय्याह (Elijah)

(3) "वह नबी" (The Prophet)

"एलिय्याह" के बारे में क्यों पूछा गया?

यहूदी परम्परा में एक प्रसिद्ध भविष्यवाणी है कि अन्तिम समय/मसीह़

के आगमन से पहले एलिय्याह आएगा। यह बात मलाकी की पुस्तक में मिलती है, "मैं तुम्हारे पास नबी एलिय्याह को भेजूँगा" (मलाकी 5:4) इसी पृष्ठभूमि में यह्या से पूछा गया, "क्या तुम एलिय्याह हो"?

नबी (The Prophet) की अवधारणा-

यहाँ "The Prophet" से आशय कोई सामान्य नबी नहीं है, बल्कि एक विशेष और प्रसिद्ध हस्ती है, जिसकी अवधारणा तौरात में ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के कथन से जुड़ी हुई है: "मैं उनके लिए उनके भाइयों में से तेरे समान एक नबी उठाऊँगा"। (व्यवस्थाविवरण 18:18)

मूसा के समान नबी-

यही वह स्थान है जिसे बाद की यहूदी और ईसाई परम्परा में "मूसा के समान नबी (The Prophet like Moses) कहा गया। नये नियम में भी इसके संकेत मिलते हैं।

इसी कारण यूहन्ना 1:21 में प्रश्न केवल "क्या तुम नबी हो"? नहीं है, बल्कि "क्या तुम वह नबी हो"? (Definite article के साथ) पूछा गया है अर्थात लोग केवल मसीह़ के ही प्रतीक्षारत नहीं थे, बल्कि एलिय्याह और "The Prophet" के भी आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

द पराफ़ेट-

इससे स्पष्ट होता है कि "The Prophet" को एक अलग और विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में समझा जा रहा था। यह्या (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला) ने उत्तर दिया कि मैं न मसीह हूँ न एलिय्याह और न ही "वह नबी"।

इस कथन का सरल, स्पष्ट और विस्तृत अर्थ यह है कि यह्या स्वयं को किसी स्वतंत्र या महान पद वाली हस्ती नहीं बता रहे थे, बल्कि केवल आने वाली महान हस्ती का पूर्वसूचक (पेश-ख़ेमा) बता रहे थे।

"वह कौन होगा"? (दो प्रमुख विद्वतापूर्ण दृष्टिकोण)

ईसाई परम्परा में सामान्यतः The Prophet की व्याख्या ह़ज़रत ईसा

अ़लैहिस्सलाम से की जाती है अर्थात अनेक ईसाई व्याख्याकारों के अनुसार तौरात में वर्णित "मूसा के समान नबी" अपनी सर्वोच्च और पूर्ण अभिव्यक्ति में ईसा अ़लैहिस्सलाम पर सत्य उतरता है। इसलिए "The Prophet" का वास्तविक अभिप्रेत भी ईसा अ़लैहिस्सलाम ही माने जाते हैं।

लेकिन तब यह प्रश्न बना रहता है कि यूहन्ना 1:21 में लोग उन्हें मसीह़ से अलग क्यों पूछ रहे थे?

ईसाई व्याख्या में इसका उत्तर यह दिया जाता है कि आ़म लोगों में विभिन्न प्रकार की अपेक्षाएँ और धारणाएँ प्रचलित थीं।

कुछ लोग "मसीह़" और "मूसा के समान नबी" को अलग-अलग समझते थे, परन्तु बाद में ईसाई समझ में ये दोनों विशेषताएँ ईसा अ़लैहिस्सलाम में संयुक्त मानी गईं।

शोधकर्ताओं का दृष्टिकोण-

तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर मुस्लिम विद्वान "The Prophet" की व्याख्या ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बाद आने वाले नबी से करते हैं। उनके अनुसार व्यवस्थाविवरण 18:18 में वर्णित "The Prophet like Moses"

और यूहन्ना 1:21 में उल्लिखित "The Prophet" एक ऐसी हस्ती की ओर संकेत करते हैं जो ईसा (अ़लै०) से अलग है। इसलिए वह इसे ह़ज़रत मुह़म्मद पर लागू करते हैं।

मुस्लिम विद्वानों और लेखकों के अनुसार "like Moses" की विशषताएँ (क़ानून/शरीअ़त, उम्मत की स्थापना, राजनीतिक/सामाजिक नेतृत्व आदि)।

"From among their brethren" की व्याख्या—

अर्थात बनी इस्राईल के भाईयों यानी इस्माईलियों में से और यूहन्ना 1:21 में "The Prophet" का मसीह़ से अलग पूछा जाना— यह सभी संकेत अन्तिम नबी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर पूरी तरह़ लागू होते हैं।

जबकि इस्लामी दृष्टिकोण से क़ुर्आन मजीद में अल्लाह तआ़ला ह़ज़रत

मूसा अ़लैहिस्सलाम के संदर्भ में यह बात नक़्ल करते हैं-

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝٦ (सूरः सफ़्फ़ आयत नं० 6)

अनुवाद-

"और याद करो जब ईसा इब्ने मरियम ने कहा, 'ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल हूँ उस (किताब) की पुष्टि करने वाला जो मुझसे पहले तौरात में मौजूद है और अपने बाद आने वाले एक रसूल की शुभ सूचना देने वाला हूँ जिसका नाम अह़मद होगा। फिर जब वह रसूल उनके पास स्पष्ट निशानियाँ लेकर आया, तो उन्होंने कहा, "यह तो खुला हुआ जादू है"।

नोट-

अतः यदि बाइबल में उल्लिखित "वह नबी" (The Prophet) की भविष्यवाणी विशेष रूप से व्यवस्थाविवरण 18:18 और यूहन्ना 1:21— और क़ुर्आन मजीद की सूरः अस-सफ़्फ़ः 6 के कथन को सामने रखा जाए तो एक रूपकात्मक किन्तु प्रमाणिक सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है।

तौरात में ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की ज़बान से "मूसा के समान नबी" के आने की सूचना दी गई, जिसे यहूदी परम्परा में एक विशिष्ट, स्वतंत्र और क़ानून लाने वाली हस्ती के रूप में समझा गया।

आने वाले नबी की प्रतिक्षा-

इन्जील-ए-यूहन्ना में इसी हस्ती को "The Prophet" कहकर मसीह़ अ़लैहिस्सलाम और एलिय्याह अ़लैहिस्सलाम से अलग पूछे जाने का उल्लेख मिलता है, जो इस बात का प्रमाण है कि यह अवधारणा केवल मसीह तक सीमित नहीं थी, बल्कि एक आने वाले महान रसूल की प्रतीक्षा जीवित थी और क़ुर्आन मजीद इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की ज़बानी स्पष्ट रूप से एक ऐसे रसूल की शुभ सूचना देता है, जो उनके बाद आएगा और जिसका नाम अह़मद होगा।

इस प्रकार बाइबिल की "वह नबी" की भविष्यवाणी और क़ुर्आन की अह़मद की बशारत एक ही रूपकात्मक धारा में आकर मिलती है— अर्थात पूर्व ग्रंथों में जिस आने वाले, व्यापक गुणों वाले, शरीअ़त और नेतृत्व के धारक रसूल की झलक दी गई थी, क़ुर्आन उसे स्पष्ट नाम और ऐतिह़ासिक साकारता के साथ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर लागू कर देता है।

सारांश

इंजील-ए-यूहन्ना में Paraklçtos (पैराक्लेट/ Comforter) और "सत्य की आत्मा" के शीर्षक से जिस आने वाली हस्ती की सूचना दी गई है, उसके गुण—जैसे ईसा (अ़लै०) के बाद आना, सत्य की पूर्ण मार्गदर्शना करना, अपनी ओर से कुछ न कहना बल्कि जो सुना जाए वही कहना, ईसा (अ़लै०) की गवाही देना और लोगों को धर्म की गहरी समझ प्रदान करना।

यह सभी एक ऐसी ईश्वरीय रूप से नियुक्त मार्गदर्शना की ओर संकेत करते हैं जो अस्थायी या सीमित नहीं, बल्कि व्यापक, समग्र और स्थायी हो।

इसी प्रकार यूहन्ना 1:21 में वह नबी (ðñïöÞôçò) का प्रश्न, मसीह़ और एलिय्याह से अलग करके किया जाना इस बात का संकेत है कि उस समय एक विशेष महान नबी की अवधारणा जीवित थी, जिसे केवल ईसा (अ़लै०) तक सीमित नहीं समझा जा रहा था, बल्कि एक भविष्य में प्रकट होने वाली हस्ती के रूप में अपेक्षित माना जा रहा था।

तौरात में "मूसा के समान नबी" (व्यवस्थाविवरण 18:18) की भविष्यवाणी इस धारणा को और सुदृढ़ करती है कि आने वाली हस्ती वह्य पर आधारित संदेश लेकर आएगी और ईश्वर के वचन को लोगों तक ज्यों-का-त्यों पहुँचाएगी।

इस्लामी दृष्टिकोण से यही क्रम क़ुर्आन मजीद में सूरः अस-सफ़्फ़ः 6 के माध्यम से अत्यंत स्पष्ट रूप में सामने आता है जहाँ ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की ज़बान से साफ़ तौर पर बताया गया है कि मेरे बाद एक रसूल आएगा, जिसका नाम अह़मद होगा।

समानता–

जब इस क़ुर्आनी घोषणा को बाइबिल में बताये गये गुणों के साथ मिलाकर देखा जाता है, तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से समानता स्पष्ट हो जाती है। आपने (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपनी ओर से नहीं, बल्कि वह्य के अनुसार संदेश पहुँचाया, सत्य की व्यापक और अंतिम मार्गदर्शना दी।

पूर्ववर्ती नबियों की पुष्टि की और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के पद और रसूलियत की गवाही और व्याख्या की। साथ ही आपका सन्देश केवल अस्थायी सांत्वना नहीं रहा, बल्कि एक सार्वभौमिक, स्थायी और व्यावहारिक मार्गदर्शन-प्रणाली के रूप में स्थापित हुआ।

इस प्रकार बाइबिल में **"Comforter / Spirit of Truth"** और **"The Prophet like Moses"** के रूपकात्मक संकेत और क़ुर्आन की स्पष्ट अह़मद की शुभ सूचना एक ही अर्थ-रेखा पर आकर जुड़ते हैं और इस्लामी व्याख्या के अनुसार इनका सबसे व्यापक और पूर्ण प्रतिरूप ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पवित्र हस्ती बनती है।

तुल्नात्मक दृष्टिकोण–

इस समग्र अध्ययन से इस्लामी और तुल्नात्मक दृष्टिकोण के अन्तर्गत यह बात स्पष्ट होती है कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने अपने बाद आने वाले रसूल की शुभ सूचना अपनी मूल भाषा (अरामी) में ऐसे अर्थ के साथ दी थी, जिसका अनुवाद 'अह़मद' के अर्थ में आता है और इसी नाम को क़ुर्आन मजीद ने स्पष्ट रूप से उद्धत किया है। (सूरः अस-सफ्फः 6)

इंजील-ए-यूहन्ना में आने वाले सहायक/सत्य की आत्मा के गुण— जैसे ईसा (अ़लै०) के बाद आना, सत्य की पूर्ण मार्गदर्शना करना, अपनी ओर से कुछ न कहना बल्कि अधिकृत सन्देश पहुँचाना और ईसा (अ़लै०) की गवाही देना— ऐतिह़ासिक और व्यावहारिक रूप से पूरी तरह़ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हस्ती पर लागू होते हैं।

यूनानी पाठ में प्रयुक्त शब्द **Paraklços** के बारे में यह भी स्वीकार किया

जाता है कि उसके अर्थ-निर्धारण में स्वयं ईसाई विद्वानों के बीच मतभेद रहा है।

इसी आधार पर मुस्लिम शोधकर्ता यह मत प्रस्तुत करते हैं कि यह शब्द मूल अरामी अभिव्यक्ति का अनुवादी ढाँचा है न कि स्वयं मूल शब्द और इसकी अर्थगत दिशा अ़रबी अह़मद (अत्यधिक प्रशंसित) से मेल खाती है।

अतः इस्लामी व्याख्या के अनुसार ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) द्वारा बताई गई भविष्यवाणियाँ चाहे वह "सहायक/सत्य की आत्मा" हों या "वह नबी" अपने व्यापक गुणों, ऐतिह़ासिक साकारता और क़ुर्आनी स्पष्टता की रौशनी में अन्तिम रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ही सत्य सिद्ध होती हैं और इन्हीं में उन शुभ सूचनाओं की तर्कसंगत और संगत पूर्णता दिखाई देती है।



भाग–7

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के आने से पूर्व अ़रब कवियों की भविष्यवाणियाँ

जाहिली अ़रब कवियों की भविष्यवाणियाँ और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

जाहिली दौर की अ़रब कविता में कुछ ऐसे शेअ़र और भाषण मिलते हैं जिनमें आने वाले एक महान नबी और विश्व-सुधार की ओर संकेत पाये जाते हैं, हालाँकि इनमें सीधे तौर पर नाम (मुह़म्मद/अह़मद) बहुत कम मिलता है, लेकिन अन्तिम नबी, एकेश्वरवाद (तौह़ीद) सत्य का प्रकाश, एक ही धर्म और सार्वभौमिक मार्गदर्शन जैसे विचार स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, बाद के इतिह़ासकारों और सीरत-लेखकों ने इन संकेतों को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी के संदर्भ में समझा है।

एकेश्वरवादी स्वभाव के कवि-

अ़रब समाज के कुछ एकेश्वरवादी स्वभाव वाले कवि और जागरूक व्यक्ति जैसे वरका बिन नौफ़ल, कअ़ब बिन लुअई और उनसे जुड़े अन्य कवि अपने काव्य में उस नबी के प्रकट होने की सूचना देते नज़र आते हैं, जो सत्य और न्याय के साथ आएगा, मूर्ति-पूजा का अंत करेगा, एकेश्वरवाद को स्थापित करेगा और नैतिक व सामाजिक सुधार का माध्यम बनेगा।

यद्यपि यह शेअ़र ह़दीस के मानकों पर पूर्ण रूप से प्रमाणित नहीं हैं और अधिकतर ऐतिह़ासिक स्रोतों में केवल कथन के रूप में मिलते हैं, फिर भी सीरत और इतिह़ास की पुस्तकों में इन्हें इरहासात-ए-नुबूवत (पैग़म्बरी से पहले के संकेत) के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बेअ़सत से पहले ही अ़रब समाज के कुछ जागरूक और संवेदनशील मस्तिष्क अन्तिम रसूल के आगमन के लिए वैचारिक और आध्यात्मिक रूप से तैयार हो चुके थे।

उमय्या बिन अबी सल्त की भविष्यवाणी-

उमय्या बिन अबी सल्त जाहिली दौर का एक प्रसिद्ध अ़रब कवि था। वह अहले-किताब (यहूदी और ईसाई धर्मग्रंथों) से प्रभावित था और अन्तिम नबी के प्रकट होने की प्रतीक्षा करता रहा। हालाँकि वह इस्लाम स्वीकार नहीं कर सका, लेकिन उसकी कविता में एकेश्वरवाद (तौह़ीद) अन्तिम पैग़म्बरी और आसमानी सच्चाइयों से सम्बन्धित स्पष्ट संकेत और भविष्यवाणियाँ मिलती हैं।

كُلُّ دِينٍ يَوْمَ القِيَامَةِ عِندَ اللَّهِ إِلَّا دِينَ الحَنِيفَةِ زُورُ لَهُ مُلْكٌ يُطِيعُ لَهُ النَّاسُ بِالدِّينِ

अनुवाद-

"क़ियामत के दिन अल्लाह के निकट दीन-ए-ह़नीफ़ के अ़लावा सभी धर्म असत्य होंगे। उसी धर्म के मानने वालों को ऐसी सत्ता प्राप्त होगी जिसके सामने लोग धर्म के साथ झुकेंगे"।

(इब्ने कसीर, अल्-बिदाया वन्निहाया, भाग 2, पृष्ठ 231) (अबू अल्-फ़रज अल्-अस्फ़हानी)

व्याख्या-

उमय्या बिन अबी अस्-सल्त के यह शेअ़र इस तथ्य को दर्शाते हैं कि जाहिली युग में भी कुछ विचारशील लोग शुद्ध एकेश्वरवाद (तौह़ीद) के समर्थक थे और ऐसे दीन-ए-ह़नीफ़ के प्रभुत्व की प्रतीक्षा कर रहे थे जो अल्लाह के निकट एकमात्र सत्य होगा।

यहाँ 'सत्ता' या 'बादशाहत' से आशय केवल राजनीतिक शासन नहीं है, बल्कि धर्म की नैतिक और आध्यात्मिक प्रभुता है जिसके सामने लोग ज़ोर-ज़बरदस्ती से नहीं, बल्कि ईमान और आज्ञाकारिता के साथ झुकेंगे।

बाद के ऐतिह़ासिक परिप्रेक्ष्य में यह विचार रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी और इस्लाम के सार्वभौमिक प्रभुत्व के साथ पूरी तरह सामंजस्य रखता हुआ प्रतीत होता है।

कुस्स बिन साअ़िदा अल्-इयादी की भविष्यवाणी-

कुस्स बिन साअ़िदा अल्-इयादी नजरान का प्रसिद्ध वक्ता (ख़तीब) था।

उसने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी से पहले अपने भाषणों में आने वाले नबी अह़मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आगमन और एकेश्वरवाद (तौह़ीद) के प्रभुत्व की घोषणा की थी।

यह इस बात का प्रमाण है कि इस्लाम से पहले भी अ़रब समाज में कुछ जागरुक और चिंतनशील लोग मौजूद थे, जो बहुदेववाद से ऊब चुके थे और सत्य, एक ईश्वर तथा एक महान पैग़म्बर के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

إِنَّهُ سَيَأْتِي نَبِيٌّ يُقَالُ لَهُ أَحْمَدُ، يُؤْمِنُ بِهِ السُّعَدَاءُ وَيَكْفُرُ بِهِ الأَشْقِيَاءُ

अनुवाद-

शीघ्र ही एक नबी आएँगे जिनका नाम अह़मद होगा। जो लोग उन पर ईमान लाएँगे वे सौभाग्यशाली होंगे और जो इन्कार करेंगे वे दुर्भाग्यशाली होंगे।

(इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्या, भाग-1, पृष्ठ 233) (बैहक़ी, दलाइलुन्नबूव्वह, भाग-2)

व्याख्या-

कुस्स बिन साअ़िदा अलू-इयादी के इस कथन में पैग़म्बरी से पहले आने वाले नबी अह़मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की स्पष्ट घोषणा मिलती है। इसके माध्यम से वह शुद्ध एकेश्वरवाद (तौह़ीद) के प्रभुत्व और सत्य व असत्य के बीच स्पष्ट भेद की सूचना देता है।

'सौभाग्यशाली' और 'दुर्भाग्यशाली' का यह विभाजन इस ओर संकेत करता है कि नबी का आगमन केवल एक ऐतिह़ासिक घटना नहीं होगा, बल्कि मानव जीवन के ईमान, नैतिकता और अन्तिम परिणाम का मापदंड बनेगा। जो सत्य को स्वीकार करेगा वह सफ़ल होगा और जो इन्कार करेगा वह वंचना और असफ़लता में पड़ जाएगा।

यह अर्थ बाद में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बेअ़सत के साथ पूरी तरह़ स्पष्ट होकर सामने आता है।

अदी बिन ज़ैद अलू-इबादी की भविष्यवाणी

अदी बिन ज़ैद अलू-इबादी जाहिली दौर का ऐसा कवि था जो अहले-किताब

के विचारों से प्रभावित था। उसने अपनी कविताओं में आने वाले एक ऐसे नूर-ए-हिदायत (मार्गदर्शन के प्रकाश) के प्रकट होने की ओर संकेत किया जो पूरी मानवता के लिए मार्गदर्शन का स्रोत बनेगा।

यह संकेत इस बात को दर्शाता है कि इस्लाम से पहले भी कुछ अ़रब कवि और विचारशील लोग अज्ञानता और बहुदेववाद के अंधकार से निकलकर सत्य, प्रकाश और सार्वभौमिक मार्गदर्शन के आगमन की आशा कर रहे थे।

أَتَى اللهُ بِالنُّورِ الَّذِي قَدْ أَضَاءَ فَبَانَ بِهِ الْحَقُّ وَانْجَلَى الْغَبَشُ

अनुवाद-

"अल्लाह ऐसा नूर (प्रकाश) लाएगा जिससे सत्य पूरी तरह स्पष्ट हो जाएगा और हर प्रकार का धुंधलापन तथा गुमराही दूर हो जाएगी"।

(इब्ने कुतैबा, अश-शिअ़र वश-शुअ़रा)

व्याख्या-

अदी बिन ज़ैद अल्-इबादी के इस शेअ़र में 'नूर' से तात्पर्य वह दैवी मार्गदर्शन है, जो अल्लाह की ओर से प्रकट होकर सत्य को उजागर करेगा और असत्य की धुंध को समाप्त कर देगा। जाहिली वातावरण में इस प्रकार की अभिव्यक्ति इस बात का संकेत है कि कवि एक ऐसे सार्वभौमिक संदेश की प्रतीक्षा कर रहा था, जो वैचारिक और नैतिक अन्धकार को दूर करे और मानवता को सीधा मार्ग दिखाये।

बाद के इस्लामी परिप्रेक्ष्य में यह अर्थ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी और क़ुर्आन करीम की हिदायत के साथ पूर्णतः सामंजस्य रखता हुआ दिखाई देता है, जिसने सत्य और असत्य के अंतर को पूरी स्पष्टता के साथ मानवता के सामने रख दिया।

हस्सान बिन साबित की भविष्यवाणी-

हस्सान बिन साबित रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बेअ़सत से पहले भी अन्तिम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आगमन की खबरें सुनते थे और अपने काव्य में

उनके संकेत दिया करते थे, बाद में उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया और खुलकर रसूल के कवि शायर-ए-रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बन गये।

यह बात इस तथ्य को उजागर करती है कि कुछ संवेदनशील और जागरुक अ़रब लोग इस्लाम के प्रकट होने से पहले ही अन्तिम पैग़म्बर की प्रतीक्षा और पहचान के मानसिक स्तर पर तैयार थे और जब सत्य स्पष्ट हुआ तो उन्होंने बिना हिचक उसे स्वीकार कर लिया।

نَبِيٌّ يَأْتِي بِالْهُدَى بَعْدَ فَتْرَةٍ يُقِيمُ بِهِ الدُّنْيَا وَيُحْيِي الْمَعَالِمَا

अनुवाद-

"एक नबी आएँगे जो लम्बे अंतराल के बाद मार्गदर्शन लेकर आएँगे, संसार को सुधारेंगे और मिटती हुई निशानियों को फिर से जीवित करेंगे"।

(इब्ने सलाम अल्-जुमही, तब्क़ात फ़ुहूल अश-शुअ़रा)

व्याख्या-

हस्सान बिन साबित का जीवन इस बात का स्पष्ट उदाहरण है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी से पहले ही अ़रब समाज में अन्तिम नबी के आगमन की चर्चाएँ प्रचलित थीं। हस्सान बिन साबित इन संकेतों को सुनते और समझते थे।

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बेअ़सत हुई, तो उन्होंने बिना किसी संदेह के ईमान स्वीकार कर लिया। इसके बाद उनका शाइर-ए-रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बन जाना इस सत्य को और अधिक सुदृढ़ करता है कि जिन पूर्व-सूचनाओं और सांकेतिक घोषणाओं को वे पहले सुनते थे, वही पैग़म्बरी के प्रकट होने के बाद उनके लिए पूर्ण विश्वास और व्यावहारिक निष्ठा में परिवर्तित हो गईं।

वरक़ा बिन नौफ़ल की भविष्यवाणी-

'वरका' बिन नौफ़ल जाहिली दौर के एक एकेश्वरवादी ईसाई विद्वान थे। पैग़म्बरी के आरम्भ में ही उन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुबूवत की स्पष्ट रूप से पुष्टि की और उन्हें वही नबी क़रार दिया जिन पर पहले ह़ज़रत मूसा पर उतरने वाला नामूस (वह्य) उतरा था।

यह गवाही इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि अहले-किताब के जानकार और सत्य-अन्वेषी लोग भी रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी को पहचान रहे थे और उसे पूर्ववर्ती दिव्य परम्परा की कड़ी के रूप में देख रहे थे।

لَجَجْتَ وَكُنْتَ فِي الذِّكْرِ لَجُوجًا لَهُمْ صَاحِبٌ بِمَكَّةَ مُنْذِرُ

وَجَاءَ بِأَمْرٍ مِنَ اللَّهِ فِيهِ

بَيَانٌ إِذَا ذُكِرَ الأَمْرُ نُكِرُوا

دَعَاهُمْ إِلَى اللَّهِ يَهْدِيهِمُ

فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا وَلَمْ يَنْصُرُوا

وَأَشْهَدُ أَنَّ أَحْمَدَ مُرْسَلٌ

مِنَ اللَّهِ بَارِئِ النَّسَمِ

وَلَوْ أَنَّنِي أُدْرِكُ أَيَّامَهُ

لَكُنْتُ لَهُ عَوْنًا وَمُعْتَصِمِ

अनुवाद-

तुमने सत्य की खोज में विचारविमर्श किया और सत्य के स्मरण में लगे रहे। मक्का के लोगों के लिए मक्का में एक चेतावनी देने वाला (नबी) मौजूद है। वह अल्लाह की ओर से ऐसा संदेश लेकर आया है जिसमें सत्य का स्पष्ट बयान है, लेकिन जब सत्य का उल्लेख किया जाता है तो ये लोग उसका इन्कार करते हैं।

वह उन्हें अल्लाह की ओर बुलाता है ताकि वे मार्गदर्शन प्राप्त करें, किन्तु उन्होंने न तो उसे स्वीकार किया और न ही उसकी सहायता की और मैं गवाही देता हूँ कि अह़मद अल्लाह की ओर से भेजे गए रसूल हैं, जो समस्त प्राणियों का सृष्टिकर्ता है। यदि मैं उनके समय को पा लेता, तो निश्चय ही मैं उनका सहायक और समर्थक बनता"।

(इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्या, भाग-1— वरका बिन नौफ़ल के प्रसंग में कथित/निस्बती अशआ़र)

(इब्ने कसीर, अल्-बिदाया वन्निहाया, भाग-3— प्रारम्भिक बेअ़सत की घटनाओं में

वरका का उल्लेख अशआ़र निस्बत के रूप में)
(बैहकी, दलाइलुन्नबूव्वह, भाग-3— वरका द्वारा नबूवत की पुष्टि का वर्णन कुछ रिवायतों में पद्यात्मक निस्बत)

वरका बिन नौफ़ल का एक अन्य शेअ़र-

وَأَخْبَارُ صِدْقٍ خَبَرْتُ عَنْ مُحَمَّدٍ ... بِخَبَرٍ هَا عَنْهُ إِذَا غَابَ نَاصِحُ
فَخَبِّرْنَا عَنْ كُلِّ خَيْرٍ يَعْلَمُهُ ... وَلِلْحَقِّ أَبْوَابٌ لَهُنَّ مَفَاتِحُ
بِأَنَّ عَبْدَ اللهِ أَحْمَدَ مُرْسَلٌ ... إِلَى كُلِّ مَنْ ضَمَّتْ عَلَيْهِ الْأَبَاطِحُ
وَظَنِّي بِهِ أَنَّهُ سَوْفَ يُبْعَثُ صَادِقًا ... كَمَا أُرْسِلَ الْعَبْدُ أَنْ هُودٌ وَصَالِحُ
وَمُوسَى وَإِبْرَاهِيمُ حَتَّى يُرَى لَهُ ... بَهَاءٌ وَمَنْثُورٌ مِنَ الذِّكْرِ وَاضِحُ
وَيَتْبَعُهُ حَيُّ لُوَيِّ بْنُ غَالِبٍ ... شَبَابُهُمْ وَالْأَشْيَاخُ وَالْحَجَاجِحُ
فَإِنْ أَبْقَ حَتَّى يُدْرِكَ النَّاسُ دَهْرَهُ ... فَإِنِّي بِهِ مُسْتَبْشِرُ الْوُدِّ فَارِحُ
وَإِلَّا فَإِنِّي يَا خَدِيجَةُ فَاعْلَمِي ... عَنْ أَرْضِكِ فِي الْأَرْضِ الْعَرِيضَةِ سَامِحُ

अनुवाद-

"मैं मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में सच्ची बातें बयान करता हूँ ऐसी बातें जो उस समय भी सत्य का मार्ग दिखाती हैं जब कोई सच्चा हितैषी मौजूद न हो।

इसलिए हमें उस हर भलाई की सूचना देनी चाहिए जिसे वे जानते हैं, क्योंकि सत्य के अनेक द्वार होते हैं और उनके लिए कुंजियाँ भी मौजूद होती हैं और इस बात के साथ कि अ़ब्दुल्लाह के पुत्र अह़मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, जिन्हें मक्का की वादियों में बसने वालों अर्थात पूरी मानवता की ओर भेजा गया है।

मेरा विश्वास है कि उन्हें निश्चित रूप से सत्य के साथ भेजा जाएगा, जैसे उनसे पहले हूद और सालेह जैसे बन्दे भेजे गये थे और जैसे मूसा (अ़लै०) और इब्राहीम (अ़लै०) भेजे गये यहाँ तक कि उनकी शान प्रकट हो जाएगी और उनका उल्लेख स्पष्ट रूप से फैल जाएगा।

उनका अनुसरण कुरैश करेंगे अर्थात लुवै बिन ग़ालिब की सन्ताने उनके युवा भी और वृद्ध भी, सभी उनके साथ होंगे।

यदि मैं जीवित रहा और लोगों ने उनके समय को पाया, तो मैं उनके प्रकट होने पर प्रेम और प्रसन्नता के साथ आनंदित होऊँगा।

यदि ऐसा न हो सके, तो ऐ ख़दीजा! जान लो कि इस विस्तृत धरती पर मैं तुम्हारी भूमि (मक्का) के लिए एक सच्चा हितैषी हूँ।

व्याख्या-

वरक़ा बिन नौफ़ल अहले-किताब के ज्ञान से परिचित एक एकेश्वरवादी विद्वान थे। वह क़ुरैश के क़बीले बनू असद बिन अ़ब्दुल-उ़ज़्ज़ा से सम्बन्ध रखते थे और मक्का में ही अहले-किताब (तौरात और इन्जील) का अध्ययन करते थे।

पैग़म्बरी के आरम्भ में ही उन्होंने वह्य (ईश्वरीय प्रकाशन) की घटना को पूर्ववर्ती दिव्य ग्रंथों की रौशनी में परखा।

वरक़ा बिन नौफ़ल का कथन-

उनकी यह पुष्टि इस बात का प्रमाण है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नबूवत कोई अचानक या निराधार दावा नहीं थी, बल्कि वही वह्य की निरन्तर परम्परा थी जो मूसा और अन्य नबियों पर जारी रही थी।

वरक़ा बिन नौफ़ल का यह कथन पैग़म्बरी से पहले मौजूद विद्वतापूर्ण और धार्मिक शुभ-सूचनाओं की एक व्यावहारिक साक्ष्य के रूप में सामने आता है और इरहासात-ए-नुबूवत (पैग़म्बरी से पूर्व संकेतों) के अध्याय में एक मज़बूत ऐतिह़ासिक आधार प्रदान करता है।

ये पद्य (अशआ़र) ह़दीस की पुस्तकों में प्रमाणिक (सह़ीह़) सनद के साथ सिद्ध नहीं हैं। मुह़द्दिसीन के निकट वरक़ा बिन नौफ़ल द्वारा नुबूवत की पुष्टि गद्य (नस्र) में प्रमाणित है। जैसे यह कथन-

"यह वही नामूस है जिसे अल्लाह ने मूसा पर उतारा था"।

(सह़ीह़ अल्-बुख़ारी, किताब बद्अल-वह्य)

सीरत की पुस्तकों में भी-

हालाँकि यह पद्यात्मक कथन ऐतिह़ासिक और सीरती पुस्तकों में

निस्बत/रिवायत के रूप में मिलते हैं। जैसे- इब्ने इस्ह़ाक़, अस-सीरतुन्नबविय्या (इब्ने हिशाम की रिवायत से) इब्ने कसीर, अल्-बिदाया वन्निहाया (वरक़ा बिन नौफ़ल का उल्लेख) तबरी, तारीख़ अल्-उमम वल्-मुलूक)

हुज्र बिन मालिक की भविष्यवाणी-

हुज्र बिन मालिक प्राचीन अ़रब का एक कवि था। उससे मंसूब (निस्बत किये गये) कुछ शेअ़रों में पैग़म्बरी से पहले आने वाले एक नबी के प्रकट होने, वह्य और क़ुर्आन के अवतरण तथा मूर्ति-पूजा के अंत की भविष्यवाणी मिलती है। यह संकेत इस बात को दर्शाता है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पहले भी अ़रब समाज में कुछ कवि और विचारशील लोग बहुदेववाद के पतन और दिव्य मार्गदर्शन के आगमन की आशा कर रहे थे।

يَامَعْشَرَ بَنِي قَحْطَانِ — أُخْبِرُكُمْ بِالْحَقِّ وَالْبَيَانِ
أَقْسَمْتُ بِالْكَعْبَةِ وَالْأَرْكَانِ — وَالْبَلَدِ الْمُؤْتَمَنِ السَّدَا
لَقَدْ مُنِعَ السَّمْعُ عُتَاةَ الْجَانِّ — بِثَاقِبٍ بِكَفِّ ذِي سُلْطَانِ
مِنْ أَجْلِ مَبْعُوثٍ عَظِيمِ الشَّانِ — يُبْعَثُ بِالتَّنْزِيلِ وَالْقُرْآنِ
وَبِالْهُدَى وَفَاضِلِ الْقُرْآنِ — تَبْطُلُ بِهِ عِبَادَةُ الْأَوْثَانِ

अनुवाद-

"ऐ बनू कहतान के लोगो! मैं तुम्हें सत्य और स्पष्ट बात की सूचना देता हूँ। मैं कअ़बा और उसके स्तम्भों की कसम खाता हूँ और इस सम्मानित व सुरक्षित नगर की क़सम! सरकश जिन्नों को अब आकाश की ख़बरें सुनने से रोक दिया गया है चमकते हुए शोलों के द्वारा जो एक सामर्थ्यवान सत्ता के हाथ से फेंके जाते हैं।

यह सब एक महान प्रतिष्ठा वाले भेजे गये दूत के कारण है, जिसे ईश्वरीय वह्य (प्रकाशना) और क़ुर्आन के साथ भेजा जाएगा।

वह मार्गदर्शन और श्रेष्ठ क़ुर्आन लेकर आएगा और उसके माध्यम से मूर्तियों की पूजा असत्य ठहराई जाएगी"।

व्याख्या-

हुज्र बिन मालिक से मन्सूब यह शेअ़र जाहिली युग में पाई जाने वाली उस बौद्धिक जागरुकता को दर्शाते हैं, जिसमें कुछ अ़रब कवि आने वाली एक महान पैग़म्बरी के संकेत महसूस कर रहे थे।

आकाश की खबरें सुनने से जिन्नों को रोके जाने का उल्लेख उस असाधारण परिवर्तन की ओर संकेत करता है, जो वह्य के आरम्भ के साथ घटित हुआ।

मार्ग दर्शन का प्रभुत्व-

इस से आशय उस नबी से है जो वह्य और कुर्आन के माध्यम से सत्य को स्पष्ट करेगा। मूर्ति-पूजा के अन्त और मार्गदर्शन के प्रभुत्व की घोषणा इस तथ्य को उजागर करती है कि कवि एक ऐसे धार्मिक क्रांति की प्रतीक्षा कर रहा था, जो तौह़ीद (एकेश्वरवाद) की स्थापना करे और जाहिली समाज की वैचारिक व व्यवहारिक गुमराही को समाप्त कर दे।

इसी कारण इन शेअ़रो को इरहासात-ए-नुबूवत (पैग़म्बरी से पूर्व संकेतों) के ऐतिह़ासिक प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

(तारीख़ अल्-उमम वल-मुलूक इमाम मुह़म्मद बिन जरीर तब्री, भाग-2, पृ० 216–217)

(अल्-बिदाया वन्निहाया (ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 236–238)

(शरह अल्-मवाहिब अल्-लदुनिया (मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल् बाकी ज़रकानी, भाग-1, पृ० 176–177)

(अल्-ख़सायस अल्-कुब्रा इमाम जलालुद्दीन स्यूती, भाग-1, पृ० 87–89)

नोट-

ये शेअ़र ह़दीस की पुस्तकों में सह़ीह़ सनद के साथ प्रमाणित नहीं हैं, बल्कि इतिह़ासकारों और साहित्यकारों ने इन्हें जाहिली अ़रब कविता की मन्सूब रिवायत के रूप में उद्धृत किया है।

कअ़ब बिन लुअ़ई की भविष्यवाणी-

कअ़ब बिन लुअ़ई कुरैश के एक प्रतिष्ठित बुज़ुर्ग थे। उनसे मन्सूब ख़ुत्बों और कविताओं में पैग़म्बरी से पहले आने वाले अन्तिम नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की

सूचना, तक़्वा (ईश्वर-भय) की शिक्षा और सत्य के अनुसरण का आह्वान मिलता है। यह सन्देश बाद में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के प्रकट होने के साथ पूरी तरह सामंजस्य रखता हुआ दिखाई देता है।

عَلَىٰ غَفْلَةٍ يَأْتِي النَّبِيُّ مُحَمَّدٌ فَيُخْبِرُ أَخْبَارًا صُدُوقٌ خَبِيرُهَا
وَيَأْمُرُ بِالتَّقْوَى وَيَنْهَى عَنِ الرَّدَى وَيُظْهِرُ حَقًّا جَاءَهُ يَسْتَنِيرُهَا
فَمَنْ يُدْرِكِ الْإِسْلَامَ يَفُزْ بِرِفْعَةٍ وَيَرْشُدْ إِذَا ضَلَّتْ بِهِمْ مَسِيرُهَا

अनुवाद-

"लोगों की ग़फ़लत और बेख़बरी के समय नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) प्रकट होंगे। वह ऐसी सच्ची ख़बरे सुनाएँगे जिनका बयान करने वाला पूरी तरह जानकार होगा।

वह तक़्वा (ईश्वर-भय) का आदेश देंगे, विनाश से रोकेंगे और उस सत्य को प्रकट करेंगे जिसकी रौशनी स्वयं सत्य से प्राप्त की गई होगी। जो इस्लाम को पा लेगा वह सम्मान पाएगा और जब लोगों के मार्ग भटक जाएँगे, तब वही सही मार्गदर्शन प्राप्त करेगा"।

व्याख्या-

कअ़ब बिन लुअ़य्य की ओर मन्सूब (निस्बत किये गये) ये ख़ुत्बे और काव्य-जगत जाहिली अ़रब समाज में मौजूद उस बौद्धिक चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जिसमें एक महान धार्मिक परिवर्तन की अपेक्षा पाई जाती थी। उनके कथन में तक़्वा, सत्य के अनुसरण और आने वाले नबी की सूचना इस ओर संकेत करती है कि क़ुरैश के कुछ प्रभावशाली लोग तौह़ीद (एकेश्वरवाद) की मूल शिक्षा से परिचित थे और मूर्ति-पूजक वातावरण के बावजूद एक दिव्य मार्गदर्शक के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

यद्यपि यह कथन ह़दीस के मानकों पर प्रमाणित नहीं हैं, फिर भी सीरत और इतिह़ास की पुस्तकों में इन्हें निस्बत के रूप में उद्धृत किया जाना इस

बात का संकेत है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बेअ़सत से पहले ही मक्का के बौद्धिक वातावरण में नबी आखिरुज़्ज़मान की भूमिका और मानसिक तैयारी मौजूद थी। यह सब इरहासात-ए-नुबूवत (पैग़म्बरी से पूर्व संकेतों) के दायरे में आता है।

(अस-सीरतुन्नबविय्या— इब्ने हिशाम (इब्ने इस्हाक़ की रिवायत से) भाग- 1, पृ० 163–164)
(अल्-बिदाया वन्निहाया— इब्ने कसीर, जिल्द 2, पृ० 230–231)
शरह़ अल्-मवाहिब अद्दीनिया जरकानी, जिल्द 1, पृ० 174–175)

नोट-

ये शेअ़र ह़दीस की पुस्तकों में प्रमाणिक सनद के साथ सिद्ध नहीं हैं, किन्तु इतिह़ासकारों और सीरत-लेखकों ने इन्हें कअ़ब बिन लुअय्य की ओर निस्बत के रूप में उद्धृत किया है।

राइश अल्-हिम्यरी की भविष्यवाणी-

राइश (Ra'ish) यमन के प्राचीन हिम्यरी राजाओं में गिने जाते हैं। "राइश" वास्तव में उनका उपनाम (लक़ब) था। रिवायतों के अनुसार वे मदीना (यसरिब) पर अधिकार करने के उद्देश्य से आये थे, लेकिन मदीना के यहूदी विद्वानों से अन्तिम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के प्रकट होने की सूचना सुनकर उन्होंने अपना इरादा छोड़ दिया और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुबूवत की गवाही दी।

रिवायतों में आता है कि जब राइश यमन से यसरिब पहुँचे, तो मदीना के यहूदी विद्वानों ने उन्हें बताया कि यही नगर अन्तिम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हिज्रत-स्थली बनेगा।

इस सूचना के बाद राइश ने आक्रमण का विचार त्याग दिया, यहूदी विद्वानों का सम्मान किया और अन्तिम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान जैसी गवाही दी। कुछ रिवायतों के अनुसार उन्होंने कअ़बा पर ग़िलाफ़ (किस्वा) भी चढ़वाया।

شَهِدْتُ عَلَى أَحْمَدَ أَنَّهُ ... نَبِيٌّ مِنَ اللهِ بَارِي النَّسَمْ
فَلَوْ مُدَّ عُمْرِي إِلَى عُمْرِهِ ... لَكُنْتُ وَزِيرًا لَهُ وَابْنَ عَمّ
وَجَاهَدْتُ بِالسَّيْفِ أَعْدَاءَهُ ... وَفَرَّجْتُ عَنْ صَدْرِهِ كُلَّ غَمّ

لَهُ أُمَّةٌ سُمِّيَتْ فِي الزَّبُورِ وَأُمَّتُهُ هِيَ خَيْرُ الْأُمَمِ

अनुवाद-

मैं अह़मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में गवाही देता हूँ कि वह अल्लाह के नबी हैं, वह अल्लाह जो समस्त सृष्टि का रचयिता है।

यदि मेरी आयु उनके समय तक पहुँच जाती, तो मैं अवश्य उनका सहायक, मंत्री और निकटतम भाई बन जाता। मैं तल्वार के साथ उनके शत्रुओं के विरुद्ध संघर्ष करता और उनके हृदय से हर प्रकार का दुःख और पीड़ा दूर कर देता। उनके लिए एक ऐसी उम्मत है, जिसका उल्लेख ज़बूर में आया है और उनकी उम्मत ही सभी उम्मतों में सबसे श्रेष्ठ है।

अन्य स्थान पर उद्धृत पद्य (अशआ़र)

أَرَى نُورَ أَحْمَدَ فِي الْغَيْبِ لَائِحًا سَيَظْهَرُ فِي الْحَرَمِ الطَّاهِرِ الْحَرَمُ

يُقِيمُ بِهِ اللَّهُ دِينًا قَوِيمًا وَيَكْسِرُ أَصْنَامَ قَوْمٍ وَصَنَمْ

अनुवाद-

"मैं अह़मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नूर (प्रकाश) ग़ैब में चमकता हुआ देख रहा हूँ। वह पवित्र ह़रम (मक्का) में प्रकट होंगे। अल्लाह उनके माध्यम से दीन-ए-ह़क़ को स्थापित करेगा और मूर्तियों को पूरी तरह नष्ट कर देगा"।

व्याख्या-

राइश यमन का एक प्राचीन हिम्यरी राजा था, जिसने पैग़म्बरी से पहले अन्तिम रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के प्रकट होने की अग्रिम गवाही दी। उससे मंसूब इन शेअ़रों में नबूवत-ए-अह़मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की स्पष्ट पुष्टि, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ जिहाद और सहायता की अभिलाषा, उम्मत-ए-मुह़म्मदिया की श्रेष्ठता तथा ज़बूर में इस उम्मत के उल्लेख की ओर संकेत मिलता है।

यद्यपि यह शेअ़र ह़दीस की सनद के स्तर पर प्रमाणित नहीं हैं, फिर भी सीरत और इतिह़ास की विश्वसनीय पुस्तकों में निस्बत के रूप में इनके उल्लेख

के कारण इन्हें इरहासात-ए-नुबूवत (पैग़म्बरी से पूर्व संकेत) के अन्तर्गत गिना जाता है।

इस दृष्टि से यह पैग़म्बरी से पहले नुबूवत के प्रकट होने से सम्बन्धित ऐतिहासिक और बौद्धिक प्रमाण के रूप में महत्त्व रखते हैं।

शैक्षणिक स्थिति (अकादमिक हैसियत) यह शेअ़र सहीह़ ह़दीस के दर्जे में नहीं आते, लेकिन ऐतिहासिक और सीरती स्रोतों में निरन्तर निस्बत के साथ वर्णित होते रहे हैं।

यह इस्लामी आस्था (अ़क़ीदा) की आधारशिला नहीं हैं, किन्तु ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में विश्वसनीय माने जाते हैं और इरहासात-ए-नुबूवत (Pre & Islamic Portents) के अध्याय में उल्लेखित किये जाते हैं।

तारीख़ अल्-उमम वल-मुलूक इमाम मुह़म्मद बिन जरीर तबरी, भाग-2, पृ० 222–224 (काहिरा दारुल-मआ़रिफ़)—अख़बार-ए-तुब्बा व मुलूक-ए-हिम्यर के अन्तर्गत राइश की गवाही)

(अल्-बिदाया वन्निहाया ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर, भाग-2, पृ० 249–251 (दारुल-फिक्र)—इरहासात-ए-नुबूवत व अख़बार-ए-यमन

शरह अल्-मवाहिब अल्-लदुनिया व ज़रकानी, भाग-1, पृ० 196–197— यमन के राजाओं से मन्सूब शेअ़रों की व्याख्या

निष्कर्ष

जाहिली अ़रब कविता और भाषणों में ऐसे अनेक संकेत मिलते हैं जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी से पहले आने वाले एक महान नबी, शुद्ध एकेश्वरवाद (तौह़ीद) मार्गदर्शन के प्रकाश, एकमात्र धर्म और वैश्विक सुधार की सूचना देते हैं।

यद्यपि अधिकांश स्थानों पर मुह़म्मद/अह़मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का नाम स्पष्ट रूप से बहुत कम आता है, फिर भी अन्तिम नबी के आगमन, मूर्ति-पूजा के अन्त, नैतिक और सामाजिक शुद्धि तथा सत्य के प्रभुत्व की अवधारणाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

उमय्या बिन अबी अस्-सल्त, कुस्स बिन साअ़िदा अल्-इयादी, अदी बिन

ज़ैद अलू-इबादी, हस्सान बिन साबित, वरक़ा बिन नौफ़ल, हुज्र बिन मालिक और कअ़ब बिन लुअई जैसे व्यक्तियों से मन्सूब कथनों में ये साझा अर्थ स्पष्ट रूप से उभरते हैं, जिन्हें बाद के इतिहासकारों और सीरत-लेखकों ने पैग़म्बरी के प्रकट होने की पृष्ठभूमि में समझा और प्रस्तुत किया है।

यह सभी उद्धृत पद्य और कथन ह़दीस के मानकों पर पूर्णतः प्रमाणित नहीं हैं और अधिकांशतः ऐतिह़ासिक व सीरती स्रोतों में निस्बत के रूप में पाये जाते हैं।

इसके बावजूद इरहासात-ए-नुबूवत (पैग़म्बरी से पूर्व संकेतों) के अध्याय में इनका विशेष महत्त्व है, क्योंकि ये पैग़म्बरी से पहले अ़रब समाज में मौजूद बौद्धिक और आध्यात्मिक तैयारी को उजागर करते हैं।

विशेष रूप से राइश अलू-हिम्यरी जैसे सूचित शासक की गवाही जिसमें नुबूवत-ए-अह़मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सहायता की अभिलाषा, उम्मत-ए-मुह़म्मदिया की श्रेष्ठता और तौह़ीद की स्थापना का उल्लेख है।

इस तथ्य को और सुदृढ़ करती है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के प्रकट होने से पहले ही समाज के विभिन्न वर्गों में अन्तिम रसूल के आगमन का बोध मौजूद था।

इस प्रकार यह सामग्री इस्लामी आस्थाओं (अ़क़ीदा) की आधारशिला तो नहीं बनती, किन्तु ऐतिह़ासिक साक्ष्य के रूप में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी की भूमिका और उसके व्यापक प्रभावों को समझने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करती है।



भाग-8

हिन्दी कवियों और सन्तों की भविष्यवाणियाँ

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की भक्ति काल के कवियों द्वारा स्तुति

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्रतिष्ठा, सम्मान, नैतिक चरित्र और महानता की स्तुति केवल अ़रबी या इस्लामी साहित्य तक सीमित नहीं रही, बल्कि हिन्दी काव्य-परम्परा में भी इसके उज्ज्वल उदाहरण मिलते हैं।

हिन्द के मुस्लिम सूफ़ी कवियों के साथ-साथ भक्ति काल के अनेक प्रमुख ग़ैर-मुस्लिम कवियों ने भी अपने वैचारिक और आध्यात्मिक ढंग से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उच्च गुणों को स्वीकार किया है।

इन श्रद्धालु कवियों का साझा विश्वास यह है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह तआला के सबसे प्रिय बन्दे हैं, जिनकी महान व्यक्तित्व को अल्लाह ने अपनी विशेष कृपा का प्रत्यक्ष प्रतीक बनाया।

इस्लामी बौद्धिक परम्परा के अनुसार क़ुर्आन मजीद इस सत्य को अत्यन्त संक्षिप्त और व्यापक रूप में इस प्रकार व्यक्त करता है।

وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ۝١٠٧ (सूरः निसा आयत नं० 107)

अनुवाद- "और हमने आपको सारे संसारों के लिए रह़मत बनाकर भेजा है"।

करुणा की महानता-

इस आयत का आशय यह है कि अल्लाह तआला ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मानवता को अज्ञान, पथभ्रष्टता और नैतिक अन्धकार से निकालकर ज्ञान, मार्गदर्शन और करुणा के प्रकाश की ओर ले जाने के लिए भेजा। यही कारण है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की महान हस्ती हर भाषा, हर संस्कृति और हर युग में सम्मान और श्रद्धा का केन्द्र बनी रही है।

कबीरदास जी और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मुह़म्मद साह़िब सांचा।
जिनकी कृपा ते सब घट उपजे, सोई पूरन रांचा।।

अनुवाद-

कबीर कहते हैं हे सत्य के खोजियो! सुनो मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सच्चे स्वामी हैं। जिनकी करुणा से सभी हृदय जीवित हो जाते हैं, वही पूर्ण और सम्पूर्ण मार्गदर्शक हैं।

Kabir Granthavali — सम्पादकः श्याम सुन्दर दास, प्रकाशकः नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (वाराणसी)

Bijak — कबीर पंथी परम्परा का शब्द और दोहा-संग्रह, राजस्थान और बनारस के कबीर पंथी मठों में संरक्षित

Kabir — लेखिका- डॉ० शार्लट वडविल, प्रकाशकः ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस/कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस

- इसी प्रकार कबीर दास जी कहते हैं-

कबीर मुह़म्मद एक है, दूजा और न कोय।
जेहि घटि परगट होइगा, सोई पाक है सोय।।

अनुवाद-

"कबीर कहते हैं कि (सत्य की पहचान में) मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अद्वितीय हैं, उनके समान कोई दूसरा नहीं। जिसके हृदय में उनकी शिक्षाओं का प्रकाश प्रकट हो जाता है, वही व्यक्ति वास्तव में पवित्र और धन्य होता है"।

(कबीर सागर, अध्याय मुह़म्मद-बोध —'कबीर चौरामठ, वाराणसी' अथवा 'कबीर धर्मदास साहब की मंशा' (धामखेड़ा) से प्रकाशित प्रतियों में उपलब्ध)

- इसी प्रकार कबीरदास जी कहते हैं-

मुह़म्मद पीर को मानिये, जे मन का सब्र होय।
दूजी राह न जानिये, हक्क नबी की सोय ।।

अनुवाद-

"ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अपना मार्गदर्शक और पीर स्वीकार करो,

क्योंकि उनकी शिक्षाओं में मन की शांति और धैर्य निहित है, सत्य का मार्ग वही है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बताया है। इसके अतिरिक्त किसी अन्य मार्ग को मुक्ति का मार्ग न समझो"।

(कबीर मंशा, कबीर वाणी विभिन्न सूफ़ियाना प्रतियों में यह दोहा "शरीअ़त और तरीक़त" के प्रसंग में मिलता है)

- इसी प्रकार कबीरदास जी कहते हैं-

कलमा तैं रौशन भया, जगमग भया जहान।
नबी मुह़म्मद नूर है, सब ही के परवान ।।

अनुवाद-

"कलिमे की बरकत से सृष्टि प्रकाशित हो गई और पूरे संसार में उजाला फैल गया। नबी मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वही नूर हैं, जो समस्त मानवता के लिए (ईश्वर की ओर से) प्रमाण और स्वीकार्यता का माध्यम हैं"।

(बीजक रमणी (Ramaini) खंड में जहाँ कबीर जी धर्मों की एकता और दैवी प्रकाश पर चर्चा करते हैं। इसे पहली बार भगो दास कबीर जी के शिष्य ने संकलित किया)

- इसी प्रकार कबीरदास जी कहते हैं-

मुह़म्मद बोध जो जानई सोई मुह़म्मद पीर।
नूर मुह़म्मद है बड़ाँ तहां न उपजै पीर ।।

अनुवाद-

जो व्यक्ति मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा बताई गई मार्गदर्शक अनुभूति (सत्य का ज्ञान) को पहचान लेता है, वही वास्तव में उनका अनुसरण करने वाला और पूर्ण गुरु होता है।

मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नूर इतना महान और श्रेष्ठ है कि जिसके हृदय में वह बस जाये, वहाँ फिर कोई पीड़ा, दुःख या भटकाव शेष नहीं रहता। ग्रंथ बीजक (Bijak) अध्याय साखी (Sakhi) यह पद बीजक के प्राचीन संस्करणों (वाराणसी संस्करण) तथा 'कबीर मंशा' के संकलनों में निरन्तर रूप से मिलता है।)

गुरु ग्रंथ साहिब में कबीर जी का काव्य-

ਕਬੀਰ ਮੁਹੰਮਦੁ ਕਬੀਰੁ ਹੈ ਰਾਮ ਕਬੀਰੁ ਹੈ ਸੋਇ ॥
ਏਕੁ ਅਲਹੁ ਏਕੁ ਰਾਮੁ ਹੈ ਦੂਜਾ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥

अर्थ- कबीर मुहम्मद कबीर है राम कबीर है सोइ। एक अलहु एक रामु है दूजा नाही कोइम।।

अनुवाद-

"कबीर कहते हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी उस महान एकता का ही अंश हैं और राम (ईश्वर) भी वही हैं अर्थात दोनों एक ही दैवी नूर (ईश्वरीय प्रकाश) के प्रकटीकरण हैं। अल्लाह और राम एक ही सत्य के दो नाम हैं, उनके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है"।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग संख्या **1349**, रागरु प्रभाती, रचयितारु भगत कबीर जी)

- **इसी प्रकार गुरुमुखी पाठ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) में है-**

ਅਲਹੁ ਏਕੁ ਮਸੀਤਿ ਬਸਤੁ ਹੈ ਅਵਰੁ ਮੁਲਖੁ ਕਿਸੁ ਕੇਰਾ ॥ ਹਿੰਦੂ ਮੂਰਤਿ ਨਾਮ ਨਿਵਾਸੀ
ਦੁਹ ਮਹਿ ਤਤੁ ਨ ਹੇਰਾ ॥ ਕਬੀਰ ਮੁਹੰਮਦ ਮਾਨੀਐ ਜਿਨਿ ਰਾਹ ਸਚੁ ਦਿਖਾਇਆ ॥
ਤਾ ਕਉ ਭਿਸਤੁ ਨ ਹੋਇਗੋ ਜਿਨਿ ਮਨੁ ਨਾਹੀ ਮਾਰਿਆ ॥

अर्थ- "अल्हु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा।।
हिन्दू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा ।।
कबीर मुहम्मद मानिये जिनि राह सचु दिखाइआ ।।
ता कउ भिसतु न होइगो जिनि मनु नाही मारिआ" ।।

अनुवाद-

"यदि अल्लाह केवल मस्जिद में ही निवास करता है, तो फिर शेष संसार किसका है? हिन्दू उसे मूर्ति में खोजता है, किन्तु सत्य दोनों को केवल बाहरी कर्मकांडों में नहीं मिलता। कबीर कहते हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सच्चा पीर स्वीकार करो, जिन्होंने सत्य का मार्ग दिखाया (लेकिन यह याद रखो कि) जिसने अपने नफ्स (बुरी इच्छाओं/अहंकार) को वश में नहीं किया, उसे

बहिश्त (स्वर्ग) प्राप्त नहीं होती"।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग संख्या **1158**, रागरू भैरव, रचयिता भगत कबीर जी)

वार रामकली (श्लोक महला 1)

यह श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंग (पृष्ठ) **950** पर अंकित है। इस श्लोक में गुरु नानक देव जी नफ़्स (मन) को नियंत्रित करने, अहंकार के दमन और आत्म-संयम पर जोर देते हैं। उनका सन्देश यह है कि जब तक मनुष्य अपने भीतर की वासनाओं और स्वार्थ पर नियंत्रण नहीं करता, तब तक सच्ची आध्यात्मिक उन्नति और ईश्वर-प्राप्ति सम्भव नहीं होती।

तया का लहा पाइआ जा मनु होरे मुहम्मद जोरु ।।
तइआ का लहा पाइआ जा मनु होरे मुहम्मद जोरु ।।

अनुवाद-

"इन्सान को (परमात्मा की प्राप्ति का) लाभ तब मिलता है, जब वह अपने मन को हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा दिखाई गई रुहानी ताक़त और शिक्षाओं के ज़रिये विकारों से रोकता है"। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग **950**)

राग भैरो (महला 1)

यहाँ गुरु नानक जी ईश्वर की इच्छा और पैग़म्बर की महानता का वर्णन करते हैं-

नानक मुहमुदु तसु करही जिसु भावै सोई ।।
नानक मुहमुदु तसु करही जिसु भावै सोई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग **1153**)

अनुवाद-

नानक कहते हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्रशंसा और उनकी महानता को वही पहचान सकता है, जिस पर वह परमात्मा स्वयं प्रसन्न हो।

● रामधारी सिंह दिनकर जी-

रामधारी सिंह दिनकर (दिनकर जी) जो एक प्रसिद्ध हिन्दू कवि थे,

उन्होंने "मुहम्मद" शीर्षक से एक दीर्घ कविता लिखी, जिसमें उन्होंने इस्लाम के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नैतिक महानता, क्रांतिकारी व्यक्तित्व और करुणा (रहमत) की भरपूर सराहना की है।

विश्व को देकर नया विधान, उठे मुहम्मद मानवता के प्राण।
अंधकार में दीप बने, दीनों के रक्षक, शोषितों के त्राण ।।

(रामधारी सिंह दिनकर कविताः "मुहम्मद" संग्रहः परशुराम की प्रतीक्षा/ चयनित कविताओं के संकलन, प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)

● श्री गुरु ग्रंथ साहिब-

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंग (पृष्ठ) 1160 पर राग भैरौ (Bhairao Raag) के अन्तर्गत गुरु नानक देव जी का एक पद अंकित है, जिसमें वह फ़रमाते हैं-

एक अलह समा भेदर सांचे खेल दिखाया।।
बाबा नूर अलह अलह नूर समाया ।।

अनुवाद-

"एक अल्लाह ही सच्चा है और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसके सत्य पैग़म्बर हैं, जिनके माध्यम से यह सम्पूर्ण ब्रह्मांडीय व्यवस्था स्थापित है। हे बाबा! न अल्लाह मरता है और न ही वह (पैग़म्बर का नूर) कभी नष्ट होता है"।

नोट-

यहाँ 'मम्मा/मम्वा' शब्द प्राचीन पंजाबी/हिन्दी बोलियों में "मुहम्मद" के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो उस दौर के सूफियाना काव्य में सामान्य रूप से मिलता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण संदर्भ (जनम साखी) में गुरु नानक देव जी की जीवनी "जनम साखी" (Janam Sakhi) में मक्का की यात्रा के दौरान गुरु नानक जी और वहाँ के पीरों के बीच हुई बातचीत में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की महानता का उल्लेख मिलता है।

कली मिह मित मुहम्मद होइ।

बिनु मुहम्मद मुक्ति न कोईम ।।

अनुवाद-

"इस युग (कलियुग) में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षाएँ ही बुद्धि और विवेक का सही मार्ग दिखाती हैं और उनकी (अनुसरण) के बिना मुक्ति सम्भव नहीं है"।

पूर्ण सन्दर्भ (Reference Detail) : स्रोतः आदि ग्रंथ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) रागः भीरउ (Bhairao Raag) अंग (पृष्ठ): 1160 खंड/पदः प्रथम (1) — (अर्थात गुरु नानक देव जी का काव्य)

● मलिक मुहम्मद जायसी—पद्मावत (मानसखण्ड)

जायसी ने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सृष्टि की रचना का कारण और मार्गदर्शन का सूर्य बताया है। उनके अनुसार आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़ात से ही सृष्टि को अर्थ मिलता है और मानवता को हिदायत की रौशनी प्राप्त होती है।

पुनि पठयउ मुहम्मद अवतारा।
पावन दीन कीन्ह उजियारा ।।
कइ के जोति जगत उजियारा।
कीन्ह परगट सब खेलु तुम्हारा ।।
दीन्ह असीस मुहम्मद जोती।
उपने अरथ धरति महि मोती ।।
पंथ कतहुँ कोउ भूलै नाहिं।
राहु देखाय दीन्ह जग माहीं ।।

अनुवाद-

"फिर अल्लाह ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेजा, जिन्होंने अपने पवित्र धर्म के द्वारा सृष्टि को प्रकाश से भर दिया। (हे प्रभु!) आपने उनके नूर से संसार को आलोकित किया और अपनी कुद्रत के समस्त कार्य (सृष्टि) को उनके माध्यम से प्रकट किया।

अल्लाह ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नूर को ऐसी बरकत प्रदान की कि धरती

पर ज्ञान और सत्य के मोती उत्पन्न हुए ताकि संसार में कोई भी मार्ग से न भटके, इसलिए आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पूरी दुनिया को सत्य का मार्ग दिखा दिया"।

(मलिक मुहम्मद जायसी, पद्मावत भक्ति काल, **1540** ई०)

रसखान (17 वीं शताब्दी)-

रसखान यद्यपि कृष्ण-भक्ति के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं, तथापि उन्होंने अपनी रचनाओं में अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की महानता का भी स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है। यह तथ्य भक्ति काल की उस समन्वयात्मक परम्परा को दर्शाता है, जिसमें विभिन्न धार्मिक धाराएँ सत्य, प्रेम और करुणा के साझा मूल्यों पर एक-दूसरे से जुड़ती दिखाई देती हैं।

सबै बिधि मानुष ह्वै है वही, जो पै गाहक है गुन कीरति को।
कहै रसखान वही रसखानि, जो जानत है रस प्रीति को ।।
नबी को सरूप निहारि सकै, जो पै चख है मुख जोति को।
वही है मुसलमान जो मानत है, फरमान को पाक रसूल की पौ।।

अनुवाद-

"मनुष्य वही है जो गुणों और कीर्ति (यश) की कद्र करना जानता हो। रसखान कहते हैं कि प्रेम के रस को वही पहचानता है, जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मुख-मंडल के नूर को देख सके। सच्चा मुसलमान वही है, जो पवित्र रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आदेशों का पालन करे और उनके पदचिह्नों पर चले।

(ग्रंथ रसखान रत्नावलीय संस्करण बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन/नागरी प्रचारिणी सभा)

रसखान का एक अन्य-

सिफ़त मुहम्मद की कहैं, जो जगु मानत पीर।
तिनकी पद रज जो गहै, सोई होय फकीर ।।
दोऊ जगत के सिर धरे, अल्ला के महबूब।
रसखान बखानै का कहै, छवि देखत ही खूब ।।

अनुवाद- "मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की स्तुति (गुणगान) करता हूँ जिन्हें समूचा संसार पीर (मार्गदर्शक) मानता है। जो उनके चरणों की धूल को थाम लेता है, वही सच्चा फ़क़ीर (महापुरुष) बनता है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दोनों लोकों के शिरोमणि और अल्लाह के प्रिय हैं। रसखान उनकी कैसी स्तुति करें उनकी सौंदर्य-छवि (जमाल) ही इतनी अनुपम है"।

(ग्रंथः रसखान रत्नावलीय संस्करण बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन/ नागरी प्रचारिणी सभा)

● महाकवि भूषण (1613–1712)

यद्यपि महाकवि भूषण छत्रपति शिवाजी महाराज के दरबारी कवि थे, फिर भी उन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में उस समय के सामाजिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य के भीतर इस्लाम के पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शक्ति, प्रभाव और प्रतिष्ठा का उल्लेख किया है।

यह तथ्य भक्ति और वीर-काव्य की उस व्यापक परम्परा को दर्शाता है, जिसमें महान व्यक्तित्वों की नैतिक शक्ति और ऐतिहासिक प्रभाव को सम्प्रदायगत सीमाओं से ऊपर रखकर सराहा गया।

कुंभकरन असुर गयंद जैसो गरुअ बर,
ताको बलु देखि देव-राजु डरि भागे हैं।
कहै कवि भूषन त्यों दिल्ली-पति पातसाह,
साहिब मुहम्मद के जोर आगे जागे हैं ।।

अनुवाद-

"जिस प्रकार महान योद्धाओं की शक्ति को देखकर बड़े-बड़े वीर भी भयभीत हो जाते हैं, उसी प्रकार दिल्ली के राजा और संसार के शासक भी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आध्यात्मिक शक्ति के सामने जागरुक और नतमस्तक हो गये हैं"। (ग्रंथः भूषण ग्रंथावली, अध्यायः शिवराज भूषण)

● महाकवि भूषण-

महाकवि भूषण ब्रजभाषा के अत्यन्त प्रसिद्ध और प्रभावशाली कवि थे।

उन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वैभव, तेजस्विता और सत्यता का उल्लेख किया है।

यह उनके व्यापक दृष्टिकोण और उस युग की साहित्यिक परम्परा का प्रमाण है, जिसमें महान व्यक्तित्वों की नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति को सम्प्रदायगत सीमाओं से ऊपर रखकर सराहा गया।

कठिन कुरा करि कै कलि काल में, दीन कयौं जाहिर
जहानु मानि लीन है। साह़िब मुह़म्मद सों पाइ कै सिफारिस
को, अल्ला हु कनी निवाजि दीन कीन है।। भूषन भनत
पातसाह पातिसाहन के, साह़िब के नाम सों सपरद जी न
कीन है। साह़िब मुह़म्मद के जोर के अगाऊ देखि,
सातों ही विलायतिन सीस नाय दीन है।।

अनुवाद-

(आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने) उस कठिन समय में धर्म को इस प्रकार प्रकट किया कि पूरी दुनिया ने उसे स्वीकार कर लिया।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की दुआ के कारण ही अल्लाह तआला ने अपना विशेष अनुग्रह और कृपा प्रदान की।

भूषण कहते हैं कि राजाओं के राजा भी इस 'साह़िब' (मुह़म्मद) (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नाम के आगे अपना हृदय समर्पित कर देते हैं।

साह़िब-ए-मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आध्यात्मिक शक्ति को देखकर सातों विलायतों (अर्थात संपूर्ण संसार) ने अपना मस्तक झुका दिया है।

(ग्रंथः भूषण ग्रंथावली, अध्यायः शिवराज भूषण)

सारांश

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की महानता, नैतिक आदर्श, आध्यात्मिक स्थान और मानवता के लिए रह़मत होना केवल इस्लामी या अ़रबी परम्परा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि भारतीय

उपमहाद्वीप की भक्ति काल और हिन्दी साहित्यिक परम्परा में भी इसके स्पष्ट और सशक्त प्रमाण मिलते हैं।

भक्तिकाल के सूफ़ी-संवेदनशील कवि कबीर ने अपनी वाणी में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सच्चा मार्गदर्शक, सत्य का पथ दिखाने वाला और दैवी नूर का प्रकटीकरण बताया तथा अल्लाह और राम की एकता के संदर्भ में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के संदेश को प्रस्तुत किया, जिसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी सुरक्षित रखा गया है।

इसी प्रकार मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मार्गदर्शन का सूर्य और सृष्टि-प्रकटीकरण का कारण बताया। वहीं रसखान, महाकवि भूषण और अन्य ग़ैर-मुस्लिम कवियों ने अपने-अपने वैचारिक और साहित्यिक शैलियों में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आध्यात्मिक शक्ति, नैतिक क्रांति और वैश्विक प्रभाव को स्वीकार किया।

आधुनिक युग में रामधारी सिंह दिनकर जैसे हिन्दू कवि ने भी अपनी कविता "मुहम्मद" में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कोमानवता का पुनर्जीवन करने वाला और अंधकार में दीपक के रूप में प्रस्तुत किया।

यह सभी साक्ष्य इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि भक्ति काल और हिन्दी कविता में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को एक सार्वभौमिक नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में देखा गया, जिनकी महान हस्ती हर धर्म, हर संस्कृति और हर भाषा में सम्मान और श्रद्धा का केंद्र बनी रही है।



भाग-9

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) प्रसिद्ध ग़ैर मुस्लिम इतिहासकारों की दृष्टि में

प्रसिद्ध ग़ैर-मुस्लिम भाईयों की दृष्टि में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का वैश्विक स्थान उन पश्चिमी विद्वानों की गवाहियों से अत्यन्त स्पष्ट हो जाता है, जो धार्मिक पूर्वाग्रह से हटकर इतिहास, नैतिकता और सभ्यता के मानकों पर व्यक्तित्वों का मूल्यांकन करते हैं।

● माइकल एच० हार्ट ने अपनी पुस्तक **The 100** में उन्हें प्रथम स्थान इसलिए दिया कि उन्होंने एक साथ धार्मिक और सांसारिक (सामाजिक व राजनीतिक) दोनों स्तरों पर असाधारण, व्यापक और स्थायी प्रभाव डाला।

● लामार्टीन ने उनकी महानता को "उच्च लक्ष्य, सीमित साधन और आश्चर्यजनक परिणाम" के मानदंड पर अद्वितीय बताया।

● गिबन ने इस्लाम के एकेश्वरवाद और क़ुर्आन की शिक्षाओं को बौद्धिक अस्पष्टता से मुक्त माना और कार्लाइल जैसे चिंतकों ने उन पर लगाये गये "छल या बनावट" के आरोपों को अस्वीकार करते हुए उनकी सत्यनिष्ठा, निष्ठा और संदेश की वास्तविक प्रभावशीलता को रेखांकित किया।

परिवर्तित शक्ति-

इस समग्र चित्र से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि उनकी दअ़वत केवल एक धार्मिक आन्दोलन नहीं थी, बल्कि इतिहास की नैतिक, सामाजिक और बौद्धिक धाराओं को परिवर्तित करने वाली एक शक्ति बन गई।

इसी प्रकार अन्य ग़ैर-मुस्लिम लेखकों ने उनके व्यक्तित्व की 'सर्वकालिक' और 'वैश्विक' स्वीकृति की ओर संकेत किया है।

● डॉ० लाइटनर के अनुसार इस्लाम की स्थिरता का रहस्य स्वयं पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ऐसे व्यक्तित्व में निहित है, जो हर युग में कथन और आचरण —

दोनों दृष्टियों से स्वीकार्य रहा है और इतिहास साक्षी है कि यह आकर्षण घटा नहीं, बल्कि बढ़ता गया।

● स्टुअर्ट ने मुसलमानों की दैनिक उपासना (विशेषतः नमाज़) को इस धर्म की जीवंतता और पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के निरन्तर प्रभाव का प्रतीक माना।

● 'लेन-पूल' ने उनकी करुणा, शत्रुओं और युद्ध-बंदियों के साथ उत्तम व्यवहार तथा बच्चों और निर्बलों के प्रति प्रेम को नैतिक महानता का प्रमाण बताया।

● लेबॉन ने उनकी गम्भीरता, दृढ़ संकल्प और वैचारिक पवित्रता का उल्लेख किया।

● गाँधी जी ने इस्लाम के प्रसार को तलवार के बजाय नैतिकता, सादगी और वचन-पालन से जोड़ा और समानता को उसकी व्यावहारिक शक्ति बताया।

● ब्रिटानिका और अन्य स्रोतों में उनकी औपचारिक शिक्षा के अभाव के बावजूद उनके क्रांतिकारी संदेश की व्याख्या मिलती है।

जबकि 'बर्नार्ड शॉ' और 'रॉडवेल' जैसे विचारकों ने उनकी नेतृत्व-शक्ति और आध्यात्मिक सामर्थ्य को मानव समस्याओं को प्रभावित करने वाली असाधारण शक्ति बताया।

माइकल एच०हार्ट (Michall H. Hart) की दृष्टि में-

अमेरिका से प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक द हन्डरेड (The 100) मानव इतिहास पर गहरा प्रभाव डालने वाली सौ महान व्यक्तियों का परिचय प्रस्तुत करती है।

इस पुस्तक के लेखक माइकल एच० हार्ट धार्मिक दृष्टि से ईसाई थे और शैक्षणिक व पेशेवर रूप से एक वैज्ञानिक (खगोल शास्त्री) थे। इसके बावजूद उन्होंने अपनी निष्पक्ष और स्वतंत्र शोध के आधार पर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इस सूची में पहला स्थान दिया।

सर्वोच्च स्थान- लेखक ने स्पष्ट किया है कि उन्होंने न तो हज़रत ईसा

(अ़लैहिस्सलाम) को और न ही न्यूटन या किसी अन्य वैज्ञानिक अथवा ग़ैर-वैज्ञानिक महान व्यक्ति को पहले स्थान पर रखा।

बल्कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इसलिए सर्वोच्च स्थान दिया, क्योंकि उन्होंने मानव इतिह़ास पर सबसे व्यापक और स्थायी प्रभाव डाला। उनके अनुसार यह प्रभाव केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक और सभ्यतागत स्तर पर भी अत्यंत स्पष्ट और गहरा है।

"He was the only man in history who was supremely successful on both the religious and secular levels.''

(Michael H. Hart, The 100: A Ranking of the Most Influential Persons in History,New York: Hart Publishing Company, 1978, P. 33 (Introduction & Muhammad chapter)

अनुवाद-

"लेखक के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मानव इतिह़ास की वह एकमात्र महान हस्ती हैं, जिन्होंने धार्मिक और सांसारिक (राजनीतिक तथा सामाजिक) दोनों स्तरों पर असाधारण और पूर्ण सफ़लता प्राप्त की। यही सर्वांगीण सफ़लता और व्यापक प्रभाव उन्हें सभी ऐतिह़ासिक व्यक्तियों में विशिष्ट और श्रेष्ठ बनाता है।

डॉ० लाइटनर (Leitner) की दृष्टि में-

प्रसिद्ध प्राच्यविद् विद्वान गॉटलिब विल्हेल्म लाइटनर (डॉ० लाइटनर) अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **Muhammad and the Religious System of the World** में इस मूल प्रश्न पर चर्चा करते हैं कि दुनिया में अनेक धर्म आए, लेकिन समय के साथ उनकी मूल शिक्षाएँ या तो विकृत हो गईं या पूरी तरह़ समाप्त हो गईं तो फिर यह कैसे सम्भव है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा प्रस्तुत धर्म की शिक्षाएँ आज तक सुरक्षित और जीवित बनी रहीं?

डॉ० लाइटनर के अनुसार इस प्रश्न का उत्तर पूरी तरह़ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की व्यक्तित्व में निहित है।

यदि कोई व्यक्तित्व अपने कथन और आचरण के आधार पर हर युग में

स्वीकार्य बना रहता है, तो उसी व्यक्तित्व के माध्यम से आया हुआ धार्मिक तंत्र भी जीवंत और प्रभावशाली बना रहता है और यदि मान लें कि किसी समय वह व्यक्तित्व लोगों में स्वीकार्य न रहे, तो उस धर्म के अस्तित्व पर भी संकट आ सकता है, लेकिन इतिहास इसके ठीक विपरीत साक्ष्य देता है।

"Many religions have appeared in the world whose original teachings have been lost. The question therefore arises: how long will the religion brought by Muhammad endure? The answer lies wholly in the personality of Muhammad. If that personality remains acceptable to all ages in word and deed, the religion founded upon it will endure; and if it ceases to be acceptable, the same fate will follow. The truth is that there is in Muhammad's personality a charm and attraction which will never diminish, but will rather grow with the progress of mankind".

(G. W. Leitner, Muhammad and the Religious System of the World, London, 1908, Page 21–-22)

अनुवाद-

"दुनिया में अनेक धर्म आए लेकिन उनकी मूल शिक्षाएँ सुरक्षित न रह सकीं। इसलिए प्रश्न यह है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जो धर्म लेकर आए, वह कब तक बना रहेगा? इसका उत्तर पूरी तरह हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की व्यक्तित्व में निहित है।

यदि यह व्यक्तित्व अपने कथन और आचरण के आधार पर हर युग में स्वीकार्य बना रहा, तो उनके द्वारा स्थापित किया गया धर्म भी बना रहेगा और यदि यह स्वीकार्यता समाप्त हो जाए तो उसी के अनुरूप परिणाम सामने आएगा।

वास्तविकता यह है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की व्यक्तित्व में ऐसी आकर्षण और प्रभावशीलता है जो कभी कम नहीं होगी, बल्कि मानवता की प्रगति के साथ-साथ निरन्तर बढ़ती चली जाएगी।

आर० डी० ब्ल्यूएट स्टुअर्ट की दृष्टि में-

प्रसिद्ध लेखक आर० डी० ब्ल्यूएट स्टुअर्ट **(R.D. Bluett Stewart)** अपनी

प्रसिद्ध पुस्तक "Islam and Its Founder" में इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का प्रभाव केवल ऐतिहासिक या सैद्धांतिक नहीं है, बल्कि व्यावहारिक रूप से आज भी पूरी दुनिया में जीवित और सक्रिय है। वह मुसलमानों की दैनिक अ़िबादत—विशेष रूप से नमाज़ को इस धर्म की जीवंतता और सत्यता का स्पष्ट प्रमाण मानते हैं।

"The presence of Muhammad is seen everywhere. Five times a day in Delhi, the Hijaz, Kabul, Iran, Egypt and Syria—indeed in every part of the world—when we see Muslims at prayer, we must admit that the religion of Muhammad is true, alive, and will remain alive."

(R. D. Bluett Stewart, Islam and Its Founder, London, early 20th century, page 29)

अनुवाद-

"मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की छाप हर जगह देखी जा सकती है। दिल्ली, हिजाज, काबुल, ईरान, मिस्र और शाम में बल्कि दुनिया के हर ह़िस्से में जब हम दिन में पाँच बार मुसलमानों को नमाज़ पढ़ते हुए देखते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना पड़ता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का धर्म सच्चा है, जीवित है और सदा जीवित रहेगा"।

ला मार्टिन की दृष्टि में-

फ्रांसीसी इतिहासकार, कवि और राजनीतिज्ञ अल्फ़ॉन्स दे ला मार्टिन **Alphonse de Lamartine** ने अपनी प्रसिद्ध ऐतिहासिक कृजि **Histoire de la Turquie** में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की महानता को अत्यंत असाधारण और निर्णायक शब्दों में प्रस्तुत किया है।

ला मार्टिन मानव महानता को परखने के लिए जो मानदंड निर्धारित करते हैं, वे हैं: उद्देश्य की उच्चता, साधनों की कमी और उन्हीं सीमित साधनों के बावजूद आश्चर्यजनक परिणाम। इन सभी कसौटियों पर वह हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मानव इतिहास की एक अद्वितीय और अनुपम व्यक्तित्व घोषित करते हैं।

"If greatness of purpose, smallness of means, and astounding results

are the three criteria of human genius, who could dare to compare any great man in modern history with Muhammad? ...As regards all standards by which human greatness may be measured, we may well ask, is there any man greater than he?.''

(Alphonse de Lamartine, Histoire de la Turquie, Paris, 1854, Vol. II, pp. 276–-277)

अनुवाद-

"यदि उच्च लक्ष्य की महानता, साधनों की कमी और उन सीमित साधनों के बावजूद चौंका देने वाले परिणाम मानव क्षमता को परखने के मापदंड हैं, तो वर्तमान इतिहास में ऐसा कौन है जो किसी महान व्यक्ति की तुलना हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से करने का साहस कर सके? और जहाँ तक उन सभी मानकों का प्रश्न है जिनसे मानवीय महानता को मापा जाता है, तो हम उचित रूप से पूछ सकते हैं। क्या संसार में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बड़ा भी कोई मनुष्य है"?

एडवर्ड गिबन (Gibbon) की दृष्टि में-

"प्रसिद्ध ब्रिटिश इतिहासकार ईसाई एडवर्ड गिबन ने अपनी विश्व-प्रसिद्ध कृति **The Decline and Fall of the Roman Empire** में इस्लाम के एकेश्वरवाद (तौहीद) और इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा प्रस्तुत धार्मिक व्यवस्था का अत्यन्त गम्भीर और निष्पक्ष रूप से वर्णन किया है।

गिबन के अनुसार मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा दिया गया धर्म-सिद्धान्त बौद्धिक विरोधाभासों और संदेहों से मुक्त है और पवित्र कुर्आन एक ईश्वर की एकता की महान घोषणा है"।

"The creed of Mahomet is free from suspicion or ambiguity; and the Koran is a glorious testimony to the unity of God."

(Edward Gibbon;The History of the Decline and Fall of the Roman Empire, London, 1776–1788, Vol. V, Chapter L, p. 487)

अनुवाद-

"मुहम्मद द्वारा प्रस्तुत किया गया विश्वास हर प्रकार के संदेह, शंका और

अस्पष्टता से मुक्त है और क़ुर्आन अल्लाह की एकता का एक भव्य और उज्ज्वल प्रमाण है"।

नोट–

यह उद्धरण पश्चिमी इतिहास-लेखन में इस्लामी एकेश्वरवाद के समर्थन में दी गई अत्यंत विश्वसनीय ग़ैर-मुस्लिम गवाहियों में गिना जाता है। गिबन यद्यपि ईसाई पृष्ठभूमि से सम्बन्धित था, फिर भी उसने बौद्धिक ईमानदारी के साथ क़ुर्आन और इस्लाम के मूल सिद्धान्त को एक स्पष्ट और तार्किक व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया। प्राच्य (ओरिएंटल) साहित्य में इस संदर्भ को हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी और क़ुर्आनी संदेश की वैचारिक स्पष्टता के प्रमाण के रूप में बार-बार उद्धृत किया जाता है।

हिगिन्स (Higgins) की दृष्टि में–

अंग्रेज़ शोधकर्ता और लेखक गॉडफ़्री हिगिन्स Godfrey Higgins ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक An Apology for Mohammed में इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ईमान, विश्वास और सत्य के संदेश की सच्चाई को अत्यन्त प्रभावशाली शब्दों में वर्णित किया है। उनके अनुसार अल्लाह पर इतना पूर्ण भरोसा और अपनी शिक्षाओं की सत्यता पर इतनी गहरी अंतदृष्टि इतिहास में किसी अन्य व्यक्तित्व को प्राप्त नहीं हुई।

"No other person can produce an example of such confidence in God and such conviction of the truth of his mission as Muhammad. He proved himself to be the messenger of God; a fact unparalleled in history, either before or after."

(Godfrey Higgins, An Apology for Mohammed,London, 1829, pp. 27–28)

अनुवाद–

"अल्लाह पर जैसा भरोसा और अपने संदेश की सच्चाई पर जैसा अटूट विश्वास मुहम्मद को था, उसकी मिसाल कोई दूसरा व्यक्ति पेश नहीं कर सकता। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह सिद्ध कर दिया कि वह अल्लाह के भेजे हुए रसूल हैं। यह ऐसी घटना है जो इतिहास में न पहले मिलती है और न बाद में"।

स्टैनली लेन-पूल की दृष्टि में-

प्रसिद्ध ओरिएंटलिस्ट और इतिहासकार स्टैनली लेन-पूल ने अपनी कृति **Studies in a Mosque** में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यावहारिक जीवन को पूर्णतः दया, मानवता और उच्च नैतिकता का आदर्श बताया है — विशेष रूप से शत्रुओं, युद्ध-बंदियों, गुलामों और बच्चों के साथ उनके उत्तम व्यवहार को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया है"।

"Muhammad was from head to foot a man of mercy. Consider his treatment of prisoners of war; who ever showed such kindness to his enemies? His gentleness to slaves and companions, his love for children, and his entry into Mecca as a conqueror—these and countless incidents bear witness that cruelty and oppression had no place in his life."

(Stanley Lane-Poole,Studies in a Mosque,London: T. Fisher Unwin, 1893 , Page 46–48)

अनुवाद-

"मुहम्मद सिर से पाँव तक दया के प्रतीक थे। युद्ध-बंदियों के साथ उनके व्यवहार को देखिये, क्या कोई अपने शत्रुओं के साथ ऐसा उत्तम व्यवहार करता है?

गुलामों और साथियों के प्रति उनकी कोमलता, बच्चों से उनका प्रेम और विजेता के रूप में मक्का में उनका प्रवेश और ऐसी असंख्य घटनाएँ इस बात की गवाही देती हैं कि अत्याचार और अन्याय का मुहम्मद के जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं था"।

डॉ० गुस्ताव लेबॉन की दृष्टि में-

फ्रांसीसी इतिहासकार, समाजशास्त्री और मनोवैज्ञानिक गुस्ताव ले बॉन **(Gustave Le Bon)** ने अपनी प्रसिद्ध कृति **La Civilisation des Arabes** (जिसे उर्दू/अंग्रेज़ी में सामान्यतः इस्लाम का कल्चर/ **The Civilization of the Arabs** कहा जाता है) में इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यक्तित्व को गंभीरता, दृढ़ संकल्प, परिश्रम, धैर्य और वैचारिक पवित्रता का आदर्श बताया

है, साथ ही उन्होंने चमत्कारों के इन्कार या जादूगरी के आरोप को स्पष्ट मूर्खता कहा है"।

"Muhammad was extremely serious, sparing of words, and possessed of a strong will. He was as laborious as he was patient and enduring. His ideas were of the utmost purity. The miracles attributed to him—such as the splitting of the moon or the return of the sun—were divine in nature. To describe Muhammad as a magician is, in my view, sheer folly."

(Gustave Le Bon,La Civilisation des Arabes,Paris, 1884, (English tr. The Civilization of the Arabs), Chapter on Islam and its Founder)

अनुवाद-

"मुहम्मद अत्यंत गंभीर, कम बोलने वाले और दृढ़ इच्छाशक्ति के धनी थे। वे जितने परिश्रमी थे, उतने ही धैर्यवान और सहनशील भी थे, उनके विचार अत्यंत स्पष्ट और पवित्र थे।

उनसे सम्बन्धित चमत्कार जैसे चाँद का दो टुकड़े होना या सूर्य का फिर से प्रकट होना दैवी चमत्कारों के रूप में वर्णित किये जाते हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जादूगर कहना मेरे विचार में पूर्णतः मूर्खता है"।

जॉन डेवनपोर्ट की दृष्टि में-

ब्रिटिश लेखक जॉन डेवनपोर्ट (John Davenport) ने अपनी पुस्तक An Apology for Mohammed and the Koran में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सच्चाई और निष्कपटता का सबसे बड़ा प्रमाण यह बताया है कि सबसे पहले ईमान लाने वाले उनके अपने घर के लोग और निकट सम्बंधी थे। वह लोग जो उनके घरेलू जीवन से भली-भाँति परिचित थे"।

"One of the strongest proofs of the sincerity of Muhammad is that the first converts to his faith were his own household and nearest relatives, who were best acquainted with his private life. Had there been any falsehood or hypocrisy, they would have been the first to oppose him. Among all rulers and conquerors there is not one

whose character was more pure and truthful than that of Muhammad."

(John Davenport, An Apology for Mohammed and the Koran,London, 1869, Page 21–2-23)

अनुवाद-

"मुहम्मद की सच्चाई और निष्कपटता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि सबसे पहले ईमान लाने वाले उनके अपने घर के लोग और निकट सम्बंधी थे, जो उनके निजी और पारिवारिक जीवन से भली-भाँति परिचित थे। यदि उनमें किसी प्रकार की बनावट या कपट होता, तो वही लोग सबसे पहले विरोध करते। सभी शासकों और विजेताओं में एक भी ऐसा नहीं है जिसका आचरण और चरित्र हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अधिक पवित्र और सच्चा हो"।

मार्क्स डॉड्स की दृष्टि में-

तुलनात्मक धर्म पर लिखी गई पुस्तक **Muhammad, Buddha and Christ** के लेखक मार्क्स डॉड्स **(Marcus Dods)** हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नैतिक चरित्र और मानव सेवा के पहलुओं का अत्यन्त श्रद्धा और सम्मान के साथ वर्णन करते हैं। उनके अनुसार इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यक्तित्व में सांसारिक पद और प्रतिष्ठा का कोई महत्व नहीं था, बल्कि उनका जीवन पूर्णतः शांति, कल्याण और मानवता की भलाई का स्रोत था"।

Muhammad's character was of the highest moral excellence. Worldly greatness had little attraction for him; all found access to his presence. With the fullest sincerity we declare that his personality was a source of comfort, welfare and beneficence. He was noble in conduct and pure in heart; his firmness and patience irresistibly win the heart, and we feel for his august personality a deep reverence and respect.

(Muhammad, Buddha and Christ,London, early 20th century, Page 54–-56)

अनुवाद-

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नैतिक चरित्र अत्यंत उच्च था। सांसारिक महानता उनके लिए कोई महत्व नहीं रखती थी। हर व्यक्ति को उनकी सेवा में पहुँचने का

अवसर मिलता था।

हम पूरी सच्चाई के साथ कहते हैं कि उनका व्यक्तित्व आराम, शांति और कल्याण का स्रोत था। वे अत्यन्त सदाचारी और निर्मल हृदय वाले थे। उनकी गंभीरता और सहनशीलता हृदय को गहराई से आकर्षित करती है और हमारे दिल में उनकी सम्मानित व्यक्तित्व के लिए गहरा आदर और श्रद्धा है।

गाँधी जी की दृष्टि में-

भारतीय उपमहाद्वीप के महान नेता महात्मा गांधी ने इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जीवन का अध्ययन करने के बाद इस्लाम की आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति को अत्यंत स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया। उन्होंने इस विचार का दृढ़ता से खंडन किया कि इस्लाम तलवार के बल पर फैला था, बल्कि उन्होंने इसे नैतिकता, सादगी और उत्कृष्ट चरित्र की विजय बताया।

"I wanted to know the best of the life of one who holds today an undisputed sway over the hearts of millions of mankind...I became more than ever convinced that it was not the sword that won a place for Islam in those days in the scheme of life. It was the rigid simplicity, the utter self-effacement of the Prophet, the scrupulous regard for his pledges, his intense devotion to his friends and followers, his intrepidity, his fearlessness, his absolute trust in God and in his own mission".

(M. K. Gandhi,Young India,Ahmedabad, 1924, (Article on Islam and the Prophet Muhammad)

अनुवाद-

"मैं पहले से भी अधिक इस बात के लिए आश्वस्त हो गया हूँ कि उस समय जीवन-व्यवस्था में इस्लाम को जो स्थान मिला, वह तलवार के बल पर नहीं था, बल्कि पैग़म्बर-ए-इस्लाम हज़रत मुहम्मद की अद्वितीय सादगी, पूर्ण निःस्वार्थता, वचनों के कठोर पालन, अपने मित्रों और अनुयायियों के प्रति गहरे प्रेम, निर्भीकता, साहस और अल्लाह पर पूर्ण विश्वास के कारण था"।

इसी प्रकार गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका के संदर्भ में इस्लाम की नस्ली

समानता और मानवीय बराबरी को यूरोपीय उपनिवेशवाद के भय का वास्तविक कारण बताया। उनके अनुसार इस्लाम वह धर्म है जो व्यवहारिक रूप से मनुष्य को मनुष्य के बराबर खड़ा करता है।

"Some friends have told me that the Europeans in South Africa dread the advent of Islam. They fear not Islam but the fact that if the African natives accept Islam, they will demand equality with the white races...A convert to Islam is immediately admitted to complete social equality with his co-religionists."

(M. K. Gandhi,Collected Works of Mahatma Gandhi (CWMG),Vol. 21,Government of India Publications, 1926, page 246–-248)

अनुवाद-

"कुछ मित्रों ने मुझसे कहा कि दक्षिण अफ्रीका में यूरोपीय लोग इस्लाम के प्रसार से भयभीत हैं, लेकिन वास्तव में वे इस्लाम से नहीं डरते, बल्कि इस बात से डरते हैं कि यदि अफ्रीका के मूल निवासियों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया तो वे श्वेत लोगों के बराबर होने का अधिकार माँगने लगेंगे। इस्लाम स्वीकार करने वाला व्यक्ति तुरन्त अपने सह-धर्मियों के साथ पूर्ण सामाजिक समानता प्राप्त कर लेता है"।

एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार-

दुनिया के सबसे विश्वसनीय और निष्पक्ष ज्ञानकोशों में गिनी जाने वाली पुस्तक "एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका" के लेखकों ने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यक्तित्व, बौद्धिक स्थान और कुर्आनी वह्य (प्रकाशना) पर चर्चा करते हुए इस तथ्य को प्रमुखता से बताया है कि वे स्वभावतः गहरी दूरदर्शिता और असाधारण बुद्धिमत्ता के धनी थे, जबकि वे औपचारिक शिक्षा, पढ़ने-लिखने और कविता जैसे प्रचलित ज्ञान से पूर्णतः अनभिज्ञ थे। ब्रिटानिका इस बात पर ज़ोर देती है कि इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उम्मी थे। न वे पढ़ना जानते थे और न लिखना और अरबी काव्य-कला से भी इतने अपरिचित थे कि वे बिना त्रुटि के एक पूरा शेअर भी नहीं सुना सकते थे। इसी सत्य की ओर स्वयं पवित्र कुर्आन ने भी स्पष्ट संकेत किया है।

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنبَغِي لَهُ ۔(سورہ یٰسین:69)

अनुवाद-

"और हमने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को कविता नहीं सिखाई और न ही कविता उनके लिए उपयुक्त है"। (सूरः यासीनः 69)

"Muhammad was entirely unacquainted with poetry and the art of writing; indeed he was illiterate. He had received no instruction in the religious systems of the world. And yet, from this unlettered man arose a body of doctrine which revolutionized the religious, social, and political life of a large part of mankind."

(Encyclopaedia Britannica, Article: Muhammad and Islam/Muhammad,11th Edition,Cambridge University Press, 1910– , Vol. 18, page 635-640)

अनुवाद-

"मुहम्मद कविता और लेखन की कला से बिल्कुल अनभिज्ञ थे, वास्तव में वे पूर्णतः अनपढ़ (उम्मी) थे। उन्होंने संसार के किसी भी धार्मिक तंत्र की औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। इसके बावजूद इसी अशिक्षित व्यक्तित्व से एक ऐसा सम्पूर्ण जीवन-विधान प्रकट हुआ, जिसने मानवता के एक बड़े हिस्से के धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में क्रांति ला दी"।

म्यूलर (Muller) की दृष्टि में-

एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के लेख "मुहम्मद और उनका धर्म" के संदर्भ में एक प्रतिष्ठित ईसाई विचारक म्यूलर (Müller) का अत्यंत विचारोत्तेजक तर्क उद्धृत किया गया है। वे उन लोगों से प्रश्न करते हैं जो हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पैग़म्बर मानने से इन्कार करते हैं, फिर भी इस्लामी आन्दोलन के असाधारण प्रसार की कोई तर्कसंगत व्याख्या प्रस्तुत करने में असमर्थ हैं।

How could a religious illumination, which though it arose from the desert, spread with such marvellous rapidity over the whole of Asia, have proceeded from a heart in which there was no warmth?"

(Encyclopaedia Britannica, Article: "Muhammad and Islam",11th Edition, Cambridge University Press, 1910, Vol. 18, page 639)

अनुवाद-

"यह कैसे सम्भव है कि एक धार्मिक प्रकाश, जो भले ही रेगिस्तान से उठा हो, इतने कम समय में अत्यंत अद्‌भुत और आश्चर्यजनक ढंग से पूरे एशिया में फैल गया हो। यदि वह ऐसे हृदय से निकला होता जिसमें उसके लिए कोई ऊष्मा (सच्चाई और निष्कपटता) न होती"?

थामस कार्लाइल (Thomas Carlyle) की दृष्टि में-

ब्रिटिश चिंतक, इतिहासकार और दार्शनिक थॉमस कार्लाइल उन पश्चिमी विद्वानों में गिने जाते हैं, जिन्होंने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर लगाये गये आरोपों (जैसे धोखा, बनावट या स्वार्थ आदि) का दृढ़ और सिद्धान्तपूर्ण खंडन किया।

उन्होंने अपने प्रसिद्ध व्याख्यान-संग्रह On Heroes, Hero-Worship and the Heroic in History (विशेषकर अध्याय Hero as Prophet) में इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यक्तित्व को स्वाभाविक सत्य, ईमानदारी और आध्यात्मिक महानता का प्रतीक बताया है।

कार्लाइल के अनुसार मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) किसी कृत्रिम या छल करने वाले व्यक्ति का परिणाम नहीं थे, बल्कि वे ऐसी महान हस्ती थे जो सीधे सत्य (Truth) से जुड़ी हुई थी—उस सत्य से जिसे वे Nature या Divine Reality कहते हैं।

कार्लाइल कीदृष्टि में-

कार्लाइल के अनुसार मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) झूठ गढ़ने वाले नहीं हो सकते थे। उनके व्यक्तित्व में शांति, गहराई, बौद्धिक गरिमा और असाधारण शक्ति थी। वे ऐसे मनुष्य थे जो कल्पनाओं और अंधविश्वासों से संतुष्ट नहीं हो सकते थे। जीवन, मृत्यु, ब्रह्मांड और सत्य से जुड़े उनके प्रश्न सामान्य लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक गंभीर और वास्तविक थे। उनके हृदय से निकला हुआ संदेश वास्तव में प्रकृति (Truth / God) के हृदय से निकला हुआ संदेश था।

"A false man found a religion? Why, a false man cannot build a brick

house! ...No, this man was no charlatan. There was sincerity in him; deep, great, genuine sincerity.He was one of those who cannot but be in earnest. The word he spoke was a word that came direct from Nature's own heart.''.....''Such a man is what we call a Hero—prophet; a man sent by Heaven." (Thomas Carlyle: On Heroes, Hero-Worship, and the Heroic in History, Lecture II: The Hero as Prophet.

(Mahomet: Islam),London: James Fraser, 1841, Page 115-125)

अनुवाद–

"क्या कोई झूठा व्यक्ति किसी धर्म की स्थापना कर सकता है? एक झूठा आदमी तो ईंट का घर भी नहीं बना सकता! नहीं, यह व्यक्ति मुहम्मद कोई ध ोखेबाज नहीं था। उसके भीतर सच्चाई थी, गहरी, महान और वास्तविक सच्चाई।

वह उन लोगों में से था जो सत्य के अ़लावा किसी और चीज से संतुष्ट हो ही नहीं सकते। उसके होंठों से निकला हुआ वचन सीधे प्रकृति (ईश्वर) के हृदय से निकला हुआ वचन था।ऐसी ही हस्ती को हम 'हीरो' और 'पैग़म्बर' कहते हैं एक ऐसा मनुष्य जिसे स्वर्ग ने भेजा हो"।

व्याख्या–

ब्रिटिश चिंतक थॉमस कार्लाइल ह़ज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को एक ऐसी शांत किन्तु असाधारण रूप से शक्तिशाली व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो सम्मान, प्रसिद्धि या सत्ता की इच्छा से पूरी तरह निर्लिप्त थे और जिनकी वास्तविक खोज सत्य (Truth) की तलाश थी।

कार्लाइल के अनुसार मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) प्रकृति, ब्रह्मांड, जीवन और मृत्यु जैसे मूल प्रश्नों पर गहराई और निरंतरता से चिंतन करने वाले व्यक्ति थे और यही गम्भीर आंतरिक खोज अंततः इस सत्य के उद्घाटन का कारण बनी कि उनके सामने सत्य एक जीवंत और गतिशील वास्तविकता के रूप में प्रकट हुआ।

वे इस विचार को पूरी तरह़ अस्वीकार करते हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जीवन या उनका संदेश किसी सामाजिक, राजनीतिक या मनोवैज्ञानिक छल का

परिणाम था, बल्कि उनके अनुसार यह संदेश प्राकृतिक/दैवी ज्ञान का प्रकट रूप था।

इसी आधार पर कार्लाइल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को "प्रकृति की निशानियों में से एक निशानी" बताते हैं और कहते हैं कि उनका वचन सीधे दिलों को प्रभावित करता है, क्योंकि वह कृत्रिमता या दिखावे से नहीं, बल्कि सत्य की गहरी चेतना से उत्पन्न हुआ था।

कार्लाइल की गवाही के अनुसार हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) न तो धोखेबाज थे और न ही सत्ता या प्रसिद्धि के इच्छुक बल्कि वह सत्य के साकार प्रतीक और मानवता के लिए एक वास्तविक पैग़म्बरी आदर्श थे।

थॉमस कार्लाइल (Thomas Carlyle) एक और स्थान पर कहते हैं-

"We cannot suppose this man to have been a mere impostor or charlatan; not a miserable schemer, consciously false. His message, rugged and unadorned as it might be, came from the great deep of Nature. There was sincerity in him; no falsehood in word or deed. What he spoke was no borrowed imitation, but a truth sent to illuminate the world."

(Thomas Carlyle: On Heroes, Hero-Worship, and the Heroic in History, Lecture II: The Hero as Prophet (Mahomet: Islam),London: James Fraser, 1841, Page 43)

अनुवाद-

"हम मुहम्मद के बारे में यह बिल्कुल नहीं सोच सकते कि वे केवल कोई जादूगर या धोखेबाज थे, न ही वे किसी निम्न स्तर के लालची या जानबूझकर झूठ गढ़ने वाले योजनाकार थे।

उनका सन्देश भले ही सरल और बिना आडम्बर का था, लेकिन उसका स्रोत प्रकृति की उस गहराई से था जिसकी तह तक कोई नहीं पहुँच सका। उनमें सच्चाई थी उनके शब्दों में झूठ था और न ही उनके कर्मों में।

उनकी बात किसी की नक्ल नहीं थी, बल्कि वह सत्य था जिसे दुनिया को प्रकाश देने के लिए भेजा गया था"।

जर्मन इतिहासकार डुश के अनुसार- जर्मन इतिहासकार डुश

(Dusch) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी को अ़रबी सभ्यता, भाषा और चिंतन के संदर्भ में परखते हुए इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाते हैं कि ख़ुशी और गम, करुणा और प्रेम, तथा साहस और वीरता जैसे महान मानवीय भाव जिनकी केवल हल्की प्रतिध्वनि हमें पहले के इतिह़ास में सुनाई देती है।

मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के युग में पूर्ण शक्ति और गहन अर्थ के साथ प्रकट हुए। उनके अनुसार इस्लाम के पैग़म्बर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अपने समय के प्रभावशाली वक्ताओं और कवियों के साथ न केवल प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी, बल्कि उन पर नैतिक और वैचारिक श्रेष्ठता भी सिद्ध करनी पड़ी।

यही वाक्पटुता, गरिमा और आध्यात्मिक ऊँचाई उनके पैग़म्बरी दावे का प्रमाण बनी।

डुश स्पष्ट करते हैं कि मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पहले अ़रबी कविता—जैसे अंतरा और इमरउल-कैस (जिन्हें स्वयं मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अ़रब कवियों का सरदार कहा) प्रेम, शारीरिक सौंदर्य, मदिरा और भोग-विलास के चित्रों से भरी हुई थी।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विशेषता-

इस्लाम के पैग़म्बर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने न तो प्रेम-काव्य रचा और न ही शारीरिक सुखों को अपना विषय बनाया, बल्कि उन्होंने मानव जीवन को नैतिक और आध्यात्मिक उद्देश्य से जोड़ा।

वह कहते हैं कि मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने लोगों को केवल कविता और वक्तत्व ही नहीं सिखाया, बल्कि इस्लाम सिखाया—और इस प्रकार सिखाया कि मानो धरती और आकाश की सीमाएँ चीरकर स्वर्ग और नरक को एक सजीव वास्तविकता के रूप में सामने रख दिया हो। वह कहते हैं-

"Those great human proclamations—joy and sorrow, compassion and love, courage and heroism—which we hear only faintly in history, found their full and powerful voice in the age of Muhammad. He had not only to match but to surpass the eloquent and loud-voiced men of his time, and to make the elevation and

force of his speech a proof of his prophetic claim.Before him, poets composed passionate love lyrics; Imru' al-Qays and others sang of beauty, wine, and desire. But Muhammad neither composed love poetry nor glorified worldly pleasures. He did not teach poetry or rhetoric; he taught Islam—so vividly that heaven and hell were made concrete realities before the eyes of mankind."

(Dusch, Izalat al-Tanzil, Page 63)

अनुवाद–

"वे महान मानवीय उद्घोषो जैसे ख़ुशी और ग़म, प्रेम और करुणा, साहस और वीरता जो इतिहास में हमें केवल धीमी प्रतिध्वनियों के रूप में सुनाई देते हैं, मुहम्मद के युग में पूर्ण शक्ति के साथ प्रकट हो गये। अपने समय के प्रभावशाली और ऊँची आवाज वाले वक्ताओं के साथ मुहम्मद को न केवल समान स्तर पर आना पड़ा, बल्कि उन पर श्रेष्ठता भी प्राप्त करनी पड़ी और अपने कथन की आध्यात्मिक ऊँचाई तथा प्रभाव को अपनी पैग़म्बरी के दावे का प्रमाण बनाना पड़ा।

मुहम्मद से पहले कवियों ने प्रेम-काव्य रचे, इमरउल्-क़ैस और अन्य कवियों ने सौंदर्य, मदिरा और इच्छाओं के विषयों का वर्णन किया, लेकिन मुहम्मद ने न तो प्रेम-काव्य रचा और न ही सांसारिक सुखों की प्रशंसा की। उन्होंने लोगों को कविता या वक्तत्व नहीं सिखाया, बल्कि इस्लाम सिखाया और इस प्रकार सिखाया कि स्वर्ग और नरक को मानवता के सामने एक जीवंत वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत कर दिया"।

नोट–

यह उद्धरण उर्दू के शैक्षणिक स्रोतों के संदर्भ से उद्धृत किया जाता है। मूल भाषा (जर्मन/अंग्रेज़ी) में यह पाठ प्रायः भावानुवाद के रूप में प्रस्तुत होता है, विभिन्न संस्करणों में शब्दों के मामूली अंतर के बावजूद इसका अर्थ और सम्बद्धता व्यापक रूप से स्वीकार किये जाते हैं।

मिस्टर डब्ल्यू० डब्ल्यू० स्मिथ की दृष्टि में–

प्रसिद्ध लेखक **W. W. Smith** ने अपनी पुस्तक **Muhammad and**

Mohammedanism में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी के ऐतिह़ासिक और वैचारिक संदर्भ पर चर्चा करते हुए इस तथ्य को उजागर किया है कि इस्लाम के पैग़म्बर की आमद का उद्देश्य कोई नया या अपरिचित विश्वास प्रस्तुत करना नहीं था, बल्कि उस प्राचीन एकेश्वरवादी सन्देश का पुर्नजागरण था, जो ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के समय से चला आ रहा था, किन्तु कालांतर में यहूदियों, ईसाइयों और बहुदेववादी समाजों में विकृत हो गया था।

स्मिथ के अनुसार मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मूर्ति-पूजा, दार्शनिक जटिलताओं और धार्मिक विकृतियों का खंडन करते हुए शुद्ध एकेश्वरवाद को पुनः जीवित किया—वही संदेश जो इतिह़ास के विभिन्न युगों में पैग़म्बरों के माध्यम से मानवता को दिया जाता रहा था।

"Muhammad came to sweep away the falsehoods that had gathered around religion—the idols, what were they but pieces of olive-wood pretending to be gods? The webs of misleading philosophy and the barrenness of unbelief were to be cleared away. God alone is great, and beside Him nothing is great. An objector may ask what was new in these doctrines. They were as old as Moses—nay, as old as Abraham himself. Muhammad repeatedly declared with solemn earnestness that he had brought no new religion to the Arabs; it had always existed, but men had forgotten it or turned aside from it. Thus on Arabian soil the same Voice was heard again by a shepherd, with an effect not less wonderful or less beneficial to mankind than before—'Allahu Akbar; there is no god but God, and Muhammad is the Messenger of God'—and within a century its echo was heard from Aden to Antioch, and from Spain to Samarkand".

(W.W. Smith, Muhammad and Mohammedanism, 28-29)

अनुवाद-

"मुह़म्मद इसलिए आए थे कि धर्म के चारों ओर जमा हो चुकी सभी झूठी बातों को मिटा दें। आखिर मूर्तियाँ क्या हैं? ज़ैतून की लकड़ी के वे टुकड़े जो ईश्वर होने का दावा करते थे! भ्रामक दर्शनों के मकड़ी-जाल और अधर्म की

वीरानी इन सबको साफ़ कर दिया जाए। अल्लाह ही सबसे महान है और उसके सिवा कोई भी महान नहीं।

कोई आपत्ति करने वाला यह पूछ सकता है कि इन शिक्षाओं में नया क्या था? यह तो मूसा (अ़लै०) के युग जितनी प्राचीन थीं, बल्कि वास्तव में इब्राहीम के समय जितनी पुरानी।

मुह़म्मद ने बार-बार गम्भीरता से बताया कि वह अ़रबों के लिए कोई नया धर्म नहीं लाये। यह दीन हमेशा से मौजूद था, लेकिन लोग उसे भूल गये थे या उससे ग़ाफ़िल हो गये थे।

इस प्रकार अ़रब की धरती पर वही आवाज़ एक चरवाहे को फिर सुनाई दी और उसके प्रभाव मानवता के लिए किसी भी तरह कम न थे। "अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं" और एक ही शताब्दी के भीतर इस आवाज की गूँज अदन से अंताकिया और स्पेन से समरकंद तक फैल गई"।

नोट-

यह उद्धरण उर्दू के शैक्षणिक स्रोतों के संदर्भ से उद्धृत किया जाता है। मूल पश्चिमी पाठ विभिन्न संस्करणों में प्रायः भावानुवाद के रूप में मिलता है, फिर भी इसकी सम्बद्धता और अर्थ प्राच्य (ओरिएंटल) साहित्य में व्यापक रूप से स्वीकार किये जाते हैं।

एक ईसाई डा० स्प्रेंगर (Sprenger) की दृष्टि में-

एक ईसाई इतिह़ासकार अलॉइस स्प्रेंगर (Aloys Sprenger) ने अपनी प्रसिद्ध कृति The Life of Mohammad में इस्लाम के पैग़म्बर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की आध्यात्मिक अवस्था, प्रकृति से उनके सम्बन्ध और ईश्वर-चेतना का अत्यन्त गहरे और भावपूर्ण ढंग से वर्णन किया है। स्प्रेंगर के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का सम्पूर्ण जीवन ईश्वर की चेतना से परिपूर्ण था और ब्रह्मांड की हर निशानी उन्हें दैवी उपस्थिति की ओर आकृष्ट करती थी।

"He was a man in whose mind the thought of God was ever present.

In the rising sun, in the falling rain, and in the growing vegetation he perceived the hand of God.In the peal of thunder, in the murmur of waters, and in the songs of birds chanting praise, he heard the voice of God.In the solitude of deserts and in the ruins of ancient cities he beheld the signs of divine judgment."

(Aloys Sprenger, The Life of Mohammad, from Original Sources,Allahabad: 1851, Page 82)

अनुवाद-

वे ऐसे मनुष्य थे जिनके मन में हर समय ईश्वर का विचार उपस्थित रहता था। उगते हुए सूर्य में, बरसते हुए पानी में और उगती हुई हरियाली में वे ईश्वर का हाथ देखते थे।

बादलों की गर्जना में, जल के प्रवाह में और ईश्वर की स्तुति में लगे पक्षियों के गीतों में वे उसी की आवाज़ सुनते थे और सुनसान जंगलों तथा प्राचीन नगरों के खंडहरों में वे दैवी दंड और प्रकृति की चेतावनी के संकेत देखते थे।

(Aloys Sprenger, The Life of Mohammad, from Original Sources,Allahabad: 1851, Page 82)

मिसेज़ एनीबेसेंट (Annie Besant) के अनुसार-

"Consider what the Prophet Muhammad was when only his wife believed in him, and then his near relatives. That tells us something of the man. It is easy to gain followers among those who do not know you, who see you only on a platform, who hear only prepared speeches; but it is not so easy to win the faith of one's wife, one's children, and one's close kindred.Judge Muhammad as he really was, and do not see him through the mist of prejudice. A life of simplicity and self-denial, a life gentle, humane, and tender. Though acknowledged as a Prophet by multitudes, he lived humbly, mended his own clothes, and showed kindness and affection to all around him." **(Annie Besant,Lecture on the Life and Character of Prophet Muhammad)**

(उर्दू स्रोत मासिक निज़ाम-उल्-मशायख, दिल्ली, जमादी अल्-अव्वल 1334 हिज़री)

अनुवाद-

ज़रा हमारे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की कल्पना कीजिए और उस स्थिति

पर विचार कीजिए जब प्रारम्भ में केवल उनकी पत्नी ही उन पर ईमान लाई, फिर उनके निकट सम्बन्धी ईमान लाए। यह तथ्य स्वयं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ बताता है।

ऐसे लोगों में अनुयायी बना लेना आसान होता है जो आपको जानते नहीं, जो आपको केवल किसी सभा या मंच पर देखते हैं या केवल तैयार किये हुए भाषण सुनते हैं, लेकिन अपनी पत्नी, सन्तान और निकट सम्बन्धियों का विश्वास प्राप्त करना आसान नहीं होता।

मुहम्मद को उसी रूप में जानो जैसे वे वास्तव में थे और उन्हें पूर्वाग्रह के पर्दे में देखने की कोशिश मत करो। उनका जीवन सादगी, आत्म-संयम, कोमलता और मानव-प्रेम का एक अद्वितीय उदाहरण था।

यद्यपि लाखों लोग उन्हें नबी मानते थे, फिर भी वे अत्यन्त विनम्रता से जीवन बिताते, अपने कपड़ों में स्वयं पेवन्द लगाते और अपने आसपास के लोगों के साथ प्रेम और करुणा का व्यवहार करते थे।

महान शिक्षक जॉर्ज हर्बर्ट वेल्स की दृष्टि में-

विश्व-प्रसिद्ध इतिहासकार, चिंतक और लेखक G. H. Wells हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के प्रारम्भिक जीवन, उनकी ईमानदारी और पैग़म्बरी के प्रभावों का वर्णन करते हुए उन्हें एक असाधारण आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति से युक्त नेता बताते हैं, उनके अनुसार पैग़म्बरी से पहले ही मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपनी सच्चाई और भरोसेमंदी के कारण लोगों का विश्वास जीत चुके थे और वह्य (ईश्वरीय सन्देश) की घटना उनके जीवन का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुई।

"The people around Muhammad called him Al-Amin, the trustworthy. The poor and distressed came to him for counsel, for they trusted his truthfulness.He was much given to solitary meditation in a cave. One night, as he lay upon the ground, a light appeared from heaven, and a majestic presence commanded him to arise and read in the name of his Lord.This strange and wonderful event changed the whole course of his life. Before it he was only Al-Amin; after it he was the Messenger of God. His first message

proclaimed the unity of God and condemned bloodshed and evil deeds. Many accepted his faith, and it is hard to measure the power by which Muhammad won the hearts of men."

(H. G. Wells, The Outline of History / A Short History of the World, London, 1920, Chapter: The Rise of Islam)

अनुवाद–

मुहम्मद को उनके आसपास के लोग 'अल-अमीन' अर्थात् विश्वासपात्र और ईमानदार कहा करते थे। ग़रीब और पीड़ित लोग उनसे सलाह लेने आते थे, क्योंकि उन्हें उनकी सच्चाई पर पूरा भरोसा था। वे अक्सर एक गुफा में एकांत में रहकर अल्लाह की उपासना और गहन चिंतन में लीन रहते थे।

एक रात जब वे धरती पर लेटे हुए थे, आकाश से एक प्रकाश प्रकट हुआ और एक गरिमामय हस्ती ने उन्हें आदेश दिया—"अपने रब के नाम से पढ़ो"।

यह अद्भुत और आश्चर्यजनक घटना उनके पूरे जीवन की दिशा बदल देने वाली सिद्ध हुई।

इससे पहले वे केवल 'अमीन' थे, लेकिन इसके बाद वे अल्लाह के रसूल बन गये। उनका पहला सन्देश ईश्वर की एकता की घोषणा और रक्तपात तथा दुष्कर्मों की निंदा पर आधारित था। बहुत से लोगों ने उनके धर्म को स्वीकार किया और यह अनुमान लगाना कठिन है कि मुहम्मद में लोगों के दिल जीत लेने की कितनी महान शक्ति थी"।

जार्ज बर्नार्ड शाके अनुसार हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

प्रसिद्ध आयरिश नाटककार और चिंतक जार्ज बर्नार्ड शाने इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और इस्लाम के बारे में अपनी राय अत्यन्त स्पष्ट और निर्विवाद रूप में प्रस्तुत की। शा के अनुसार इस्लाम एक जीवंत, गतिशील और सार्वभौमिक धर्म है, जिसमें हर युग की समस्याओं के साथ सामंजस्य स्थापित करने की असाधारण क्षमता है और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ऐसी महान हस्ती हैं जिनकी नेतृत्व-शक्ति आधुनिक विश्व के

संकटों का समाधान प्रस्तुत कर सकती है।

I have always held the religion of Muhammad in high estimation because of its wonderful vitality.It is the only religion which appears to me to possess that assimilating capacity to the changing phases of existence which can make itself appeal to every age. I have studied him—the wonderful man—and in my opinion far from being an anti-Christ, he must be called the Saviour of Humanity.I believe that if a man like him were to assume the dictatorship of the modern world, he would succeed in solving its problems in a way that would bring it much needed peace and happiness."

(George Bernard Shaw; The Genuine Islam, Vol. 1, No. 8, Singapore, 1936)

अनुवाद-

मैंने हमेशा मुहम्मद के धर्म को उसकी अद्भुत जीवन-शक्ति के कारण अत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखा है। मुझे यह एकमात्र ऐसा धर्म प्रतीत होता है जिसमें बदलती हुई जीवन-स्थितियों के विभिन्न चरणों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता है, जो इसे हर युग के लिए आकर्षक बना सकती।

मैंने मुहम्मद का अध्ययन किया है, वे एक अद्भुत व्यक्तित्व हैं और मेरी राय में वे मसीह-विरोधी (Anti-Christ) नहीं, बल्कि "मानवता के उद्धारकर्ता" (Saviour of Humanity) कहलाने के अधिक योग्य हैं।

मेरा विश्वास है कि यदि उनके जैसा कोई व्यक्ति आधुनिक विश्व का पूर्ण नेतृत्व संभाल ले, तो वह उसकी समस्याओं को इस प्रकार हल कर सकता है कि दुनिया में वह शांति और सुख स्थापित हो जाए जिसकी आज अत्यंत आवश्यकता है।

रेवरेंड जे० एम० रॉडवेल की दृष्टि में-

ईसाई विद्वान और प्रसिद्ध जॉन मेडोज रॉडवेल (John Medows Rodwell) ने कुर्आन मजीद के अध्ययन और सीरत-ए-नबवी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विश्लषण के दौरान हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यक्तित्व को एक ऐसी शक्तिशाली आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक बताया है, जो केवल उसी व्यक्ति में उत्पन्न हो सकती है जिसे

ईश्वर और क़ियामत पर पूर्ण विश्वास हो। उनके अनुसार मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का महान व्यक्तित्व और सच्चा चरित्र ही वह आधार था, जिसके कारण वे नैतिकता, आशा और वैश्विक मानव जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाले एक महान नेता बने।

"It is a strange and striking example of the power of that spiritual force which is found in one who has a firm faith in God and in the future life; a man who, by the strength of his personal character and moral earnestness, must ever stand conspicuous among those who have exercised a commanding influence over the hopes, the morals, and the destinies of mankind—an influence such as none but the greatest historical personalities have possessed or can possess."

(Rev. J. M. Rodwell, The Koran: Translated from the Arabic, London: Williams and Norgate, 1871, Introduction / Remarks on the Character of Muhammad, page 23)

अनुवाद–

"यह उस आध्यात्मिक शक्ति का एक अत्यंत अद्भुत और स्पष्ट उदाहरण है, जो ऐसे व्यक्ति में पाई जाती है जिसे ईश्वर और परलोक पर पूर्ण विश्वास हो।

ऐसा मनुष्य अपनी महान व्यक्तित्व और सच्चे चरित्र की शक्ति के कारण सदैव उन लोगों में प्रमुख रहेगा जिन्होंने मानवता की आशाओं, नैतिकता और वैश्विक जीवन की दिशा पर गहरा प्रभाव डाला। ऐसा प्रभाव जो केवल महानतम ऐतिहासिक व्यक्तित्वों को ही प्राप्त हुआ है और हो सकता है"।

सारांश

समग्र रूप से ये सभी गवाहियाँ इस सत्य पर एकमत होती हैं कि पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जीवन, शिक्षा और चरित्र—धर्म, नैतिकता, राजनीति और सभ्यता हर स्तर पर मानवता के लिए रहनुमाई है।



भाग-10

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वैज्ञानिकों की दृष्टि में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

वैज्ञानिकों की दृष्टि में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

जब वैज्ञानिक और आधुनिक शोध से जुड़े विचारक क़ुर्आन की कुछ आयतों पर ध्यान देते हैं, तो वे इस बात पर आश्चर्य व्यक्त करते हैं कि सातवीं सदी में नाज़िल हुई इस किताब में ब्रह्मांड, धरती, पानी, इन्सान और जीवन के बारे में ऐसे बयान मौजूद हैं जिनका अर्थ आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से मेल खाता हुआ दिखाई देता है।

ब्रह्मांड के फैलाव, वर्षा के सिस्टम और पानी के भंडार तथा इन्सान की रचना के क्रमिक चरणों जैसे विषयों पर क़ुर्आन के संकेत उस दौर के मानव ज्ञान और अवलोकन से कहीं आगे थे, क्योंकि उस समय न तो आधुनिक खगोलशास्त्र था, न जीवविज्ञान और न ही भ्रूण-विज्ञान का कोई स्पष्ट विचार मौजूद था।

क़ुर्आन के संकेत-

क़ुर्आन ने प्रकृति के इन जटिल तथ्यों की ओर बहुत व्यापक और अर्थपूर्ण ढंग से ध्यान दिलाया, जो आज की वैज्ञानिक खोजों के करीब लगते हैं। यही पहलू विद्वानों के नज़्दीक इस बात का मजबूत संकेत माना जाता है कि यह किताब किसी मानव सोच या अनुभव की उपज नहीं, बल्कि ईश्वरीय प्रकाशना (वह्य) का परिणाम है।

ब्रहम्माण्ड के रहस्यों पर चिन्तन-

इसी आधार पर कई वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं ने यह भी कहा है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा क़ुर्आन के माध्यम से दिया गया संदेश केवल धार्मिक या नैतिक शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह इन्सान को सोचने,

शोध करने और ब्रह्मांड के रहस्यों पर चिंतन करने की प्रेरणा देता है।

बहुत से विद्वानों ने स्वीकार किया कि एक उम्मी (औपचारिक शिक्षा से रहित) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़ुबान से ऐसी बातों का बयान होना जो सदियों बाद वैज्ञानिक शोध से सामने आईं। इस बात का प्रमाण है कि क़ुर्आन किसी मानव मस्तिष्क की रचना नहीं, बल्कि अल्लाह द्वारा अवतरित पुस्तक है।

इसी अध्ययन और चिंतन के परिणामस्वरूप कुछ ग़ैर-मुस्लिम वैज्ञानिक और विचारक इस निष्कर्ष तक पहुँचे कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वास्तव में अल्लाह के अंतिम सन्देष्टा हैं, क्योंकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नाज़िल हुई वह्य न केवल अध्यात्मिक मार्गदर्शन देती है, बल्कि प्रकृति और ब्रह्मांड के ऐसे शाश्वत सत्य भी बताती है जो हर युग में मानव ज्ञान को बढ़ाते रहेंगे।

वैज्ञानिकों की नज़र में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के माध्यम से प्रस्तुत क़ुर्आन एक अद्भुत वास्तविकता है, क्योंकि जिन तथ्यों को आधुनिक विज्ञान ने सदियों बाद खोजा, उनकी ओर संकेत क़ुर्आन में लगभग चौदह सौ वर्ष पहले मिलते हैं।

यही कारण है कि वैज्ञानिक इस बात पर हैरानी जताते हैं कि ऐसे समय में जब मानव ज्ञान बहुत सीमित था हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नाज़िल वह्य ने प्रकृति और ब्रह्मांड के उन पहलुओं को बयान किया जो आज शोध और प्रयोग की कसौटी पर सही साबित होते दिखाई देते हैं।

वैज्ञानिकों का शोध और क़ुर्आन

मानव की **Biological** जीवन पर की गई शोध से पता चलता है कि यह भी एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है। इन विकासात्मक चरणों को अल्लाह तआला ने क़ुर्आन मजीद में बहुत स्पष्ट अंदाज़ में बयान किया है, जबकि विज्ञान ने सदियों की शोध के बाद इन चरणों को समझने में सफ़लता प्राप्त की, लेकिन इन चरणों का उल्लेख अल्लाह तआला ने आज से लगभग **1442** वर्ष पहले ही कर दिया था।

माँ के ग़र्भ में मानव वृद्धि-

माँ के गर्भ में मानव की Biological वृद्धि और विकास के इन चरणों को समझने के लिए व्यवस्थित वैज्ञानिक प्रणाली सबसे पहले 1941 ई० में George Linius Streeter ने विकसित की। कुछ समय बाद 1972 ई० में O' Rahilly द्वारा प्रस्तावित प्रणाली के माध्यम से इसे और बेहतर बनाया गया। वर्तमान समय में चरणबद्ध शोध के बाद यह प्रणाली और अधिक स्पष्ट हो चुकी है और आज की आधुनिक विज्ञान में Anatomy और Embriology की नई शोधों के माध्यम से इसकी पूरी पुष्टि होती है।

यदि इन चरणों का अध्ययन किया जाए तो इनके दो प्रमुख दौर सामने आते हैं। पहला दौर माँ के गर्भ में होने वाली Cell division और उससे सम्बन्धित प्रणाली से जुड़ा है, जबकि दूसरा दौर शरीर की संरचना और उसके विकास (Evolution) से सम्बन्धित है।

एक जान (Single Life Cell) की रचना-

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ (सूरः निसा-1)

अनुवाद-

"वह (अल्लाह) जिसने तुम्हें एक जान (Single Life Cell) से पैदा किया"।

यह विषय विज्ञान की Category में आता है कि Mitosis से पहले भी एक चरण होता है जिसे Meiosis कहा जाता है। इसमें Male और Female के Cells उनके शरीर से आते हैं, जो परिपक्वता (Maturity) से पहले Testicular Cells और Ovarian Cells कहलाते हैं। यहाँ Meiosis की प्रक्रिया से गुजरने के बाद यह Sperm और Ova के रूप में बनते हैं और बाद में Fertilization के माध्यम से एक जीवन में बदल जाते हैं, जिसे Zygote कहा जाता है।

फ़ोटो अगले पृष्ठ पर है-

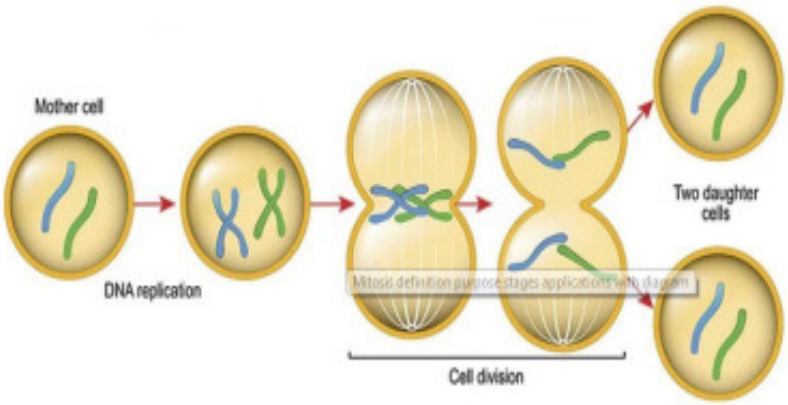

गर्भाशय में कोशिकीय विभाजन

अल्लाह तआला कुर्आन मजीद में बयान करता है कि उसने जीवन वाले कोश (Fertilized Ovum) को आगे दो भागों में विभाजित किया। इसी प्रकार उन्हें लगातार विभाजित किया जाता है यहाँ तक कि वही सभी पुरुषों और महिलाओं की सृष्टि का माध्यम बन जाता है, जिसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है–

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا (सूरः ज़ुमर-6)

अनुवाद–

"उसी ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसी में से उसका जोड़ा बनाया"।

दूसरी जगह इर्शाद है–

يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ

अनुवाद–

"ऐ इंसानों! अपने रब से डरो, जिसने तुम्हें एक जान (Single Life Cell) से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया और उसी से बहुत से पुरुषों और महिलाओं को फैला दिया"।

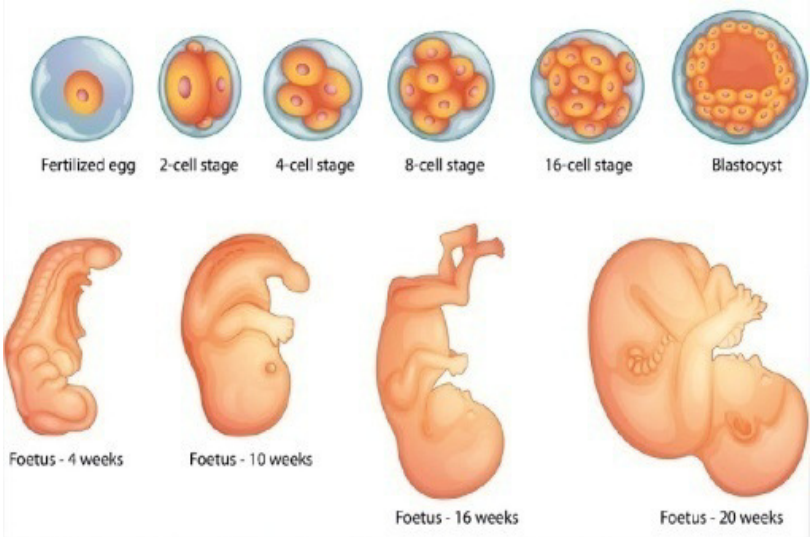

इन आयतों में तीन बातों को स्पष्ट रूप से बयान किया गया है।

- मानव सृष्टि का **Single Life Cell** जो **Zygote** से अस्तित्व में आया।
- फिर इस **Single Life Cell** को आगे दो **Cells** में विभाजित किया गया।
- इसके बाद इन दो **Cells** को लगातार विभाजित किया गया।

आधुनिक वैज्ञानिक शोध के अनुसार इस विभाजन प्रणाली को **Mitotic Cell Division** कहा जाता है, जिसमें पहले **Cell Division** के बाद **2 Cells** फिर **4 Cells**, फिर **8 Cells**, फिर **16 Cells** बनते हैं। इसी तरह बड़ी संख्या में विभाजित होते हुए यही प्रक्रिया सभी पुरुषों और महिलाओं की सृष्टि का माध्यम बन जाती है।

نُّطۡفَةٍ اَمۡشَاجٍ (Mingled Fluid)

اِنَّا خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ مِنۡ نُّطۡفَةٍ اَمۡشَاجٍ ۖ (سورہ الدھر : ۲)

अनुवाद-

"निस्संदेह हमने ही इन्सान को एक मिले-जुले नुत्फ़े (Mingled Fluid) से

पैदा किया"।

यहाँ نُّطۡفَةٍ اَمۡشَاج शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसे विज्ञान की भाषा में Mingled Fluid कहा जाता है। "नुत्फ़ा-ए-अमशाज़"शब्द से पता चलता है कि यह पदार्थ कई प्रकार के Fluids का मिला हुआ एक Mixture है, इसलिए क़ुर्आन मजीद ने इसे मिला-जुला कहा है।

वैज्ञानिक शोध के अनुसार भी वीर्य या Spermatic liquid कुछ रसायनों (Secretion) से बनता है, जो निम्नलिखित Glands से आते हैं-

1. Testicals
2. Seminal Vesicles
3. Prostate Glands
4. Glands of Urinary Tract

مَنِيٍّ يُّمۡنٰى (Sperm)

اَلَمۡ يَكُ نُطۡفَةً مِّنۡ مَّنِيٍّ يُّمۡنٰى ﴿۳۷﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً (سورہ القیامہ: ۳۸،۳۷)

अनुवाद-

"क्या वह (शुरुआ़त में) वीर्य की एक बूंद नहीं था, जिसे (गर्भ में) टपकाया जाता है? फिर वह जमकर रक्त का एक लोथड़ा बन गया"।

इस आयत में مِّنۡ مَّنِيٍّ يُّمۡنٰى से अभिप्राय उस नुत्फ़े (Sperm) से है, जो मानव सृष्टि का कारण बनता है।

नोट-

एक औसत पुरुष के एक बार उत्सर्जित होने वाले प्रजनन पदार्थ में लगभग 40,00,00,000 Sperm होते हैं, जिनसे चालीस करोड़ महिलाओं में गर्भधारण सम्भव हो सकता है, लेकिन प्रकृति की व्यवस्था का अद्भुत करिश्मा देखिए कि जैसे ही पहला Sperm महिला के गर्भ में Ovum से जुड़ता है, उसी समय Ovum पर एक झिल्ली (Membrane) बन जाती है, जो दूसरे Sperm को उसमें प्रवेश करने से रोक देती है। इसे Fertilizing Membrane कहा जाता है।

अण्डे का गर्भाशय (Uterus) में स्थानांतरित होना-

وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى (سورہ الحج:۵)

अनुवाद-

"और हम गर्भाशयों (Uterus) में जिसे चाहते हैं, एक निर्धारित समय तक ठहराते हैं"।

Male और Female के यौन सम्बन्ध (Intercourse) के बाद जब Sperm और Ovum का मिलन हो जाता है, तो Egg गर्भाशय (Uterus) में चला जाता है। इस चरण को विज्ञान की भाषा में Implantation of Egg कहा जाता है। यह अण्डा Uterus में विकसित (Develop) होता है और वहीं से आवश्यक पोषक तत्व (Nutrients) प्राप्त करता है।

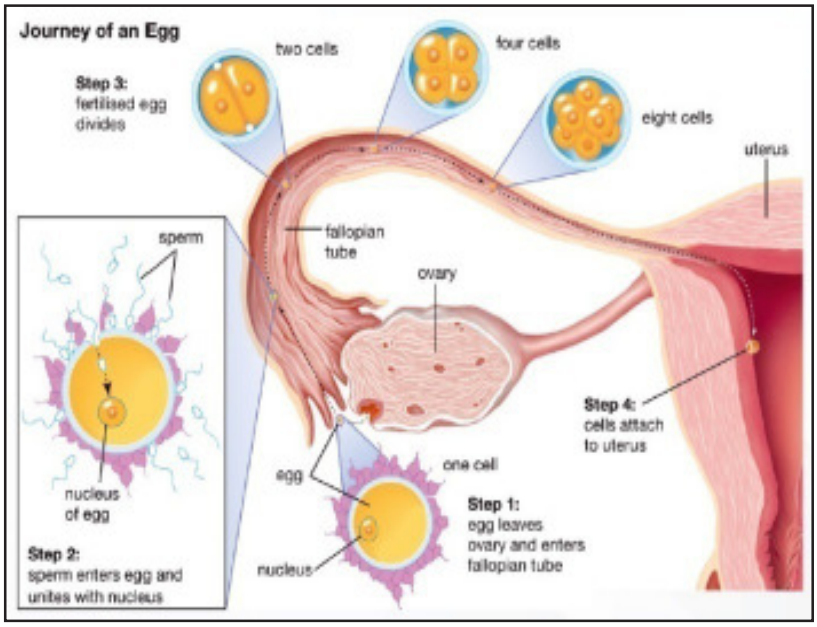

क़ुर्आन में मानव सृष्टि के विभिन्न चरणों का उल्लेख-

वैज्ञानिकों द्वारा क़ुर्आन के कथनों पर की गई शोध के परिणामस्वरूप

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और क़ुर्आनी वह़्य के बारे में अत्यन्त गम्भीर और ध्यान देने योग्य विचार सामने आये हैं। इन शोधकर्ताओं में प्रमुख नाम Keith L. Moore का है, जो कनाडा की University of Toronto में Anatomy और Embryology के प्रोफ़ेसर रहे।

प्रमाणिक पुस्तक–

प्रोफ़ेसर कीथ मूर की पुस्तक The Developing Human, 3rd Edition, W.B. Saunders Company] 1982 चिकित्सकीय दुनिया में भ्रूण-विज्ञान (Embryology) की एक प्रामाणिक और मानक पाठ्य पुस्तक मानी जाती है। अपनी शैक्षणिक शोध के दौरान उन्होंने क़ुर्आन में वर्णित मानव सृष्टि के चरणों का आधुनिक Embryology से तुलनात्मक अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि क़ुर्आन का वर्णन आश्चर्यजनक रूप से वैज्ञानिक तथ्यों के अनुरूप है।

जबकि यह आयतें लगभग चौदह सौ वर्ष पहले ऐसे समाज में नाज़िल हुई थीं जहाँ वैज्ञानिक उपकरणों और प्रयोगात्मक शोध की कोई कल्पना भी मौजूद नहीं थी।

प्रोफ़ेसर कीथ मोरे के अनुसार–

प्रोफ़ेसर Keith L. Moore के अनुसार क़ुर्आन मजीद में मानव सृष्टि के चरण अत्यन्त स्पष्ट और क्रमिक (Gradual) रूप से वर्णित किये गये हैं, जैसे नुत्फ़ा (Fertilized drop), अलक़ा (leech-like/clinging substance) मुद्ग़ा (chewed-like lump) फिर हड्डियों का निर्माण और उन पर मांस चढ़ाया जाना।

आधुनिक Embryology ने भी निरीक्षण और शोध के बाद इन्हीं चरणों को स्वीकार किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि क़ुर्आन का वर्णन न तो काव्यात्मक कल्पना है और न ही दार्शनिक अनुमान, बल्कि एक वास्तविकता पर आधारित वह़्य है।

शैक्षणिक समानता–

इसी शैक्षणिक समानता ने अनेक वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को क़ुर्आन

के दिव्य स्रोत पर विचार करने के लिए प्रेरित किया और कुछ ने इसी आधार पर इस्लाम स्वीकार करने की बात भी मानी। इस प्रकार प्रोफ़ेसर कीथ मूर की शोध को विद्वान इस बात के एक मज़बूत प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते हैं कि क़ुर्आन मजीद वास्तव में वह आसमानी किताब है जो हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नाज़िल हुई और जिसका ज्ञान मानव विज्ञान से परे तथा उससे आगे का मार्गदर्शन देने वाला है।

क़ुर्आन मजीद में अल्लाह तआला का इर्शाद है-

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٤﴾ (سورہ المؤمنون آیت:12 سے 14)

अनुवाद-

"और निस्संदेह हमने इन्सान को मिट्टी के सार से पैदा किया। फिर हमने उसे एक नुत्फ़ा बनाया, एक सुरक्षित ठिकाने (माँ के गर्भ) में। फिर उस नुत्फ़े को जमा हुआ रक्त बनाया, फिर उस जमे हुए रक्त को मांस के लोथड़े में बदल दिया।

फिर उस लोथड़े से हड्डियाँ बनाई, फिर उन हड्डियों पर मांस चढ़ाया।

फिर हमने उसे एक दूसरी (नई) मख़्लूक के रूप में पैदा किया। अतः बहुत ही बरकत वाला है अल्लाह, जो सबसे बेहतर पैदा करने वाला है"।

इन्सान की सृष्टि के विभिन्न चरण

इस आयत में अल्लाह तआला ने इन्सान की सृष्टि से सम्बन्धित विभिन्न चरणों का उल्लेख किया है। जो निम्नलिखित हैं-

पहला चरण

Step 1: وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ और निस्संदेह हमने इन्सान को

मिट्टी के सार से पैदा किया। (अर्थात Sperm)



दूसरा चरण

Step 2: ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ "फिर हमने नुत्फ़े को एक सुरक्षित स्थान (माँ के गर्भ) में रखा"। **(Egg Implantation)**

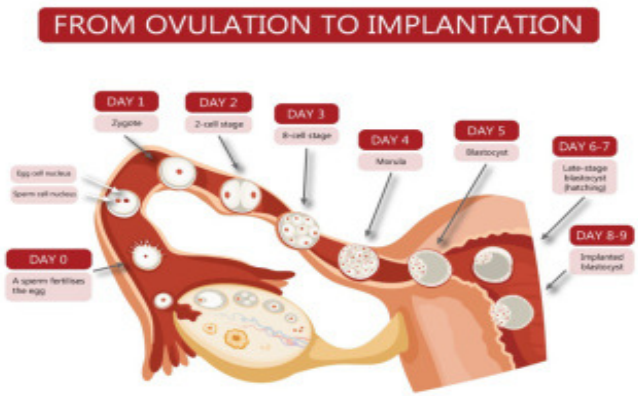

तीसरा चरण

Step 3: ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً "फिर हमने नुत्फे को 'अलका' बना दिया" (अर्थात खून के लोथड़े जैसा)

दूसरी जगह इर्शाद है–

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝٢ (سورہ العلق: ٢)

अनुवाद–

"उसने इन्सान को (माँ के गर्भ में) जमे हुए रक्त से (जोंक की तरह) पैदा किया"।

'अलूका' (Hanging Mass) शब्द के तीन अर्थ पाये जाते हैं–

- खून चूसने वाला कीड़ा।
- लटकी हुई चीज।
- खून का लोथड़ा।

अलूका की अवस्था–

अलूका की अवस्था में Embryo की उम्र लगभग 15 दिन होती है। Microscope से देखने पर इस चरण में Embryo बिल्कुल खून चूसने वाले कीड़े (Leech) जैसा दिखाई देता है। दूसरी ओर जैसे खून चूसने वाला कीड़ा दूसरे के खून पर पलता है, उसी तरह Embryo भी माँ के खून से पोषण प्राप्त करता है। इसके अलावा 'अलूका' का दूसरा अर्थ लटकी हुई चीज भी है।

इस चरण में Embryo गर्भाशय (Uterus) में ठीक उसी प्रकार लटका हुआ होता है।





● तीसरा अर्थ खून का लोथड़ा है। इस चरण में देखने पर यह खून के लोथड़े जैसा प्रतीत होता है, क्योंकि इस Embryo में रक्त का Circulation नहीं होता, जबकि इसमें खून की मात्रा अधिक होती है, इसलिए यह खून के लोथड़े जैसा दिखाई देता है।

चौथा चरण

Step 4: خَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً "फिर हमने 'अलूका' को 'मुदूगा' बना दिया" (अर्थात माँस का लोथड़ा, जो चबाई हुई चीज जैसा होता है।)



पाँचवाँ चरण

Step 5: خَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا "फिर हमने माँस के लोथड़े से हड्डियाँ बनाईं"।



छठवाँ चरण

Step 6: فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا "फिर हमने उन हड्डियों पर मांस चढ़ाया"।



सातवाँ चरण

Step 7: ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ "फिर हमने उसे एक नई मख़्लूक बना दिया"।



प्रोफ़ेसर Keith L. Moore के अनुसार आधुनिक वैज्ञानिक शोध के बाद जब मानव सृष्टि (Embryology) से सम्बन्धित तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन

क़ुर्आन और ह़दीस के कथनों के साथ किया गया, तो यह बात अत्यंत आश्चर्यजनक रूप से स्पष्ट हुई कि क़ुर्आन मजीद में वर्णित यह तथ्य सातवीं सदी ईस्वी से सम्बन्धित हैं।

अर्थात उस समय से जब गर्भाशय और भ्रूण के विकास के बारे में बहुत सीमित और प्रारम्भिक ज्ञान ही उपलब्ध था।

उस दौर में भ्रूण पर जो शुरुआ़ती शोध किये गये, उनमें सबसे उल्लेखनीय उदाहरण **Eric State** का वह अध्ययन है, जो मुर्गी के अण्डे पर किया गया था, लेकिन उन अध्ययनों में भी भ्रूण के विकास के वह चरण और सूक्ष्म विवरण मौजूद नहीं थे, जो क़ुर्आन मजीद में असाधारण स्पष्टता और क्रमबद्धता के साथ वर्णित हैं।

प्रोफ़ेसर कीथ एल० मूर के अनुसार यह तथ्य स्पष्ट संकेत देता है कि क़ुर्आन में मानव सृष्टि से सम्बन्धित जो जानकारी दी गई है, वह अपने समय के वैज्ञानिक ज्ञान से परे है और आधुनिक **Embryology** की खोजों से सदियों पहले बयान की जा चुकी थी, जो मानव बुद्धि और अनुभव के बजाय ईश्वरीय वह्य के स्रोत की ओर मार्गदर्शन करती है।

प्रोफ़ेसर साहब लिखते हैं–

"It is clear to me that these statements must have come to Muhammad from God, because almost all of this knowledge was not discovered until many centuries later. This proves to me that Muhammad must have been a Messenger of God."

(Keith L. Moore, The Developing Human: Clinically Oriented Embryology, 3rd Edition, Philadelphia: W. B. Saunders Company, 1982)

अनुवाद–

"मेरे लिए यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि ये कथन ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तक अवश्य ही अल्लाह की ओर से पहुँचे होंगे, क्योंकि इनमें बताई गई लगभग सभी बातें सदियों बाद खोजी गईं। इस तथ्य ने मुझे इस निष्कर्ष तक पहुँचाया है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) निश्चय ही अल्लाह के भेजे हुए रसूल थे"।

प्रोफ़ेसर Alfred Kroner के अनुसार-

प्रोफ़ेसर अल्फ्रेड क्रोनर दुनिया के प्रमुख Geology (भूविज्ञान) विशेषज्ञों में गिने जाते हैं। वे वैश्विक स्तर पर एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक के रूप में जाने जाते हैं और भूविज्ञान के क्षेत्र में प्रस्तुत विभिन्न सिद्धांतों पर गहरी तथा निष्पक्ष आलोचना के लिए मशहूर हैं।

उन्हें दुनिया के बड़े वैज्ञानिकों में इसलिए विशेष स्थान प्राप्त है कि वे वैज्ञानिक सिद्धांतों को शोध, तर्क और आलोचनात्मक दृष्टि के आधार पर परखने के लिए प्रसिद्ध हैं।

क़ुर्आन मजीद में ब्रह्मांड की सृष्टि का उल्लेख-

اَوَلَمۡ یَرَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ کَانَتَا رَتۡقًا فَفَتَقۡنٰہُمَا ؕ

अनुवाद-

"क्या उन लोगों ने, जिन्होंने कुफ़्र किया, यह नहीं देखा कि आकाश और पृथ्वी दोनों आपस में जुड़े हुए थे, फिर हमने उन्हें फाड़कर अलग कर दिया"।

(सूरः अल-अम्बिया, आयत-30)

रत्क़ और फ़त्क़-

इस आयत में प्रयुक्त दो शब्द रत्क़ رَتۡق और फ़त्क़ فَتَقۡ हैं। رَتۡق रत्क़ का अर्थ है—जुड़ा हुआ, मिला हुआ। जबकि फ़तक़ فَتَقۡ का अर्थ है—फाड़ना, तोड़ना, अलग करना।

क़ुर्आनी शब्द रत्क़ رَتۡق को समझने के लिए यदि हम आधुनिक विज्ञान के अनुसार देखें, तो वैज्ञानिक शब्दावली से पता चलता है कि अपार ऊर्जा ने ब्रह्मांड को उस समय एक प्रारम्भिक इकाई के रूप में बांध रखा था, जिसे Singularity कहा जाता है।

उस समय ब्रह्मांड का घनत्व (Density) अर्थात उसकी Thickness और अंतरिक्ष-समय का वक्रता (Curvature) दोनों असीमित थे और ब्रह्मांड का आयतन (Volume) शून्य था।

Big Bang के सिद्धान्त से पहले-

यदि इस आयत पर विचार किया जाए तो इन शब्दों में आकाश और पृथ्वी के एक साथ जुड़े होने (एक इकाई Singularity के रूप में) की ओर संकेत मिलता है— अर्थात यह Big Bang के सिद्धांत से पहले की अवस्था का वर्णन है यानी विस्फोट या अल्लाह की शक्ति से अलग होने से पहले की स्थिति। इसके बाद विस्फोट या फटने के माध्यम से अलग होने का उल्लेख किया गया है।

ब्रह्मांड की प्रारंभिक सृष्टि-

ब्रह्मांड की प्रारंभिक सृष्टि के समय उसका समस्त पदार्थ एक इकाई अर्थात एक सूक्ष्म Cosmic Egg के रूप में मौजूद था, फिर अल्लाह रब्बुल् इ़ज़्ज़त ने इस इकाई को फोड़ा और उसके परिणामस्वरूप इस ब्रह्मांड का अस्तित्व हुआ।

वास्तव में आज हमें दिखाई देने वाली आकाशगंगाएँ (Galaxies) उसी एक मूल पदार्थ से अलग हुई हैं, जिसका क़ुर्आन करीम में इस प्रकार उल्लेख है।

كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا

आकाश और पृथ्वी दोनों आपस में जुड़े हुए थे (एक Singularity की अवस्था में) फिर हमने उन्हें फाड़कर अलग कर दिया"। अल्लाह तआ़ला ने लगभग 1400 वर्ष पहले क़ुर्आन मजीद को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर नाज़िल करके आपके माध्यम से ब्रह्मांड की सृष्टि का यह वर्णन किया और लोगों को चिंतन-मनन की ओर आमंत्रित किया।

इस प्रकार सदियों की शोध के बाद बीसवीं सदी के मध्य में आधुनिक Cosmology, Astronomy और Astrophysics के विशेषज्ञों ने लगभग यही सिद्धांत प्रस्तुत किया कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति शून्य आयतन वाली एक इकाई से हुई। Big Bang Theory इसी की एक तर्कसंगत व्याख्या मानी जाती है।

विशेषज्ञों का सिद्धान्त-

प्रोफ़ेसर Alfred Kroner ने Geology के आधार पर क़ुर्आन मजीद की

इस आयत के विषय में कहा कि क़ुर्आन ने चौदह सौ वर्ष पहले ऐसे तथ्यों का उल्लेख किया है, जिनका प्रकट होना एक ऐसे व्यक्ति (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के माध्यम से हुआ जो पढ़े-लिखे नहीं थे। इसलिए यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह ज्ञान मानव मस्तिष्क की रचना नहीं हो सकता।

वह लिखते हैं-

Thinking of many of these questions and thinking where Muhammad (SAW) came from, he was after all a Bedouin. He could not have known about things like the common origin of the universe, because scientists have only found out within the last few years with very complicated and advanced technological methods that this is the case.

(Earth, Third Edition, W. H. Freeman & Company, San Francisco, 1982, by: Frank Press, Raymond Siever)

अनुवाद-

"जब हम इन प्रश्नों पर विचार करते हैं और यह सोचते हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कहाँ से आए तो यह तथ्य सामने आता है कि वे एक बदू (रेगिस्तानी) समाज से सम्बन्धित थे।

ऐसी स्थिति में उनके लिए ब्रह्मांड की साझा उत्पत्ति जैसे तथ्यों को जानना सम्भव नहीं था, क्योंकि वैज्ञानिकों ने भी इस सत्य को बहुत हाल के वर्षों में अत्यंत जटिल और आधुनिक तकनीक के माध्यम से खोजा है"।

प्रोफ़ेसर अल्फ़्रेड क्रोनर और ह़दीस-ए-नबवी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

प्रोफ़ेसर अल्फ़्रेड क्रोनर एक अन्य स्थान पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वह ह़दीस प्रस्तुत करते हैं, जो सह़ीह़ मुस्लिम में वर्णित है और जिसका सम्बन्ध भविष्य में अ़रब प्रायद्वीप के जलवायु परिवर्तन से है।

The last Hour (The day of Judgement) will not come upon us until the lands of the Arabs are once again pasture lands and filled with rivers.'' (Muslim: 157)

अनुवाद-

"क़ियामत उस समय तक नहीं आएगी, जब तक अ़रब का रेगिस्तान

फिर से हरा-भरा न हो जाए और वहाँ नदियाँ न बहने लगें"।

(सह़ीह़ मुस्लिम, किताब-उज़्ज़कात, बाब फज़ूल-ए-सदक़ा, ह़दीस नम्बरः 157)

● प्रोफ़ेसर Alfred Kroner इस प्रस्तुत ह़दीस की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि भूवैज्ञानिक प्रमाणों से पता चलता है कि हिमयुग (Ice Ages / Snow Ages) के दौरान अ़रब प्रायद्वीप हरा-भरा था और वहाँ चरागाहें तथा नदियाँ मौजूद थीं।

आधुनिक वैज्ञानिक शोध ने यह तथ्य स्पष्ट कर दिया है कि North Pole के बर्फ़ीले भंडार और हिमखंड (Icebergs) धीरे-धीरे दक्षिणी क्षेत्रों की ओर खिसक रहे हैं।

जब यह हिमीय प्रणाली Arabian Peninsula के निकट पहुँचेगी, तो वहाँ के जलवायु ह़ालात में स्पष्ट परिवर्तन होगा। इसके परिणामस्वरूप यह क्षेत्र फिर से ठंडा, आर्द्र और अत्यंत हरा-भरा हो सकता है यहाँ तक कि यह दुनिया के सबसे अधिक हरित क्षेत्रों में गिना जाने लगेगा।

The new snow age has actually started. and we can see the snow crawling once again from the North pole southwards. In Fact the polar snow is now on the way to get closer to the Arabian Peninsula. we can see the signs of this in the snow blizzard striking the North part of Europe & America every winter. Scientists have other signs and information proving the actual beginning of another snow age it is the scientific fact." Press F. & Siever,R.,.....
—This could have been known to him only through revelation from above."

(Earth, Third Edition, W. H. Freeman & Company, San Francisco, 1982, by: Frank Press, Raymond Siever)

प्रोफ़ेसर Alfred Kroner क़ुर्आन मजीद की अभिव्यक्ति शैली पर अपना मत व्यक्त करते हैं कि यदि क़ुर्आन में वर्णित ब्रह्मांड, भूविज्ञान, सृष्टि और प्राकृतिक घटनाओं से सम्बन्धित सभी संकेतों को एक साथ रखकर शैक्षणिक दृष्टि से परखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि क़ुर्आन किसी विशेष वैज्ञानिक शब्दावली की पुस्तक नहीं है, बल्कि वह सरल और सामान्य भाषा में ऐसे गहरे प्राकृतिक और ब्रह्मांडीय तथ्यों की ओर मार्गदर्शन करता है,

जिनकी पुष्टि आधुनिक विज्ञान ने धीरे-धीरे की है।

इस दृष्टि से क़ुर्आन एक ऐसी पुस्तक के रूप में सामने आता है, जो मानव समझ के स्तर को ध्यान में रखते हुए अत्यंत गहन वैज्ञानिक तथ्यों को व्यापक और अर्थपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विषय में-

इसी संदर्भ में प्रोफ़ेसर Alfred Kroner ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में यह राय व्यक्त करते हैं कि आपकी ह़दीसों में ऐसे अनेक संकेत और तथ्य मिलते हैं, जिनका सम्बन्ध प्रकृति, ब्रह्मांड और प्राकृतिक नियमों से है और आधुनिक वैज्ञानिक शोध ने उनमें से कई तथ्यों की पुष्टि भी कर दी है।

इस आधार पर शैक्षणिक दृष्टिकोण से यह कहना उचित प्रतीत होता है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह तआ़ला की ओर से भेजे गये सच्चे रसूल हैं, क्योंकि औपचारिक शिक्षा न होने के बावजूद ऐसे समय में जब वैज्ञानिक ज्ञान अभी प्रारम्भिक अवस्था में था, इतने सूक्ष्म, संगठित और तार्किक तथ्यों का वर्णन केवल मानवीय बुद्धि से परे दिखाई देता है। यही पहलू आपकी नुबूवत के दिव्य स्रोत और सत्यता का एक स्पष्ट प्रमाण बनकर सामने आता है।

क़ुर्आनी आयत और समुद्री विज्ञान

आधुनिक विज्ञान ने यह तथ्य खोजा है कि जहाँ दो अलग-अलग समुद्र आपस में मिलते हैं, वहाँ उनके बीच एक प्राकृतिक Barrier (रुकावट) मौजूद होती है। यह रुकावट दोनों समुद्रों को इस प्रकार अलग बनाये रखती है कि हर समुद्र अपना अलग तापमान, salinity (लवणता) और density (घनत्व) बनाये रखता है।

उदाहरण के लिए Mediterranean Sea का पानी अधिक गर्म, अधिक नमकीन और अपेक्षाकृत कम घनत्व वाला होता है, जबकि Atlantic Ocean के पानी की ये विशेषताएँ उससे भिन्न होती हैं।

जब Mediterranean Sea का पानी Gibraltar sill के स्थान से Atlantic

Ocean में प्रवेश करता है, तो वह अपनी गर्माहट, अधिक लवणता और कम घनत्व जैसी विशेषताओं के साथ लगभग एक हज़ार मीटर की गहराई पर सैकड़ों किलोमीटर तक अटलांटिक महासागर के भीतर बहता चला जाता है और अंततः उसी गहराई पर स्थिर हो जाता है।

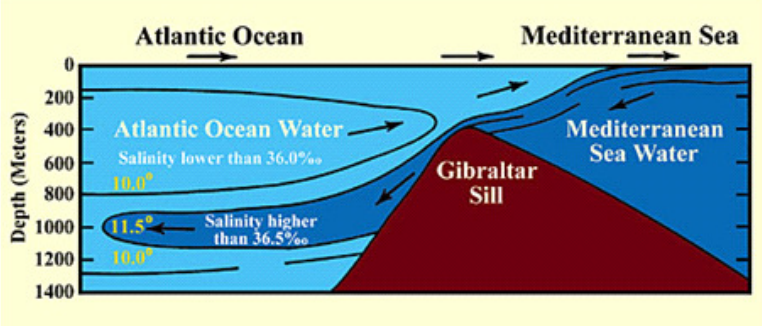

The Mediterranean sea water as it enters the Atlantic over the Gibraltar sill with its own warm, saline, and less dense characteristics, because of the barrier that distinguishes between them. Temperatures are in degrees Celsius (C°) ,

(Marine Geology, Kuenen, page. 43, with a slight enhancement)

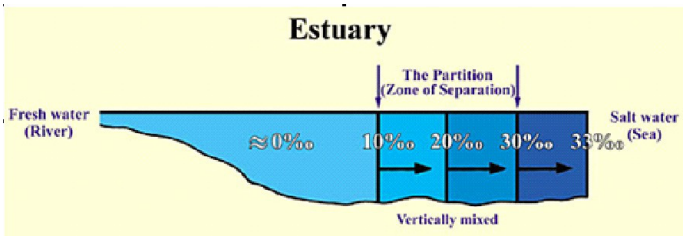

Longitudinal section showing salinity (parts per thousand ‰) in an estuary. We can see here the partition (zone of separation) between the fresh and the salt water.

(Introductory Oceanography, Thurman, page 301, with a slight enhancement)

यह जानकारी केवल हाल के समय में खोजी गई है, वह भी आधुनिक उपकरणों के उपयोग से, जिनके माध्यम से तापमान, Salinity (लवणता),

density (घनत्व) ऑक्सीजन के घुलने की क्षमता आदि को मापा जाता है। मानव आँख उन दो समुद्रों के बीच के अंतर को सीधे नहीं देख सकती जो आपस में मिलते हैं, बल्कि वे हमें एक ही समान (एकरूप) समुद्र के रूप में दिखाई देते हैं।

इसी प्रकार मानव आँख Estuaries (नदी-मुख क्षेत्रों) में पानी के उस विभाजन को भी नहीं देख सकती, जहाँ पानी तीन प्रकारों में बँटा होता है— मीठा पानी, खारा (नमकीन) पानी और इन दोनों के बीच की सीमा या पर्दा। **(Zone of Separation)**

Principles of Oceanography, Davis, pp. 92-93 Oceanography a view of earth, M. Grant Gross, p. 242-244, Introductory Oceanography, Harold V. Thurman, pp. 300-301

प्रोफ़ेसर विलियम डब्लू हे के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

प्रोफ़ेसर विलियम डब्ल्यू० हे **(Professor Hay)** अमेरिका के प्रमुख समुद्री वैज्ञानिकों **(Marine Scientists/Marine Geologists)** में गिने जाते हैं। उन्होंने आधुनिक समुद्री विज्ञान **Marine Geology** और **Ocean Dynamics** की रौशनी में क़ुर्आन मजीद में वर्णित कुछ आयतों का वैज्ञानिक अध्ययन किया है और उनकी व्याख्या प्रस्तुत की है।

क़ुर्आन मजीद में इर्शाद है-

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢٠﴾ (सूरह रह़मान आयत: 19-20)

अनुवाद-

"उसी ने दो समुद्रों को बहा दिया जो आपस में मिलते हैं। उनके बीच एक आड़ (पर्दा) है जिससे वे आगे नहीं बढ़ते"।

एक दूसरी जगह इर्शाद है-

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾ (सूरह फ़ुरक़ान आयत: 53)

अनुवाद-

"और वही है जिसने दो समुद्रों को मिला दिया। एक मीठा और सुखद, दूसरा खारा और कड़वा और इन दोनों के बीच एक पर्दा और मज़बूत रुकावट स्थापित कर दी"।

प्रोफ़ेसर William W. Hay इन आयतों की वैज्ञानिक व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि यद्यपि समुद्र के यह विभिन्न जल-भंडार देखने में एक जैसे प्रतीत होते हैं, लेकिन वास्तव में वे अपनी कई मूलभूत भौतिक और रासायनिक विशेषताओं में एक-दूसरे से भिन्न होते हैं।

आधुनिक शोध और प्राकृतिक सीमा-

इन भिन्नताओं में पानी की Density (घनत्व) Temperature (तापमान) Salinity (लवणता) घुले हुए तत्वों का Concentration (सांद्रता) और जैविक ऑक्सीजन की मांग (BOD Biological Oxygen Demand) शामिल हैं।

इन्हीं भिन्नताओं के कारण अलग-अलग समुद्री जल-भंडारों के बीच एक प्राकृतिक सीमा या पर्दा (Partition / Barrier) बन जाता है, जो तुरंत मिश्रण (mixing) को रोककर रखता है।

आधुनिक समुद्री शोध के अनुसार ऐसे प्राकृतिक पर्दों की उपस्थिति को व्यवस्थित वैज्ञानिक अवलोकनों के माध्यम से बीसवीं सदी में विशेष रूप से 1942 ई० के बाद उस समय स्पष्ट रूप से समझा गया, जब विभिन्न स्थानों पर समुद्री अनुसंधान केंद्र (Marine Research Stations) स्थापित किये गये।

आगे स्पष्ट करते हुए प्रोफ़ेसर हे इसकी एक प्रमुख मिसाल Mediterranean Sea और Atlantic Ocean के संगम की देते हैं, जहाँ Gibraltar के स्थान पर दोनों समुद्रों के बीच एक स्पष्ट सीमा पाई जाती है।

चित्रात्मक जानकारी-

आधुनिक उपकरणों और वैज्ञानिक मशीनों से प्राप्त चित्रात्मक और spectral जानकारी से पता चलता है कि इन दोनों जलराशियों का रंग

अलग-अलग दिखाई देता है (कहीं गहरा नीला, कहीं कालेपन लिए हुए) और यह अंतर वास्तव में तापमान, लवणता और घनत्व के भेद के कारण होता है।

खारा और मीठा पानी-

चूँकि खारे और मीठे पानी की Density अलग होती है, इसलिए उन पर प्रभाव डालने वाला Gravitational Effect भी भिन्न होता है और यही अंतर उनके पूर्ण मिश्रण में एक प्राकृतिक बाधा बन जाता है। यह वैज्ञानिक तथ्य क़ुर्आन मजीद में वर्णित 'बरज़ख' (प्राकृतिक विभाजन) की अवधारणा से मेल खाता हुआ प्रतीत होता है।

क़ुर्आन का प्रमाण-

अंत में प्रोफ़ेसर साह़ब लिखते हैं कि इतने जटिल विषय का वर्णन क़ुर्आन में होना इस बात का प्रमाण है कि यह अल्लाह की ओर से अवतरित पुस्तक है और चूँकि यह उस व्यक्ति पर नाज़िल हुई जो औपचारिक रूप से पढ़े-लिखे नहीं थे। यह भी इस बात का संकेत है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वास्तव में अल्लाह के पैग़म्बर हैं, क्योंकि लगभग 1400 वर्ष पहले समुद्रों के बारे में बहुत कम ज्ञान था—यह ज्ञान तो हमें उन्नीसवीं सदी के अन्तिम दौर में ही प्राप्त हो सका।

(Kennet, J.P., Marine Geology, New Jersey, Prentice-Hall, Inc. 1982)
(Elder, D. & Pernetta, J.C. (Editors) Oceans, In world COnsevation Atlas, London, 1991)

प्रोफ़ेसर मौरिस बुके के अनुसार-

डॉ०मौरिस बुके (Dr. Maurice Bucaille) एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी सर्जन और हृदय रोग विशेषज्ञ थे। चिकित्सा के साथ-साथ उन्हें विश्व धर्मों और वैज्ञानिक इतिह़ास में गहरी रुचि थी। इसी शैक्षणिक पृष्ठभूमि में उन्होंने बाइबिल, क़ुर्आन और आधुनिक विज्ञान का एक निष्पक्ष तथा तुलनात्मक अध्ययन किया, जो बाद में उनकी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक The Bible The Qur'an and Science के रूप में प्रकाशित हुई।

डॉ० बुके की शोध केवल सैद्धांतिक नहीं थी, बल्कि प्रत्यक्ष वैज्ञानिक अवलोकन और व्यावहारिक अनुसंधान पर आधारित थी। उनके कार्य के दो प्रमुख विषय थे-

- मिस्र के फ़िरऔन की सुरक्षित संरक्षित लाश।
- ब्रह्मांड की सृष्टि और वैज्ञानिक कथन।

1. मिस्र के फ़िरऔन की सुरक्षित लाश-

फ़िरऔन-ए-मिस्र की लाश के सम्बन्ध में क़ुर्आन मजीद में अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया है-

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلْفَكَ آيَةً ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَافِلُونَ ﴿٩٢﴾

अनुवाद-

"तो आज हम तुम्हारे शरीर को बचा लेंगे, ताकि तुम अपने बाद आने वालों के लिए एक निशानी बन जाओ और निस्संदेह बहुत से लोग हमारी निशानियों से गाफिल रहते हैं"। (सूरः यूनुस-92)

वैज्ञानिक शोध-

डॉ० मौरिस बुके की "फ़िरऔन की लाश" पर शोध का वास्तविक वैज्ञानिक संदर्भ यह है कि 1970 के दशक में शाही ममियों (विशेष रूप से Ramesses II) की स्थिति बिगड़ रही थी। उनमें फंगस/जीवाणु संक्रमण और नमी के कारण टूट-फूट तथा क्षति के संकेत दिखाई दे रहे थे।

इसलिए संरक्षण (Conservation) और वैज्ञानिक परीक्षण के लिए उन्हें चिकित्सीय जाँच से गुज़ारा गया।

इस यात्रा और 'उपचार/शोध' का मुख्य उद्देश्य ममी को आगे होने वाली क्षति से बचाना था, साथ ही X-ray और Endoscopy जैसी आधुनिक तकनीकों से शारीरिक स्थिति, बीमारियों और embalming (हनूती) विधियों के बारे में

वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करना भी था।

चिकित्सीय अध्ययन–

डॉ० मौरिस बुके ने अपनी रचनाओं में बताया कि ममियों के चिकित्सीय अध्ययन में कई स्तरों पर कार्य किया जाता है–

(1) Visual / Photographic Examination: त्वचा, हड्डियों और ऊतकों की टूट-फूट, दरारें तथा हनूती परतों की स्थिति का निरीक्षण।

(2) Radiology (X-ray): हड्डियों की संरचना, पुरानी चोटें, जोड़ों की बीमारियाँ, दाँतों और जबड़े की स्थिति तथा आंतरिक संरचना की बिना नुक़्सान पहुँचाये जाये।

(3) Endoscopy (Fiber-optic): आंतरिक क्षति और चिकित्सीय जानकारी एकत्र करना।

(4) Microbiology / Conservation Treatment: जैविक संक्रमण को रोकने के लिए कीटाणुनाशक उपाय या **Irradiation** (विकिरण) जैसे संरक्षणात्मक कदम उठाये गये।

ममियों के प्रमाण–

इस प्रकार डॉ० मौरिस बुके ने शारीरिक और चिकित्सीय स्थिति से सम्बन्धित प्रमाण प्रस्तुत किये — जैसे हड्डियों और जोड़ों की बीमारियाँ, दाँतों की समस्याएँ और **Embalming** की वैज्ञानिक विधियों का विवरण। यही वह पहलू हैं जिन्हें उन्होंने अपनी पुस्तक **Mummies of the Pharaohs: Modern Medical Investigations** में विशेष रूप से उजागर किया है।

फ़िरऔ़न का सुरक्षित शरीर–

चूँकि क़ुर्आन मजीद में फ़िरऔ़न के शरीर को सुरक्षित रखे जाने (एक निशानी के रूप में) का उल्लेख मिलता है, इसलिए मौरिस बुके ने इस आयत को अपने समग्र तर्क में इस प्रकार शामिल किया कि फ़िरऔ़न का शरीर

हज़ारों वर्षों बाद भी सुरक्षित रह जाना और फिर आधुनिक युग में उसे संरक्षित रखने के लिए वैज्ञानिक उपचार और अनुसंधान से गुजरना, इस विचार से मेल खाता है कि यह "आने वाली पीढ़ियों के लिए एक निशानी" बने।

हालाँकि यह बात ध्यान देने योग्य है कि "मूसा (अ़लै०) के फ़िरऔ़न" की सटीक पहचान और 'डूबकर मृत्यु की निश्चित पुष्टि' जैसे दावों पर शोधकर्ताओं में पूर्ण सहमति नहीं है।

विशेष ममी-

बुके और कुछ बाद के लेखकों ने एक विशेष ममी को इस घटना से जोड़ने का प्रयास किया, लेकिन इस पर मतभेद मौजूद हैं।

डॉ० मौरिस बुके ने अपनी पुस्तक **The Quran and Modern Science** में क़ुर्आन के कथन (जैसे सूरः यूनुस-92) का आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के संदर्भ में विश्लेषण किया है और इस सिलसिले में मिस्र के फ़िरऔ़न की सुरक्षित ममी (शरीर) का उल्लेख किया है।

उन्होंने **Ramesses II** जैसे प्राचीन मिस्री फ़िरऔ़न की ममी के वैज्ञानिक अध्ययन को देखा और यह नोट किया कि क़ुर्आन की इस आयत में "शरीर को सुरक्षित रखा जाना" वर्णित है, जो ऐतिहासिक ममी की स्थिति के साथ सामंजस्य रखता है।

इस अध्ययन के आधार पर उनका मत था कि क़ुर्आन और आधुनिक वैज्ञानिक अवलोकनों के बीच विरोध नहीं, बल्कि सामंजस्य पाया जाता है। वह लिखते हैं-

> **"The Qur'an follows on from the two Revelations that preceded it and is not only free from contradictions in its narrations, but provides a short-cut for those who could not see that its data is in a format that agrees with modern scientific findings.**
>
> **(Maurice Bucaille, The Bible, The Qur'an and Science: The Holy Scriptures Examined in the Light of Modern Knowledge, Section: General Conclusions, Page 162)**

अनुवाद-

कुर्आन उन दो वह्य (तौरात और इंजील) का क्रमिक विस्तार है जो इससे पहले नाजिल हुई थीं। यह न केवल अपने कथनों में विरोधाभासों से मुक्त है, बल्कि उन लोगों के लिए एक संक्षिप्त और स्पष्ट मार्ग भी प्रदान करता है, जो यह समझ नहीं पा रहे थे कि इसमें प्रस्तुत सामग्री आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के बिल्कुल अनुरूप एक व्यवस्थित रूप में मौजूद है"।

2. ब्रह्मांड की सृष्टि और वैज्ञानिक कथन-

डॉ० मौरिस बुके ने ब्रह्मांड की सृष्टि और वैज्ञानिक कथनों के सम्बन्ध में अपनी इसी पुस्तक में कुर्आनी आयतों को व्यवस्थित रूप से एकत्र किया और उनका आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान तथा बाइबिल के कथनों के साथ तुल्नात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।

डॉ० मौरिस बुके लिखते हैं कि उन्होंने पहले अनुवादों के माध्यम से कुर्आन में "प्राकृतिक घटनाओं" से जुड़े संकेतों को देखा, फिर अ़रबी मूल पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़कर उन आयतों की सूची बनाई और उन्हें आधुनिक विज्ञान के मानकों पर परखा।

उन्होंने निष्कर्ष रूप में लिखा कि कुर्आन में ऐसा कोई कथन नहीं मिला जो आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आपत्तिजनक हो। साथ ही उन्होंने ह़दीस के कुछ कथनों को भी अलग से वैज्ञानिक दृष्टि से परखा।

सृष्टि पर शोध

ब्रह्मांड की सृष्टि पर विस्तृत शोध प्रस्तुत करते हुए डॉ० मौरिस बुके पाँच प्रमुख बिंदुओं का उल्लेख करते हैं। जैसे-

1. सृष्टि के 'छह दौर' को शब्दशः दिनों के बजाय लम्बे कालखंडों (Periods) के अर्थ में समझना।
2. आकाश, पृथ्वी और सौरमंडल की रचना के चरणों का आपस में जुड़ा हुआ और क्रमिक (Gradual) होना।

3. प्रारम्भ में ब्रह्मांड का धुएँ/ गैस जैसी अवस्था (Smoke / gaseous state) में होना। जैसा कि सूरः फ़ुस्सिलत (41:11) की व्याख्या से स्पष्ट होता है।
4. "सात आसमान" और पृथ्वियों की ऐसी व्याख्या जो ब्रह्मांडीय संरचना तथा विभिन्न स्तरों या परतों की ओर संकेत करती है।
5. आकाश और पृथ्वी के बीच किसी मध्यवर्ती भौतिक सेतु या पदार्थ की संभावित उपमाएँ जिन्हें आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में समझा जा सकता है।

कुर्आन की आधुनिकता-

इसके तुरन्त बाद डॉ० Maurice Bucaille अपनी पुस्तक The Bible, The Quran and Science के अन्तिम अध्यायों में स्पष्ट रूप से यह निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं कि कुर्आन मजीद में ब्रह्मांड की सृष्टि, प्राकृतिक घटनाओं और ऐतिहासिक प्रसंगों से सम्बन्धित कथनों में कोई वास्तविक वैज्ञानिक विरोधाभास मौजूद नहीं है।

उनके अनुसार कुर्आन न केवल आंतरिक रूप से सुसंगत है, बल्कि आधुनिक Astronomy, Cosmology और अन्य वैज्ञानिक विधाओं के प्रमाणित डेटा के साथ भी मेल खाता है।

इसके विपरीत बाइबिल (विशेषकर Pentateuch / Genesis) के कुछ कथन वैज्ञानिक मानकों पर खरे नहीं उतरते और आधुनिक शोध की रौशनी में Scientifically unacceptable माने जाते हैं।

इस प्रकार बुके इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कुर्आन एक ऐसा ग्रंथ है, जिसके कथन आधुनिक ज्ञान के साथ सामंजस्य रखते हैं और गंभीर विचार के योग्य हैं, जबकि बाइबिल के कुछ हिस्से मानवीय हस्तक्षेप के कारण वैज्ञानिक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

(Bucaille, Maurice. The Bible, The Qur'an and Science: The Holy Scriptures Examined in the Light of Modern Knowledge, Seghers, Paris, 1976; Part Two: "The Qur'an and Modern Science " Chapter "The Creation of the Heavens and the Earth", page 141–162, page 163–168)

अन्त में डॉ० Maurice Bucaille लिखते हैं-

"How could a man, from being illiterate, become the most important author, in terms of literary merit, in the whole of Arabic literature?How could he then pronounce truths of a scientific nature that no other human being could possibly have developed at that time?. It is inconceivable that many of the statements in the Qur'an which are concerned with science could have been the work of a man."

(The Bible, The Qur'an and Science: The Holy Scriptures Examined in the Light of Modern Knowledge,Seghers, Paris, 1976;, Page 241-243)

अनुवाद-

"एक ऐसा व्यक्ति जो पढ़ना-लिखना नहीं जानता था, वह अ़रबी साहित्य का सबसे महान रचनाकार कैसे बन गया? और वह ऐसे वैज्ञानिक तथ्यों का वर्णन कैसे कर सकता था, जिन तक उस समय कोई भी मनुष्य पहुँच ही नहीं सकता था?

यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि क़ुर्आन में मौजूद इतने अधिक वैज्ञानिक स्वरूप के कथन किसी इन्सान की अपनी रचना हों"।

प्रोफ़ेसर Marshall Johnson के अनुसार-
(Anatomy और Embryology के विशेषज्ञ)

"As a scientist, I can only deal with things which I can specifically see. I can understand embryology, developmental biology. I can understand the words that are translated to me from the Qur'an. As I gave the example before... I see no evidence for the fact to refute the concept that this individual, Muhammad (SAW), had to be developing the information from some place. So I see nothing here in conflict with the concept that divine intervention was involved in what he was able to write.

(Bucaille, Maurice, The Bible, The Qur'an and Science,Paris: Seghers, 1976, Page 133-135)

अनुवाद- "एक वैज्ञानिक के रूप में मैं केवल उन्हीं बातों से सम्बन्धित हो

सकता हूँ जिन्हें मैं स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ। मैं Embryology और विकासात्मक जीवविज्ञान (evolutionary biology) को समझता हूँ और क़ुर्आन के उन शब्दों को भी समझ सकता हूँ जो मेरे सामने अनुवाद करके प्रस्तुत किये गये हैं। जैसा कि मैंने पहले उदाहरण दिया थामुझे ऐसा कोई प्रमाण दिखाई नहीं देता जो इस विचार का खंडन करे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह जानकारी कहीं और से स्वयं प्राप्त की हो। इसलिए मुझे इसमें कोई विरोधाभास नज़र नहीं आता कि जो कुछ वह लिखते या बयान करते थे, उसमें दैवी हस्तक्षेप शामिल था"।

प्रोफ़ेसर E. H. Simpson के अनुसार-

"Adding revelation to some of the traditional scientific approaches, there exists statements in the Qur'an shown by science to be valid, which support knowledge in the Qur'an having been derived from God."

(Bucaille, Maurice, The Bible, The Qur'an and Science,Paris: Seghers, 1976, Page 120-122)

अनुवाद-

"पारम्परिक वैज्ञानिक शोध-पद्धति के साथ 'वह्य' (ईश्वरीय प्रकाशना) की अवधारणा को शामिल करने से यह बात स्पष्ट होती है कि क़ुर्आन में ऐसे कथन मौजूद हैं जिन्हें विज्ञान ने सही सिद्ध किया है और यह इस बात का समर्थन करते हैं कि क़ुर्आन का ज्ञान अल्लाह की ओर से है"।

प्रोफ़ेसर Yoshihide Kosai (Japan) के अनुसार-

"I have no difficulty in my mind concerning that this (Qur'an) is divine inspiration or revelation which led him (Muhammad SAW) to relay the statements."

(Bucaille, Maurice, The Bible, The Qur'an and Science,Paris: Seghers, 1976, Page 135)

अनुवाद-

"मेरे मन में इस बात को लेकर कोई कठिनाई नहीं है कि यह (क़ुर्आन) एक दैवी प्रेरणा या वह्य है, जिसने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इन कथनों को प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया"।

प्रोफ़ेसर Shrowder के अनुसार–

"Actually the scientists are now discovering what has been said before in the Qur'an."

(Bucaille, Maurice, The Bible, The Qur'an and Science,Paris: Seghers, 1976, Page 144)

अनुवाद–

"वास्तविकता यह है कि वैज्ञानिक आज वही बातें खोज रहे हैं, जो पहले ही क़ुर्आन में वर्णित की जा चुकी थीं"।

प्रोफ़ेसर Dorja Rao के अनुसार–

"It is difficult to imagine that this type of knowledge was existing at that time around 1400 years ago. This (Qur'an) is definitely not simple human knowledge. A normal human being cannot explain this phenomenon in that much detail. So I think the information must have come from a supernatural source (i.e. Allah).

(Bucaille, Maurice, The Bible, The Qur'an and Science,Paris: Seghers, 1976, Page 142-143)

अनुवाद–

"यह कल्पना करना कठिन है कि इस प्रकार का ज्ञान आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पहले मौजूद हो सकता था। यह (क़ुर्आन) निश्चित रूप से सामान्य मानवीय ज्ञान नहीं है। एक साधारण मनुष्य इस घटना (Phenomenon) की इतनी विस्तृत व्याख्या नहीं कर सकता, इसलिए मैं समझता हूँ कि यह जानकारी किसी अलौकिक स्रोत अर्थात अल्लाह की ओर से आई होगी"।

डॉ० T.V.N. Persaud के अनुसार–

Dr. T.V.N. Persaud कनाडा की **University of Manitoba esa Anatomy** और **Pediatrics** के प्रोफ़ेसर रहे हैं और मानव शरीर की संरचना तथा भ्रूणीय विकास के विश्व-स्तरीय विशेषज्ञ माने जाते हैं।

उन्होंने मानव सृष्टि के प्रारम्भिक चरणों— नुत्फ़ा, अलक़ा, मुद्गा और

हड्डियों व मांस के निर्माण को —आधुनिक Embryology की रौशनी में गहराई से समझाया और इन्हीं चरणों का क़ुर्आन मजीद में वर्णित संकेतों के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।

मुख्य बिन्दु-

इस शोध में उनका मुख्य बिन्दु यह था कि भ्रूणीय विकास से सम्बन्धित यह सूक्ष्म तथ्य माइक्रोस्कोप, प्रयोगात्मक प्रयोगशालाओं और आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों के बिना चौदह सौ वर्ष पहले ज्ञात होना सम्भव नहीं था। इसी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि के कारण उनकी पुस्तकें Human Anatomy और Early Human Development चिकित्सा शिक्षा में प्रामाणिक संदर्भ मानी जाती हैं और उनकी रचनाएँ वैज्ञानिक ईमानदारी, अवलोकन की स्पष्टता तथा शिक्षण उपयोगिता का उत्कृष्ट उदाहरण समझी जाती हैं।

वह लिखते हैं-

"It seems to me that Muhammad was a very ordinary man. He could not read, didn't know how to write. In fact, he was an illiterate. And we are talking about fourteen hundred years ago. You have someone illiterate making profound pronouncements and statements that are amazingly accurate about scientific nature."

(Al-Rehaili, Abdullah M. (Compiler) This is the Truth: Newly Discovered Scientific Facts Revealed in the Qur'an and the Authentic Sunnah, Third Edition, World Supreme Council for Mosques Affairs (Muslim World League), Makkah; Al-Haramain Islamic Foundation, 1995 (PDF reprint 1999) Chapter "Embryology in the Qur'an," Page 32–34)

अनुवाद-

"मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक साधारण मनुष्य थे। वह पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे। वास्तव में वे उम्मी थे और हम आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पहले के समय की बात कर रहे हैं। ऐसे में एक उम्मी व्यक्ति का ब्रह्मांड और प्रकृति से सम्बन्धित इतनी गहरी तथा वैज्ञानिक दृष्टि से आश्चर्यजनक रूप से सही बातें कहना अत्यन्त विचारणीय है"।

भाग-11

ईश सन्देष्टा की धारणा पवित्र कुर्आन के पन्नों में

ईशदूतत्व (रिसालत) पर आस्था

पिछले पन्नों में अलग-अलग आसमानी और ग़ैर-आसमानी धर्मों की किताबों और ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर यह बात साफ़ हो चुकी है कि आख़िरी पैग़म्बर के आने की भविष्यवाणियाँ किसी एक क़ौम, क्षेत्र या सभ्यता तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वे एक ऐसे सार्वभौमिक मार्गदर्शक के इंतजार को दर्शाती थीं जो पूरी मानवता के लिए हो।

इन प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है कि आख़िरी रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी किसी ख़ास देश, नस्ल, जाति या समुदाय के लिए नहीं थी। यह धारणा कि वे केवल इस्लाम के संस्थापक या सिर्फ मुसलमानों के रसूल हैं, ऐतिहासिक और बौद्धिक दृष्टि से सही नहीं है।

वास्तव में उनकी महान हस्ती और उन पर उतरा पवित्र क़ुर्आन पूरी मानवता के लिए मार्गदर्शन, दया और मुक्ति का संदेश है।

इसमें मुसलमान और ग़ैर-मुसलमान का कोई भेद नहीं, जितना अधिकार मुसलमानों का ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और क़ुर्आन पर है, उतना ही अधिकार हर उस इंसान का है जो इस दुनिया में पैदा हुआ है चाहे वह किसी भी परिवार, क़ौम या संस्कृति से जुड़ा हो।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और दूसरे रसूल में अन्तर-

इसके विपरीत पहले के नबी और रसूल एक सीमित दायरे में भेजे जाते थे। हर नबी अपनी ख़ास क़ौम, विशेष क्षेत्र और निश्चित समय के लिए आता था और उसकी दअ़वत पूरी मानवता के बजाय एक विशेष समूह तक सीमित होती थी। इसी कारण उनकी शरीअ़तें भी समय और स्थान की ज़रूरतों के अनुसार थीं।

क़ुर्आन इस सच्चाई को स्पष्ट करता है कि पहले के नबी अपनी-अपनी

क़ौमों की ओर भेजे गये जबकि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पूरी मानवता के लिए भेजा गया।

यही वह मूल अन्तर है जो उनकी पैग़म्बरी को पहले की सभी पैग़म्बरों से अलग और पूर्ण बनाता है, क्योंकि उनका संदेश किसी एक दौर या जगह तक सीमित नहीं बल्कि हर समय और हर स्थान के लोगों के लिए समान रूप से मार्गदर्शन देता है।

मुक्ति दाता-

इसलिए रिसालत पर सच्चा ईमान यह है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को केवल एक धार्मिक नेता या किसी ख़ास समुदाय का मार्गदर्शक न समझा जाए, बल्कि पूरी मानवता का उपकारी, नैतिक सुधारक और वैश्विक मुक्ति-दाता माना जाए।

उनकी शिक्षाएँ रंग, नस्ल, भाषा और भौगोलिक सीमाओं से ऊपर उठकर इंसान को इंसान से जोड़ती हैं और उसे उसके सृष्टिकर्ता से सम्बन्ध स्थापित करने की राह दिखाती हैं।

क़ुर्आन ने इसी सार्वभौमिक पैग़म्बरी को "रहमतुल् लिल्-आ़लमीन" (सारे संसार के लिए दया) कहा है।

इसका अर्थ यह है कि उन पर ईमान लाना केवल एक धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि मानवता की साझा नैतिक और आध्यात्मिक विरासत को स्वीकार करना है।

इस प्रकार रिसालत पर ईमान दरअसल इस विश्वास का नाम है कि सत्य का यह अन्तिम संदेश हर इंसान के लिए है और इससे लाभ उठाने का अधिकार भी बिना किसी भेदभाव के हर व्यक्ति को प्राप्त है।

क़ुर्आन में रसूलों का उल्लेख-

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۚ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾ (सूरह यूनुस: ४७)

अनुवाद-

"हर समुदाय (उम्मत) के लिए एक रसूल होता है, फिर जब उनका रसूल आ जाता है तो उनके बीच न्याय के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है और उन पर ज़रा भी अत्याचार नहीं किया जाता"। (सूरः यूनुस आयत नं० 47)

● इसी तरह़ क़ुर्आन में कहा गया है-

إِنَّآ أَرۡسَلۡنَٰكَ بِٱلۡحَقِّ بَشِيرٗا وَنَذِيرٗاۚ وَإِن مِّنۡ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٞ ﴿٢٤﴾ (سورہ فاطر: ۲۴)

अनुवाद-

"(ऐ मुह़म्मद!) निस्संदेह हमने आपको सत्य के साथ शुभ सूचना देने वाला और सावधान करने वाला बनाकर भेजा है और कोई भी ऐसी क़ौम नहीं गुज़री जिसमें कोई चेतावनी देने वाला न आया हो"। (सूरः फ़ातिर-24)

إِنَّمَآ أَنتَ مُنذِرٞ وَلِكُلِّ قَوۡمٍ هَادٍ ﴿٧﴾

अनुवाद-

"निस्संदेह आप तो केवल चेतावनी देने वाले (नबी) हैं और हर क़ौम के लिए एक मार्गदर्शक आता रहा है"। (सूरः रअ़द-7)

وقال تعالىٰ: وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوۡمِهِۦ لِيُبَيِّنَ لَهُمۡۖ (سورہ ابراھیم: ۴)

अनुवाद-

"हमने हर नबी को उसकी क़ौम की भाषा में ही भेजा, ताकि वह उनके सामने स्पष्ट रूप से (संदेश) समझा सके"। (सूरः इब्राहीम-4)

व्याख्या-

क़ुर्आन मजीद की यह आयतें रिसालत के एक अत्यन्त व्यवस्थित और बुद्धिमत्तापूर्ण दैवीय प्रणाली को स्पष्ट करती हैं।

(وَإِن مِّنۡ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٞ) और (وَلِكُلِّ أُمَّةٖ رَّسُولٞ) इस सिद्धान्त को बताती

हैं कि अल्लाह तआ़ला ने मानव इतिह़ास में कोई भी ऐसी क़ौम नहीं छोड़ी, जिसके पास सत्य की आवाज़ न पहुँची हो। हर उम्मत के लिए रसूल या नज़ीर का आना इस बात का प्रमाण है कि हिदायत किसी विशष नस्ल या क्षेत्र की सम्पत्ति नहीं बल्कि यह एक सार्वभौमिक दैवी परम्परा है।

हर क़ौम में मार्गदर्शन-

इसके अ़लावा 'वलिकुल्लि क़ौमिन हाद' (وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ) के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि हर क़ौम में किसी न किसी रूप में मार्गदर्शन का सिलसिला जारी रहा, ताकि लोगों पर प्रमाण पूरा हो जाए और क़ियामत के दिन कोई यह बहाना न कर सके कि उसे सत्य का सन्देश नहीं मिला था।

इस प्रकार पहले के नबियों और सत्य के मार्गदर्शकों की पैग़म्बरी भले ही अलग-अलग क़ौमों और समयों में हुई हो, लेकिन उन सभी का उद्देश्य एक ही था—इंसान को परमेश्वर की पहचान, नैतिक सुधार और न्याय व निष्पक्षता के मार्ग की ओर बुलाना।

क़ौमी भाषा में रसूल (وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ)

यह सत्य स्पष्ट करती है कि पहले की रिसालतों का क़ौमी और भाषाई विशिष्ट होना सार्वभौमिक हिदायत के विरुद्ध नहीं था, बल्कि उसकी एक बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवस्था थी। हर रसूल को उसकी क़ौम की भाषा और परिस्थितियों के अनुसार भेजा गया, ताकि संदेश पूरी स्पष्टता के साथ समझाया जा सके। यह विशेषता संदेश पहुँचाने के स्तर पर थी।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी-

(إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी को इस वैश्विक सिलसिले की अन्तिम, व्यापक और पूर्ण अवस्था के रूप में प्रस्तुत करती है। आपकी रिसालत किसी एक क़ौम भाषा या क्षेत्र तक सीमित नहीं रही, बल्कि 'ह़क़' के साथ ऐसी दअ़वत बनकर आई जो समय और स्थान की सीमाओं से परे है।

इस प्रकार पहले की रिसालतें सार्वभौमिक हिदायत के क्रमिक (चरणबद्ध) रूप थीं, जबकि रिसालत-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस दैवी योजना की पूर्णता है, जिसमें पूरी मानवता के लिए स्थायी, सर्वव्यापी और पूर्ण मार्गदर्शन का सिस्टम प्रस्तुत कर दिया गया।

विश्वव्यापी पैग़म्बरी-

ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो पैग़म्बरी (रिसालत) का विश्वव्यापी होना एक प्राकृतिक और क्रमिक ईश्वरीय योजना के तहत सामने आता है।

मानव इतिहास बताता है कि प्रारम्भिक काल में मनुष्य सामाजिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक रूप से सीमित दायरे में जीवन जीता था। उसकी पहचान क़बीले, नस्ल और स्थानीय परम्पराओं से जुड़ी होती थी, इसलिए पहले के नबी (अलैहिमुस्सलाम) अपनी-अपनी क़ौमों में, उनकी भाषा और परिस्थितियों के अनुसार भेजे गये, ताकि सत्य का संदेश लोगों की मानसिकता के क़रीब हो और उसे स्वीकार करना आसान बने।

मनोवैज्ञानिक रूप से भी मनुष्य किसी अनजानी भाषा या अपरिचित सांस्कृतिक ढाँचे में दिये गये संदेश को स्वीकार करने में हिचकिचाता है।

इसी कारण "बिलिसानि क़ौमिहि" (यानी उनकी क़ौम की भाषा में) का सिद्धांत मानव समझ और मानसिक तैयारी के बिल्कुल अनुकूल था।

मानव समाज का विकास-

जब इतिहास के विकास के साथ मानव समाज आपसी संपर्क, व्यापारिक नेटवर्क और विचारों के आदान-प्रदान के दौर में प्रवेश कर गया और लोग एक व्यापक मानव समुदाय की कल्पना को स्वीकार करने लगे, तब अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को एक सार्वभौमिक संदेश के साथ भेजा गया। उस समय मानवता की सामूहिक मानसिकता इस योग्य हो चुकी थी कि वह रंग, नस्ल और भाषा से ऊपर उठकर एक साझा नैतिक और आध्यात्मिक व्यवस्था को स्वीकार करे।

इस प्रकार पैग़म्बर-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इतिहास के उस मोड़ पर प्रकट हुई जब स्थानीय पैग़म्बरों की आवश्यकता समाप्त हो चुकी थी और पूरी मानवता के लिए एक व्यापक, स्थायी और सार्वभौमिक संदेश की आवश्यकता अनिवार्य बन गई थी।

पूर्व के पैग़म्बरों की घोषणा-

यह तथ्य भी नुबूवत (पैग़म्बरी) के इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक पहलू है कि पूर्व के नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) में से किसी ने भी अपनी पैग़म्बरी को अन्तिम या स्थायी घोषित नहीं किया। वे सभी इस चेतना के साथ आए कि उनके बाद और नबी आएँगे और मार्गदर्शन का सिलसिला जारी रहेगा।

इसी कारण उनकी दअ़वत (संदेश) अपनी क़ौम, अपने समय और अपनी विशेष ज़िम्मेदारियों तक सीमित रही।

इसके विपरीत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही वे एकमात्र नबी हैं जिन्होंने पूर्ण स्पष्टता और निश्चितता के साथ यह घोषणा की कि उन्हें पूरी मानवता के लिए अन्तिम रसूल बनाकर भेजा गया है। क़ुर्आन-ए-मजीद ने इस समाप्ति-ए-नुबूवत (ख़त्म-ए-नुबूवत) की घोषणा को बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार दर्ज किया है-

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ
النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝٤٠ (सूरह अह़्ज़ाब:४०)

अनुवाद-

"मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी के पिता नहीं हैं, बल्कि वह अल्लाह के रसूल हैं और सभी नबियों को समाप्त करने वाले हैं"।

नबियों की श्रृंखला को पूर्ण करने वाले-

अर्थात मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं, बल्कि अल्लाह के रसूल और तमाम नबियों की श्रृंखला को पूर्ण करने वाले हैं। इस

क़ुर्आनी घोषणा का मतलब यह है कि नुबूवत (पैग़म्बरी) का वह सिलसिला, जो इतिहास के विभिन्न चरणों में मानव चेतना के प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के लिए चलता रहा, अपनी परिपूर्णता और उत्कर्ष पर रिसालत-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ आकर पूरा हो गया।

सुरक्षित व्यवस्था-

अब मार्गदर्शन के लिए किसी नये नबी की आवश्यकता शेष नहीं रही, क्योंकि क़ुर्आन और सुन्नत के रूप में एक ऐसा व्यापक, सुरक्षित और स्थायी व्यवस्था प्रदान कर दी गई है जो हर युग, हर समाज और हर इन्सान की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक रहनुमाई के लिए पर्याप्त है।

इस प्रकार ख़त्म-ए-नुबूवत वास्तव में रिसालत की सार्वभौमिकता (विश्वव्यापकता) का तार्किक और ऐतिहासिक चरम बिन्दु है।

इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया-

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٨﴾ (सूरह अल-आ़राफ़:१५८)

अनुवाद-

"ऐ मुहम्मद! कह दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी ओर अल्लाह का रसूल हूँ जो सारी सृष्टि का पालनहार है। आकाशों और धरती में उसके सिवा कोई मालिक नहीं है। वही जीवन देता है और वही मृत्यु देता है। इसलिए ईमान लाओ अल्लाह पर और उस उम्मी नबी पर (जो अनपढ़ होते हुए भी क़ुर्आन जैसे असाधारण ज्ञान का स्रोत प्रस्तुत कर रहे हैं) और जो अल्लाह के सभी कलामों (यानी उसकी भेजी हुई सभी किताबों) को सत्य मानते हैं। उनकी पैरवी करो ताकि तुम सही मार्ग पा सको"।

- इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया-

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۙ﴿١﴾ (सूरह फ़रक़ान:१)

अनुवाद-

"बड़ी ही बरकत वाला है वह अल्लाह, जिसने अपने बन्दे 'हज़रत मुहम्मद' पर फ़ुर्क़ान (यानी सत्य और असत्य में अन्तर बताने वाला क़ुर्आन) उतारा, ताकि वे सारी दुनिया के लोगों को (बुराई के बुरे परिणाम से) सचेत करने वाले बनें"।

● इसी तरह एक और जगह फ़रमाया गया है-

وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيۡرًا وَّنَذِيۡرًا وَّلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ۝۲۸ (सूरः सबा : २८)

अनुवाद-

"ऐ मुहम्मद! हमने आपको सभी लोगों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाला और सावधान करने वाला बनाकर भेजा है, लेकिन अधिकांश लोग इसे नहीं जानते"।

इन क़ुर्आनी आयतों में रिसालत (पैग़म्बरी) की सार्वभौमिकता को अत्यन्त स्पष्टता, शक्ति और व्यापकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। सूरः अल्-अअ़राफ़ की आयत قُلۡ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ اِلَيۡكُمۡ جَمِيۡعًا में पूरी मानवता को सीधे सम्बोधित करते हुए यह घोषित कर दिया गया कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) किसी विशष क़ौम, नस्ल या क्षेत्र के रसूल नहीं, बल्कि समस्त मानव जाति की ओर अल्लाह के रसूल हैं और यह रिसालत उस परमेश्वर की ओर से है जो आकाशों और धरती का एकमात्र स्वामी तथा जीवन और मृत्यु का पूर्ण अधिकार रखने वाला है।

सारे संसार के लिए सन्देश-

सूरः अल्-फ़ुर्क़ान की आयत لِيَكُوۡنَ لِلۡعٰلَمِيۡنَ نَذِيۡرًا इस सत्य को और विस्तार देती है कि क़ुर्आन का अवतरण और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी केवल अ़रबों या किसी विशेष समाज के लिए नहीं, बल्कि सारे संसार के लिए चेतावनी, मार्गदर्शन और नैतिक जागरण का संदेश है।

इसी भाव को सूरः सबा की आयत وَمَآ أَرۡسَلۡنَاكَ إِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ में अत्यंत

निश्चित और बिना किसी शर्त के व्यक्त किया गया है कि आपकी रिसालत पूरी मानवता को समेटे हुए है, जिसमें किसी क़ौम या वर्ग का कोई विशेषाधिकार नहीं रह जाता।

विकास का चरम बिन्दु-

इन तीनों आयतों को एक साथ देखा जाए तो यह तथ्य पूरी स्पष्टता से सामने आता है कि रिसालत-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मानवता के बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास का चरम बिन्दु है, जिसमें मार्गदर्शन, नैतिकता, न्याय और मुक्ति का ऐसा सार्वभौमिक संदेश दिया गया है जो हर युग, हर समाज और हर व्यक्ति के लिए समान रूप से लागू और प्रेरणा का स्रोत है।

क़ुर्आन एक सुरक्षित ग्रन्थ-

उपरोक्त ईश्वरीय वचनों से यह सत्य पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाता है कि क़ुर्आन एक प्रामाणिक, सुरक्षित और सार्वभौमिक पुस्तक है, जिसमें अवतरण के समय से लेकर आज तक एक अक्षर का भी परिवर्तन नहीं हुआ। यही ग्रंथ स्पष्ट रूप से घोषणा करता है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अन्तिम रसूल और पूरी दुनिया के लोगों के मार्गदर्शन के लिए भेजा। क़ुर्आन के यह स्पष्ट कथन इस बात की निर्णायक गवाही देते हैं कि रिसालत-ए-मुह़म्मदी किसी विशेष क़ौम या काल तक सीमित नहीं, बल्कि एक व्यापक और स्थायी मार्गदर्शन प्रणाली है।

इन तथ्यों का विस्तृत वर्णन आप पिछले पृष्ठों में विभिन्न आकाशीय और ग़ैर-आकाशीय ग्रंथों के संदर्भों के साथ देख चुके हैं, जहाँ ऐतिह़ासिक, तार्किक और पाठय प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्ट किया जा चुका है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी पूरी मानवता के लिए थी और क़ुर्आन इस विश्वव्यापी संदेश का सुरक्षित और प्रामाणिक स्रोत है।

अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह तआला के अन्तिम रसूल और उसके

सच्चे चुने हुए बंदे थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अल्लाह का अन्तिम कलाम, क़ुर्आन मजीद अवतरित हुआ, जो केवल एक धार्मिक पुस्तक नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए जीवन जीने का सम्पूर्ण मार्गदर्शक है। क़ुर्आन इन्सान को आस्था, अ़िबादत, नैतिकता, सामाजिक जीवन, न्याय, राजनीति और अर्थव्यवस्था जीवन के हर क्षेत्र में स्पष्ट दिशा देता है।

इस मार्गदर्शक पुस्तक की सबसे विशेष बात यह है कि इसके आदेशों को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने केवल मौखिक शिक्षा तक सीमित नहीं रखा, बल्कि अपनी व्यावहारिक जीवन में लागू करके दिखाया।

उ़स्वा-ए-ह़स्ना-

इसी कारण क़ुर्आन ने आपकी पवित्र जीवनशैली को "उस्वा-ए-ह़स्ना" (अर्थात् श्रेष्ठ आदर्श) कहा—ऐसा पूर्ण उदाहरण, जिसका अनुसरण क़ियामत तक आने वाले सभी मनुष्यों के लिए सम्भव और लाभकारी है।

चूँकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नुबूवत और रिसालत का सिलूसिला समाप्त कर दिया गया, इसलिए अब क़ियामत तक कोई नया नबी या रसूल नहीं आएगा और मार्गदर्शन के लिए क़ुर्आन और सुन्नत ही एकमात्र सुरक्षित और स्थायी स्रोत हैं।

राष्ट्रवाद की श्रेष्ठता-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अ़रब में जन्म किसी अरब राष्ट्रवाद, नस्लीय श्रेष्ठता या अ़रबी संस्कृति की महानता का प्रमाण नहीं, बल्कि एक गहरी ईश्वरीय योजना का प्रतीक है। मक्का मुकर्रमा को धरती का केंद्रीय और आध्यात्मिक केन्द्र माना गया है, जहाँ अल्लाह का पहला घर ख़ाना-ए-कअ़बः स्थित है। स्वयं क़ुर्आन ने इसे "हुदन लिन्नास" यानी समस्त मानवता के लिए मार्गदर्शन का केन्द्र कहा है।

इस केंद्रीय स्थान से पूरी दुनिया को सम्बोधित करना, ईश्वरीय संदेश को पूर्व और पश्चिम तक पहुँचाना और मानवता को एकता में जोड़ना ऐतिह़ासिक

और भौगोलिक दृष्टि से अत्यन्त उपयुक्त था। इस प्रकार अ़रब में जन्म का उद्देश्य किसी क्षेत्र को श्रेष्ठ ठहराना नहीं, बल्कि पूरी दुनिया तक एक सार्वभौमिक सन्देश को प्रभावी ढंग से पहुँचाना था।

आस्था की घोषणा–

यह बात भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने अल्लाह के आदेश के अनुसार सभी पूर्व नबियों और रसूलों पर ईमान रखने की घोषणा की और अपनी उम्मत को भी इसका पालन करने का आदेश दिया। इस्लाम ने न तो किसी नये परमेश्वर को प्रस्तुत किया और न ही कोई अपरिचित नैतिक सिद्धांत दिया, बल्कि उसी एकेश्वरवादी सन्देश को अन्तिम और पूर्ण रूप में पेश किया, जो ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर हजरत ईसा अ़लैहिस्सलाम तक सभी नबियों की साझा शिक्षा रही है।

पूरी मानव जाति के नबी–

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने स्वयं को न किसी विशेष क़ौम का नबी कहा और न ही किसी नस्ली या भाषाई श्रेष्ठता का दावा किया, बल्कि स्पष्ट रूप से बताया कि उन्हें पूरी मानवता के लिए रसूल बनाकर भेजा गया है। क़ुर्आन ने बार-बार "या अय्युहन्नास" कहकर समस्त मानव जाति को सम्बोधित किया जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह सन्देश किसी एक समुदाय या सभ्यता तक सीमित नहीं है।

राष्ट्रीय भाषा–

यह भी एक महत्वपूर्ण सत्य है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने किसी राष्ट्रीय भाषा, संस्कृति या परम्परा को धर्म के रूप में थोपने का प्रयास नहीं किया। यद्यपि क़ुर्आन अ़रबी भाषा में अवतरित हुआ, लेकिन अ़रबी को वह़्य (ईश्वरीय संदेश) की भाषा बनाना केवल संप्रेषण की सुविधा के लिए था न कि अ़रब संस्कृति को धार्मिक पहचान बनाने के लिए।

स्वयं क़ुर्आन घोषणा करता है कि हर रसूल को उसकी क़ौम की भाषा

में भेजा गया, ताकि वह संदेश को अच्छी तरह समझा सके। इसी सिद्धांत के अन्तर्गत अ़रबी का चयन हुआ।

इस्लाम ने कभी यह अपेक्षा नहीं किया कि ग़ैर-अ़रब समाज अपनी भाषा, संस्कृति या सभ्यता को त्याग दें, बल्कि यह सिद्धांत दिया कि जहाँ कोई सांस्कृतिक तत्व नैतिकता, न्याय और एकेश्वरवाद के विरुद्ध न हो, वहाँ उसे अपनाया जा सकता है। यही कारण है कि इस्लाम जब विभिन्न क्षेत्रों में पहुँचा, तो उसने स्थानीय संस्कृतियों के साथ सामंजस्य स्थापित किया न कि उनका विरोध किया।

अ़रब संस्कृति-

इस पृष्ठभूमि में यह कहना पूर्णतः अन्यायपूर्ण और बौद्धिक भ्रम है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी राष्ट्रीयता या अ़रब संस्कृति को दुनिया भर के मुसलमानों पर थोप दिया। यदि ऐसा होता तो इस्लाम ईरान, भारत, अफ्रीका, मध्य एशिया और यूरोप में अपनी जड़ें कभी न जमा पाता।

वास्तविकता यह है कि इस्लाम ने मनुष्य को क़ौम, नस्ल और रंग की सीमाओं से ऊपर उठाकर एक व्यापक मानवीय पहचान प्रदान की, जिसकी नींव तक़्वा (धर्मपरायणता) नैतिकता और सत्कर्म पर है न कि नस्ल या भाषा पर। क़ुर्आन ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि अल्लाह के निकट सबसे सम्मानित वही है जो सबसे अधिक धर्मपरायण है न कि वह जो किसी विशेष जाति या क्षेत्र से सम्बन्ध रखता हो।

मानव जीवन पद्धति-

अन्त में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का व्यक्तित्व, क़ुर्आन मजीद की शिक्षाएँ और इस्लामी जीवन-व्यवस्था। इन सबका समन्वय एक पूर्ण, सार्वभौमिक और स्थायी मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है। यह सन्देश किसी विशेष समय या क्षेत्र के लिए नहीं, बल्कि क़ियामत तक आने वाले हर इन्सान के लिए है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी मानवता के बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास का चरम बिंदु है, जहाँ आकर नुबूवत का सिलसिला पूर्ण हुआ और मार्गदर्शन को सुरक्षित, व्यापक और वैश्विक रूप दे दिया गया।

इसी कारण इस्लाम को केवल एक धर्म नहीं, बल्कि मानवता के लिए एक समग्र जीवन-पद्धति कहा जा सकता है, जो इंसान को उसके सृष्टिकर्ता से जोड़ती है और मनुष्य को मनुष्य के क़रीब लाती है।

अन्तिम रसूल-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह तआ़ला के अन्तिम रसूल और उसके सच्चे, चुने हुए बन्दे थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अल्लाह का अन्तिम कलाम क़ुर्आन मजीद अवतारित हुआ, जो पूरी दुनिया के सभी मनुष्यों के लिए जीवन जीने का सम्पूर्ण और व्यापक मार्गदर्शक है। क़ुर्आन केवल अ़िबादत या कुछ धार्मिक आदेशों तक सीमित नहीं, बल्कि आस्था, नैतिकता, न्याय, सामाजिक व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, अधिकार और कर्तव्यों तथा मानवीय सम्बंधों के हर पहलू में दिशा प्रदान करता है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस ईश्वरीय मार्गदर्शन को केवल मौखिक शिक्षा के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि अपनी व्यावहारिक जीवन-शैली से उसका आदर्श स्थापित किया। इसलिए क़ुर्आन ने आपको "उस्वा-ए-ह़स्ना" (श्रेष्ठ आदर्श) कहा। चूँकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नुबूवत का सिलसिला पूर्ण हो गया, इसलिए क़ियामत तक किसी नये नबी के आने की सम्भावना नहीं है और अब मार्गदर्शन का एकमात्र सुरक्षित स्रोत क़ुर्आन और सुन्नत-ए-रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं।

भारतीय परिपेक्ष्य में एक प्रश्न-

भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह प्रश्न अक्सर उठता है कि यदि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पूरी मानवता के नबी थे, तो उनका जन्म भारत में क्यों नहीं हुआ? यह प्रश्न देखने में स्वभाविक लगता है, लेकिन वास्तव में यह भौगोलिक और

सांस्कृतिक तथ्यों से अपरिचित होने का परिणाम है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अ़रब में जन्म किसी अ़रब राष्ट्रवाद या अ़रबी संस्कृति की श्रेष्ठता का प्रमाण नहीं था, बल्कि एक गहरी ईश्वरीय योजना के अंतर्गत हुआ।

धार्मिक केन्द्र-

मक्का मुकर्रमा जहाँ कअ़बः स्थित है, प्राचीन काल से एक वैश्विक धार्मिक केन्द्र रहा है। इस्लाम से पहले भी दूर-दराज क्षेत्रों से लोग यहाँ आते थे। भौगोलिक दृष्टि से भी यह पूर्व और पश्चिम के बीच एक केन्द्रीय स्थान रखता था, जिसके माध्यम से संदेश को एशिया, अफ़्रीका और बाद में यूरोप तक पहुँचाना सम्भव हुआ। इस दृष्टि से मक्का से सार्वभौमिक संदेश की शुरुआ़त ऐतिह़ासिक रूप से अत्यन्त उपयुक्त थी।

इस प्रकार इस्लाम ने किसी विशेष नस्ल या क्षेत्र के लिए नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए एकेश्वरवाद, न्याय और नैतिकता का संदेश दिया।

यही कारण है कि जब इस्लाम भारत पहुँचा, तो उसने यहाँ की संस्कृति को मिटाने के बजाय उसके साथ संवाद स्थापित किया। भारतीय समाज में इस्लाम का प्रसार अधिकतर नैतिकता, चरित्र, न्याय और आध्यात्मिक प्रभाव के माध्यम से हुआ, न कि भाषा या राष्ट्रीयता के दबाव से।

अ़रबी पहचान-

यह बात भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किसी राष्ट्रीय भाषा, सभ्यता या संस्कृति को धर्म के रूप में थोपने का प्रयास नहीं किया।

क़ुर्आन अ़रबी भाषा में अवतरित हुआ, लेकिन अ़रबी को इस्लाम की अनिवार्य सांस्कृतिक पहचान नहीं बनाया गया।

स्वयं क़ुर्आन का सिद्धान्त है कि हर रसूल को उसकी क़ौम की भाषा में भेजा गया, ताकि सन्देश स्पष्ट रूप से समझाया जा सके। इसलिए अ़रबी का चयन संप्रेषण की सुविधा के लिए था, न कि अ़रब संस्कृति को वैश्विक संस्कृति बनाने के लिए।

भारतीय समाज–

इसी सिद्धांत के अन्तर्गत जब इस्लाम भारत पहुँचा, तो यहाँ फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, बांगला, तमिल, मलयालम और अन्य स्थानीय भाषाओं में क़ुर्आन का अनुवाद हुआ, धार्मिक ज्ञान विकसित हुआ और इस्लाम भारतीय समाज का हिस्सा बनता चला गया।

भारत में इस्लाम का इतिहास इस बात का जीवंत उदाहरण है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी राष्ट्रीयता या अ़रब पहचान को मुसलमानों पर नहीं थोपा। यही इस्लाम की सार्वभौमिकता की सुंदरता है।

भौगोलिक दृष्टि से–

इसी प्रकार रिसालत-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सार्वभौमिकता एक सुव्यवस्थित, बहुआयामी और बुद्धिमत्तापूर्ण ईश्वरीय योजना के अन्तर्गत स्पष्ट होती है।

इतिहास इस बात की गवाही देता है कि सातवीं सदी ईस्वी तक एशिया, अफ़्रीका और यूरोप की प्रमुख सभ्यताएँ व्यापारिक मार्गों, समुद्री रास्तों तथा बौद्धिक और सांस्कृतिक संपर्कों के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ चुकी थीं।

अ़रब प्रायद्वीप, विशेषकर मक्का मुकर्रमा, इन वैश्विक मार्गों का एक स्वाभाविक और केंद्रीय संगम था, जहाँ से एक साथ पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण को संबोधित करना सम्भव था।

यही केंद्रीय स्थिति इस बात का कारण बनी कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का संदेश कम समय में विभिन्न क्षेत्रों, समुदायों और सभ्यताओं तक पहुँचा और किसी एक भूभाग तक सीमित नहीं रहा।

तीन महाद्वीपों का संगम–

भौगोलिक दृष्टि से तीन महाद्वीपों के संगम पर स्थित होना इस क्षेत्र को वैश्विक संदेश के प्रसार के लिए अत्यंत उपयुक्त बनाता था, क्योंकि यहाँ से उठने वाला आन्दोलन स्वाभाविक रूप से अंतरराष्ट्रीय रूप ले सकता था।

भाषाई दृष्टि से-

भाषाई दृष्टि से भी अ़रबी भाषा उस समय वाक्पटुता, प्रभावशाली अभिव्यक्ति, सशक्त स्मरण-शक्ति और मौखिक परम्परा की असाधारण क्षमता रखती थी, जिसने क़ुर्आन मजीद जैसे व्यापक, सूक्ष्म और गहन अर्थों से भरपूर संदेश को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अ़रब समाज, लिखित साधनों की कमी के बावजूद, स्मरण और परम्परा में अत्यंत मज़बूत था। परिणामस्वरूप क़ुर्आन प्रारम्भ से ही सामूहिक कंठस्थ परम्परा, पाठ और निरंतर संप्रेषण के माध्यम से परिवर्तनों से सुरक्षित रहा।

बाद में जब इस्लाम विश्व भर में फैला, तो क़ुर्आन के अनुवाद अनेक भाषाओं में किये गये, जिससे उसका मार्गदर्शन हर क्षेत्र और हर समुदाय के लिए समझने योग्य बन गया, जबकि मूल पाठ अपनी मूल भाषा में सुरक्षित रहा।

हर समाज के लिए मार्गदर्शन-

इस प्रकार ऐतिह़ासिक परिस्थितियाँ, भौगोलिक स्थिति, भाषाई क्षमता और सांस्कृतिक संपर्क। यह सभी तत्व मिलकर इस सत्य को और अधिक सुदृढ़ करते हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी किसी स्थानीय, नस्लीय या क्षेत्रीय दायरे तक सीमित नहीं थी, बल्कि आरम्भ से ही पूरी मानवता के लिए एक वैश्विक, समग्र और स्थायी संदेश के रूप में प्रकट हुई, जो हर युग और हर समाज को मार्गदर्शन देने की क्षमता रखता है।

इस प्रकार अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी मानव इतिह़ास की सबसे व्यापक और समग्र आन्दोलन के रूप में सामने आती है। ऐतिह़ासिक दृष्टि से आपकी पैग़म्बरी ऐसे समय में हुई जब दुनिया बौद्धिक भ्रम, नैतिक पतन और सामाजिक अन्याय से ग्रस्त थी और विभिन्न सभ्यताएँ अत्याचार, वर्गभेद और शक्ति-पूजा में जकड़ी हुई थीं। ऐसे वातावरण में आपने एकेश्वरवाद, न्याय और मानवीय समानता का सार्वभौमिक संदेश देकर इतिह़ास की दिशा बदल दी।

धार्मिक दृष्टि से-

धार्मिक दृष्टि से रिसालत-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पूर्व के सभी नबियों की शिक्षाओं को एकत्र कर एक सुरक्षित, पूर्ण और स्थायी मार्गदर्शन के रूप में प्रस्तुत किया, जो किसी एक समुदाय या क्षेत्र तक सीमित नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए है। सामाजिक स्तर पर आपने नस्ल, रंग, भाषा और वर्ग के आधार पर बनी भेदभावपूर्ण दीवारों को समाप्त करते हुए मानव गरिमा, महिलाओं के अधिकार, दासों की मुक्ति और कमज़ोर वर्गों की सुरक्षा को व्यवहारिक रूप दिया।

राजनीतिक दृष्टि से-

राजनीतिक और प्रशासनिक दृष्टि से मदीना की राज्य-व्यवस्था के माध्यम से आपने ऐसा न्यायपूर्ण तंत्र स्थापित किया, जिसमें क़ानून की सर्वोच्चता, परामर्श, उत्तरदायित्व और जनकल्याण को मूल सिद्धांत बनाया गया और जो बाद की सभ्यताओं के लिए एक व्यावहारिक आदर्श बन गया।

सुधारात्मक दृष्टिकोण से रिसालत-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने व्यक्ति के आंतरिक जीवन से लेकर समाज और राज्य तक एक बहुआयामी सुधार प्रक्रिया प्रारम्भ की, जो केवल एक अस्थायी आन्दोलन नहीं बल्कि क़ियामत तक के लिए एक सार्वभौमिक, नैतिक और मानवीय जीवन-व्यवस्था के रूप में क़ायम है।

बौद्धिक इतिहास के संदर्भ में-

बौद्धिक इतिहास के संदर्भ में विशेषकर छठी सदी ईस्वी की वैश्विक परिस्थितियों को देखें तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी एक गहरी ऐतिहासिक आवश्यकता और बौद्धिक मोड़ का प्रतीक थी। उस समय दुनिया, बड़ी सभ्यताओं के होते हुए भी गम्भीर बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक संकट से गुज़र रही थी।

रोमन और सासानी साम्राज्य निरन्तर युद्धों, आर्थिक शोषण और वर्गीय

दमन में उलझे थे। धार्मिक स्तर पर ईसाई और यहूदी समुदायों में सम्प्रदायिक विवाद, जटिल मान्यताएँ और आध्यात्मिकता से दूरी बढ़ चुकी थी।

भारत में धार्मिक अनुष्ठानों की अधिकता, कठोर जाति-व्यवस्था और आ़म लोगों की वंचना स्पष्ट थी। जबकि चीन में नैतिक दर्शन तो मौजूद था, परन्तु ईश्वरीय मार्गदर्शन की समग्र एकता का अभाव था। अ़रब समाज में क़बीलाई पक्षपात, अज्ञानता, महिलाओं का अपमान और कमज़ोरों पर अत्याचार सामान्य था, लेकिन साथ ही भाषा, स्मरण-शक्ति और व्यापारिक सक्रियता ने उसे एक बौद्धिक संदेश के प्रसार के लिए उपयुक्त बना दिया था।

व्यापक नीति-

ऐसे वैश्विक परिदृष्य में मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी ने एकेश्वरवाद, तर्क और वह्य (ईश्वरीय प्रकाशना) के संतुलन, नैतिक सुधार और सामाजिक न्याय का ऐसा व्यापक तंत्र प्रस्तुत किया, जिसने इस बौद्धिक और नैतिक शून्य को भर दिया।

क़ुर्आन ने सरल किन्तु गहन विचारधारात्मक सिद्धांत दिये, ज्ञान के महत्व को ईमान से जोड़ा और मानव समानता तथा उत्तरदायित्व की नींव रखी। इस प्रकार छठी सदी के बिखरे हुए बौद्धिक और नैतिक परिदृश्य में रिसालत-ए-मुह़म्मदी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) एक वैश्विक, तर्कसंगत और स्थायी बौद्धिक क्रांति के रूप में उभरी।

ईशदूतत्व विश्वास

अन्तिम सन्देष्टा महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) किसी एक देश, जाति अथवा सम्प्रदाय के नहीं हैं जैसा कि दूसरे वर्ग के लोगों ने यह समझ रखा है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तो इस्लाम के संस्थापक और मुसलमानों के सन्देष्टा हैं तो ऐसा नहीं बल्कि! जितना अधिकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और 'क़ुर्आन' पर मुसलमानों का है उतना ही प्रत्येक मुनष्य का है।

पवित्र क़ुर्आन के अनुसार ईशदूत की धारणा

إِنَّمَآ أَنتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝٧

अनुवाद-

"ऐ मह़म्मद! तुम (कुकर्म के कुपरिणाम से) सचेत करने वाले हो और हर जाति के लिए एक संमार्ग दर्शक हो"। (सूरः रअ़द आयत न० 7)

पवित्र कुर्आन कहता है कि हमने प्रत्येक समूह में ईशदूत भेजे इस प्रकार हर समूह में सन्देष्टा अपने-अपने समय पर आते रहे जो कुछ समय तक जीवित रहते थे और अपने बाद आने वाले अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणी कर जाते थे परन्तु उनके जाने के बाद लोग उन्हीं को पूजना शुरु कर देते थे और उनकी शिक्षाओं को भुला देते थे।

सभी ईशदूत बताते कि अभी तो मेरी बात के मानने में कल्याण है। परन्तु मैं अन्तिम सन्देष्टा नहीं हूँ। जिसको कुर्आन ने इस प्रकार कहा है-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पूरी मानव जाति के उद्धारक

पवित्र कुर्आन ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को इन शब्दों में सम्बोधित करते हुए कहा-

"ऐ मुह़म्मद! तुम कहो कि ऐ मनुष्यों! मैं तुम सब की ओर उस परमेश्वर का सन्देशवाहक हूँ जो सारी सृष्टि का पालनहार है। उसके अतिरिक्त कोई मालिक नहीं है। वही जीवन प्रदान करता और मृत्यु देता है। अतः ईमान लाओ अल्लाह पर और उस अनपढ़ सन्देशवाहक पर (जो अनपढ़ होते हुए भी कुर्आन जैसा अपूर्व ज्ञान स्रोतउपस्थित कर रहा है) और जो परमेश्वर की सभी वाणियों (अर्थात् ईश्वरीय पुस्तकों) को मानता है उसका अनुकरण करो ताकि तुम पर कल्याण मार्ग खुल जाए"। (सूरः अ़अराफ- आयत नं० 158)

● एक और स्थान पर कुर्आन में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के सम्बन्ध में यूँ कहा गया है-

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۙ﴿۱﴾

अनुवाद-

"अति महिमाशाली है वह अल्लाह जिसने अपने भक्त हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर फुर्क़ान (सत्य और असत्य में भेद करने वाला कुर्आन) उतारा ताकि वह सारे जगत वालों को (कुकर्म के दुष्परिणाम) सचेत करने वाला हो"।

(सूरः फुर्क़ान आयत नं० 1)

● इसी प्रकार एक और स्थान पर परमेश्वर (अल्लाह) ने आपको सम्बोधित करते हुए कहा कि-

وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيۡرًا وَّنَذِيۡرًا وَّلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۸﴾

अनुवाद-

"ऐ मुहम्मद! हमने तुमको सारे ही मनुष्यों के लिए शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है"। (सूरः सबा आयत नं० 28)

परमेश्वर के भेजे हुए सन्देष्टा-

ऊपर की ईशवाणियों से यह पूर्णरूपेण स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक जाति व सम्प्रदाय में परमेश्वर के भेजे हुए सन्देष्टा आते और वह यह भी बताते थे कि मैं अन्तिम सन्देष्टा नहीं हूँ। कुर्आन एक प्रमाणिक पुस्तक है जिसमें कभी एक अक्षर न घटाया गया और न किसी प्रकार का परिवर्तन ही किया गया।

यह पुस्तक बता रही है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को परमेश्वर ने अन्तिम सन्देशवाहक तथा समस्त संसार को सत्य मार्ग प्रदर्शित करने वाला बना कर भेजा है तो अवश्य ही इससे पूर्व आने वाली ईश्वरीय पुस्तकों या ग्रन्थों में उस अन्तिम ईशदूत की विशेषताओं और उसके प्रकट होने का समय निर्धारित किया गया होगा जिनकी व्याख्या विस्तार पूर्वक आपने तमाम पिछले ग्रन्थों में पढ़ी इसलिए कि जब परमेश्वर एक है तो उसकी ओर से आने वाली ईश्वरीय वाणी भी एक ही होनी चाहिए।

● पवित्र क़ुर्आन में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सम्बन्ध में कहा गया है कि-

وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيۡرًا وَّنَذِيۡرًا وَّلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۸﴾

अनुवाद-

"कहो ऐ नबी! मैं तो केवल तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर वह्य की जाती है कि तुम्हारा इलाह (उपास्य) अकेला"। (सूरः कहफ़ आयत नं० 110)

मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अन्तिम सन्देष्टा के रूप में

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) केवल एक सन्देष्टा और उस परमेश्वर (अल्लाह) के सच्चे भक्त थे। उन पर अन्तिम ईशवाणी क़ुर्आन नाज़िल हुआ जो पूरी दुनिया के तमाम इन्सानों के जीवनयापन का एक सम्पूर्ण विधान है। इसको स्वयं ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने ऊपर लागू कर के बता दिया कि इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य अपना जीवनयापन कर सकता है।

इसलिए कि अब कोई दूसरा सन्देष्टा महाप्रलय (क़ियामत) तक नहीं आएगा उनको क़ुर्आन ने 'ख़ातिमुन्नबीयीन' के नाम से ज़िक्र किया है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अब नुबूवत समाप्त हो गई और अब कोई दूसरा नबी नहीं आएगा।

पृथ्वी का केन्द्र बिन्दु-

यदि हम यह सोचें कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भारत में क्यों नहीं पैदा हुए तो यह बात तर्क संगत न होगी इसलिए कि अ़रब में पैदा होने का कारण अ़रब देश या अ़रब की संस्कृति या अ़रब की राष्ट्रीयता न थी, बल्कि वह पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ तथा क़ियामत तक आने वाले सभी मनुष्यों के नबी रसूल या सन्देष्टा बनने वाले थे।

इसलिए उन्हें पृथ्वी के केन्द्र बिन्दु मक्का कअ़बः में जो ईश्वरीय घर है वहाँ पैदा किया गया, ताकि पूरे संसार को केन्द्र से सम्बोधित कर सकें और सम्पूर्ण इन्सानों के लिए नमूना बन कर दिखा सकें और ईश्वरीय वाणी पूरे

संसार तक विकसित कर सकें।

पिछले सन्देशवाहकों की पुष्टि-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने आने के बाद पिछली पुस्तकों और सन्देशवाहकों की पुष्टि की और कहा, "जिस समय तक तुम्हें किसी पुस्तक या सन्देशवाहकों का सत्य ज्ञान न प्राप्त हो जाये उस समय तक उन्हें कुछ मत कहो" (इसलिए कि हो सकता है कि वह परमेश्वर के भेजे हुए सन्देष्टा हों तथा बाद में दूसरे लोगों ने उन्हें वास्तविक रूप से अलग कर दिया हो।)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने परमेश्वर के आदेशानुसार पिछले तामाम सन्देशवाहकों पर आस्था रखने और अपने को अन्तिम सन्देष्टा मानने का आदेश दिया।

इस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किसी राष्ट्रीय भाषा या संस्कृति का प्रचार नहीं किया बल्कि परमेश्वर की ओर से अवतरित अन्तिम ईशवाणी (जो अ़रबी भाषा में थी पवित्र क़ुर्आन के रूप में) सम्पूर्ण विश्व के तमाम इन्सानों तक पहुँचाने और उसके अनुसार पालन करने का हुक्म दिया।

मैं समझता हूँ कि पाठक अब निष्पक्ष होकर सत्य मार्ग की खोज के लिए आज और इसी समय से सत्य मार्ग की ओर यात्रा प्रारम्भ कर देंगे और अन्तिम सन्देश्वाहक के विषय में जो मतभेद है कि वह कहाँ पैदा हुए और वह कब आये और कौन हैं? इसका उत्तर स्वयं मिल गया होगा, इसलिए उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में ग्रहण करने का प्रयास करेंगे जिससे लोक परलोक में हमारा जीवन शांतिमय होगा।

अब अगले पृष्ठों पर हम ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की संक्षिप्त जीवनी पेश करते हैं, जो पाठकों के लिए सहायक होगी।



खण्ड-ख

भाग-1

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के जन्म से पूर्व संसार की दशा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जन्म से पूर्व संसार की दशा

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैदाईश से पहले छठी सदी ईस्वीं में दुनिया की बड़ी-बड़ी सल्तनतें बाहर से बहुत ताक़तवर, विशाल दिखाई देती थीं, लेकिन ह़क़ीक़त में उनकी बुनियाद ज़ुल्म, नाइन्साफ़ी और अत्याचार पर थी। पूर्व में 'बाइज़न्टाइन एम्पायर' और पश्चिम में उसकी दुश्मन 'सासानी' फ़ारसी सल्तनत लगातार जंगों में उलझी हुई थीं।

इन जंगों का सबसे ज़्यादा बोझ आ़म लोगों पर पड़ता था, उनसे भारी टैक्स वसूले जाते थे, लोगों को ज़बरदस्ती फ़ौज में भर्ती किया जाता था और ग़रीब जनता आर्थिक तंगी में जीवन बिताने पर मजबूर थी।

बादशाह और शहंशाह अपने आपको लगभग ख़ुदाई अधिकारों का मालिक समझते थे, क़ानून सिर्फ़ ताक़तवर लोगों के लिए था, जबकि कमज़ोर और ग़रीब लोग गुलामी, शोषण और बेबसी की ज़िन्दगी जी रहे थे। अफ़्रीका में हब्शी सल्तनत (अक्सूमाइट एम्पायर) और यमन में हिमयरी और हब्शी हुकूमत भी राजनीतिक ज़ुल्म और धार्मिक संघर्ष का केन्द्र बनी हुई थीं।

क़बाईली निज़ाम-

अ़रब इलाक़े में कोई बाक़ायदा केन्द्रीय हुकूमत मौजूद नहीं थी, बल्कि वहाँ क़बाईली निज़ाम चलता था, जहाँ ताकत ही क़ानून मानी जाती थी। क़बीलों के सरदार पूरी तरह मनमानी करते थे, ख़ून का बदला ख़ून से लिया जाता था और कमज़ोर क़बीले, ताक़तवर क़बीलों के ज़ुल्म का आसान शिकार बन जाते थे।

दूसरी तरफ़ भारतीय उपमहाद्वीप में गुप्त साम्राज्य के बाद का दौर

समाजी बँटवारे और कठोर जाति-प्रथा में जकड़ा हुआ था। शूद्र और निचले समाज के लोगों को इन्सानी अधिकारों से भी महरूम रखा जाता था। चीन में शुरुआती तांग दौर में बादशाही सत्ता तो मजबूत थी, लेकिन आम लोगों की आज़ादी बहुत सीमित थी।

छठी सदी ईस्वीं की दुनिया-

संक्षेप में छठी सदी ईस्वी की दुनिया में सरकारें इन्साफ़ और रहमत के बजाय ताक़त, नस्ल, जाति और स्वार्थ की बुनियाद पर चल रही थीं। ऐसे माहौल में इन्सानियत एक ऐसी रहनुमाई की इंतजार कर रही थी, जो जुल्म के इस निज़ाम को तोड़कर इंसाफ़, बराबरी और अच्छे समाज की बुनियाद रख सके। यही महान काम हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी ने किया।

समाजी अव्यवस्था-

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जन्म और पैग़म्बरी से पहले पूरी दुनिया गुमराही, नैतिक पतन और समाजी अव्यवस्था के गहरे अंधेरों में डूबी हुई थी। इन्सान ने ताक़त को ही सच और हक़ का पैमाना बना लिया था और कमज़ोर होना एक जुर्म समझा जाता था। क़बाइली पक्षपात, जाति और नस्ल की घमंड भरी सोच ने इंसान को इंसान से अलग कर दिया था।

इन्साफ़ केवल ताक़तवर लोगों तक सीमित था, जबकि आम लोग जुल्म को अपनी क़िस्मत मानकर जीने पर मजबूर थे। इंसानी जान की कोई कीमत नहीं थी। हत्या, लूटमार और अत्याचार रोज़मर्रा की बात बन चुके थे और इंसान का ज़मीर इच्छाओं, स्वार्थ और डर के शोर में दब चुका था।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व दुनिया की धार्मिक दशा-

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी से पूर्व दुनिया में अलग-अलग धर्म मौजूद थे। उनमें यहूदी धर्म की स्थिति इस प्रकार थी-

यहूदी धर्म की स्थिति

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी से पूर्व यहूदी धर्म अपनी असली

रुह़ और उद्देश्य से काफ़ी दूर हो चुका था। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की शरीअ़त, जो शुरुआ़त में तौह़ीद, अच्छे अख़्लाक़ और इन्साफ़ पर आधारित थी, समय के साथ केवल रस्मों, कठिन धार्मिक बहसों और नस्ली घमंड का रूप ले चुकी थी।

यहूदियत एक नस्ली मज़हब (Ethnic Religion) बन गई थी, जिसमें बनी इस्राईल को अल्लाह की ख़ास और श्रेष्ठ क़ौम माना जाता था, जबकि दूसरी जातियों और समुदायों को हिदायत और निजात से बाहर समझा जाता था। इस सोच ने मज़हब को पूरी इन्सानियत की रहनुमाई के बजाय एक सीमित क़ौमी पहचान बना दिया था। इसी कारण इन्सानी समस्याओं और नैतिक पतन का कोई व्यापक समाधान बाक़ी नहीं रहा।

एकेश्वरवादी धर्म–

यहूदी धर्म की सबसे बड़ी पहचान एक अल्लाह पर ईमान यानी तौह़ीद थी, जिसकी वसीयत ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने अपनी औलाद को की थी, लेकिन व्यवहारिक जीवन में यह सोच भी कमज़ोर पड़ चुकी थी। ख़ुद यहूदी इतिह़ास इस बात की गवाही देता है कि बनी इस्राईल में बार–बार शिर्क, मूर्तिपूजा और अज्ञानता पर आधारित रस्में दाख़िल होती रहीं।

इस सच्चाई को कुछ निष्पक्ष यहूदी इतिह़ासकारों ने भी स्वीकार किया है। **Jewish Encyclopedia, Vol- XII pp- 568–569** में भी इसी प्रकार का उल्लेख मिलता है।

"The anger of the prophets against idolatry shows that the worship of foreign gods had taken deep root in the hearts of the Israelites, and even after the return from Babylon it was not entirely eradicated. Through other beliefs and magic, many pagan ideas and practices were again adopted by the people. The Talmud itself proves that idolatry had a strong attraction for the Jews."

(Jewish Encyclopedia, Vol. XII, page 568–-569)

अनुवाद–

"मूर्तिपूजा के ख़िलाफ़ नबियों का कठोर क्रोध इस बात को दिखाता है कि

ग़ैरुल्लाह की पूजा बनी इस्राईल के दिलों में गहराई तक घर कर चुकी थी और बाबुल से वापसी के बाद भी इसका पूरी तरह़ अंत नहीं हो सका। दूसरे अ़क़ीदे और जादू-टोने के माध्यम से कई शिर्क पर आधारित विचार और रस्में फिर से अपना ली गईं।

ख़ुद तल्मूद भी इस बात की गवाही देता है कि मूर्तिपूजा यहूदियों के लिए बहुत आकर्षण रखती थी"।

बैबिलोनियन तल्मूद-

छठी सदी ईस्वीं में बैबिलोनियन तल्मूद **(Babylonian Talmud)** यहूदी समाज में बहुत पवित्र और प्रभावशाली मानी जाती थी।

यहाँ तक कि कई बार उसे तौरात से भी अधिक महत्व दिया जाता था, लेकिन इस पुस्तक में अनुचित और असभ्य अभिव्यक्तियाँ, धार्मिक और बौद्धिक सच्चाइयों के साथ मज़ाक़ और उपहास के ऐसे उदाहरण मिलते हैं जो उस दौर के यहूदी समाज के वैचारिक पतन और धार्मिक रुचि की खराबी को स्पष्ट करते हैं।

ऐसे व्यापक धार्मिक बिगाड़ के माहौल में इस्लामी शिक्षा का होना शुद्ध तौह़ीद, नैतिक सुधार और पूरी इंसानियत के लिए मार्गदर्शन के पुनर्जागरण के रूप में हुआ।

इस्लाम ने पिछली विकृतियों का सुधार किया और इंसानियत को एक नया वैचारिक और रुह़ानी रास्ता प्रदान किया।

For most biblical books, scholars assume editorial changes over the course of many generations or even centuries; therefore, we have to assume compositional stages."

(Tov, Emanuel. Textual Criticism of the Hebrew Bible. 3rd Edition. Minneapolis: Fortress Press, 2012, page 364)

अनुवाद-

"बाइबिल की अधिकतर किताबों के बारे में शोधकर्ता यह स्वीकार करते

हैं कि कई पीढ़ियों बल्कि कभी-कभी सदियों के दौरान उनमें संपादकीय परिवर्तन (Editorial changes) होते रहे, इसलिए हमें उनकी रचना के विभिन्न चरणों (Compositional stages) को मानना पड़ता है"।

शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की दशा-

यह समाज मूल शिक्षाओं से दूर हो चुका था, जिसके परिणामस्वरूप नैतिक और सामाजिक व्यवस्था में कमियाँ पैदा हो गई थीं।

शिक्षा के क्षेत्र में यहूदी समाज में तौरात और धार्मिक शिक्षा मुख्य रूप से पुरुषों के लिए विशेष मानी जाती थी।

धार्मिक आदेश शरीअ़त की व्याख्या और अ़िबादत की अगुवाई रब्बियों और पुरुष विद्वानों के हाथ में थी। महिलाओं को नियमित धार्मिक शिक्षा देना आवश्यक नहीं समझा जाता था। तलमूद में वर्णित कुछ कथनों के अनुसार महिलाओं को शरीअ़त की गहरी शिक्षा देना पसंद नहीं किया गया, यहाँ तक कि कुछ रब्बियों ने महिलाओं को तौरात पढ़ाने को "व्यर्थ" या "हानिकारक" तक कहा।

महिलाओं को धार्मिक नेतृत्व या शरीअ़त की व्याख्या का अधिकार प्राप्त नहीं था।

सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी महिलाओं की स्थिति कमज़ोर थी। यहूदी समाज में अधिकतर पारिवारिक पहचान, विरासत और आर्थिक अधिकार (Inheritance rights) पुरुषों के हाथ में केंद्रित थे, जिसके कारण महिलाएँ अधिकतर आर्थिक निर्भरता का शिकार रहीं और स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकीं।

महिलाओं का विरासत में ह़िस्सा-

ऐतिह़ासिक अध्ययनों से पता चलता है कि महिलाओं को विरासत में ह़िस्सा या तो बहुत सीमित दिया जाता था या केवल विशेष परिस्थितियों में मिलता था। इसी तरह़ तलाक़ और वैवाहिक अधिकारों में भी पुरुषों को अधिक अधिकार प्राप्त थे, जिससे महिलाओं की क़ानूनी स्थिति प्रभावित होती थी।

इसके अतिरिक्त आर्थिक और सामाजिक स्तर पर महिलाओं को कुछ सीमित कामों तक ही सीमित रखा जाता था। परिवार के अन्दर पुरुष प्रधान परम्पराओं के कारण महिलाओं को स्वतंत्र भूमिका (Autonomy) बहुत कम मिल पाती थी।

इसी प्रकार तल्मूद और अन्य परम्पराओं में महिलाओं की भूमिका सामान्यतः घरेलू और पुरुष पर निर्भर रहने वाली मानी जाती थी, जिसके कारण उनकी सामाजिक प्रगति और आर्थिक स्वतंत्रता में रुकावट बनी रही।

The Jewish Encyclopedia: A Descriptive Record of the History, Religion, Literature, and Customs of the Jewish People, Edited by Isidore Singer, Funk & Wagnalls, 1901.

Johnson, Paul. A History of the Jews. New York: Harper & Row, 1987. First U.S. Edition.

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व ईसाई धर्म की स्थिति-

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व ईसाई धर्म अपने कट्टरपंथी समूहों, ग़लत व्याख्याओं और रोमी ईसाइयों की मूर्तिपूजा से प्रभावित हो चुका था। हज़रत ईसा (अलै०) की सरल और पवित्र शिक्षाएँ मानो दबकर रह गई थीं और केवल अल्लाह की अिबादत की असली रोशनी घने बादलों में छिप चुकी थी।

यहाँ तक कि 381 ईस्वीं में कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद (Council of Constantinople) ने त्रित्व (Trinity) के सिद्धांत को अधिक स्पष्ट और आधिकारिक रूप दिया तथा नाइसिन क्रीड (Nicene Creed) को विस्तार दिया, जिसने ईसाई धर्मशास्त्र में एक महत्वपूर्ण मोड़ पैदा किया।

एक प्रसिद्ध विश्वकोश के अनुसार कुछ विद्वानों की शिक्षाओं ने इस परिषद को "रुहुल-कुदुस" (Holy Spirit) की ईश्वरता को स्वीकार करने के योग्य बनाया और इसी घोषणा के साथ "त्रित्व" जैसा कि आज समझा जाता है, ईश्वर की प्रकृति के बारे में आधिकारिक सिद्धान्त बन गया।

त्रित्व का सिद्धान्त-

ईसाई समाज में त्रित्व का सिद्धांत अर्थात यह विश्वास कि हज़रत ईसा

(अ़लै०) अल्लाह के बेटे हैं और ह़ज़रत मरियम (अ़लै०) के ग़र्भ से पैदा हुए इस तरह़ फैल चुका था कि एक ईसाई विद्वान के अनुसार यह सिद्धांत कि ईश्वर तीन व्यक्तियों (अंगों) पर आधारित है।

चौथी सदी के अंत तक पूरे ईसाई संसार के जीवन में गहराई से प्रवेश कर चुका था और इसे आधिकारिक तथा स्वीकृत अ़क़ीदा बना दिया गया था, यहाँ तक कि उन्नीस्वीं सदी के अंत में इस सिद्धांत के निर्माण और इसके वर्तमान स्वरूप तक पहुँचने के रहस्य उजागर हुए।

मूर्ति पूजा का प्रवेश-

एक समकालीन ईसाई इतिह़ासकार **Rev- J- M- Hurst** ने ईसाई समाज में मूर्तिपूजा के प्रवेश और उसके नये रूपों का विस्तार से वर्णन किया है। वे अपनी पुस्तक **The History of Christianity in the Light of Modern Knowledge (1929)** में लिखते हैं-

"मूर्तिपूजा समाप्त नहीं हुई, बल्कि छिप गई। लगभग वह सब कुछ जो मूर्तिपूजा में था, ईसाई धर्म के नाम से जारी रहा। जिन लोगों को अपने पुराने देवताओं और नायकों को छोड़ना पड़ा, उन्होंने अनजाने में किसी संत या शहीद को वही गुण दे दिये और स्थानीय मूर्तियों को उनके नाम से जोड़ दिया। इस प्रकार काफ़िराना रस्में और पौराणिक कथाएँ इन स्थानीय संतों से जुड़ गईं और अलौकिक शक्तियों वाले संतों के अ़क़ीदे की नींव पड़ गई।

मूर्तिपूजा के त्योहार स्वीकार कर लिये गये और उनके नाम बदल दिये गये। यहाँ तक कि 400 ईस्वीं तक सूर्य देवता का प्राचीन त्योहार ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के जन्मदिन के रूप में मनाया जाने लगा"।

छठी सदी ईस्वीं का आरम्भ-

छठी सदी ईस्वीं के आरम्भ तक शाम (सीरिया) ईराक़ और मिस्र के ईसाइयों के बीच ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की वास्तविकता और उनके दर्जे को लेकर गंभीर मतभेद पैदा हो चुके थे।

ये विवाद इतने बढ़ गये कि मदरसे, गिरजाघर और यहाँ तक कि घर भी संघर्ष के मैदान बन गये थे। लोग एक-दूसरे की निंदा और विरोध में लगे हुए थे और ऐसा प्रतीत होता था मानो यह एक ही धर्म के मानने वालों का नहीं बल्कि दो दुश्मन राष्ट्रों का संघर्ष हो।

"If Paganism had been destroyed, it was less through annihilation than through absorption. Almost all that was pagan was carried over to survive under a Christian name... local pagan statues were labelled with Jesus' name... Pagan festivals were renamed, and Christmas Day, the ancient festival of the sun, was transformed into the birthday of Jesus."

(James Baxter, quoted in Christianity in the Light of Modern Knowledge, p. 30)

अनुवाद-

"यदि मूर्तिपूजा समाप्त भी हुई तो वह विनाश के द्वारा नहीं, बल्कि अपने अंदर समाहित (absorption) कर लेने के द्वारा हुई, लगभग हर वह चीज़ जो मूर्तिपूजा से सम्बन्धित थी, ईसाई नाम के अंतर्गत बनी रही।स्थानीय मूर्तियों को यीशु के नाम से जोड़ दिया गया।

मूर्तिपूजक त्योहारों के नाम बदल दिये गये यहाँ तक कि सूर्य के प्राचीन त्योहार को क्रिसमस यानी यीशु के जन्मदिन के रूप में बदल दिया गया"।

धर्म और राज्य का सम्बन्ध-

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी से पूर्व ईसाई दुनिया ऐसे दौर से गुज़र रही थी, जहाँ धर्म और राज्य का आपसी सम्बन्ध बहुत मज़बूत हो चुका था। जब ईसाई धर्म रोमी साम्राज्य में फैलने लगा, तो बड़ी संख्या में पहले के मूर्तिपूजक लोग इसमें शामिल हुए। इतिहासकारों के अनुसार उन्हें आसानी से स्वीकार कराने के लिए कुछ पुरानी रस्मों और परम्पराओं को नये धार्मिक रूप में जारी रहने दिया गया। इस प्रकार कई पुराने विश्वास और त्योहार नई व्याख्या के साथ ईसाई समाज का हिस्सा बन गये।

प्रारम्भिक चर्च विचारक **Tertullian** ने अपनी पुस्तक **De Cultu**

Feminarum (On the Apparel of Women) में महिला को **"Devil's gateway"** अर्थात "शैतान का द्वार" कहा। उन्होंने लिखा कि "तुम वही हो जिसने ईश्वरीय क़ानून को तोड़ा और आदम को गुमराह किया"।

टरटूलियन के अनुसार महिलाओं की स्थिति-

एक ईसाई चिंतक **Tertullian** अपनी पुस्तक **De Cultu Feminarum** (लैटिनय अंग्रेजी अनुवादः **On the Apparel of Women**) में लिखते हैं-

And do you not know that you are (each) an Eve? The sentence of God on this sex of yours lives in this age: the guilt must of necessity live too. You are the devil's gateway: you are the unsealer of that (forbidden)tree: you are the first deserter of the divine law: you are she who persuaded him whom the devil was not valiant enough to attack. You destroyed so easily God's image, man. On account of your desert—that is, death—even the Son of God had to die."

(Tertullian — :De Cultu Feminarum (On the Apparel of Women)Chapter 1,in Ante-Nicene Fathers, Vol. 4, page 14-15)

अनुवाद-

"क्या तुम नहीं जानतीं कि तुममें से हर एक वास्तव में हव्वा है? तुम्हारी जाति के बारे में ईश्वर का फ़ैसला आज भी क़ायम है, इसलिए उसका अपराध भी बाक़ी है"।

तुम शैतान का द्वार हो, तुमने उस निषिद्ध वृक्ष की मुहर तोड़ी, तुम ईश्वरीय क़ानून से सबसे पहले हटने वाली हो, तुमने उस पुरुष (आदम) को बहकाया, जिस पर शैतान सीधे हमला नहीं कर सका। तुमने बहुत आसानी से ईश्वर की छवि अर्थात इन्सान को नष्ट कर दिया। तुम्हारे अपराध यानी मृत्यु के कारण ही ईश्वर के पुत्र को भी मरना पड़ा"।

Tertullian आगे लिखता है-

महिलाओं की भूमिका-

धार्मिक व्याख्याओं के परिणामस्वरूप महिलाओं की भूमिका को कठोर

सीमाओं में बाँध दिया गया। एक प्रामाणिक अध्ययन के अनुसार टरटुलियन ने स्पष्ट रूप से लिखा कि "महिला को चर्च में बोलने, शिक्षा देने, बपतिस्मा देने या पादरी पद का दावा करने की अनुमति नहीं है"।

परिणामस्वरूप धार्मिक शिक्षा, धार्मिक क़ानूनों की व्याख्या और उपासना के नेतृत्व जैसे क्षेत्र महिलाओं के लिए बंद रहे, जबकि धार्मिक जीवन में उनकी भूमिका अधिकतर अधीन और निजी दायरे तक सीमित रही।

It is not permitted for a woman to speak in the church; neither may she teach, baptize, offer, nor claim for herself any function proper to a man, least of all the sacerdotal office."

(Tertullian, De Virginibus Velandis, chapter 9, in Ante-Nicene Fathers, Vol. IV, page 33)

अनुवाद-

"महिला के लिए यह उचित नहीं कि वह चर्च में बोले। न वह शिक्षा दे सकती है, न बपतिस्मा दे सकती है, न उपासना का नेतृत्व कर सकती है और न ही किसी ऐसे पद का दावा कर सकती है जो पुरुषों के लिए निर्धारित हो—विशेष रूप से पादरी का पद"।

धार्मिक मतभेद-

अर्थात छठी सदी ईस्वीं में ईसाई दुनिया धार्मिक मतभेदों, पवित्र ग्रंथों में बदलाव, सामाजिक अशांति और कई बार राज्य की कठोरता का सामना कर रही थी। इस प्रकार बाहर से व्यवस्थित दिखाई देने वाला यह समाज अन्दुरूनी सम्प्रदायवाद, सामाजिक असमानता और कठोर धार्मिक तथा राजनीतिक व्यवस्था के कारण अनेक सामाजिक बुराईयों और अन्यायों से ग्रस्त था।

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व मजूसी धर्म की स्थिति-

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी से पहले सासानी ईरान में मजूसी (जरतुष्टी) धर्म राज्य के संरक्षण में एक संगठित धार्मिक व्यवस्था का रूप ले चुका था, लेकिन उसके अक़ीदे और धार्मिक जीवन में रस्मपरस्ती और वर्गीय प्रभाव स्पष्ट दिखाई देते थे।

जरतुष्टी धर्मगुरु (मुगान) धार्मिक मामलों पर गहरा अधिकार रखते थे और उपासना में पवित्र अग्नि को केंद्रीय स्थान प्राप्त था, जबकि अच्छाई और बुराई की दो अनादि शक्तियों 'अहुरमज़ूदा' और 'अहरीमन' पर विश्वास द्वैतवाद (Dualism) की बुनियाद माना जाता था।

सामाजिक वर्गीकरण-

सामाजिक रूप से समाज वर्गों में बँटा हुआ था। जिसमें अमीर वर्ग, सैनिक, किसान और कारीगरों की अलग-अलग स्थिति थी और धार्मिक वर्ग को विशेष प्रभाव और सम्मान प्राप्त था।

इस प्रकार बाहर से व्यवस्थित दिखाई देने वाला यह समाज कठोर धार्मिक नियमों, वर्गभेद और औपचारिक उपासना के कारण एक जड़ सामाजिक ढाँचे को दर्शाता था।

चार तत्वों की पूजा-

मजूसी (ईरान के पारसी) प्राचीन समय से चार तत्वों की पूजा करते थे, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण तत्व आग था। इसी उद्देश्य से उन्होंने विशेष अग्नि-मन्दिर और उपासना-स्थल बनाये हुए थे। आग की पूजा पूरे देश में फैली हुई थी और इसके लिए कठोर तथा संगठित नियम बनाये गये थे, जिनका पालन आवश्यक माना जाता था।

आग और सूर्य की पूजा के अ़लावा अन्य विश्वास लगभग समाप्त हो चुके थे, उनके अनुसार धर्म की ह़ैसियत कुछ रस्मों और पुरानी परम्पराओं से अधिक नहीं रह गई थी, जिन्हें वे विशेष पूजा-स्थलों में निभाते थे, जबकि उन स्थलों से बाहर वे अपनी इच्छानुसार जीवन जीने के लिए स्वतंत्र थे।

परिणामस्वरूप एक मजूसी और एक अधार्मिक तथा चरित्रहीन व्यक्ति के बीच बहुत कम अंतर रह गया था।

धार्मिक कर्तव्य-

पुस्तक "ईरान व अ़हद-ए-सासानियान" के लेखक **Arthur Christensen**

ने उस दौर के धार्मिक कर्तव्यों का वर्णन करते हुए लिखा है-

"It was incumbent on the civil servants to offer prayers four times a day to the sun besides fire and water. Separate hymns were prescribed for rising and going to sleep, taking a bath, putting on the sacred cord, eating and drinking, sniffing, hair dressing, cutting of the nails, excrement and lighting the candle which were to be recited on each occasion with the greatest care. It was the duty of the priests to compound, purify and tend the sacred fire, which was never to be extinguished, nor water was ever allowed to touch fire. No metal was allowed to rust, for metals, too, were revered by their religion."

(Arthur Christensen, L'Iran sous les Sassanides (Annales du Musée Guimet, Bibliothèque d'Études, Tome 48, Paris: Geuthner, 1936, p. 155)

अनुवाद-

"सरकारी कर्मचारियों के लिए यह आवश्यक था कि वे दिन में चार बार सूर्य की पूजा करें। इसके अतिरिक्त आग और पानी की भी पूजा की जाती थी। सोने और जागने, स्नान करने, जनेऊ पहनने, खाने-पीने, सूँघने, बाल बनाने, नाखून काटने, शौच जाने और दीपक जलाने जैसे हर कार्य के लिए अलग-अलग प्रार्थनाएँ निर्धारित थीं, जिन्हें बहुत सावधानी से पढ़ना आवश्यक माना जाता था।

पुरोहितों का कर्तव्य-

पुरोहितों का कर्तव्य था कि वे पवित्र अग्नि को तैयार करें, उसे शुद्ध रखें और उसकी देखभाल करें, उसे कभी बुझने न दिया जाए और आग को पानी के साथ हरग़िज़ न मिलने दिया जाए।

किसी धातु को जंग लगने की अनुमति नहीं थी, क्योंकि धातुओं को भी उनके धर्म में सम्मान के योग्य माना जाता था"।

इसी प्रकार वे आगे लिखते हैं-

"All prayers were performed facing the sacred fire. The last Iranian

Emperor, Yazdagird III, once took an oath, saying: 'I swear by the sun, which is the greatest of all gods.' He had ordered those who had renounced Christianity to reenter their original faith and should publicly worship the sun in order to prove their sincerity."

(Arthur Christensen, L'Iran sous les Sassanides. Copenhagen & Paris: Levin & Munksgaard; Geuthner, 1936, Page 186-187)

अनुवाद-

"सभी उपासनाएँ पवित्र अग्नि की ओर मुख करके की जाती थीं। ईरान के अन्तिम सम्राट यज़्दगर्द तृतीय ने एक बार शपथ लेते हुए कहा-

"मैं सूर्य की क़सम खाता हूँ जो सभी देवताओं में सबसे बड़ा है"। उसने उन लोगों को जिन्होंने ईसाई धर्म छोड़ दिया था, आदेश दिया कि वे अपने मूल धर्म में वापस आएँ और अपनी सच्चाई सिद्ध करने के लिए खुले रूप से सूर्य की पूजा करें"।

अहरीमन और अहुरमज़्दा की पूजा-

इसी प्रकार वे आगे लिखते हैं-

The principle of dualism, the two rival spirits of good and evil, had been upheld by the Iranians for such a long time that it had become a mark avnd symbol of their national creed. They believed that Ormuzd creates everything good, and Ahriman creates all that is bad. These two are perpetually at war..."

(Arthur Christensen, L'Iran sous les Sassanides, 1936 , Page 183, 233)

अनुवाद-

"अच्छाई और बुराई की दो विरोधी शक्तियों पर आधारित द्वैतवाद (Dualism) का सिद्धांत ईरानियों में इतने लम्बे समय से प्रचलित था कि वह उनके राष्ट्रीय विश्वास की पहचान बन गया था। वे मानते थे कि अहुरमज़्दा (Ahura Mazda) हर अच्छी चीज़ का सृजनकर्ता है और अहरीमन (Ahriman) हर बुराई को पैदा करता है। ये दोनों शक्तियाँ हमेशा आपस में संघर्ष और युद्ध की स्थिति में रहती हैं"।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व बौद्ध धर्म की स्थिति-

बौद्ध धर्म जो भारत और मध्य एशिया में व्यापक रूप से फैल चुका था, समय के साथ अपनी प्रारम्भिक सादगी से हटकर विभिन्न धार्मिक रस्मों और प्रतीकात्मक उपासनाओं का रूप लेने लगा।

शोधकर्ताओं के अनुसार बौद्ध धर्म के शुरुआ़ती दौर में गौतम बुद्ध की मानव रूप में मूर्तियाँ बहुत कम थीं, लेकिन ईस्वीं सदी के आरम्भ के आसपास बुद्ध की प्रतिमाएँ बननी शुरु हुईं और महायान बौद्ध धर्म के उदय के साथ वे जनसामान्य के धर्म का मुख्य ह़िस्सा बन गईं।

धार्मिक प्रतीकों और मूर्तियों का सम्मान पुण्य समझा जाने लगा तथा मठ, स्तूप और पूजा-स्थल बनाये गये।

विभिन्न देवताओं का अस्तित्व-

एक अकादमिक अध्ययन के अनुसार बौद्ध धर्म "एक ऐसे धर्म के रूप में है जिसमें एकमात्र सृष्टिकर्ता ईश्वर की धारणा नहीं पाई जाती" यद्यपि इसमें विभिन्न देवताओं के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है, लेकिन अंतिम सत्य "निर्वाण" को माना जाता है।

धार्मिक विकास के साथ जनसामान्य में बुद्ध और बोधिसत्वों के प्रति श्रद्धा बढ़ती गई और कुछ परम्पराओं में इन व्यक्तियों को आध्यात्मिक सहायक या पूजनीय हस्तियों के रूप में देखा जाने लगा।

बौद्ध धर्म के विशेषज्ञ **Peter Harvey** लिखते हैं कि यद्यपि बौद्ध धर्म सृष्टिकर्ता ईश्वर पर केंद्रित नहीं है, फिर भी इसमें देवताओं को अस्तित्व के दायरे का हिस्सा माना जाता है और बुद्ध स्वयं को ईश्वर का अवतार नहीं, बल्कि एक जागृत मनुष्य तथा "मनुष्यों और देवताओं का शिक्षक" कहते थे।

सामाजिक रूप से बौद्ध धर्म ने कई क्षेत्रों की सभ्यता, क़ानून और जीवन शैली को प्रभावित किया, लेकिन जनसामान्य के धार्मिक आचरण में रस्मों और पवित्र वस्तुओं के सम्मान का रुझान भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता था।

"Buddhism is a religion lacking the idea of a unique creator God. It… accepts many long-lived gods, but sees ultimate reality, Nirvana, as beyond these."

(Peter Harvey, Buddhism and Monotheism. Cambridge University Press, 2019)

अनुवाद–

"बौद्ध धर्म ऐसा धर्म है जिसमें एकमात्र सृष्टिकर्ता ईश्वर की अवधारणा मौजूद नहीं है। यह अनेक दीर्घायु देवताओं के अस्तित्व को स्वीकार करता है, लेकिन अन्तिम सत्य 'निर्वाण' को इन सब से परे और सर्वोच्च मानता है"।

The earliest phase… has been described as aniconic; the Buddha was only represented through symbols such as an empty throne, Bodhi tree… Buddha's foot prints, and the dharma wheel.""Free-standing statues of the Buddha appear around the 1st century CE… possibly encouraged by doctrinal changes in Buddhism allowing departure from the aniconism that had prevailed."

(Aniconism in Buddhism." Encyclopedia of Buddhism)

अनुवाद–

"प्रारम्भिक काल को 'निर्मूर्ति चरण' (Aniconic Phase) कहा जाता है, जिसमें बुद्ध को मानव रूप में नहीं दिखाया जाता था, बल्कि खाली सिंहासन, बोधि वृक्ष, पदचिह्न और धर्मचक्र जैसे प्रतीकात्मक तरीक़ों से प्रस्तुत किया जाता था, बाद में पहली सदी ईस्वीं के आसपास बुद्ध की मूर्तियाँ बननी शुरु हुईं और सम्भवतः बौद्ध धर्म में कुछ वैचारिक परिवर्तनों ने पहले से प्रचलित इस निर्मूर्ति परम्परा से हटने की अनुमति दी"।

The Buddha image was the result of a long evolution. Early Buddhism avoided representing the Master in human form, but later devotion created the need for a visible object of worship."

(Alfred Foucher, The Beginnings of Buddhist Art and Other Essays in Indian and Central Asian Archaeology, Paris: Paul Geuthner, 1917¡ pp. 5-7)

अनुवाद–

"बुद्ध की मूर्ति एक लम्बे विकास क्रम का परिणाम थी। प्रारम्भिक बौद्ध

धर्म में गुरु (बुद्ध) को मानव रूप में दिखाने से बचा जाता था, लेकिन बाद में श्रद्धा और भक्ति ने उपासना के लिए एक दिखाई देने वाली वस्तु की आवश्यकता पैदा कर दी"।

बुद्ध की मूर्ति बनाने की प्रकृति-

प्रारम्भिक बौद्ध धर्म में बुद्ध को मानव रूप में प्रस्तुत करने या मूर्तिपूजा की परम्परा नहीं थी, बल्कि उन्हें खाली सिंहासन, बोधि वृक्ष, पदचिह्न और धर्मचक्र जैसी प्रतीकात्मक चीज़ों के माध्यम से दर्शाया जाता था, लेकिन समय बीतने के साथ जनसामान्य की श्रद्धा, धार्मिक भावनाओं और उपासना के लिए किसी प्रत्यक्ष और दिखाई देने वाले केंद्र की आवश्यकता ने बुद्ध की मूर्तियाँ बनाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया।

इसी प्रकार **Ananda K- Coomaraswamy** लिखते हैं कि बुद्ध को मानव रूप में प्रस्तुत करना बौद्ध उपासना परम्परा में एक बड़े परिवर्तन का प्रतीक है। **(The Origin of the Buddha , 1927, P- 287)**।

इस प्रकार इतिहासकारों के अनुसार यह परिवर्तन बौद्ध धर्म के धार्मिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने उसकी उपासना और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को नया रूप दिया।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व हिन्दू धर्म की स्थिति-

जहाँ तक हिन्दू धर्म का सम्बन्ध है, प्राचीन और प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत में इसकी धार्मिक परम्परा देवी-देवताओं की बहुलता, स्थानीय मान्यताओं और विभिन्न पूजा-पद्धतियों के कारण अत्यन्त विविध रूप ले चुकी थी।

छठी सदी ईस्वीं के आसपास हिन्दू धर्म में भक्ति **(Devotional)** प्रवृत्तियों के बढ़ने के साथ मूर्ति पूजा को एक संगठित धार्मिक परम्परा का दर्जा मिल चुका था।

मंदिरों का निर्माण, देवी-देवताओं की मूर्तियों की स्थापना और उनके चारों ओर धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन सामान्य होता जा रहा था।

देवताओं की पूजा-

इतिहासकारों के अनुसार उस समय विष्णु, शिव, देवी और अन्य स्थानीय देवताओं की पूजा विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग रूपों में प्रचलित थी, जिससे धार्मिक विविधता और अनेक देवताओं की धारणा और अधिक मज़बूत हुई।

प्रसिद्ध इतिहासकार **A- L- Basham** लिखते हैं कि गुप्त काल और उसके बाद "भक्ति आन्दोलन के विकास के साथ शिव और विष्णु जैसे व्यक्तिगत देवताओं की पूजा तथा उनकी मूर्तिमय प्रस्तुति व्यापक रूप से प्रचलित हो गई और हिन्दू धर्म में प्रतिमाओं **(Images)** को पूजा का वैध और महत्वपूर्ण माध्यम माना जाने लगा"।

The bhakti movement... encouraged the worship of personal gods such as Œiva and VicGu, and their images became the normal objects of devotion in Hinduism."

(A. L. Basham, The Wonder That Was India. London 1954¡ pp. 310–-312)

अनुवाद-

"भक्ति आन्दोलन ने शिव और विष्णु जैसे व्यक्तिगत देवताओं की उपासना को बढ़ावा दिया और उनकी प्रतिमाएँ हिन्दू धर्म में श्रद्धा का सामान्य तथा केंद्रीय माध्यम बन गईं"।

प्रमुख विशेषता-

इतिहासकार **Heinrich Zimmer** के अनुसार हिन्दू परम्परा में दिव्य सत्य को अनेक रूपों में प्रकट करने की प्रवृत्ति इस धर्म की प्रमुख विशेषता थी। इस प्रकार मूर्तिकला (मूर्ति कला) न केवल धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी, बल्कि कला और संस्कृति के विकास का भी एक महत्वपूर्ण पक्ष मानी गई।

वह लिखते हैं-

The divine in India is not restricted to a single form; it appears in

many manifestations."

(Heinrich Zimmer, Philosophies of India. New York: Princeton University Press (Bollingen Series) 1951¡ p. 355

अनुवाद-

"भारत में दिव्य सत्य किसी एक रूप तक सीमित नहीं है, बल्कि वह अनेक रूपों और अभिव्यक्तियों में प्रकट होता है"।

मूर्ति पूजा-

जहाँ तक हिन्दू धर्म का सम्बन्ध है, देवी-देवताओं की बहुलता के दृष्टिकोण से यह अन्य धर्मों से बहुत आगे था। छठी सदी ईस्वीं में इस धर्म में मूर्तिपूजा (मूर्ति पूजा) अपने चरम पर पहुँच चुकी थी।

उस समय देवी-देवताओं की संख्या करोड़ों तक बताई जाती थी। हर वह वस्तु जो महान, भयावह या लाभ पहुँचाने वाली समझी जाती, पूजनीय बन जाती थी।

मूर्तिकला (मूर्ति निर्माण) भी अपने उत्कर्ष पर थी और उसमें लगातार नये-नये रूप विकसित किये जा रहे थे। हिन्दू इतिहासकार **C. V. Vaidya** लिखते हैं-

"Both Hinduism and Buddhism were equally idolatrous at this time. If anything, Buddhism perhaps beat the former in its intense idolatry. That religion started, indeed, with the denial of God, but concluded by making Buddha himself as the Supreme God. Later developments of Buddhism conceptualized other gods like the Bodhisatvas and the idolatry of Buddhism, especially in the Mahayana school was firmly established. It flourished in and out of India so much that the word for an idol in the Arabic has come to be Buddha itself." No doubt idolatry was at this time rampant all over the world. From the Atlantic to the Pacific the world was immersed in idolatry; Christianity, Semitism, Hinduism and Buddhism vying, so to speak, one with another in their adoration of idols."

(History of Mediaeval Hindu India: Being a History of India from 600 to 1200 A.D¡ Vol. 1, Bombay: Oriental Book-Supplying Agency, 1921 Page 101)

अनुवाद-

"उस समय हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म दोनों समान रूप से मूर्तिपूजा के समर्थक थे, बल्कि सम्भव है कि मूर्तिपूजा की तीव्रता में बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म से भी आगे बढ़ गया हो।

यह धर्म वास्तव में ईश्वर के निषेध से शुरु हुआ था, लेकिन अंततः बुद्ध को सबसे बड़ा देवता बना दिया गया। बाद में बोधिसत्त्व जैसे अन्य देवताओं की अवधारणा उत्पन्न हुई और विशेष रूप से महायान परम्परा में मूर्तिपूजा दृढ़ता से स्थापित हो गई।

यह भारत के भीतर और बाहर इतनी व्यापक हो गई कि कुछ भाषाओं में 'बुत' (मूर्ति) शब्द को 'बुद्ध' से निकला हुआ माना जाने लगा। निस्संदेह उस समय पूरी दुनिया में मूर्तिपूजा फैल चुकी थी।

अटलांटिक महासागर से लेकर प्रशांत महासागर तक संसार मूर्तिपूजा में डूबा हुआ था।

ईसाई धर्म, सामी धर्म, हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म मानो एक-दूसरे से बढ़कर मूर्तियों के सम्मान और पूजा में लगे हुए थे"।

छठी सदी ईस्वीं में हिन्दू धर्म-

छठी सदी ईस्वीं के आसपास हिन्दू धर्म एक अत्यंत विशाल और विविध धार्मिक व्यवस्था का रूप ले चुका था, जिसमें देवी-देवताओं की बड़ी संख्या और स्थानीय मान्यताओं का गहरा प्रभाव था। अलग-अलग कालों में नये देवताओं का समावेश होता गया और प्राचीन स्थानीय समुदायों के पूज्य देवताओं को भी हिन्दू देवसमूह में शामिल किया जाता रहा, यहाँ तक कि उनकी संख्या "तैंतीस करोड़" तक बताई जाने लगी।

● इतिहासकार **J. N. Farquhar** लिखते हैं-

The process of creating gods did not stop here; in different ages the divine council was so enlarged that it became difficult to count them. Many of these were the gods of the aboriginal inhabitants who were

afterwards admitted into the Hindu pantheon. Their total number is given as thirty-three crores."

(J. N. Farquhar, An Outline of the Religious Literature of India. London: Oxford University Press, 1920, pp. 6–7)

अनुवाद-

"यह स्थिति इस बात की ओर संकेत करती है कि हिन्दू धार्मिक चिंतन में ईश्वरत्व को विभिन्न रूपों में स्वीकार करने की प्रवृत्ति मौजूद थी, जिसके कारण प्रकृति की शक्तियाँ, स्थानीय देवता और क्षेत्रीय धार्मिक परम्पराएँ भी मुख्य धार्मिक धारा का हिस्सा बनती चली गईं।

परिणामस्वरूप धार्मिक जीवन में मूर्तिपूजा, मंदिरों का विस्तार और व्यक्तिगत देवताओं की उपासना सामान्य होती गई और हिन्दू समाज एक ऐसे व्यापक धार्मिक ढाँचे में ढल गया जिसकी नींव अनेक देवताओं और प्रतीकात्मक उपासना पर आधारित थी"।

विविध धार्मिक परम्परा-

भारतीय उपमहाद्वीप में हिन्दू धर्म एक अत्यंत विशाल, जटिल और विविध धार्मिक परम्परा का रूप ले चुका था। इसमें विभिन्न संप्रदाय, दार्शनिक विचारधाराएँ और पूजा-पद्धतियाँ मौजूद थीं, जिनमें शिव, विष्णु, शक्ति और अन्य देवताओं की उपासना प्रमुख थी।

इतिहासकारों के अनुसार स्थानीय मान्यताएँ और जनजातीय देवता समय के साथ मुख्य धार्मिक धारा में शामिल होते गये, जिसके परिणामस्वरूप अनेक देवताओं की धारणा विकसित हुई और "तैंतीस करोड़ देवताओं" की अभिव्यक्ति प्रसिद्ध हो गई।

इसी विविधता के कारण प्रकृति के रूप जैसे नदियाँ, पर्वत, वृक्ष और कुछ पशु भी पवित्र माने जाने लगे, जबकि मंदिरों और मूर्तियों के माध्यम से पूजा सामान्य धार्मिक प्रथा बन गई।

समाज में जाति-प्रथा एक मज़बूत सामाजिक व्यवस्था का रूप ले चुकी थी, जिसने सामाजिक असमानता और वर्गीय संघर्ष को जन्म दिया। इस

व्यवस्था ने सामाजिक स्तर, व्यवसाय और धार्मिक अधिकारों को निर्धारित कर दिया था, जिसके कारण निम्न वर्गों को अक्सर शिक्षा, धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक उन्नति के अवसरों से वंचित रहना पड़ता था।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व चीन की स्थिति-

छठी सदी ईस्वीं के आसपास चीन में कन्फ्यूशियाई (Confucian) विचारधारा को राज्य और समाज की बुनियाद माना जाता था, जहाँ नैतिकता, पारिवारिक निष्ठा (filial piety) और शासक की आज्ञाकारिता को अत्यधिक महत्व दिया जाता था।

यद्यपि कन्फ्यूशियसवाद स्वयं अधिकतर एक नैतिक और सामाजिक दर्शन था, लेकिन व्यवहारिक धार्मिक जीवन में पूर्वजों की पूजा, परम्पराओं का पालन और 'स्वर्गीय आदेश' (Mandate of Heaven) पर विश्वास सामान्य था।

धार्मिक मिश्रण-

उस समय बौद्ध धर्म और 'ताओ मत' भी चीन में मज़बूत हो चुके थे, जिसके परिणामस्वरूप एक धार्मिक मिश्रण पैदा हो गया था, लोग एक साथ कन्फ़्यूशियाई नैतिक शिक्षाओं का पालन करते और साथ ही बौद्ध या ताओवादी उपासनाएँ भी करते थे।

कन्फ़्यूशियाई विचारधारा सामाजिक व्यवस्था और नैतिक मूल्यों पर तो ज़ोर देती थी, लेकिन कुछ इतिहासकारों के अनुसार यह एक पूर्ण धार्मिक जीवन-व्यवस्था के बजाय अधिकतर सामाजिक और नैतिक आचार-संहिता थी।

इसमें उपासना, मुक्ति या परलोक से सम्बन्धित कोई स्पष्ट और व्यापक सिद्धांत मौजूद नहीं था, बल्कि इसका ध्यान मुख्य रूप से सांसारिक व्यवस्था, पारिवारिक ज़िम्मेदारियों और शासक की आज्ञाकारिता पर केंद्रित था।

चीनी जनता का धार्मिक जीवन एक साथ कन्फ़्यूशियसवाद, ताओ मत, बौद्ध धर्म और पूर्वज-पूजा से प्रभावित था, जिसके कारण एक एकीकृत धार्मिक व्यवस्था कमज़ोर दिखाई देती थी।

● इतिहासकार **Patricia Ebrey** लिखती हैं-

"Most Chinese participated in rituals honoring their ancestors and in state-sponsored ceremonies. These practices were closely tied to family life and the political order."

(Patricia Buckley Ebrey, The Cambridge Illustrated History of China, Cambridge University Press, 1996, pp. 70–-72)

अनुवाद-

"अधिकांश चीनी लोग अपने पूर्वजों के सम्मान में धार्मिक रस्में निभाते थे और राज्य के संरक्षण में आयोजित धार्मिक समारोहों में भाग लेते थे। यह कार्य पारिवारिक जीवन और राजनीतिक व्यवस्था से गहराई से जुड़े हुए थे"।

परम्पराओं का मिश्रण-

छठी सदी ईस्वीं का चीन बाहर से एक व्यवस्थित समाज दिखाई देता था। जहाँ धर्म, नैतिकता और राजनीति एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए थे, लेकिन व्यवहारिक रूप से जनता का धार्मिक जीवन विभिन्न विश्वासों और परम्पराओं का मिश्रण बन चुका था।

कन्फ़्यूशियाई शिक्षाएँ सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक निष्ठा और शासक की आज्ञाकारिता पर ज़ोर देती थीं, लेकिन वह ऐसा व्यापक आध्यात्मिक जीवन-तंत्र प्रदान नहीं कर सकीं जो मनुष्य की आंतरिक प्यास को पूरी तरह शांत कर सके।

फलस्वरूप आ़म लोग एक साथ कन्फ़्यूशियसवाद, ताओ मत, बौद्ध धर्म और पूर्वज-पूजा की परम्पराओं का पालन करते थे, जिससे एक स्पष्ट और एकीकृत धार्मिक दिशा कमज़ोर पड़ जाती थी।

इतिहासकारों के अनुसार कन्फ्यूशियसवाद मुख्यतः एक नैतिक और सामाजिक दर्शन था, न कि ऐसा धर्म जो मुक्ति, परलोक या सम्पूर्ण आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करता हो अर्थात उस दौर में चीन के पास ऐसा व्यापक जीवन-तंत्र मौजूद नहीं था जो मानव जीवन के सभी पहलुओं को एक साथ जोड़कर वास्तविक शांति और सर्वांगीण कल्याण की गारंटी दे सके।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व रोमन साम्राज्य की स्थिति-

यूनान के पतन के बाद रोम की हुकूमत दुनिया की सबसे शक्तिशाली सल्तनत (Super Power) मानी जाती थी, लेकिन छठी सदी के अंतिम दौर तक यही साम्राज्य अपने उत्कर्ष (Peak) से गिरकर पतन (Decline) की चरम सीमा तक पहुँच चुका था।

जिन लोगों ने ईसाई धर्म (Christianity) को अपनाया हुआ था, वे भी वास्तविक एकेश्वरवाद (Monotheism) की भावना से दूर हो गये थे। उनमें ईसाई शिक्षाओं (Christian Teachings) की स्पष्ट झलक बहुत कम रह गई थी और वे पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा (Holy Spirit) तथा ह़ज़रत मरियम (अ़लै०) को भी दिव्य दर्जा (Divine Status) देने लगे थे, जिससे त्रित्व (Trinity) का सिद्धांत और अधिक मज़बूत हो गया था।

क़ब्रों की श्रद्धा-

सैकड़ों धार्मिक सम्प्रदाय (Religious Sects) अस्तित्व में आ चुके थे और क़ब्रों की श्रद्धा तथा उनसे सहायता माँगने (Veneration of Graves) की परम्परा बढ़ती जा रही थी। पोप (Pope) और अन्य धार्मिक अधिकारी (Clergy) न केवल शाही अधिकार (Royal Authority) बल्कि मानो ईश्वरीय अधिकार (Divine Authority) भी अपने हाथ में लिये हुए थे और उनके आदेशों को ईश्वर का आदेश (Sacred Command) समझा जाता था।

धर्म का सबसे ऊँचा आदर्श सन्यास (Monasticism) और दुनिया से अलग रहना (Asceticism) समझा जाने लगा था, जिसके कारण व्यावहारिक जीवन (Practical Life) और धर्म के बीच संतुलन (Balance) कमज़ोर होता जा रहा था।

वर्ग भेद-

सामाजिक दृष्टि से रोमन समाज गंभीर वर्गभेद का शिकार था। अमीर और उच्च वर्ग के लोग ऐशो-आराम की जिंदगी जीते थे, जबकि आ़म लोग

भारी करों और आर्थिक दबाव के नीचे पिस रहे थे। किसानों और मज़दूरों की स्थिति विशेष रूप से दयनीय थी, उन्हें भूमि से बँधे रहने पर मजबूर किया जाता था और वे लगभग गुलामों जैसी ज़िंदगी जीते थे। शहरों में ग़रीबी बढ़ रही थी और आर्थिक असमानता ने समाज में बेचैनी पैदा कर दी थी। सरकारी व्यवस्था भी अपनी स्थिरता खो चुकी थी।

नैतिक पतन-

नैतिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी पतन के चिन्ह स्पष्ट दिखाई देते थे। ऐतिहासिक विवरणों में मिलता है कि विलासिता, दिखावा और सांसारिक लाभों की दौड़ ने उच्च नैतिक मूल्यों को प्रभावित कर दिया था। पारिवारिक व्यवस्था कमज़ोर पड़ रही थी और धार्मिक मतभेदों ने सामाजिक एकता को नुक़्सान पहुँचाया था।

- प्रसिद्ध इतिहासकार **Edward Gibbon** लिखते हैं-

Amidst the arms of the Lombards, and under the despotism of the Greeks, we again inquire into the fate of Rome, which had reached, about the close of the sixth century, the lowest period of her depression... the lofty tree, under whose shade the nations of the earth had reposed, was deprived of its leaves and branches, and the sapless trunk was left to wither on the ground."

(Edward Gibbon, The History of the Decline and Fall of the Roman Empire, Volume IV, Chapter Rome in the late sixth century)

अनुवाद-

"लोम्बार्ड्स के युद्धों और यूनानियों की तानाशाही के बीच हम फिर रोम की स्थिति पर नज़र डालते हैं, जो छठी सदी के अंत तक अपने पतन की सबसे निचली अवस्था तक पहुँच चुका था,वह विशाल वृक्ष जिसकी छाया में दुनिया की जातियाँ आराम पाती थीं, उसके पत्ते और शाखाएँ झड़ चुकी थीं और उसका निर्जीव तना सूखने के लिए भूमि पर छोड़ दिया गया था"।

एक अन्य विचारक **Lord Headley** उस समय की परिस्थितियों का वर्णन

करते हुए संकेत करते हैं कि रोमन साम्राज्य अपने इतिहास के अत्यंत नाज़ुक और कमजोर दौर से गुज़र रहा था।

बाहर से एक विशाल और महान साम्राज्य दिखाई देने के बावजूद अन्दरूनी रूप से उसकी प्रशासनिक व्यवस्था कमज़ोर पड़ चुकी थी।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व ईरानी सल्तनत की दशा (Sassanian Empire)

सासानी ईरानी साम्राज्य (224–651 ई०) अपने समय की एक महान और संगठित शक्ति था, लेकिन उसके सामाजिक ढाँचे में कई ऐसी कमज़ोरियाँ थीं जिन्होंने आ़म लोगों के जीवन को प्रभावित किया।

समाज एक कठोर वर्ग-व्यवस्था (Rigid Class System) पर आधारित था, जिसमें उच्च वर्ग, सैनिक, धार्मिक पुरोहित (Magi) और सरकारी अधिकारी ऊँचे स्थान पर थे, जबकि किसान और सामान्य लोग निम्न वर्ग में गिने जाते थे। इस वर्गीय विभाजन के कारण सामाजिक उन्नति (Social Mobility) लगभग असंभव थी और अधिकांश लोग अपने जन्मजात वर्ग तक ही सीमित रह जाते थे।

सरकारी संरक्षण–

धार्मिक रूप से जरतुष्टी धर्म (Zoroastrianism) को सरकारी संरक्षण प्राप्त था और धार्मिक वर्ग का राजनीतिक मामलों में भी गहरा प्रभाव था। इस गठबंधन के कारण कई बार दूसरे धर्मों और संप्रदायों के लिए कठिनाइयाँ पैदा होती थीं।

उदाहरण के तौर पर नई धार्मिक आंदोलनों को राज्य के विरोध का सामना करना पड़ता था, जिससे धार्मिक तनाव (Religious Tension) उत्पन्न होता था। (Encyclopaedia Britannica] "Zoroastrianism – The Sasanian Period")

भौतिकवाद–

इसी प्रकार नैतिक कमज़ोरी, भौतिकवाद (Materialism) और आराम

परस्ती ने समाज के उच्च वर्गों को प्रभावित किया, जिसके परिणामस्वरूप सामूहिक नैतिकता (Social Morality) धीरे-धीरे कमज़ोर पड़ने लगी।

राजनीतिक दृष्टि से बादशाह को अत्यन्त पवित्र और उच्च स्थान प्राप्त था। सासानी शासक स्वयं को ईश्वरीय समर्थन प्राप्त शासक (Divinely Sanctioned ruler) मानते थे और जनता से असाधारण आज्ञाकारिता की अपेक्षा रखते थे।

दरबार का कठोर प्रोटोकॉल (Royal protocol) और शाही रस्में बादशाह और जनता के बीच स्पष्ट दूरी पैदा करती थीं। इस शासन-प्रणाली में जनता की राय या आलोचना (criticism) की बहुत कम गुंजाइश थी, जिससे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (Freedom of empression) सीमित हो जाती थी।

प्रमुख धर्म-

धार्मिक दृष्टि से ईरान में जरतुष्टी धर्म (Zoroastrianism) प्रमुख था, जहाँ अग्नि को पवित्रता का प्रतीक माना जाता था और अग्नि-मंदिरों (Fire Temples) में पूजा की जाती थी, लेकिन समय के साथ धार्मिक संस्थाओं (Religious Institutions) और राज्य के बीच गहरा सम्बन्ध बन गया, जिसके कारण कई बार धर्म का उपयोग राजनीतिक स्थिरता बनाये रखने के लिए किया जाने लगा।

ईरानी सभ्यता-

इन सभी बातों के बावजूद यह तथ्य भी ध्यान में रखना चाहिए कि ईरानी सभ्यता ज्ञान, वास्तुकला (Architecture) शासन-व्यवस्था (Administration) और व्यापार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती थी, लेकिन जब किसी समाज में वर्गीय अन्याय, शाही तानाशाही (Autocracy) और नैतिक कमज़ोरी बढ़ जाए तो बाहरी शक्ति के बावजूद उसकी आंतरिक स्थिरता प्रभावित होने लगती है।

ईरानी बादशाह-

ईरानी बादशाह स्वयं को ईश्वरीय समर्थन प्राप्त (Divinely chosen) मानते

थे और अपनी सत्ता को एक पवित्र अधिकार के रूप में प्रस्तुत करते थे। सासानी काल में "फ़र्रह-ए-इजदी" (Divine Glory / Khvarenah) की अवधारणा प्रचलित थी, जिसके अनुसार बादशाह को शासन का अधिकार सीधे ईश्वर की ओर से प्राप्त होता है। इसी कारण जनता की नज़र में बादशाह केवल एक राजनीतिक शासक नहीं, बल्कि एक पवित्र व्यक्तित्व माना जाता था।

- प्रसिद्ध जरतुष्टी धर्म की विशेषज्ञ Mary Boyce लिखती हैं-

Fire was not worshipped as a god, but revered as the purest symbol of divine light."

(Mary Boyce, Zoroastrians: Their Religious Beliefs and Practices, Routledge, 1979, p. 67)

अनुवाद-

"अग्नि की पूजा ईश्वर के रूप में नहीं की जाती थी, बल्कि उसे ईश्वरीय प्रकाश की सबसे शुद्ध प्रतीक मानकर सम्मान दिया जाता था"।

शाही वैभव-

इस प्रकार ईरानी साम्राज्य में धार्मिक पवित्रता, शाही वैभव और राजनीतिक अधिकार आपस में इतने गहराई से जुड़ गये थे कि बादशाहत को चुनौती देना केवल राजनीतिक विद्रोह नहीं, बल्कि धार्मिक विचलन भी समझा जा सकता था।

- प्रसिद्ध इतिहासकार Will Durant लिखते हैं-

"In Persia it was considered no sin to marry within the family; such marriages were even encouraged."

(Will Durant, The Story of Civilization, Vol. 1: Our Oriental Heritage, Simon & Schuster, 1935)

अनुवाद-

"फ़ारस में परिवार के भीतर विवाह को पाप नहीं माना जाता था, बल्कि कुछ अवसरों पर ऐसे विवाहों को प्रोत्साहित भी किया जाता था"।

● प्रसिद्ध इतिहासकार **Edward Gibbon** लिखते हैं-

The example of Cambyses… introduced the practice of marrying sisters; and the Magi applauded a doctrine so convenient to royal desires."

(Edward Gibbon, The History of the Decline and Fall of the Roman Empire,Chapter VIII)

अनुवाद-

"कम्बोजिया **(Cambyses)** के उदाहरण ने बहनों से विवाह की परम्परा को प्रचलित किया और मजूसी पुरोहितों ने इस विचार की प्रशंसा की, जो शाही इच्छाओं के लिए अत्यंत उपयुक्त था"।

Procopius छठी सदी के एक बैजेन्टाइन इतिहासकार थे, जिन्होंने ईरान और रोम दोनों की परिस्थितियों का वर्णन किया।

वह लिखते हैं-

Among the Persians it is lawful to marry even those most closely related by blood." **(Procopius, History of the Wars, Book- I)**

अनुवाद-

"फ़ारसियों में निकट रक्त सम्बन्धों के भीतर भी विवाह को वैध माना जाता था"।

वैवाहिक व्यवस्था-

सासानी काल के ईरान में कुछ धार्मिक और सामाजिक विचारों ने पारिवारिक और वैवाहिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला। **Encyclopaedia Iranica** के अनुसार जरतुष्टी पहलवी ग्रंथों में (निकट सम्बन्धियों से विवाह) को ऐसे वैवाहिक सम्बंध के रूप में वर्णित किया गया है, जिसमें पिता और बेटी, माँ और बेटे या भाई और बहन के बीच विवाह भी शामिल हो सकता था और कुछ धार्मिक समूहों में इसे पुण्य का कार्य माना जाता था। ह़ालाँकि इतिह़ासकार और शोधकर्ता इस बात पर पूरी तरह सह़मत नहीं हैं कि यह प्रथा

आ़म जनता में कितनी व्यापक थी।

(Encyclopaedia Britannica, Zoroastrianism – The Sasanian Period ;Mazdakism)

प्रोफ़ेसर **Arthur Christensen** के अनुसार इस प्रकार के सम्बंध ईरान में अनुचित नहीं माने जाते थे। चीनी यात्री **Xuanzang** ने भी इस बात की पुष्टि की है कि वैवाहिक जीवन में किसी विशेष भेदभाव का ध्यान नहीं रखा जाता था।

ईरान के एक प्राचीन दार्शनिक **Mani** ने एक नया विचार प्रस्तुत करते हुए सांसारिक जीवन त्यागकर संन्यास अपनाने की शिक्षा दी, जबकि दूसरे विचारक **Mazdak** ने यह सिद्धांत दिया कि सभी महिलाएँ सभी पुरुषों के लिए वैध हैं। इन विचारों के परिणामस्वरूप समाज बेचैनी, अव्यवस्था और नैतिक विचलन का शिकार हो गया। यहाँ तक कि कुछ लोग अपनी बेटियों और सगी बहनों से भी विवाह कर लेते थे और इसे पाप नहीं समझते थे।

इस प्रकार बाहर से विकसित दिखाई देने वाली इस सल्तनत में बहुत से लोग एक बेहतर और न्यायपूर्ण सामाजिक मार्ग की तलाश में दिखाई देते हैं। ऐसा मार्ग जो उन्हें अत्याचार, प्रतिबंधों और वैचारिक अव्यवस्था से निकालकर नैतिकता, समानता और मानवीय सम्मान पर आधारित जीवन की ओर ले जा सके।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व भारतीय समाज की स्थिति-

भारत जो प्राचीन काल में गणित, ज्योतिष, चिकित्सा और दर्शन जैसे ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में विशेष स्थान रखता था, उसके बारे में अनेक इतिह़ासकारों की राय है कि छठी सदी ईस्वी के आरम्भ तक उसका धार्मिक, नैतिक और सामाजिक ढाँचा गंभीर पतन का शिकार हो चुका था। बेहयाई और विलासिता का प्रभाव इतना बढ़ गया था कि उपासना-स्थल भी इन बुराइयों से सुरक्षित नहीं रहे और कई बार इन कार्यों को धार्मिक रूप देकर उचित माना जाने लगा।

आर्या समुदाय-

आर्य जाति **(Aryans)** एक प्राचीन हिन्द-यूरोपीय नस्ल से सम्बन्धित

समुदाय था, जिसने प्राचीन काल में पूर्व दिशा की ओर प्रवास किया।

कुछ सिद्धांतों के अनुसार आर्य यूरोप, ईरान और मध्य एशिया से निकले, जबकि कुछ विवादास्पद मत यह भी कहते हैं कि वे मिस्र या प्राचीन सभी क्षेत्रों से आये थे।

प्रमुख देवता-

आर्य लोग प्रकृति की शक्तियों जैसे सूर्य, अग्नि, वायु और वर्षा की पूजा करते थे। उनके प्रमुख देवता इंद्र, अग्नि, वरुण, मित्र और सूर्य आदि थे, बाद में यही अवधारणाएँ हिंदू पौराणिक व्यवस्था का हिस्सा बन गईं।

आर्य जाति ने लगभग 1800 से 1500 ईसा पूर्व के बीच मध्य एशिया (Steppe Region) से दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर प्रवास आरम्भ किया। वे अफ़गानिस्तान के रास्ते उत्तर-पश्चिम भारत (वर्तमान पाकिस्तान और पंजाब के क्षेत्रों) में प्रवेश किये। यह प्रवास दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में हुआ और इन्हीं के प्रभाव से वैदिक सभ्यता (Vedic Civilization) की नींव पड़ी।

ये लोग पहले सिंध और पंजाब के मैदानों में बसे, फिर धीरे-धीरे गंगा-यमुना के क्षेत्रों तक फैल गये। उनकी भाषा वैदिक संस्कृत थी और उनके धार्मिक गीत बाद में ऋग्वेद के रूप में संकलित किये गये।

(A History of India, Vol- 1)

द्रविड़ समुदाय-

प्राचीन काल में द्रविड़ लोग सिंध, ब्लूचिस्तान, पंजाब और गुजरात के क्षेत्रों में रहते थे। अर्थात सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization) के प्रमुख केंद्रों में।

भारत पहुँचने के बाद आर्य जाति ने यहाँ के द्रविड़ (Dravidian) निवासियों पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उन्होंने संस्कृत भाषा और वेदों के माध्यम से धार्मिक और सांस्कृतिक आधार तैयार किया।

उस समय यहाँ द्रविड़ सभ्यता (Indus Valley Civilization) आबाद थी। जो शहरी, संगठित तथा कृषि और व्यापार में कुशल मानी जाती थी।

"द्रविड़ जाति" (Dravidian People) भारत की सबसे प्राचीन जातियों में से एक मानी जाती है, जिन्हें अक्सर आर्यों से पहले के निवासी या सिंधु घाटी सभ्यता के उत्तराधिकारी समझा जाता है।

आर्य चूँकि घुमन्तू, योद्धा और पशुपालक लोग थे, इसलिए उन्होंने शीघ्र ही द्रविड़ों पर आक्रमण किये। ऋग्वेद में इन संघर्षों और 'दासा' या 'दस्यु' समुदायों के साथ युद्धों का उल्लेख मिलता है। इन युद्धों में आर्यों ने द्रविड़ों के मज़बूत किलों को नष्ट किया और धीरे-धीरे उत्तरी भारत पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

वर्ण व्यवस्था-

आर्यों ने भारत में बसने के बाद स्वयं को श्रेष्ठ और उच्च जाति (Arya) घोषित किया तथा स्थानीय द्रविड़ निवासियों को 'दास' (गुलाम) या 'शूद्र' (सेवक) कहा। यही नस्ली और सामाजिक भेदभाव आगे चलकर "वर्ण व्यवस्था" (Varna System) का रूप बन गया, जिसमें समाज को चार मुख्य वर्गों में बाँटा गया-

चार मुख्य वर्ग-

(1) ब्राह्मण (Brahmin) — पुजारी और धार्मिक वर्ग

(2) क्षत्रिय (Kshatriya) — योद्धा और शासक वर्ग

(3) वैश्य (Vaishya) — व्यापारी और किसान

(4) शूद्र (Shudra) — सेवक और दास वर्ग, जिनमें अधिकतर द्रविड़ समुदाय के लोग शामिल थे।

द्रविड़ों का स्तर-

इस प्रकार द्रविड़ों को सामाजिक रूप से सबसे निचले स्तर पर रखा गया। उन पर धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक प्रतिबंध लगा दिये गये। वे वेद नहीं पढ़ सकते थे, धार्मिक अनुष्ठानों में भाग नहीं ले सकते थे और ऊँची जाति के लोगों के सामने झुकना उनके लिए अनिवार्य था।

'शूद्र' वास्तव में वही द्रविड़, मुंडा या अन्य गैर-आर्य समुदाय थे, जिन्हें आर्यों ने अपने अधीन कर लिया था। उन्हें 'अपवित्र' 'पापी' और 'जन्मजात सेवक' कहा गया। यह मानव समानता और मूल अधिकारों के विरुद्ध नस्ली और सामाजिक भेदभाव का उदाहरण था।

आर्य के देवता-

आर्य धर्म के देवताओं, विशेष रूप से इंद्र, को "दस्यु-विनाशक" **(Killer of Dasyus)** कहा गया। गैर-आर्य जातियों को 'अनार्य' 'अश्रद्धेय' 'अधमी' और 'अपवित्र' घोषित किया गया अर्थात धार्मिक दृष्टि से उन्हें मनुष्य से निम्न स्तर का माना गया। इसे धार्मिक नस्लवाद **(Religious Racism)** का प्रारंभिक उदाहरण कहा जाता है, जिसके माध्यम से आर्यों ने अपने राजनीतिक प्रभुत्व को धार्मिक पवित्रता का रूप दे दिया।

आर्य की प्रभुता-

आर्य धर्म ने अपनी प्रभुता स्थापित करने के लिए स्थानीय देवियों और प्राकृतिक आस्थाओं को 'असुर' 'दस्यु देवता' या 'अशुद्ध' घोषित किया। यह धार्मिक दबाव इतना बढ़ गया कि स्थानीय लोगों को या तो आर्य देवताओं की पूजा करने पर मजबूर होना पड़ा या फिर उन्हें निम्न जातियों में शामिल कर दिया गया। इसी व्यवस्था के विरुद्ध आगे चलकर बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसी सुधारवादी आन्दोलनों का उदय हुआ, जिन्होंने मानवता, समानता और अहिंसा का संदेश दिया। **(An Introduction to the Study of Indian History, p- 91)**

महिलाओं की स्थिति-

उस दौर में महिलाओं की सामाजिक स्थिति अत्यन्त कमज़ोर हो चुकी थी और उन्हें एक स्वतंत्र एवं अधिकारयुक्त व्यक्ति के बजाय अक्सर पुरुष की संपत्ति **(Property of men)** समझा जाता था। वैवाहिक जीवन में भी उनकी राय और इच्छाओं को अधिक महत्व नहीं दिया जाता था।

कुछ क्षेत्रों और विशेष वर्गों में सती प्रथा **(Sati –Widow Immolation)**

जैसी परम्परा भी पाई जाती थी, जिसमें विधवा से अपेक्षा की जाती थी कि वह अपने पति की चिता के साथ जलकर अपनी निष्ठा प्रदर्शित करे। यद्यपि यह प्रथा हर स्थान पर सामान्य नहीं थी, फिर भी इसकी उपस्थिति उस समय महिलाओं के सीमित अधिकारों और सामाजिक दबाव को दर्शाती है।

इन नियमों को जीवन का आचार-संहिता **(Code of life)** माना जाता था, इसलिए सामान्य लोगों के लिए उनसे अलग होना आसान नहीं था। यही नियम पूरे समाज पर लागू थे और उन्हें जीवन-पद्धति की बुनियाद माना जाता था।

वंचित वर्ग-

अन्तिम वर्ग, जिसकी संख्या सबसे अधिक थी, अत्यंत वंचित और उत्पीड़ित माना जाता था। उसे सेवा के लिए पैदा हुआ समझा जाता था और उसके अधिकार बहुत सीमित थे। वह न तो आसानी से धन एकत्र कर सकता था, न ही उच्च वर्गों के साथ घुल-मिल सकता था और न ही धार्मिक शिक्षा **(Religious Education)** तक उसकी पहुँच थी।

इसके विपरीत ब्राह्मण वर्ग को असाधारण सामाजिक और धार्मिक अधिकार प्राप्त थे और समाज व्यवस्था पर उसका गहरा प्रभाव था। राजनीतिक रूप से भी देश अव्यवस्था का शिकार था और अनेक राज्यों में विभाजित होने के कारण आपसी संघर्ष सामान्य बात थी।

असुरक्षा और कुप्रशासन ने जनता के जीवन को प्रभावित कर रखा था, जबकि समाज कठोर परम्पराओं, वर्गीय भेदभाव और वंश-आधारित असमानता **(Lineage & based discrimination)** में जकड़ा हुआ दिखाई देता था।

सामाजिक स्थिति-

● एक हिन्दू इतिहासकार **V. D. Mahajan** अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **Ancient India** में भारत की सामाजिक स्थिति का वर्णन करते हुए लिखते हैं-

The untouchables lived outside the village or the town.

(V. D. Mahajan, Ancient India, S. Chand & Company, Page 555)

अनुवाद-

"अछूत लोग गाँव या शहर की सीमाओं के बाहर रहते थे"।

राजपूत की सामाजिक व्यवस्था-

प्रोफेसर **V. D. Mahajan** जाति व्यवस्था और राजपूत समाज की सामाजिक संरचना का वर्णन करते हुए लिखते हैं-

The caste system dominated the Rajput society. There were not only the Brahmanas, Kshatriyas, Vaishyas and Sudras but also many new sub-castes. In Rajput society, the Brahmanas occupied the first place and commanded the greatest respect. They claimed to have the monopoly of all knowledge, whether it was spiritual or secular. They acted as counselors and ministers of the Rajput kings. The Brahmanas were known as priests and philosophers. They enjoyed those privileges and facilities which were not enjoyed by others. For example, capital punishment was not awarded to Brahmanas. The Rajput rulers and soldiers came from the Kshatriyas. The work of business and money-lending was done by the Vaishyas. The Sudras followed the profession of agriculture and artisans. They also served all the three higher castes. The untouchables lived outside the village or the town."

(V. D. Mahajan, Ancient India, S. Chand & Company, Page 555)

अनुवाद-

"राजपूत समाज पर जाति व्यवस्था का गहरा प्रभाव था। इसमें केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ही नहीं, बल्कि अनेक नई उपजातियाँ भी मौजूद थीं। राजपूत समाज में ब्राह्मण सबसे ऊँचे स्थान पर थे और उन्हें सबसे अधिक सम्मान प्राप्त था। वे आध्यात्मिक और सांसारिक हर प्रकार के ज्ञान पर अपना एकाधिकार होने का दावा करते थे।

वे राजपूत राजाओं के सलाहकार और मंत्री के रूप में कार्य करते थे। ब्राह्मण पुजारी और दार्शनिक के रूप में प्रसिद्ध थे और उन्हें ऐसी विशेष सुविधाएँ और अधिकार प्राप्त थे जो अन्य लोगों को उपलब्ध नहीं थे।

उदाहरण के लिए ब्राह्मणों को मृत्युदंड नहीं दिया जाता था। राजपूत शासक और सैनिक क्षत्रिय वर्ग से होते थे। व्यापार और ब्याज का कार्य वैश्य करते थे। शूद्र कृषि और हस्तकला से जुड़े होते थे तथा ऊपर के तीनों वर्गों की सेवा भी करते थे, जबकि अछूत लोग गाँव या शहर के बाहर रहते थे"।

जाति व्यवस्था-

जाति व्यवस्था की कठोरता का वर्णन करते हुए आगे लिखते हैं-

"Caste system was not rigid at the beginning of the Rajput period... However, in the later Rajput period, the caste system became very rigid and in doing so the Brahmanas played the most important part. During this period a large number of new castes or sub-castes came into existence."

(V. D. Mahajan, Ancient India, S. Chand & Company, Page 555)

अनुवाद-

"राजपूत काल के आरम्भ में जाति व्यवस्था इतनी कठोर नहीं थी, लेकिन बाद के समय में यह अत्यंत कठोर हो गई और इसे कठोर बनाने में ब्राह्मणों ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी काल में बड़ी संख्या में नई जातियाँ और उपजातियाँ अस्तित्व में आईं"।

● इसी प्रकार वे आगे लिखते हैं-

"They enjoyed those privileges and facilities which were not enjoyed by others. For example, capital punishment was not awarded to Brahmanas. The Rajput rulers and soldiers came from the Kshatriyas. The work of business and money-lending was done by the Vaishyas. The Sudras followed the profession of agriculture and artisans. They also served all the three higher castes. The untouchables lived outside the village or the town."

(V. D. Mahajan, Ancient India, S. Chand & Company, Page 555)

अनुवाद-

"उन्हें ऐसी विशेष सुविधाएँ और अधिकार प्राप्त थे जो अन्य लोगों को

उपलब्ध नहीं थे। उदाहरण के लिए ब्राह्मणों को मृत्युदंड नहीं दिया जाता था। राजपूत शासक और सैनिक क्षत्रिय वर्ग से होते थे। व्यापार और ब्याज का कार्य वैश्य करते थे। शूद्र कृति और हस्तकला से जुड़े होते थे तथा ऊपर के तीनों वर्गों की सेवा भी करते थे, जबकि अछूत लोग गाँव या शहर के बाहर रहते थे"।

बहिष्कृत समाज-

H. G. Wells लिखते हैं-

This fixity of classes is known to Europeans as the institution of caste... It is a complicated horizontal division of the social structure into classes or castes, the members of which may neither eat nor intermarry with persons of a lower caste under penalty of becoming outcasts." (H. G. Wells, The Outline of History: Being a Plain History of Life and Mankind, Vol. 1, New York: Macmillan

(Company, 1920, page 269)

अनुवाद-

"वर्गों की यह कठोरता यूरोपियों के बीच 'जाति' (Caste) संस्था के नाम से जानी जाती है। यह सामाजिक संरचना की एक जटिल व्यवस्था थी, जिसमें विभिन्न वर्गों के लोग न तो निम्न जाति के व्यक्तियों के साथ भोजन कर सकते थे और न ही विवाह कर सकते थे, अन्यथा वे स्वयं समाज से बहिष्कृत माने जाते थे"।

समग्र रूप से यह काल ऐसे सामाजिक ढाँचे की तस्वीर प्रस्तुत करता है जिसमें धर्म, सामाजिक वर्गीकरण और परम्पराओं ने मानवीय सम्बन्धों और जीवन के अधिकांश पहलुओं को निर्धारित कर रखा था। समाज रस्मों, अंधविश्वासों और कठोर सिद्धांतों के जाल में इस प्रकार उलझ गया था कि सुधार और परिवर्तन के रास्ते सीमित दिखाई देते थे।

ऐसा प्रतीत होता था कि कोई ऐसा व्यापक और संतुलित जीवन-तंत्र मौजूद नहीं था जो मानवता को इस जड़ता, अन्याय और वैचारिक अव्यवस्था

से निकालकर न्याय, समानता और नैतिक स्थिरता की ओर मार्गदर्शन दे सके।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व अ़रब की स्थिति

छठी सदी ईस्वीं में अ़रब समाज व्यापक असुरक्षा, वैचारिक अव्यवस्था और धार्मिक पतन का शिकार हो चुका था। यद्यपि अरबों की एक बड़ी संख्या स्वयं को ह़ज़रत इब्राहीम के धर्म से जोड़ती थी और उसी भूमि पर अल्लाह का पहला घर, कअ़बः बनाया गया था, लेकिन लम्बे समय तक नुबूवत से वंचित रहने और अ़रब प्रायद्वीप की वैचारिक एकांतता के कारण वे धीरे-धीरे निम्न स्तर की मूर्तिपूजा **(Idolatry / polytheism)** में पड़ गये थे।

उनकी स्थिति इतनी बिगड़ चुकी थी कि वे तौह़ीद **(Monotheism)** के मूल संदेश को भुलाकर शिर्क **(Polytheistic beliefs)** में बहुत आगे बढ़ गये। अल्लाह के साथ अनेक स्वयं-निर्मित देवताओं **(Self-made deities)** को जोड़ लिया गया, जिनके बारे में यह विश्वास बना लिया गया कि वे ब्रह्मांड के संचालन में अल्लाह के सहभागी हैं, लाभ और हानि पहुँचा सकते हैं, जीवन और मृत्यु के स्वामी हैं और मनुष्य की तक़्दीर पर प्रभाव डालते हैं।

हर क़बीले का देवता-

इस भट्काव का परिणाम यह हुआ कि पूरा अ़रब समाज मूर्तिपूजा **(Idol worship)** में डूब गया। हर क़बीले, हर क्षेत्र बल्कि लगभग हर घर का अलग देवता था। यूँ कहना अधिक उचित होगा कि पूरा समाज ही मूर्तियों के मंदिर में बदल चुका था। स्वयं ख़ाना-ए-कअ़बः जिसे ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने केवल एक अल्लाह की अ़िबादत के लिए बनाया था, उसके अंदर और उसके आँगन में **360** मूर्तियाँ रखी गई थीं।

लोग केवल मूर्तियों ही नहीं बल्कि विभिन्न पत्थरों की भी पूजा करने लगे थे। फरिश्तों, जिन्नों और सितारों को भी देवता का दर्जा दे दिया गया था। उनका विश्वास था कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं और जिन्न उसके निकटवर्ती तथा सहभागी हैं, इसलिए वे उनकी प्रसन्नता प्राप्त करना आवश्यक समझते और उनके सामने चढ़ावे चढ़ाते थे।

नैतिक पतन-

पूरा समाज अज्ञान, नैतिक पतन, भूख, असुरक्षा और गृहयुद्धों में घिरा हुआ था। शराब पीना आ़म बात थी, व्यभिचार को बुरा नहीं समझा जाता था और कुछ कठोर हृदय लोग अपनी बेटियों को जीवित ज़मीन में दफ़ना देते थे। महिलाओं को समाज में कोई सम्मान या उच्च स्थान प्राप्त नहीं था।

मदीना के कुछ अ़रब और यहूदी सूद के व्यापार में अत्याचार और कठोरता की सभी सीमाएँ पार कर चुके थे। बेहयाई की स्थिति यहाँ तक पहुँच गई थी कि कुछ पुरुष और महिलाएँ निर्वस्त्र होकर ख़ाना-ए-कअ़बः का तवाफ़ करते और इसे धार्मिक कर्म (Religious ritual) समझते थे। ऐसे अंधकारमय वातावरण में मानवता एक व्यापक नैतिक और आध्यात्मिक क्रांति की प्रतीक्षा कर रही थी।

● **Edward Gibbon लिखते हैं-**

The religion of the Arabs, as well as of the Indians, consisted in the worship of the sun, the moon, and the fixed stars; a primitive and popular superstition."

(Edward Gibbon: The History of the Decline and Fall of the Roman Empire, Chapter 50 , (The Arabs and the Religion of Arabia)

अनुवाद-

"अ़रबों का धर्म ठीक उसी प्रकार जैसे भारतीयों का सूर्य, चंद्रमा और सितारों की पूजा पर आधारित था। यह एक प्राचीन और जनसामान्य में प्रचलित अंधविश्वासी उपासना-पद्धति थी"।

● **William Muir लिखते हैं-**

Idolatry was the prevailing religion of Arabia. The Kaaba was surrounded by idols, representing various gods, goddesses, and tribal deities worshipped by the Arabs."

(Sir William Muir, Life of Mahomet, Vol. I, Introduction (Religion of the Arabs), London, 1858)

अनुवाद-

"मूर्तिपूजा अ़रब में प्रमुख धर्म थी। क़अ़बा के चारों ओर विभिन्न मूर्तियाँ रखी गई थीं, जो अ़रबों के देवताओं, देवियों और कबीलों के स्थानीय ईश्वरों का प्रतिनिधित्व करती थीं"।

● **W. Montgomery Watt** के अनुसार-

"Pre-Islamic Arabia was a tribal society in which loyalty to the tribe was paramount, often leading to feuds, vendettas, and the absence of an effective moral or political authority."

(W. Montgomery Watt: Muhammad at Mecca, Oxford University Press1953, Chapter: Pre-Islamic Meccan Society)

अनुवाद-

"इस्लाम से पहले अ़रब एक क़बायली समाज था, जहाँ क़बीले के प्रति निष्ठा सबसे बड़ी मूल्य मानी जाती थी। इसके परिणामस्वरूप खूनी दुश्मनियाँ, प्रतिशोध की कार्रवाइयाँ और किसी प्रभावी नैतिक या राजनीतिक सत्ता का अभाव सामान्य बात थी"।

● **George A-Barton** लिखते हैं-

"Among many Arab tribes the birth of a daughter was considered a calamity, and some fathers buried their infant daughters alive to escape the shame."

(Barton, George Aaron. Archaeology and the Bible. Philadelphia: American Sunday School Union, 1916)

अनुवाद-

"कई अ़रब क़बीलों में बेटी के जन्म को विपत्ति समझा जाता था और कुछ पिता शर्मिंदगी से बचने के लिए अपनी नवजात बेटियों को जीवित दफ़ना देते थे"।

● **Encyclopaedia Britannica** के अनुसार-

"Most Arabs were polytheists who worshipped tribal gods and

idols, and social life was marked by tribal rivalry and inequality. In some cases practices such as female infanticide occurred, reflecting the harsh social and economic conditions of Arabian society."

(Encyclopaedia Britannica, Article: "History of Arabia" (Pre-Islamic social conditions)

अनुवाद-

"अधिकांश अ़रब बहुदेववादी (मुश्रिक) थे, जो क़बीलों के देवताओं और मूर्तियों की पूजा करते थे। उनकी सामाजिक जीवन-व्यवस्था क़बायली प्रतिस्पर्धा और असमानता से प्रभावित थी। कुछ अवसरों पर लड़कियों को जीवित दफ़न करने जैसी प्रथाएँ भी पाई जाती थीं, जो अ़रब समाज की कठोर सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को दर्शाती थीं"।

अ़रब समाज-

उस समय की दुनिया की स्थिति का चित्रण करते हुए अबुल ह़सन अ़ली नदवी अपनी पुस्तक इन्सानी दुनिया पर मुसलमानों के उ़रूज व ज़वाल का अ़सर के पृष्ठ 99 पर लिखते हैं-

"मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पैग़म्बरी का दायित्व सम्भालने से पहले दुनिया की ह़ालत ऐसी इमारत की तरह थी जिसकी नींव को किसी भयंकर भूकंप ने हिला दिया हो। हर चीज अपनी वास्तविकता और व्यवस्था खो चुकी थी, जो टूटने से बच गया था उसकी शक्ल बदल चुकी थी। कहीं की चीज़ कहीं पड़ी थी, कहीं सामान के ढेर लगे थे और कहीं सब कुछ उजड़ चुका था। अ़रब समाज पेड़ों, पानी और पत्थरों की पूजा करने लगा था"।

जाहिलियत का दौर-

ऐसे घोर अज्ञान (जाहिलियत) के दौर में जब पूरी दुनिया में मानवता अत्याचार, अन्याय और शोषण से कराह रही थी और उसकी पुकार सुनने वाला कोई न था, यूनान का दर्शनशास्त्र निष्प्रभावी हो चुका था, मानी और कन्फ़्यूशियस की शिक्षाएँ कमज़ोर पड़ चुकी थीं।

वेदांत, बौद्ध धर्म की शिक्षाओं और मनुशास्त्र का कठोर रूप से दुरुपयोग हो रहा था। जरतुश्त का धर्म और सोलोन का कानून भी असहाय दिखाई देते थे। अ़रब के लोग उस समय अशिक्षित, असभ्य, कठोर स्वभाव वाले, ज़िद्दी, झगड़ालू और अंधविश्वासों में जकड़े हुए थे। शिक्षा की स्थिति इतनी कमज़ोर थी कि जब रसूलुल्लाह (सल्लल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने नुबूवत का ए़लान किया, उस समय केवल सत्रह व्यक्ति पढ़े-लिखे थे। इससे अनुमान होता है कि ज्ञान लगभग समाप्त हो चुका था।

सामाजिक दशा-

शराब पीना, जुआ़ और व्यभिचार सामान्य थे। मालिक अपनी दासी महिलाओं से व्यभिचार करवाकर धन कमाते थे। कुछ लोग अपनी बहनों तक से विवाह कर लेते थे, पिता की मृत्यु के बाद बेटा उसकी पत्नी पर भी अधिकार जताता था।

तलाक़ का चलन बहुत अधिक था, पति जब चाहता पत्नी को छोड़ देता, कोई स्पष्ट कानून या सिद्धांत मौजूद नहीं था। बहुविवाह की भी कोई निश्चित सीमा नहीं थी।

लोग वंश और परिवार पर गर्व करते तथा पारिवारिक धन पर अहंकार करते थे, इसी कारण गुलामी का प्रचलन आ़म था। कभी-कभी एक स्त्री से कई पुरुष सम्बन्ध रखते और बच्चे के जन्म के बाद वही स्त्री स्वयं निर्णय करती कि बच्चा किसका है।

समाजी रस्में-

ऐसे अशांत और अंधकारमय ह़ालात में अ़रबों के पास न कोई व्यापक जीवन-व्यवस्था थी और न कोई दूरदर्शी मार्गदर्शक जो उनकी बिगड़ी हुई सामाजिक व्यवस्था को संभालता, उनके धार्मिक विश्वासों का सुधार करता और अत्याचार तथा दमन की जंज़ीरों को तोड़ता।

अल्लाह तआ़ला ने अपनी रह़मत से इन्हीं भटके हुए लोगों में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेजा और ह़ज़रत जिब्रईल के माध्यम से वह्य नाज़िल कर

सत्य और असत्य के बीच स्पष्ट अन्तर दिखाया। आपकी जीवनी को जीवंत आदर्श बना दिया गया, जिसने लोगों के दिलों और चरित्र को बदल दिया। वही लोग जो अत्याचार, अज्ञान और पशुवत इच्छाओं में डूबे हुए थे। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षा की रौशनी में नैतिकता, न्याय और ज़िम्मेदारी वाले सच्चे इन्सान बन गये।

यही 'अह़मद' और 'मुह़म्मद' (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेजने का उद्देश्य था। यही "रह़मतुल्लिल् आ़लमीन" के आने का लक्ष्य था। यह दीन उस मुबारक हस्ती के माध्यम से पहुँचाया गया जिसे मुनीर (प्रकाशमान) नज़ीर (चेतावनी देने वाला) हादी (मार्गदर्शक) मुस्तफ़ा (चुने हुए) अ़ज़ीज़ (प्रिय) इमाम (नेता) मुद्दस्सिर, मुज़म्मिल, मुज़क्किर (उपदेश देने वाला) और खैरु ख़ल्किल्लाह जैसे सम्मानित उपाधियाँ प्रदान की गईं।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अ़रब प्रायद्वीप में ही क्यों?

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी का अ़रब में होना केवल एक संयोग नहीं था, बल्कि इसके पीछे ऐतिहासिक, भौगोलिक, मनोवैज्ञानिक और धार्मिक दृष्टि से कई महत्वपूर्ण कारण दिखाई देते हैं। ऐतिह़ासिक दृष्टि से अ़रब उस समय की दो बड़ी शक्तियों रोम और फारस के बीच स्थित था, लेकिन स्वयं किसी विश्व शक्ति के अधीन नहीं था।

इस राजनीतिक स्वतंत्रता ने इस क्षेत्र को ऐसा वातावरण प्रदान किया जहाँ एक नई वैचारिक और धार्मिक क्रांति बिना किसी शाही दबाव के जन्म ले सकती थी।

इसके अतिरिक्त अ़रब व्यापारिक मार्गों का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। मक्का शाम (सीरिया) यमन और इराक़ को जोड़ने वाले व्यापारिक मार्ग पर स्थित था। इसलिए यहाँ से उठने वाली आवाज़ अपेक्षाकृत तेज़ी से विभिन्न क्षेत्रों तक पहुँच सकती थी।

भौगोलिक स्थिति-

भौगोलिक दृष्टि से भी अ़रब का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण था। अ़रब

प्रायद्वीप एशिया, अफ्रीका और यूरोप—इन तीनों महाद्वीपों के संगम के निकट स्थित था। मानो यह प्राचीन दुनिया का एक प्राकृतिक 'पुल' (bridge) था। यदि यह संदेश किसी बहुत दूर या बंद क्षेत्र में प्रकट होता, तो उसका विश्वव्यापी प्रसार कठिन हो सकता था, लेकिन अ़रब का स्थान इस संदेश को वैश्विक बनाने के लिए उपयुक्त था।

इसी प्रकार अ़रब समाज अपनी सादगीपूर्ण जीवन शैली, मज़बूत स्मरण शक्ति और अत्यंत प्रभावशाली भाषा अ़रबी—के कारण संदेश को सुरक्षित रखने की असाधारण क्षमता रखता था।

यही कारण है कि क़ुर्आन अपनी मूल भाषा में सुरक्षित रहा। धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो अ़रब किसी ह़द तक अबराहम (Abraham) की तौह़ीदी परम्परा से परिचित थे, क्योंकि कअ़बः उसी परम्परा की यादगार था, लेकिन समय के साथ उसमें शिर्क और मूर्तिपूजा शामिल हो गई थी अर्थात वहाँ पूर्ण अधर्म नहीं था, बल्कि विकृत रूप में तौह़ीद (एकेश्वरवाद) मौजूद था, जिसके सुधार की सम्भावना अपेक्षाकृत अधिक थी। इस प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी ऐसे स्थान पर हुई, जहाँ सुधार की बुनियाद भी मौजूद थी और परिवर्तन की आवश्यकता भी अत्यन्त गहरी थी।

इब्राहीमी परम्परा के अवशेष-

अ़रब इसलिए पैग़म्बरी के लिए उपयुक्त ठहरा क्योंकि वहाँ राजनीतिक स्वतंत्रता, भौगोलिक केंद्रीयता, वैचारिक और नैतिक आवश्यकता तथा इब्राहीमी परम्परा के अवशेष—यह सभी तत्व एक साथ मौजूद थे। इस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) केवल एक समुदाय के सुधार तक सीमित नहीं रहा, बल्कि बहुत शीघ्र ही वह एक वैश्विक संदेश के रूप में सामने आया।

मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टि से अ़रब एक ऐसे दौर से गुज़र रहे थे जिसे सामान्यतः 'जाहिलियत' कहा जाता है—जहाँ क़बायली पक्षपात, लगातार युद्ध, नैतिक असंतुलन और धार्मिक अव्यवस्था सामान्य थी। जब कोई समाज वैचारिक शून्यता (Intellectual Vacuum) और नैतिक संकट का

शिकार हो जाता है, तो वह बड़े परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक तैयार होता है।

अ़रबों में बहादुरी, वफ़ादारी और वचन निभाने जैसी सकारात्मक विशेषताएँ भी मौजूद थीं, जिन्हें इस्लाम ने संगठित करके एक नई सभ्यता की नींव बना दिया।

अ़रबों का प्राकृतिक स्वभाव-

अल्लाह तआ़ला ने अ़रबों का चयन इसलिए किया और उन्हें पूरी दुनिया तक इस संदेश को पहुँचाने की ज़िम्मेदारी दी, क्योंकि उनके दिलों की पट्टी बिल्कुल साफ़ थी, उस पर पहले से ऐसे गहरे प्रभाव अंकित नहीं थे जिन्हें मिटाना कठिन होता। इसके विपरीत रोमन, फ़ारसी और भारतीय समाज अपनी सभ्यता, कला, विकास और दर्शन पर अत्यधिक गर्व करते थे, जिसके कारण उनके भीतर ऐसी मानसिक और मनोवैज्ञानिक जटिलताएँ पैदा हो चुकी थीं, जिन्हें दूर करना आसान नहीं था।

अ़रबों के विचार-

अ़रबों के विचार सरल थे और उन पर केवल वही हल्के प्रभाव थे जो अज्ञानता, अशिक्षा और बदवी (घुमंतू) जीवन ने छोड़े थे, इसलिए उन्हें मिटाकर नई शिक्षा अंकित करना अपेक्षाकृत आसान था। आधुनिक बौद्धिक भाषा में कहा जाये तो वे 'सरल अज्ञानता' **(Simple ignorance)** का शिकार थे, जिसका उपचार संभव होता है, जबकि दूसरी विकसित जातियाँ 'जटिल अज्ञानता' **(Complex ignorance)** में फँसी हुई थीं, जिसे समाप्त करना अत्यंत कठिन था।

अ़रब अपने स्वाभाविक स्वभाव पर कायम, दृढ़ संकल्प और मज़बूत इरादों वाले लोग थे। यदि कोई सत्य बात उनकी समझ में न आती तो वे उसके विरोध में तल्वार उठा लेते, लेकिन जब वही बात उनके दिल में उतर जाती तो उसे अपनी जान से भी अधिक प्रिय मानते, उसे दिल से लगा लेते और उसके लिए अपने प्राण तक बलिदान करने में पीछे न हटते। उनकी इसी

मानसिकता की झलक सुहेल बिन अम्र के उन शब्दों में दिखाई देती है जो सुलह-ए-हुदैबिया के अवसर पर कहे गये।

जब समझौते की शुरुआ़त में यह लिखा गया "यह वह समझौता है जो मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने किया" तो उन्होंने कहा-

"अल्लाह की क़सम! यदि हम यह जानते और मानते कि आप वास्तव में अल्लाह के रसूल हैं, तो न हम आपको अल्लाह के घर से रोकते और न आपसे युद्ध करते"।

संकल्प में दृढ़ता-

इसी प्रकार यही भावना इकरिम बिन अबू जेहल के शब्दों में भी स्पष्ट दिखाई देती है। युद्ध-ए-यर्मूक के दौरान जब रोमी सेना ने तीव्र आक्रमण किया, तो उन्होंने पुकार कर कहा, "मैं हर जगह रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के मुक़ाबिले में डटा रहा, क्या आज तुमसे भाग जाऊँगा"?

फिर उन्होंने पुकारा, "कौन है जो मृत्यु पर मुझसे बैअत करेगा"? तब कुछ लोग आगे आये, उन्होंने बैअ़त की और लड़ते हुए शहीद हो गये।

(Ibn Kathir, Al-Bidayah wa al-Nihayah, vol- 7, pp- 6–8, chapter: Waq'at al-Yarmuk)

बैअ़त उ़क़्बा-ए-सानिया-

बैअत उ़क़बा-ए-सानिया (दूसरी बैअ़त-ए-कअ़बः) के अवसर पर एक घटना हुई, जो अ़रबों की वास्तविकता-पसन्दी, गम्भीरता, स्पष्टवादिता और वचन-पालन का अत्यंत उज्ज्वल उदाहरण है। इब्ने इस्ह़ाक़ बयान करते हैं कि जब क़बीला औ़स और ख़ज़्रज के प्रतिनिधि उ़क़्बा के स्थान पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से बैअ़त करने के लिए एकत्र हुए तो अ़ब्बास बिन उ़बादह ने अपनी क़ौम को सावधान करते हुए कहा-

"ऐ ख़ज़्रज के लोगो! क्या तुम जानते हो कि तुम किस व्यक्ति से बैअ़त कर रहे हो? तुम उनसे इस बात पर बैअ़त कर रहे हो कि तुम लाल और काले (अर्थात सभी लोगों) से युद्ध करोगे।

यदि तुम यह सोचते हो कि जब तुम्हारा धन नष्ट हो जाएगा और तुम्हारे सम्मानित सरदार मारे जाएँगे तब तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को छोड़ दोगे, तो अभी इसी समय पीछे हट जाओ, क्योंकि ऐसा करना दुनिया और आख़िरत दोनों में अपमान का कारण होगा, लेकिन यदि तुम हर परिस्थिति में इस वचन को निभाने के लिए तैयार हो—चाहे तुम्हारा धन नष्ट हो जाए और तुम्हारे सरदार मारे जाएँ तो फिर आगे बढ़ो और बैअ़त करो, क्योंकि अल्लाह की क़सम! यही दुनिया और आख़िरत की सफ़लता है"।

अंसार का उत्तर-

इस पर अंसार ने एक स्वर में उत्तर दिया, "हम अपने धन के नुक़्सान और अपने सरदारों के मारे जाने के बावजूद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बैअ़त करते हैं" तब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया-

"तो इसके बदले तुम्हारे लिए जन्नत है"। इसके बाद सभी लोगों ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मुबारक हाथ पर बैअ़त की।

(इब्ने हिशाम अस्सीरतुन्नबवीया भाग-2 बैअ़तुल् उ़क़्बा पेज नं० 41-43)

यह घटना इस सत्य को स्पष्ट करती है कि अ़रब केवल भावुक लोग नहीं थे, बल्कि वे वचन की ज़िम्मेदारियों को पूरी गम्भीरता से समझने और निभाने वाले लोग थे। यही नैतिक और मानसिक दृढ़ता इस बात का एक बड़ा कारण बनी कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी अ़रब में हुई और यही क़ौम आगे चलकर एक विश्वव्यापी सभ्यता की आधारशिला बनी।

इसी प्रकार ग़ज़्वा-ए-बद्र के अवसर पर सअ़द इब्ने मुआ़ज़ ने इन भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा-

"उस सत्ता की क़सम! जिसने आपको सत्य के साथ भेजा है! यदि आप हमें लेकर इस समुद्र में उतर जाएँ तो हम भी आपके साथ उसमें कूद पड़ेंगे, हममें से एक व्यक्ति भी पीछे नहीं रहेगा"।

(इब्ने हिशाम अस्सीरतुन्नबवीया भाग-2 पेज नं० 272)

उक़्बा बिन नाफ़ेअ़ का कथन-

इसी दृढ़ निश्चय की झलक इस्लामी सेना के प्रसिद्ध सेनापति उ़क़्बा बिन नाफ़ेअ़ के उस कथन में भी दिखाई देती है। जब उनकी विजयों के मार्ग में अटलांटिक महासागर (Atlantic Ocean) आ गया। उन्होंने समुद्र की ओर मुख करके कहा-

"ऐ अल्लाह! यदि यह समुद्र मेरे रास्ते में बाधा न बनता, तो मैं तेरे मार्ग में आगे बढ़ता ही रहता, यहाँ तक कि तेरे सिवा किसी की अ़िबादत न की जाती"। (इब्ने हिशाम अस्सरीतुन्नबवीया भाग-2 पेज नं० 272)

इस प्रकार अल्लाह रब्बुल् आ़लमीन ने पूरी मानवता के मार्गदर्शन के लिए अ़रब की भूमि का चयन किया और अ़रबों की स्वाभाविक सादगी, दृढ़ चरित्र और साफ़ दिल स्वभाव को देखते हुए उन्हीं में से नबी मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को भेजा, ताकि आपका वैश्विक संदेश समस्त मानवता तक पहुँच सके।



खण्ड-ख

भाग-2

अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का संक्षिप्त परिचय

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का संक्षिप्त परिचय

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का वंश (नसब)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मुबारक वंश ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचता है, जो एकेश्वरवाद (अद्वैतवाद) के महान प्रचारक और उच्च दर्जे के पैग़म्बर थे। ऐतिह़ासिक रिवायतों के अनुसार जब ह़ज़रत इब्राहीम अल्लाह के हुक्म से अपनी पत्नी ह़ज़रत हाजूरा (अ़लै०) और दूध पीते बेटे ह़ज़रत इस्माईल को मक्का की सूखी और निर्जन घाटी में छोड़कर गये, उस समय वहाँ कोई स्थायी आबादी नहीं थी।

कुछ समय बाद क़बीला-ए-जुर्हुम उस क्षेत्र में आकर आबाद हुआ और ह़ज़रत ह़ाजूरा (अ़लै०) की अनुमति से वहीं रहने लगा।

जब ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) जवान हुए तो ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने उसी क़बीला-ए-जुर्हुम में उनका निकाह़ कराया। ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) की संतान को "अ़रब-ए-मुस्तअ़रिबा" (अर्थात् अ़रब बनने वाले) कहा जाता है, क्योंकि वे मूल रूप से ग़ैर-अ़रब थे, लेकिन अ़रबों के बीच रहकर उन्होंने अ़रबी भाषा और वहाँ की संस्कृति को अपना लिया।

ह़ज़रत इब्राहीम के दूसरे पुत्र-

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के दूसरे पुत्र ह़ज़रत इस्ह़ाक (अ़लै०) थे, जिनकी नस्ल से बनी इस्राईल के अनेक नबी आए, जबकि ह़ज़रत इस्माईल की नस्ल को वह महान सम्मान प्राप्त हुआ कि उसी में ख़ातिमुन्नबिय्यीन ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जन्म हुआ।

विशेष रूप से इब्ने इस्ह़ाक़, इब्ने हिशाम और तबरी— इस बात पर सहमत हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का वंश ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) से होता हुआ क़बीला-ए-क़ुरैश तक पहुँचता है। सामान्य रूप से वंशावली इस प्रकार है-

"मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन क़ुसई बिन किलाब बिन मुर्रह बिन कअ़ब बिन लुअ़ई बिन ग़ालिब बिन फ़हर (क़ुरैश) बिन मालिक बिन नज़र बिन कनान बिन ख़ुज़ैमा बिन मुद्रिक बिन इलियास बिन मुदर बिन नज़र बिन मअ़द बिन अद्नान"।

अट्ठावन पीढ़ियों का अन्तराल-

ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) की संतान मक्का की पवित्र धरती में पली-बढ़ी और समय के साथ यही नस्ल अ़रब समाज का सम्मानित भाग बन गई। इसी मुबारक और पाक वंश में कई पीढ़ियों के गुज़रने के बाद लगभग अट्ठावन (58) पीढ़ियों के अंतराल पर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अन्तिम रसूल बनाकर भेजा।

इस प्रकार आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नसब के एतिबार से इस्माईली थे और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की उस दुआ़ का नतीजा थे, जिसमें उन्होंने अपनी संतान में एक महान रसूल को भेजे जाने की प्रार्थना की थी।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जन्म और प्रारम्भिक जीवन-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जन्म "आमुल् फ़ील" (हाथी वाले वर्ष) में हआ, जिसे सामान्य रूप से 20 अप्रैल 571 ईस्वीं के आसपास माना जाता है। अधिकांश इतिह़ासकारों के अनुसार आपकी जन्मतिथि 9 रबीअ़उलव्वल और दिन सोमवार था। (अल्-बिदाया वन्निहायह, इब्ने कसीर, भाग-2, पृष्ठ 260–262)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पिता ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह का देहान्त आपकी पैदाइश से पहले ही हो चुका थे और छह वर्ष की आयु में आपकी माता ह़ज़रत आमिना का भी देहांत हो गया, जिसके बाद आपके दादा 'ह़ज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब' ने आपकी परवरिश या पालन पोषण किया। (सीरतुन्नबविय्यह, इब्ने हिशाम भाग-1, पृष्ठ 168–171)

दादा का देहान्त-

इसी तरह़ आठ वर्ष की आयु में आप के दादा के देहान्त के बाद आपके चाचा अबू तालिब ने आपकी ज़िम्मेदारी सम्भाली और जीवन भर अत्यंत प्रेम और समर्पण के साथ आपका समर्थन किया, किन्तु अल्लाह तआ़ला को यह दिखाना था कि जिसका संरक्षक स्वयं अल्लाह हो जाये, यदि दुनिया के सभी सहारे भी छिन जाएँ तो भी उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

सबसे पहले आपने अपनी माता का दूध पिया, फिर ह़ज़रत सुवैबा ने कुछ समय तक दूध पिलाया। उसके बाद क़बीला-ए-सअ़द की महिला ह़ज़रत ह़लीमा सअ़दिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ।

(अत्-तब्क़ातुल कुब्रा, इब्ने सअ़द, भाग-1, पृष्ठ 108-113)

चाचा का देहान्त-

इसी तरह़ बारह वर्ष की आयु में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने चाचा अबू तालिब के साथ व्यापार के सिल्सिले में शाम (सीरिया) गये। रास्ते में बुहैरा नामक ईसाई पादरी ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में नुबूवत की निशानियाँ देखकर 'अबू तालिब' को सलाह दी कि इस बच्चे को वापस ले जाएँ क्योंकि उनकी धार्मिक पुस्तकों में अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणी इन्हीं चिन्हों के साथ वर्णित थी, जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में स्पष्ट दिखाई दे रही थीं।

उसने तुरन्त 'अबू तालिब' से कहा कि यह बालक भविष्य में नबी (ईशदूत) होगा, इसलिए इसे वापस ले जाइये, क्योंकि यदि यहूदियों ने इसे देख लिया तो वे पहचानकर अपने स्वार्थ के लिए इसे नुक़्सान पहुँचाने का प्रयास कर सकते हैं। अतः आपके चाचा आपको तुरन्त मक्का वापस ले आए।

(सीरतुन्नबविया, इब्ने हिशाम, भाग-1, पृष्ठ 191-192)

नुबूवत मिलने से पहले ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपनी सच्चाई, ईमानदारी और पवित्र चरित्र के कारण मक्का वालों में "अल्-अमीन" (विश्वसनीय और अमानतदार) की उपाधि से प्रसिद्ध थे।

(अल्-बिदाया वन्निहाया, इब्ने कसीर, भाग-2, पृष्ठ 295)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का विवाह–

फिर जब आपकी आयु पच्चीस वर्ष की हुई तो आपका निकाह़ ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हासे हुआ, जो एक सम्मानित और सम्पन्न व्यवसायी महिला थीं। इससे पहले उनका विवाह हो चुका था, किन्तु उनके पति का देहांत हो गया था। इसके बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हासे विवाह किया। उस समय ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आयु 25 वर्ष और ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हाकी आयु 40 वर्ष थी।

(अत्-तब्कातुल् कुब्रा, इब्ने सअ़द भाग-1, पृष्ठ 131–132)

जब आपकी आयु चालीस वर्ष हुई तो एक हिरा नामक गुफ़ा में अल्लाह तआ़ला ने आपको नुबूवत से सम्मानित किया और पहली वह़्य (ईश्वरीय सन्देश) नाज़िल हुई। (अस-सीरतुन्नबविय्यह, इब्ने हिशाम भाग-1, पृष्ठ 236)

नुबूवत (रिसालत का पद)–

एक दिन वह महान क्षण आ पहुँचा जिसके लिए अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेजा था। उस समय आपकी आयु चालीस वर्ष हो चुकी थी और मक्का के समाज में फैली धार्मिक भटकाव, नैतिक पतन और सामाजिक अन्याय को देखकर आप अत्यंत दुःखी रहते थे।

मूर्तिपूजा, वर्गीय अत्याचार और आध्यात्मिक शून्यता ने आपके संवेदनशील हृदय को बेचैन कर रखा था और आप सत्य की खोज में गहरे चिंतन किया करते थे।

एक ओर आप लोगों को मूर्तियों की पूजा करते देखते और दूसरी ओर धरती, आकाश, मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष, पर्वत, सूर्य और चंद्रमा को देखकर आपकी आत्मा यह गवाही देती कि अ़िबादत और बन्दग़ी का वास्तविक अधिकारी केवल वही सत्ता हो सकती है जिसने इन सबको पैदा किया है, लेकिन आपके सामने यह बात स्पष्ट नहीं थी कि उसकी उपासना का सह़ी तरीक़ा क्या है।

एकान्त साधना–

इतिह़ासकारों ने लिखा है कि अल्लाह तआ़ला ने आपके दिल में एकांत

और अ़िबादत की विशेष मुह़ब्बत डाल दी थी, इसलिए आप मक्का के निकट स्थित एक हिरा नामक गुफ़ा में जाकर कई-कई रातें अ़िबादत और चिंतन में बिताते, फिर घर लौटकर यात्रा का सामान लेते और पुनः वहीं चले जाते।

मक्का के पहाड़ों में स्थित ग़ारे हिरा आपकी एकांत साधना का केन्द्र बन गई थी। आप अपने साथ थोड़ा सत्तू और पानी ले जाते और कई दिनों तक वहीं ठहरते। जब राशन समाप्त हो जाता तो घर लौटते और फिर उसी एकांत स्थान का रुख करते। वहाँ आप सृष्टिकर्ता की याद में मग्न रहते और सत्य की खोज में गहन विचार करते।

रिसालत के पद की शुभ सूचना-

फिर रमज़ान की पवित्र रातों में एक दिन वह महान क्षण आ पहुँचा, जब ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) अल्लाह का संदेश लेकर उतरे। वही फ़रिश्ता इससे पहले भी नबियों तक अल्लाह का संदेश पहुँचाता रहा था। उन्होंने अल्लाह की ओर से आपको रिसालत के पद की शुभ सूचना दी और उसी समय से क़ुर्आन मजीद का अवतरण प्रारम्भ हो गया।

इस प्रकार मानव इतिह़ास में हिदायत और रह़मत का एक नया अध्याय प्रकाशित हो गया अर्थात् रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को **610** ईस्वीं में, रमज़ान के महीने में, चालीस वर्ष की आयु में नुबूवत प्रदान की गई।

(इब्ने कसीर, अल्-बिदाया वन्निहाया, भाग-3, पृष्ठ 3-5)

ह़ज़रत ख़दीजा की सांत्वाना-

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ग़ारे हिरा (हिरा गुफ़ा) से वापस लौटे तो आप पर घबराहट की अवस्था छाई हुई थी। घर पहुँचकर आपने अपनी सम्मानित पत्नी ह़ज़रत ख़दीजारज़ियल्लाहु अ़न्हा को पूरा घटना-वृत्तांत सुनाया।

उन्होंने आपको सांत्वना दी और कहा कि अल्लाह तआ़ला आपको कभी अपमानित नहीं करेगा, क्योंकि आप रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, कमज़ोरों का भार उठाते हैं और मेहमान नवाज़ी करते हैं।

वरक़ा बिन नौफ़ल से मुलाक़ात-

फिर वे आपको वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले गईं, जो अहले किताब के विद्वान और तौरात व इंजील के जानकार थे। घटना सुनकर वरक़ा ने कहा, "यह वही नामूस फ़रिश्ता (अर्थात् जिब्रईल) हैं जो मूसा (अ़लै०) पर उतरता था। एक समय आएगा जब आपकी क़ौम आपको झुठलाएगी, आपको आपके नगर से निकाल देगी और आपसे युद्ध करेगी"।

यह सुनकर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को अत्यंत आश्चर्य हुआ, तब वरक़ा बिन नौफ़ल ने कहा-

"यदि मैं उस समय तक जीवित रहा तो अवश्य आपका पूरा साथ दूँगा"।

(इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्या, जिल्द-1, पृष्ठ 239-242)

'इस्लाम' की शिक्षा-

'इस्लाम' अ़रबी शब्द 'अस्लमा' से निकला है, जिसका अर्थ है— आज्ञापालन करना, सिर झुका देना और स्वयं को अल्लाह के सुपुर्द कर देना। क़ुर्आन मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है, "निस्संदेह अल्लाह के निकट धर्म केवल इस्लाम ही है"। (सूरः आले इमरान, आयत नं० 19)

यही वह दीन था जिसकी शिक्षा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से पहले आने वाले सभी नबी देते रहे। चाहे विभिन्न भाषाओं में उसके लिए अलग-अलग शब्द प्रयुक्त किये गये हों, लेकिन वास्तविकता में वह इस्लाम ही था।

जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है-

"और हमने आपसे पहले जो भी रसूल भेजा, उसकी ओर यही वह्य की कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, अतः केवल मेरी ही अ़िबादत करो"।

(सूरः अल्-अम्बिया आयत नं० 25)

नवीनीकरण-

अतः इस्लाम कोई नया धर्म नहीं था, बल्कि उसी मूल दीन जो ह़ज़रत आदम (अ़लै०) से प्रारम्भ हुआ था, उसी का पुनर्जीवन और नवीनीकरण था।

समय बीतने के साथ लोग अपने धर्म की वास्तविक शिक्षाओं से हटकर विभिन्न रस्मों और बाहरी आडम्बरों में फँस गये थे। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को अन्तिम सन्देष्टा बनाकर और क़ुर्आन को अन्तिम ग्रन्थ के रूप में नाज़िल करके संसार में भेजा।

इस्लाम की सबसे पहली बुनियाद यह है कि मनुष्य अपने पैदा करने वाले रब को याद करे और उसकी प्रशंसा व स्तुति करे, जिसने उसे अस्तित्व प्रदान किया तथा उस पैग़म्बर का आभारी बने जिसके माध्यम से उसे मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इसी सत्य को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने इन शब्दों में बयान किया-

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللهِ लाइलाहा इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह

अर्थात् "अल्लाह के सिवा कोई अ़िबादत (उपास्य) के योग्य नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) हैं"।

प्रारम्भ में इस्लाम स्वीकार करने वाले-

प्रारम्भ में इस्लाम स्वीकार करने वालों में सबसे प्रमुख नाम ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की सम्मानित पत्नी 'ह़ज़रत ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद रज़ियल्लाहु अ़न्हा' का है। उन्होंने नुबूवत के तुरन्त बाद आपकी सत्यता की पुष्टि की और बिना किसी संकोच के ईमान ले आईं।

उनके बाद आपके मुक्त किये हुए दास 'ह़ज़रत जैद बिन ह़ारिसा' (रज़ि०) आपके चाचा के पुत्र 'ह़ज़रत अ़ली बिन अबी तालिब' (रज़ि०) जो उस समय कम आयु के थे और आपके अत्यंत निकट मित्र 'ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़' (रज़ि०) इस्लाम ग्रहण करने वालों में शामिल हुए।

ह़ज़रत अबू बक्र की दअ़वत-

फिर ह़ज़रत अबू बक्र की दअ़वत और प्रचार के माध्यम से कई महान सह़ाबी ईमान लाए, जिनमें विशेष रूप से ह़ज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान, ह़ज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम, ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) और ह़ज़रत तल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह (रज़ि०) विशेष रूप से

उल्लेखनीय हैं। (इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-1, पृष्ठ 262–266)

तीन वर्षों तक गुप्त प्रचार-

नुबूवत मिलने के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने लगभग तीन वर्षों तक गुप्त रूप से दअ़वत-ए-इस्लाम का कार्य जारी रखा। इस अवधि में आप सीमित दायरे में लोगों को ईमान की ओर बुलाते रहे, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला की ओर से खुलकर प्रचार करने का आदेश नाज़िल हुआ।

وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾

अर्थात्—"और अपने निकट सम्बन्धियों को सचेत कीजिए"।

(Quran, सूरः अश-शुअ़राः 214)

एलानिया प्रचार-

इस आदेश के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मक्का में सफ़ा नामक पहाड़ी पर तशरीफ़ ले गये और अ़रबों की परम्परा के अनुसार ख़त्रे की सूचना देने के लिए ऊँची आवाज़ में "या सबाहाह"! का नारा लगाया। यह आवाज़ सुनते ही क़ुरैश के विभिन्न क़बीले एकत्र हो गये, तब आपने फ़रमाया, "यदि मैं तुम्हें यह समाचार दूँ कि इस पहाड़ के पीछे एक सेना तुम पर आक्रमण करने वाली है, तो क्या तुम मुझे सच्चा मानोगे"?

सबने उत्तर दिया, "हमने आपको कभी झूठा नहीं पाया" तब आपने उन्हें अल्लाह के अ़ज़ाब से डराया और तौह़ीद (एकेश्वरवाद) की ओर बुलाया। इस पर आपके चाचा 'अबू लहब' ने कठोर शब्दों में विरोध किया।

(इब्ने कसीर, भाग-6, पृष्ठ 152, सह़ीह़ बुख़ारी ह़दीस नं० 4971)

इस खुले प्रचार के बाद क़ुरैश का विरोध और अधिक तीव्र हो गया तथा इस्लाम स्वीकार करने वाले कमज़ोर मुसलमानों पर कठोर अत्याचार शुरु कर दिये गये। (इब्ने सअ़द, अत्-तब्क़ातुल् कुब्रा, भाग-3, पृष्ठ 232–235)

मक्का के काफ़िरों का अत्याचार-

अहले मक्का जो नुबूवत से पहले ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अत्यंत

सम्मान करते थे और आपको "अस्-सादिक़" (सत्यवादी) तथा "अल्-अमीन" (विश्वसनीय) कहा करते थे, नुबूवत के बाद कठोर विरोध पर उतर आये और तरह़-तरह़ की यातनाएँ देने लगे।

लोग आपके रास्ते में काँटे बिछाने लगे। जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) किसी मार्ग से गुज़रते तो लोग ऊपर से कूड़ा फेंक देते। आपका उपहास उड़ाया जाता और शारीरिक कष्ट भी पहुँचाये जाते।

एक बार आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इसी अवस्था में घर तशरीफ़ लाए तो आपकी सुपुत्री ह़ज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को बहुत दुःख हुआ। वे आपका सिर धोती जाती थीं और रोती जाती थीं। इस पर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें सांत्वना देते हुए फ़रमाया, "बेटी! दुःखी मत हो, अल्लाह तुम्हारे पिता को कभी असहाय नहीं छोड़ेगा"। (इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबवीया, भाग-1, पृष्ठ 298–299)

कअ़बः के निकट की घटना-

एक बार आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कअ़बा में नमाज़ अदा कर रहे थे कि उसी दौरान आपकी पीठ पर ऊँट की ओझड़ी (आँतों और गंदगी का बोझ) लाकर रख दी गई, जिसके भार से आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सिर भी न उठा सके। कुछ देर बाद ह़ज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आईं और उस गन्दगी को हटाया।

गला दबाने की घटना-

इसी प्रकार एक बार एक काफ़िर उक़्बा बिन अबी मुअ़ीत ने आपके गले में मोटी चादर डालकर उसे जोर से खींचा, यहाँ तक कि आपका दम घुटने लगा। इतने में ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) पहुँच गये और आपको छुड़ाते हुए कहा, "क्या तुम एक ऐसे व्यक्ति को क़त्ल करते हो जो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है"? इस पर काफ़िरों ने ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को भी बुरी तरह पीटा। (इब्ने कसीर, अल्-बिदाया वन्निहाया, भाग-3, पृष्ठ 52–54)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को प्रलोभन-

जब क़ुरैश के सरदार धमकियों और अत्याचारों के बावजूद ह़ज़रत

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को दअ़वत-ए-इस्लाम से रोक न सके, तो उन्होंने समझौते और लालच का रास्ता अपनाया, चूँकि क़ुरैश के एक प्रतिष्ठित सरदार उ़त्बा बिन रबीआ़ को आपके पास भेजा गया। उसने कहा-

"ऐ मुहम्मद! आप जो कुछ कर रहे हैं, उसका उद्देश्य क्या है? यदि आप इस दअ़वत के माध्यम से धन चाहते हैं, तो हम आपको सबसे अधिक धनवान बना देंगे।

यदि आप नेतृत्व चाहते हैं, तो हम आपको अपना सरदार मान लेंगे।

यदि आप बादशाहत चाहते हैं, तो हम आपको अपना राजा बना देंगे।

यदि आप किसी सुंदर स्त्री से विवाह करना चाहते हैं, तो हम आपका विवाह उससे करा देंगे, लेकिन आप अपनी इस दअ़वत को बंद कर दीजिए"।

ह़ज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का उत्तर-

ह़ज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसकी पूरी बात सुनने के बाद फ़रमाया, "ऐ चचा! अल्लाह की कसम, यदि ये लोग मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बाएँ हाथ में चाँद भी रख दें कि मैं इस कार्य को छोड़ दूँ तब भी मैं इसे नहीं छोड़ूँगा, यहाँ तक कि अल्लाह इसे विजयी कर दे या मैं इस मार्ग में अपनी जान दे दूँ"।

(इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-1, पृष्ठ 265-266)

इसके बाद आपने क़ुर्आन की सूरः हामिम सज्दा (सूरह फ़ुस्सिलत) की प्रारम्भिक आयतें तिलावत कीं। जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस आयत पर पहुँचे-

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صَاعِقَةً مِّثْلَ صَاعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ﴿١٣﴾

अर्थात्—"फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दीजिए कि मैंने तुम्हें आ़द और समूद जैसी एक भयंकर विपत्ति से सावधान कर दिया है"। (सूरः फ़ुस्सिलतः 13)

यह सुनकर उ़त्बा इब्ने रबीआ़ अत्यंत प्रभावित होकर वापस लौटा और क़ुरैश के लोगों से कहा-

उ़त्बा इब्ने रबीआ़ पर प्रभाव-

"आज मैंने मुहम्मद की ज़बान से ऐसा कलाम सुना है जो न कविता है,

न जादू और न ही कोई भविष्यवाणी। मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि उन्हें उनके ह़ाल पर छोड़ दो। यदि वे सफ़ल हो गये तो तुम्हारी ही प्रतिष्ठा बढ़ेगी और यदि सफ़ल न हुए तो अ़रब स्वयं ही उनका मामला तय कर लेंगे"।

(इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-1, पृष्ठ 313–315)

किन्तु क़ुरैश ने सत्य को स्वीकार करने के बजाय अपनी हठधर्मिता को बनाये रखा और मुसलमानों पर अत्याचार और अधिक बढ़ा दिये, लेकिन इन सभी कष्टों के बावजूद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और आपके समर्पित साथियों ने धैर्य और दृढ़ता के साथ दीन-ए-ह़क़ की दअ़वत देना जारी रखा।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का सामाजिक बहिष्कार-

जब क़ुरैश ने देखा कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की दअ़वत दिन-प्रतिदिन फैलती जा रही है और बनी हाशिम तथा बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब आपके संरक्षण से पीछे हटने के लिए तैयार नहीं हैं, तो उन्होंने नुबूवत के लगभग सातवें वर्ष एक कठोर निर्णय लिया कि इनका पूर्ण बहिष्कार कर दिया जाए और इनके क़बीलों से हर प्रकार का सम्बन्ध समाप्त कर दिया जाए।

चुनाँचे उन्होंने एक लिखित समझौता तैयार किया, जिसमें यह तय किया गया कि न उनसे कोई खरीद-बिक्री की जाएगी, न विवाह सम्बन्ध स्थापित किये जाएँगे और न ही किसी प्रकार की सामाजिक सहानुभूति दिखाई जाएगी। इस दस्तावेज को कअ़बः में टाँग दिया गया, ताकि सभी लोग इस प्रतिबंध का पालन करें। (इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-1, पृष्ठ 350–351)

शेअ़ब-ए-अबी तालिब में शरण-

इस बहिष्कार के परिणामस्वरूप ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आपका परिवार और अनेक मुसलमान मक्का के निकट एक संकरी घाटी "शेअ़ब-ए-अबी तालिब" में शरण लेने के लिए मजबूर हो गये। जहाँ वे लगभग तीन वर्षों तक घिरे रहे।

स्थिति इतनी कठिन हो गई कि खाने-पीने की वस्तुओं की आपूर्ति बंद हो गई। यहाँ तक कि भूख की तीव्रता से बच्चों के रोने की आवाज़ें बाहर तक

सुनाई देती थीं। जीवन बचाने के लिए पेड़ों के पत्ते चबाने पड़ते और सूखे चमड़े को भिगोकर खाना पड़ता था, लेकिन इस भीषण परीक्षा के बावजूद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और आपके साथियों ने दीन से पीछे हटना स्वीकार नहीं किया। (इब्ने सअ़द, अत्-तब्क़ातुल् कुबरा, भाग-1, पृष्ठ 208–210)

साथियों का धैर्य-

यह घेराबंदी इस्लामी इतिहास की अत्यन्त कठिन परीक्षाओं में से एक थी, किन्तु इस भीषण संकट के बावजूद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और आपके साथियों ने धैर्य, दृढ़ता और अल्लाह पर भरोसे की ऐसी उज्ज्वल मिसाल क़ायम की, जो क़ियामत तक ईमान वालों के लिए मार्गदर्शक बनी रहेगी। भूख, एकांत और निरन्तर ख़त्रों के बावजूद उनके क़दम डगमगाये नहीं और न ही उनके विश्वास में कोई कमी आई। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि सच्चा ईमान परिस्थितियों का मोह़ताज नहीं होता, बल्कि परीक्षाओं की भट्ठी में और अधिक निखरकर सामने आता है।

यही वह दौर था जिसने मुसलमानों की तर्बियत की, उनके भीतर पारस्परिक सहानुभूति, त्याग और एकता को मज़बूत किया तथा उन्हें आने वाले बड़े चरणों के लिए तैयार किया। बाहरी साधन सीमित थे, लेकिन अल्लाह पर भरोसा पूर्ण था। इसी कारण यह कठिनाई अंततः आसानी का मार्ग प्रशस्त करने वाली बनी।

इतिह़ास इस बात का साक्षी है कि जब कोई समुदाय सत्य पर दृढ़ रहता है, तो कठिनाइयाँ अस्थायी सिद्ध होती हैं और अंततः सफ़लता उसी का भाग्य बनती है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का विरोध-

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मक्का मुकर्रमा में इस्लाम की दअ़वत का आरम्भ किया, तो अहले मक्का ने इसे केवल एक धार्मिक संदेश नहीं समझा, बल्कि अपने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक ढाँचे के लिए ख़त्रा माना।

इसके परिणामस्वरूप उन्होंने दअ़वत-ए-इस्लाम का विरोध करने के लिए अनेक प्रकार के हथकंडे अपनाये।

झूठा प्रचार-

कुफ़्फ़ार-ए-मक्का ने सबसे पहले इस्लाम और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरुद्ध झूठा प्रचार शुरु किया। वे लोगों को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से दूर रखने के लिए कहते थे कि (नऊ़ज़ुबिल्लाह) मुह़म्मद कवि, पागल, जादूगर या झूठे हैं। (सीरत इब्ने हिशाम, भाग-1, पृष्ठ-290)

प्रलोभन-

कुफ़्फ़ार ने लोगों को दीन से रोकने के लिए सांसारिक सुखों और स्त्रियों के आकर्षण का सहारा लिया। नज़र बिन ह़ारिस अपनी दासियों को संगीत और नृत्य के लिए प्रस्तुत करता था ताकि जो व्यक्ति इस्लाम की ओर आकर्षित हो रहा हो, वह उन प्रलोभनों में उलझकर दीन से दूर हो जाये।

(इब्ने हिशाम, भाग-1, पृष्ठ 293)

विभिन्न प्रकार की यातनाएँ-

● वे मानसिक और शारीरिक अत्याचार भी करते थे। नमाज़ की अवस्था में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ऊँट की ओझड़ी फेंकी गई। (सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस, 240)

● ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के रास्ते में काँटे बिछाये जाते और आपके घर में गंदगी फेंकी जाती थी। (इब्ने हिशाम, भाग-1, पृष्ठ 319)

● कुफ़्फ़ार कुर्आन के प्रभाव से बचने के लिए शोर मचाते और लोगों को उसे सुनने से रोकते थे। (इब्ने हिशाम, तफ्सीर कुर्तुबी, भाग-15, पृष्ठ-334)

संगठित अभियान-

कुरैश ने इस्लाम के विरुद्ध एक संगठित अभियान चलाया, ताकि बाहर से आने वाले लोग प्रभावित न हों।

ह़ज़रत तुफ़ैल बिन अम्र अद्-दौसी को कुफ़्फ़ार ने चेतावनी दी कि

"मुहम्मद से मत मिलना, वे जादूगर हैं" लेकिन वे फिर भी आए और इस्लाम स्वीकार कर लिया। (इब्ने हिशाम, भाग-1, पृष्ठ 300)

● अबू लहब हाजियों के पीछे-पीछे चलता और कहता, "यह व्यक्ति झूठा और जादूगर है, इसकी बात मत सुनो"। (इब्ने हिशाम, भाग-1, पृष्ठ 290)

● इस्लाम की सच्चाई को कमज़ोर करने और आम लोगों को भड़काने के लिए कुफ्फार ने व्यंग्य, उपहास और झूठ गढ़ने का तरीक़ा भी अपनाया। अबू लहब और उक़्बा इब्ने अबी मुऐत गलियों में आवाज़ लगाते, "यह व्यक्ति कहानियाँ सुनाता है और बहुत बड़ा कवि है" ताकि लोग कुर्आन सुनने न आएँ। (इब्ने हिशाम, भाग-1 पृष्ठ 292)

बस्ती से निकाल देने की धमकी-

कुफ़्फ़ार-ए-मक्का ने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और मुसलमानों पर दबाव डालने के लिए उन्हें बस्ती से निकाल देने की धमकी भी दी, ताकि वे या तो अपनी दअ़वत छोड़ दें या मक्का छोड़कर चले जाएँ। अबू जेहल और अन्य सरदारों ने दारुन्नदवा में परामर्श किया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को क़ैद कर दिया जाए हत्या कर दी जाए या मक्का से निकाल दिया जाए। अंततः निर्वासन और हत्या की साज़िश तैयार की गई। (इब्ने हिशाम, भाग-1, पृष्ठ 480)

अबू जेहल ने हज़रत ख़ब्बाब बिन अलू-अरत रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, "मुहम्मद को छोड़ दो और अपने बाप-दादाओं के धर्म की ओर लौट आओ अन्यथा तुम्हें पत्थरों से मार दिया जाएगा"।

(इब्ने अ़ब्दुल बर, अलू-इस्तीआब, भाग-2, पृष्ठ 247)

मुसलमानों पर शारीरिक अत्याचार

इस्लाम के प्रारम्भिक दौर में मुसलमानों को केवल अपने ईमान और अ़क़ीदे की वजह से कठोर शारीरिक यातनाओं का सामना करना पड़ा। कुरैश विशेष रूप से कमज़ोर और गुलाम मुसलमानों को निशाना बनाते थे, उन्हें तपती रेत पर लिटाया जाता, उनके सीने पर भारी पत्थर रखे जाते और भूख-प्यास से तड़पाया जाता ताकि वे इस्लाम छोड़ दें, लेकिन अहले-ईमान ने

सब्र और दृढ़ता की ऐसी मिसाल क़ायम की, जिसने मानव इतिहास में बलिदान और वफ़ादारी का एक उज्ज्वल अध्याय लिख दिया।

ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०)पर अत्याचार-

ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ प्रारम्भिक मुसलमानों में शामिल थे। इस्लाम स्वीकार करने के बाद उन्होंने खुले रूप से लोगों को दीन-ए-इस्लाम की ओर बुलाना शुरु किया।

एक अवसर पर जब उन्होंने मस्जिदे ह़राम में भाषण दिया, तो मक्का के मुश्रिक उन पर टूट पड़े और अत्यंत निर्दयता से उन्हें पीटा। यहाँ तक कि उनका चेहरा पहचान में नहीं आता था, विशेष रूप से उ़त्बा बिन रबीआ़ ने अपने जूतों से उनके चेहरे पर प्रहार किये। उनकी क़ौम बनी तैम उन्हें उठाकर घर ले गई और उन्हें यह आशंका थी कि शायद वे जीवित न बच सकें।

जब उन्हें होश आया तो सबसे पहले उन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की कुशलता पूछी। घरवालों ने चुप्पी साध ली, लेकिन वे लगातार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में पूछते रहे।

अंततः उन्हें उनकी माता "उम्मुल ख़ैर" के साथ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेवा में ले जाया गया। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें देखकर स्नेह प्रकट किया और उनके लिए दुआ़ की, जिससे वे अत्यंत प्रसन्न हुए।

(इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-1, पृष्ठ 320-321)

ह़ज़रत बिलाल (रज़ि०)पर अत्याचार-

जब ह़ज़रत बिलाल (रज़ि०) ने इस्लाम स्वीकार किया, तो अहले मक्का ने उन्हें लोहे का कवच पहनाकर तपती धूप में डाल देते और उनके सीने पर भारी पत्थर रख देते ताकि वे इस्लाम छोड़ दें, कभी लड़कों को लगा देते, जो उन्हें मक्का की पहाड़ियों में घसीटते फिरते, लेकिन ह़ज़रत बिलाल (रज़ि०) इन सारी यातनाओं को सहते हुए लगातार कहते रहते "अ़हद, अ़हद" अर्थात् "अल्लाह एक है, अल्लाह एक है"। (सीरत इब्ने हिशाम, भाग 1, पृष्ठ 319)

ह़ज़रत ख़ब्बाब (रज़ि०)पर अत्याचार-

जब ह़ज़रत ख़ब्बाब (रज़ि०) ने इस्लाम स्वीकार किया, तो मक्का वाले उन्हें तपती हुई रेत पर लिटा देते थे। यहाँ तक कि उनकी पीठ का मांस जलकर खराब हो गया था। एक दिन ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने उनकी पीठ देखी तो फ़रमाया, "मैंने आज तक ऐसी पीठ नहीं देखी"। ह़ज़रत ख़ब्बाब (रज़ि०)ने उत्तर दिया कि काफिर उन्हें अंगारों पर लिटाकर घसीटा करते थे।

(सीरत इब्ने हिशाम, भाग 1, पृष्ठ 320)

ह़ज़रत सुमय्या (रज़ि०)का इस्लाम-

जब ह़ज़रत सुमय्या (रज़ि०) जो ह़ज़रत अम्मार (रज़ि०) की माता थीं, इस्लाम लाईं तो मक्का वालों ने उन्हें धूप में लिटा दिया। इसी अवस्था में मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वहाँ से गुज़रे और फ़रमाया, "सब्र करो, तुम्हारा ठिकाना जन्नत है" लेकिन काफ़िरों को इससे भी संतोष न हुआ और उसने भाले से वार करके उन्हें शहीद कर दिया। यह वह महान महिला हैं, जिन्हें इस्लाम में सबसे पहली शहादत का सम्मान प्राप्त हुआ।

(अल्-बिदायह वन्निहाया, भाग 3, पृष्ठ 55)

ह़ज़रत उ़स्मान-ए-ग़नी (रज़ि०)पर अत्याचार-

ह़ज़रत उ़स्मान-ए-ग़नी (रज़ि०) सम्मानित लोगों में गिने जाते थे, लेकिन जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया तो उनके अपने चाचा ने लोहे की जंजीरों से बाँधकर उन्हें इस्लाम से रोकने की कोशिश की।

(इब्ने हजर अल् असकलानी, अल्-इसाबह, भाग 4, पृष्ठ 462)

ह़ज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ि०)पर अत्याचार-

जब ह़ज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ि०) इस्लाम लाये, तो उनके चाचा उन्हें चटाई में लपेटकर लट्का देते और नीचे से धुआँ देते, ताकि वे यातना में रहें और इस्लाम छोड़ दें, लेकिन वे दृढ़ता से डटे रहे।

(इब्ने कसीर, अल्-बिदायह वन्निहायह, भाग-3, पृष्ठ 58)

ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०)पर अत्याचार-

ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) की माता ने खाना-पीना छोड़ दिया और कहा कि जब तक सअ़द इस्लाम नहीं छोड़ेंगे वे कुछ नहीं खाएँगी, लेकिन ह़ज़रत सअ़द (रज़ि०)ने कहा, "यदि तुम्हारी सौ जानें भी हों और एक-एक करके निकल जाएँ तब भी मैं इस्लाम नहीं छोड़ूँगा"।

(मुस्लिम, ह़दीस-1748)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०)पर अत्याचार-

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने मक्का में खुलकर क़ुर्आन की तिलावत की।

उन्होंने कअ़बः के पास सूरः अर्रह़मान की आयतें ऊँची आवाज में पढ़ीं, तो मुश्रिकों ने उन्हें बुरी तरह़ पीटा, यहाँ तक कि उनके चेहरे पर घाव हो गये, लेकिन उनका ह़ौसला ऐसा था कि उन्होंने सह़ाबा से कहा, "यदि तुम चाहो तो मैं कल फिर इसी तरह़ तिलावत करुँगा"।

(इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग 1, पृष्ठ 318-319)

ह़ज़रत सई़द बिन ज़ैद (रज़ि०)पर अत्याचार-

ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि०) और उनकी पत्नी फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब (रज़ि०) जो ह़ज़रत उ़मर की बहन थीं, जब इस्लाम लाए तो उन्हें भी कठोर विरोध का सामना करना पड़ा। रिवायतों में आता है कि इस्लाम स्वीकार करने से पहले ह़ज़रत उ़मर गुस्से में आकर उन्हें मारने लगे यहाँ तक कि फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा घायल हो गईं। बाद में यही घटना ह़ज़रत उ़मर के इस्लाम स्वीकार करने का कारण बनी।

(इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग 1, पृष्ठ 343-345)

ह़ज़रत अयाश बिन अबी रबीआ़ (रज़ि०) पर अत्याचार-

ह़ज़रत अयाश बिन अबी रबीआ़ (रज़ि०) और ह़ज़रत सलमा बिन्त हिशाम (रज़ि०) इस्लाम स्वीकार करने के बाद कठोर यातनाओं का शिकार बने। जब

ह़ज़रत अ़याश बिन रबीआ़ मदीना की ओर हिज़रत कर गये, तो अबू जेहल और हारिस बिन हिशाम ने धोखे से उन्हें यह कहकर वापस बुलाया कि उनकी माता ने क़सम खाई है कि वे अपने बेटे के बिना छाया में नहीं बैठेंगी।

उन के वापस मक्का पहुँचते ही काफ़िरों द्वारा उन्हें पकड़कर क़ैद कर दिया गया और कठोर दंड दिये गये। इसी प्रकार सलमा बिन्त हिशाम को भी इस्लाम स्वीकार करने की वजह से बंदी बनाकर रखा गया, ताकि वे हिज़रत न कर सकें। (इब्ने सअ़द, अत्-तब्क़ातुल् कुब्रा, भाग-4, पृष्ठ 24–26)

ह़ज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) पर अत्याचार-

जब ह़ज़रत अबू ज़र ग़िफारी (रज़ि०) मक्का पहुँचे और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मुलाक़ात के बाद इस्लाम स्वीकार कर लिया, तो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें फ़िलहाल अपने ईमान को छिपाकर रखने की सलाह दी, लेकिन उनके भीतर सत्य बोलने का जोश इतना प्रबल था कि वे खुले रूप से घोषणा करने पर तैयार हो गये, चुनाँचे वे मस्जिदे ह़राम में आए और ऊँची आवाज़ में कलिमा-ए-ह़क़ का ऐलान कर दिया।

यह सुनते ही क़ुरैश उन पर टूट पड़े और उन्हें बुरी तरह पीटा यहाँ तक कि वे बेहोश होकर गिर पड़े।

उसी दौरान ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल् मुत्तलिब वहाँ पहुँचे और लोगों को सावधान करते हुए कहा कि अबू ज़र क़बीला ग़िफ़ार से सम्बन्ध रखते हैं, जो शाम के व्यापारिक मार्ग पर आबाद है। यदि तुमने उन्हें नुक़्सान पहुँचाया तो तुम्हारा व्यापार ख़तरे में पड़ जाएगा। यह सुनकर लोगों ने उन्हें छोड़ दिया। (इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग 1, पृष्ठ 292–293)

ह़ज़रत अबू फ़कीह (रज़ि०) पर अत्याचार-

ह़ज़रत अबू फ़कीह (रज़ि०) क़बीला अज़्द के सहयोगी और उमय्या बिन ख़लफ़ के गुलाम थे। जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया तो मुश्रिकीन-ए-मक्का ने उन्हें कठोर यातनाएँ दीं। उनके पैरों में बेड़ियाँ डालकर तपती धूप में लिटा

दिया जाता और उनके सीने या पीठ पर भारी पत्थर रख दिया जाता यहाँ तक कि वे बेहोश हो जाते।

एक बार उन्हें रस्सी से बाँधकर ग़र्म ज़मीन पर घसीटा गया। इस दौरान उमय्या बिन ख़लफ़ ने उपहास करते हुए पूछा, "क्या तुम्हारा रब यही है"? तो उन्होंने दृढ़ता से उत्तर दिया, "मेरा और तुम्हारा रब केवल अल्लाह है"।

(इब्ने सअ़द, अत्-तब्क़ातुल् कुब्रा, भाग-3, पृष्ठ 249)

Montgomery Watt के अनुसार-

प्रसिद्ध ब्रिटिश इतिहासकार **W. Montgomery Watt** अपनी पुस्तक **Muhammad at Mecca** में लिखते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का विरोध केवल धार्मिक कारणों से नहीं था, बल्कि मक्का के प्रभावशाली सरदारों को यह भय था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षाएँ उनके आर्थिक हितों और सामाजिक प्रभुत्व को चुनौती दे रही हैं, क्योंकि क़ुर्आन सूदखोरी, यतीमों के शोषण और धन के अत्यधिक केंद्रीकरण की आलोचना करता था।

वे आगे लिखते हैं कि इस्लाम का संदेश केवल एक धार्मिक आस्था नहीं था, बल्कि एक नैतिक और सामाजिक सुधार आन्दोलन था, जिसने क़ुरैश के व्यापारिक ढाँचे और वर्गीय व्यवस्था को ख़तरे में डाल दिया था।

The wealthy merchants, who were also the leading men of the clans, were neglecting the traditional duty of caring for the needy and unfortunate among their kinsmen. Their great wealth made them proud, arrogant and presumptuous, ready to oppress and take advantage of any who were in any sense weak."

(W. Montgomery Watt, Muhammad at Mecca, Oxford: Clarendon Press, 1953 , Page 52)

अनुवाद-

"धनवान व्यापारी जो क़बीलों के सरदार भी थे, अपने ज़रूरतमंद और असहाय रिश्तेदारों की देखभाल करने के पारम्परिक कर्तव्य की उपेक्षा कर रहे थे। उनकी अपार सम्पत्ति ने उन्हें घमंडी और अहंकारी बना दिया था और वे हर उस व्यक्ति पर अत्याचार करने तथा उसका शोषण करने के लिए तैयार रहते थे जो किसी भी दृष्टि से कमज़ोर होता था"।

Karen Armstrong के अनुसार-

इसी प्रकार प्रसिद्ध अमेरिकी इतिहासकार **Karen Armstrong** अपनी पुस्तक **Muhammad: A Biography of the Prophet** में लिखती हैं-

> **"He was living in an age that was just as cruel and violent as our own. His society was in crisis. Many felt that their old world… they were experiencing a spiritual vacuum."**
>
> **(Karen Armstrong, Muhammad: A Biography of the Prophet, Victor Gollancz, London, 1991 , Preface, page 7-8)**

अनुवाद-

"वे ऐसे दौर में जीवन बिता रहे थे जो हमारी दुनिया की तरह कठोर और हिंसक था। उनका समाज संकट का शिकार था और बहुत से लोग महसूस कर रहे थे कि उनकी पुरानी दुनिया बिखर रही है तथा वे एक आध्यात्मिक शून्यता का अनुभव कर रहे हैं"।

श्री नाथूराम जी की राय-

जब हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को नुबूवत प्रदान की गई, तो क़ुर्आन में भूखों को भोजन खिलाने और यतीमों के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करने का कठोर आदेश दिया गया। यतीमों और कमज़ोर लोगों का शोषण करने वालों के लिए यह बात असहनीय थी। उन्होंने देखा कि क़ुर्आन की इन शिक्षाओं से उनकी प्रतिष्ठा और सामाजिक स्थिति मिट्टी में मिल रही है।

बल्कि उन्होंने इस संदेश को ऐसा विचार समझा, जो मनुष्य को अपनी मेहनत से कमाई हुई दौलत समाज के ज़रूरतमंद लोगों में बाँटने और स्वयं ग़रीब बन जाने की ओर प्रेरित करता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का विरोध केवल धार्मिक कारणों से नहीं था, बल्कि उसके पीछे आर्थिक कारण भी सक्रिय थे। (हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का आदर्श, पृष्ठ 11–12)

मुसलमानों की हिज्रत-

मक्का में मुसलमानों पर बढ़ते हुए अत्याचारों ने परिस्थितियों को इतना

गम्भीर बना दिया कि दीन पर जमे रहना अत्यंत कठिन हो गया। कमज़ोर मुसलमानों को मारा-पीटा जाता, क़ैद किया जाता और उन्हें इस्लाम छोड़ने पर मजबूर किया जाता था।

हिज्रत की अनुमति-

ऐसी स्थिति में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने कुछ सह़ाबा को हिज्रत की अनुमति दी और फ़रमाया कि **Abyssini** (हब्शा) में एक न्यायप्रिय बादशाह **Najashi** (नजाशी) है, जहाँ किसी पर अत्याचार नहीं होता। इसलिए वहाँ चले जाओ, यहाँ तक कि अल्लाह कोई रास्ता पैदा कर दे।

(इब्ने हिशाम, अस्सीरतुन्नबविय्यह, भाग-1, पृष्ठ 321-322)

पहली हिज्रत-

चुनाँचे नुबूवत के पाँचवें वर्ष पहली हिज्रत हुई, जिसमें लगभग 12 पुरुष और 4 महिलाएँ हब्शा रवाना हुए। बाद में जब अत्याचार और बढ़ गया, तो दूसरी हिज्रत भी हुई और मुहाजिरीन की संख्या 80 से अधिक पुरुषों तक पहुँच गई (महिलाओं और बच्चों के अतिरिक्त)।

मुसलमान मक्का से लाल सागर के तट की ओर गये और वहाँ से नाव के माध्यम से लाल सागर **Red Sea** को पार करके अपना सफ़र पूरा किया।

हब्शा का बादशाह-

हब्शा (वर्तमान **Ethiopia**) का बादशाह नजाशी (असहमा बिन अब्ज़र) अत्यंत न्यायप्रिय और निष्पक्ष शासक था। जब मुहाजिरीन वहाँ पहुँचे, तो उसने उन्हें पूर्ण सुरक्षा प्रदान की। क़ुरैश ने मुसलमानों को वापस लाने के लिए अम्र बिन अल् आ़स और अ़ब्दुल्लाह इब्ने रबीआ़ को बहुमूल्य उपहार देकर नजाशी के दरबार में भेजा, लेकिन नजाशी ने एकतरफ़ा निर्णय करने के बजाय मुसलमानों को भी अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर दिया।

(इब्ने सअ़द, अत्-तब्क़ातुल् कुब्रा, भाग-1, पृष्ठ 207)

ह़ज़रत जाफर बिन अबी तालिब का भाषण-

दरबार में मुसलमानों की ओर से जाफर इब्ने अबी तालिब ने अत्यंत प्रभावशाली भाषण दिया। उन्होंने जाहिलियत के अ़रब समाज की बुराईयों का वर्णन किया और बताया कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने हमें सत्यवादिता, अमानतदारी, रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार, यतीमों की रक्षा और अत्याचार से बचने का आदेश दिया है।

फिर उन्होंने क़ुर्आन की सूरः मरयम की आयतों का पाठ किया, जिनमें मरयम और जीसस का उल्लेख है।

यह सुनकर नजाशी और दरबारियों की आँखों से आँसू बहने लगे।

नजाशी ने कहा-

"यह कलाम और जो ईसा लाए थे, दोनों एक ही दीपक से निकले हुए प्रतीत होते हैं"। (इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-1, पृष्ठ 336-338)

नजाशी की अनुमति-

नजाशी ने क़ुरैश के प्रतिनिधियों से स्पष्ट कह दिया कि वह मुसलमानों को हरगिज़ वापस नहीं करेगा और उन्हें अपनी भूमि में शांति के साथ रहने की अनुमति दी।

बाद में जब अम्र इब्ने अल् आ़स ने ईसा (अ़लै०) (Jesus) के बारे में मुसलमानों के विश्वास पर आपत्ति उठाई, तो नजाशी ने पुनः जाफर बिन अबी तालिब को बुलाया। उन्होंने उत्तर दिया कि हम ईसा को अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल मानते हैं। इस पर नजाशी ने ज़मीन से एक तिनूका उठाकर कहा, "अल्लाह की क़सम! ईसा इब्ने मरयम इस बात से रत्ती भर भी अलग नहीं हैं जो तुमने बयान किया है"। (इब्ने कसीर, अल्-बिदाया वन्निहाया, भाग-3, पृष्ठ 72-74)

नजाशी ने न केवल मुहाजिरीन को शरण दी, बल्कि क़ुरैश के भेजे हुए उपहार भी वापस कर दिये। बाद में वे स्वयं भी इस्लाम से प्रभावित हुए और गुप्त रूप से ईमान ले आए। जब उनका निधन हुआ, तो ह़ज़रत मुह़म्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मदीना में उनकी ग़ायबाना नमाज़-ए-जनाज़ा अदा की।

(सह़ीह़ बुख़ारी, 1333 सह़ीह़ मुस्लिम, 951)

मदीना (यसरिब) में इस्लाम का विस्तार-

ह़ज के अवसर पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) विभिन्न क़बीलों को इस्लाम की दअ़वत दिया करते थे। इसी दौरान यसरिब मदीना) से आये हुए ख़ज़्रज क़बीले के कुछ लोगों की आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मुलाक़ात हुई। आप ने उन्हें क़ुर्आन सुनाया और तौह़ीद, नैतिकता तथा आख़िरत की दअ़वत दी, तो उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

यह पहला समूह जब मदीना वापस गया तो वहाँ इस्लाम का उल्लेख फैलने लगा और अगले वर्ष वे और अधिक लोगों के साथ आए।

दूसरे वर्ष-

दूसरे वर्ष मदीना से बारह व्यक्ति आए और उन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हाथ पर बैअ़त की। इसे "पहली बैअ़त-ए-उ़क़्बा" कहा जाता है, जिसमें शिर्क और बुराईयों से बचने तथा नेकी पर क़ायम रहने का वचन लिया गया। (इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-2, पृष्ठ 41–47)

ह़ज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मैर की शिक्षा-

पहली बैअ़त के बाद मदीना वालों की शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ह़ज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि०) को मदीना भेजा। उन्होंने अत्यंत बुद्धिमत्ता और विनम्रता के साथ क़ुर्आन की शिक्षा दी और इस्लाम का संदेश घर-घर पहुँचाया। उन्हीं के प्रयासों से कई बड़े सरदार भी इस्लाम लाए जिनमें विशेष रूप से ह़ज़रत सअ़द बिन मुआज़ (रज़ि०) और ह़ज़रत उ़सैद बिन ह़ुज़ैर (रज़ि०) का इस्लाम स्वीकार करना अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुआ। (इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-2, पृष्ठ 48–60)

तीसरे वर्ष-

तीसरे वर्ष ह़ज के अवसर पर मदीना के मुसलमानों का एक बड़ा

प्रतिनिधिमंडल मक्का आया और रात के अँधेरे में उ़क़बा (Aqaba) नामक स्थान पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से गुप्त मुलाक़ात हुई। इसमें मदीना से सत्तर से अधिक लोग शामिल थे, उन्होंने निवेदन किया कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और आपके साथियों पर मक्का में अत्याचार बढ़ गये हैं, इसलिए आप मदीना आ जाएँ हम आपकी जान और माल की रक्षा उसी प्रकार करेंगे जैसे अपने परिवार की करते हैं।

इसे "दूसरी बैअ़त-ए-उ़क़्बा" (बैअ़त-ए-हर्ब) कहा जाता है। इसी बैअत के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मुसलमानों को मदीना हिज्रत की अनुमति दे दी और फिर अल्लाह के आदेश से स्वयं भी हिज्रत फ़रमाई।

(इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-2, पृष्ठ 61-75)

मदीना में इस्लाम के समर्थक-

इस प्रकार इस्लाम मक्का की सीमाओं से निकलकर क्षेत्रीय स्तर पर मदीना तक पहुँच चुका था। यसरिब के लोगों ने न केवल इस संदेश को स्वीकार किया, बल्कि इसे अपने घरों और परिवारों तक फैलाया, यहाँ तक कि वहाँ इस्लाम की चर्चा आ़म होने लगी। मदीना के निवासियों ने मह़सूस किया कि यह दीन केवल एक धार्मिक दअ़वत नहीं, बल्कि नैतिक सुधार और सामाजिक न्याय का संदेश है। इसलिए वे इसके मज़बूत समर्थक बनते गये। इस प्रकार मदीना इस्लाम के लिए एक सुरक्षित केंद्र बनने लगा, जहाँ से आगे चलकर इसकी दअ़वत और अधिक विस्तार प्राप्त करने वाली थी।

मदीना की ओर हिज्रत-

जब मक्का में कुरैश की दुश्मनी अपनी सीमा से बढ़ गई और उन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हत्या की साज़िश तैयार की, तो दारुन्नदवा में यह तय किया गया कि हर क़बीले का एक युवक मिलकर (नऊ़ज़ुबिल्लाह) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ह़मला करे, ताकि बनी हाशिम किसी एक क़बीले से बदला न ले सकें। इसी अवसर पर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को हिज्रत की अनुमति दी और इस षडयंत्र की सूचना भी दे दी। क़ुर्आन में इस घटना की

ओर संकेत करते हुए फ़रमाया गया-

क़त्ल का षडयंत्र-

"और (ऐ नबी!) जब काफ़िर आपके विरुद्ध योजनाएँ बना रहे थे कि आपको क़ैद कर दें या कत्ल कर दें या देश निकाला दे दें"।

(सूरः अल् अन्फ़ाल-30) (इब्ने हाशिम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-2, पृष्ठ 124–126)

हिज़रत की तैयारी-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हिज़रत की तैयारी करते हुए ह़ज़रत अ़ली बिन अबी तालिब को अपने बिस्तर पर सोने के लिए कहा, ताकि लोगों की अमानतें वापस की जा सकें और दुश्मनों को तुरन्त आपके प्रस्थान का पता न चले।

फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रात के समय अपने घर से निकले और ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) के साथ मक्का से दक्षिण दिशा में स्थित ग़ारे सौर (Cave of Thawr) की ओर रवाना हुए जहाँ आपने तीन दिन तक ठहराव किया, ताकि खोज करने वालों से सुरक्षित रह सकें।

इस दौरान अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र समाचार पहुँचाते थे, उनके सेवक आ़मिर बिन फ़ुहैरा पैरों के निशान मिटा देते थे और असमा बिन्त अबू बक्र खाना पहुँचाती थीं। (इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-2, पृष्ठ 127–132)

एक काफ़िर अ़ब्दुल्लाह बिन उरैकित का साथ-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने एक कुशल और विश्वसनीय मार्गदर्शक अ़ब्दुल्लाह इब्ने उरैकित को मेहनताना देकर साथ लिया, हालाँकि उस समय वे मुसलमान नहीं थे, लेकिन उन्हें रास्तों का उत्कृष्ट ज्ञान था। उन्होंने एक अपरिचित समुद्री मार्ग चुना, ताकि क़ुरैश की नज़रों से बचकर मदीना पहुँच सकें। (इब्ने कसीर, अल्-बिदायह वन्निहायह, भाग-3, पृष्ठ 181)

मदीना में स्वागत-

यात्रा के दौरान अनेक ख़त्रों के बावजूद अल्लाह की सहायता उनके

साथ रही। अंततः ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रबीउल्व्वल के महीने में मदीना के निकट स्थित 'क़ुबा' (Quba) पहुँचे, जहाँ कुछ दिन ठहरने के बाद आप मदीना तशरीफ़ लाए।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आगमन पर मदीना के लोगों ने अत्यंत प्रसन्नता और उत्साह के साथ आपका स्वागत किया। यही हिज़ूरत इस्लामी इतिह़ास का एक महान मोड़ सिद्ध हुई, क्योंकि इसके बाद मदीना इस्लाम का केंद्र बन गया और पहली इस्लामी राज्य व्यवस्था की नींव पड़ी।

(इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-2, पृष्ठ 137–141)

नोट–

यह हिज़ूरत केवल स्थान परिवर्तन नहीं था, बल्कि सत्य की रक्षा, दीन की स्वतंत्रता और एक नये इस्लामी समाज की स्थापना की ओर उठाया गया एक निर्णायक क़दम था।

मदीना का संविधान–

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मदीना तशरीफ़ लाये, तो वहाँ विभिन्न क़बीलों और धर्मों के लोग आबाद थे। इनमें मुसलमान बन चुके औ़स और ख़ज़राज के क़बीले, यहूदी क़बीले—बनू क़ैनक़ाअ़, बनू नज़ीर, बनू क़ुरैज़ा तथा कुछ अन्य ग़ैर-मुस्लिम अ़रब भी शामिल थे। एक संगठित और शांतिपूर्ण समाज की स्थापना के लिए आवश्यक था कि सभी के अधिकार और कर्तव्य निर्धारित किये जाएँ तथा आपसी विवादों के समाधान के लिए कोई स्पष्ट व्यवस्था हो। इसी उद्देश्य से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक लिखित समझौता तैयार किया, जिसे इतिह़ास में "मिसाक़-ए-मदीना" (मदीना का संविधान) कहा जाता है। (इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-2, पृष्ठ 147–150)

मिसाक़-ए-मदीना के मुख्य उद्देश्य–

- मदीना में क़बीलों के झगड़ों, विशेष रूप से औ़स और ख़ज़राज की पुरानी दुश्मनी को समाप्त करके शहर में शांति और सुरक्षा स्थापित करना उद्देश्य था।

● बाहरी ख़तरों, विशेष रूप से क़ुरैश के संभावित आक्रमणों के मुक़ाबिले के लिए सामूहिक रक्षा व्यवस्था स्थापित की गई।

● यहूदियों और मुसलमानों दोनों को अपने-अपने धर्म पर चलने की स्वतंत्रता देकर धार्मिक सहिष्णुता की नींव रखी गई।

● बड़े विवादों के समाधान के लिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नेतृत्व में क़ानून और न्याय की एक मज़बूत व्यवस्था स्थापित की गई।

● मदीना के सभी निवासियों को एक संयुक्त राजनीतिक समुदाय घोषित करके सामूहिक ज़िम्मेदारी और आपसी सहयोग को बढ़ावा दिया गया।

(इब्ने हिशाम, भाग 2, पृष्ठ 147)

अहले मक्का से युद्ध-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मक्का से हिजरत कर जाने के बाद भी क़ुरैश की दुश्मनी कम नहीं हुई, बल्कि उन्होंने मदीना के मुसलमानों को लगातार धमकियाँ देना शुरु कर दिया। वे इस नये इस्लामी केंद्र को समाप्त कर देना चाहते थे और आक्रमण की तैयारियाँ कर रहे थे।

जिस प्रकार मुसलमानों को अपने दीन और जीवन की रक्षा के लिए अपना वतन छोड़ना पड़ा था, उसी प्रकार अब उनके लिए अपनी सुरक्षा हेतु तैयार होना भी अनिवार्य हो गया। परिस्थितियाँ यहाँ तक पहुँच गईं कि मामला केवल धर्म की रक्षा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि मुसलमानों के अस्तित्व और जीवन का प्रश्न बन गया। इसलिए उन्हें अपनी सुरक्षा और शांति की स्थापना के लिए विवश होकर रक्षा का निर्णय लेना पड़ा।

रक्षा हेतु निर्णय-

● इस परिस्थिति के बारे में प्रसिद्ध स्कॉटिश इतिह़ासकार **Thomas Carlyle** अपनी पुस्तक **On Heroes, Hero-Worship and the Heroic in History** में लिखते हैं-

"But now, driven foully out of his native country, since unjust men had not only given no ear to his earnest Heaven's-message…

but would not even let him live if he kept speaking it,—the wild Son of the Desert resolved to defend himself, like a man and Arab."
(Thomas Carlyle, On Heroes, Hero-Worship, and the Heroic in History, Lecture II:The Hero as Prophet—Mahomet: Islam, London: James Fraser, 1841, Page 61)

अनुवाद-

"अब जबकि उन्हें अत्याचारपूर्वक उनके वतन से निकाल दिया गया था और अत्याचारी लोगों ने न केवल उनके आसमानी संदेश को सुनने से इन्कार कर दिया था, बल्कि यदि वे उसे सुनाते रहते तो उन्हें जीवित भी न रहने देते, तब इस रेगिस्तान के पुरुष ने एक बहादुर इंसान और एक अ़रब की तरह अपनी रक्षा करने का निर्णय लिया"।

नोट-

यह उद्धरण स्पष्ट करता है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की लड़ाईयाँ आक्रामक नहीं थीं, बल्कि परिस्थितियों की मजबूरी और आत्मरक्षा की आवश्यकता के अन्तर्गत थीं, जब शत्रुओं ने आपके और आपके अनुयायियों के लिए जीवन को असम्भव बना दिया था।

जंग की पहली अनुमति-

मदीना हिज्रत के बाद जब क़ुरैश की ओर से लगातार आक्रमण की तैयारियाँ, षड्यंत्र और अत्याचार जारी रहे, तब अल्लाह तआ़ला ने पहली बार मुसलमानों को रक्षात्मक युद्ध (क़िताल) की अनुमति प्रदान की। मुफ़स्सिरीन (व्याख्याकारों) के अनुसार यही वे पहली आयतें हैं जिनमें युद्ध की अनुमति दी गई।

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

أُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَإِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ﴿٣٩﴾ الَّذِيْنَ
أُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّآ أَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ
النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ
فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ إِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾

अनुवाद-

"अनुमति दी जाती है उन लोगों को जिनसे युद्ध किया जा रहा है, क्योंकि उन पर अत्याचार हुआ है और निस्संदेह अल्लाह उनकी सहायता करने पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है। ये वे लोग हैं जिन्हें अन्यायपूर्वक उनके घरों से निकाल दिया गया, केवल इस कारण कि वे कहते थे, "हमारा रब अल्लाह हैऔर निश्चय ही अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा जो उसके दीन की सहायता करेगा। निस्संदेह अल्लाह अत्यंत शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है"।

(सूरः अल्-ह़ज्ज, आयत **39–40**)

● इब्ने कसीर लिखते हैं, "यह क़िताल के विषय में नाज़िल होने वाली पहली आयत है और इसमें उन लोगों को अनुमति दी गई है जिन पर अत्याचार किया गया और जिन्हें उनके घरों से निकाल दिया गया था"।

(इब्ने कसीर, तफ़्सीर अल्-क़ुर्आन अल्-अ़ज़ीम, भाग-**5**, पृष्ठ **430–432**)

युद्ध की अनुमति का कारण-

क़ुर्आन के शब्द "बिअन्नहु ज़ुलिमू" अर्थात—"क्योंकि उन पर अत्याचार किया गया—इस सत्य को स्पष्ट करते हैं कि मुसलमानों को क़िताल (युद्ध) की अनुमति केवल इसलिए दी गई कि वे अत्याचार और उत्पीड़न का शिकार बने थे। उन्हें अन्यायपूर्वक उनके घरों से निकाल दिया गया, उनकी धार्मिक स्वतंत्रता छीन ली गई और उनकी जान-माल को गंभीर ख़तरे उत्पन्न हो गये थे। इसलिए यह अनुमति आक्रमण के लिए नहीं, बल्कि अत्याचार के अंत के लिए थी।

आत्मरक्षा की अनुमति-

इसके अतिरिक्त अगली आयत से यह भी स्पष्ट होता है कि यह कोई नई अनुमति नहीं थी, बल्कि आपसे पूर्व नबियों के अनुयायियों को भी अत्याचारियों और सत्य के विरोधियों के विरुद्ध आत्मरक्षा की अनुमति दी जाती रही थी। यदि ऐसा न होता, तो विभिन्न धर्मों और उनकी उपासना स्थलों को मिटा दिया जाता।

मुफ़स्सिरीन (व्याख्याकारों) ने लिखा है कि यदि पीड़ितों को अपनी रक्षा का अधिकार न दिया जाए तो अत्याचार का द्वार खुल जाता है और असत्य शक्तियाँ कमज़ोर लोगों को समाप्त कर देती हैं।

इसीलिए अगली आयत में बताया गया कि यदि अल्लाह लोगों को एक-दूसरे के माध्यम से न रोकता, तो मठ, गिरजाघर, उपासना स्थल और मस्जिदें—जहाँ अल्लाह का नाम लिया जाता है सब ध्वस्त कर दी जातीं। इससे स्पष्ट होता है कि क़िताल की अनुमति केवल मुसलमानों की रक्षा के लिए नहीं थी, बल्कि सभी धर्मों के उपासना स्थलों और धार्मिक स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए भी थी।

इस्लाम में जिहाद का अर्थ-

अक्सर लोग 'जिहाद' का अर्थ केवल युद्ध और रक्तपात समझते हैं, जबकि अ़रबी भाषा में जिहाद का वास्तविक अर्थ है—किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पूरी शक्ति के साथ प्रयास और संघर्ष करना। क़ुर्आन में यह शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। जैसे ईमान, सब्र, दअ़वत, सुधार और रक्षा आदि को अल्लाह की राह में संघर्ष कहा गया है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ

अनुवाद-

"और अल्लाह की राह में ऐसा जिहाद करो जैसा जिहाद करने का अधिकार है"। (सूरः अल्-ह़ज्जः 78)

प्रसिद्ध सीरतनिगार 'सय्यद सुलेमान नदवी' जिहाद की परिभाषा करते हुए लिखते हैं-

"सत्य (इस्लाम) की श्रेष्ठता, उसके प्रचार और संरक्षण के लिए हर प्रकार का प्रयास और त्याग सहन करना तथा शारीरिक, आर्थिक और मानसिक सभी शक्तियों को— जो अल्लाह ने मनुष्य को प्रदान की हैं— इस मार्ग में लगा देना यहाँ तक कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी जान और अपने

प्रिय सम्बन्धों को भी कुर्बान कर देना और शत्रु के आक्रमणों को रोकना"।

(सीरतुन्नबी, भाग 5, पृष्ठ 269, दारुल मुसन्निफ़ीन आज़मगढ़)

जिहाद और क़िताल में अन्तर-

क़ुर्आन में 'जिहाद' और 'क़िताल' दोनों शब्द अलग-अलग प्रयुक्त हुए हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि दोनों का अर्थ एक नहीं है। "जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह" का अर्थ है, अल्लाह की प्रसन्नता के लिए हर सम्भव संघर्ष करना।

जबकि "क़िताल फ़ी सबीलिल्लाह" का अर्थ है—

अल्लाह की राह में युद्ध करना। विशेष रूप से वह सशस्त्र रक्षा, जो अत्याचार के सामने अनिवार्य हो जाए।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ

अनुवाद-

"और अल्लाह की राह में उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़ते हैं, लेकिन सीमा का उल्लंघन न करो"। (सूरः अल्-बक़रः 190)

जिहाद का व्यापक अर्थ-

जिहाद एक व्यापक और समग्र संघर्ष का नाम है। क़िताल जिहाद का एक रूप है, लेकिन जिहाद केवल युद्ध तक सीमित नहीं है। इसका मूल उद्देश्य सत्य की रक्षा, अत्याचार का अंत और शांति की स्थापना है। इस प्रकार इस्लाम में जिहाद का विचार केवल तलवार तक सीमित नहीं, बल्कि ईमान, चरित्र, दअ़वत और त्याग पर आधारित एक व्यापक संघर्ष का नाम है।

माल के माध्यम से-

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ⑮

अनुवाद-

"सच्चे मोमिन वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाये, फिर संदेह में नहीं पड़े और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद किया, यही लोग सच्चे हैं"। (सूरः अल्-हुजूरात, आयत नं० 15)

व्याख्या-

इस आयत से ज्ञात होता है कि जिहाद केवल युद्धभूमि तक सीमित नहीं है, बल्कि अपने धन को अल्लाह की प्रसन्नता के लिए खर्च करना। जैसे ज़रूरतमंदों की सहायता करना, दीन की सेवा करना और नेक कार्यों में सहयोग देना भी जिहाद का एक महत्वपूर्ण रूप है।

शिक्षा और बुद्धिमत्ता के माध्यम से जिहाद-

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ

अनुवाद-

"अपने रब के मार्ग की ओर लोगों को बुद्धिमत्ता और उत्तम उपदेश के साथ बुलाइये और यदि वे वाद-विवाद करें तो श्रेष्ठ तरीके से कीजिए"।

(सूरः अन्-नहल, आयत 125)

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾

अनुवाद-

"आप काफ़िरों की बात न मानें और इस क़ुर्आन के माध्यम से उनके विरुद्ध बड़ा जिहाद करें"। (सूरः अल्-फ़ुर्क़ान, आयत 52)

व्याख्या-

यहाँ जिहाद का अर्थ बौद्धिक और वैचारिक संघर्ष है— अर्थात् तर्क, बुद्धिमत्ता, दअ़वत और नैतिकता के माध्यम से सत्य को स्पष्ट करना। इससे सिद्ध होता है कि कलम और ज्ञान का जिहाद भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

माल और जान के माध्यम से-

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ

فِيْ سَبِيْلِ اللهِ

अनुवाद–

"निस्संदेह वे लोग जो ईमान लाये, हिज़रत की और अपने माल तथा अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद किया"। (सूरः अलू-अन्फाल, आयत नं० 72)

व्याख्या–

यह आयत दर्शाती है कि पूर्ण ईमान का तक़ाज़ा यह है कि मनुष्य आवश्यकता पड़ने पर अपनी क्षमताएँ, धन, संसाधन और यहाँ तक कि अपना जीवन भी सत्य के लिए प्रस्तुत करने को तैयार रहे।

अत्याचार की सज़ा–

जब अत्याचार अपनी सीमा पार कर जाए और आत्मरक्षा अनिवार्य हो जाए तब क़िताल (युद्ध) की अनुमति दी जाती है। यहाँ क़िताल की महत्ता का वर्णन किया गया है, जिसमें अल्लाह तआ़ला ने अत्याचारियों, दीन में बाधा डालने वालों और लगातार विरोध करने वालों के विरुद्ध युद्ध की अनुमति दी है।

इन आयतों से स्पष्ट होता है कि जिहाद एक व्यापक संघर्ष का नाम है, जिसमें धन ख़र्च करना, ज्ञान और बुद्धिमत्ता के माध्यम से सत्य का प्रचार करना, व्यावहारिक प्रयास करना और आवश्यकता पड़ने पर रक्षा में भाग लेना सब शामिल हैं।

इसका अर्थ केवल युद्ध तक सीमित नहीं है, बल्कि हर वह प्रयास जो अल्लाह की प्रसन्नता और सत्य की स्थापना के लिए किया जाए जिहाद कहलाता है।

अतः क़िताल जिहाद का एक रूप अवश्य है, लेकिन जिहाद का दायरा उससे कहीं अधिक व्यापक है।

इस्लाम में तलूवार का प्रयोग–

इस्लाम में तलूवार का विचार केवल युद्ध और संघर्ष का प्रतीक नहीं है, बल्कि न्याय, सुरक्षा और ज़िम्मेदारी का प्रतीक है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने

संसार को यह शिक्षा दी कि शक्ति का वास्तविक उद्देश्य प्रभुत्व स्थापित करना नहीं, बल्कि अत्याचार का अंत करना और शांति की स्थापना करना है।

हथियार का प्रयोग-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षाओं में हथियार उठाना कोई पसंदीदा कार्य नहीं है, लेकिन जब मानवता कराहने लगे, स्वतंत्रता छीन ली जाए उपासना स्थल असुरक्षित हो जाएँ और कमज़ोर लोगों की जान-माल का कोई मूल्य न रहे तब केवल मौन दर्शक बने रहना भी एक प्रकार का अन्याय बन जाता है।

ऐसे समय तलवार केवल लोहे का एक टुकड़ा नहीं रहती, बल्कि पीड़ितों की रक्षा और अत्याचारियों की क्रूरता को रोकने का साधन बन जाती है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तलवार को प्रतिशोध का नहीं, बल्कि सिद्धांतों का अनुयायी बनाया। आपने सिखाया कि युद्ध भी नैतिक सीमाओं के भीतर रहकर लड़ा जाए न बच्चों पर हाथ उठाया जाए न महिलाओं और वृद्धों को हानि पहुँचाई जाए न खेतों को उजाड़ा जाए और न उपासना में लगे लोगों को सताया जाए।

तलवार का सिद्धान्त-

इस प्रकार तलवार को भी दया, न्याय और मानवता के अधीन कर दिया गया। यह वह महान परिवर्तन था जिसने शक्ति को क्रूरता से निकालकर ज़िम्मेदारी का रूप दिया।

वास्तव में तलवार स्वयं कभी ग़लत नहीं होती, ग़लत वह हाथ होते हैं जो उसे घृणा, पक्षपात या लालच के लिए उठाते हैं।

दुर्भाग्यवश इतिह़ास में जब इस सिद्धान्त को भुला दिया गया, तो तलवार का स्वरूप भी विकृत होता चला गया और लोगों ने यह समझ लिया कि इस्लाम तलवार का धर्म है, जबकि वास्तविकता यह है कि इस्लाम ने तलवार को अन्तिम उपाय माना है, पहला नहीं।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मानव स्वभाव और समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए युद्ध को एक संगठित और नैतिक दायरे में रखा। आपकी शिक्षाओं से स्पष्ट होता है कि युद्ध चाहे कितना ही अनिवार्य क्यों न हो, उसमें जल्दबाजी, आक्रमण और सिद्धांतहीनता की कोई गुंजाइश नहीं है।

मुजाहिदीन को शिक्षा-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मुजाहिदीन को सदैव धैर्य, संयम और बुद्धिमत्ता की शिक्षा देते थे। चुनाँचे एक अवसर पर आपने फ़रमाया, "दुश्मन से सामना होने की इच्छा मत करो और अल्लाह से सुरक्षा माँगो, लेकिन जब सामना हो जाए तो दृढ़ बने रहो"। (सह़ीह़ बुख़ारी, 3026)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत का एक प्रमुख पहलू यह भी है कि आपने युद्ध को कभी इच्छा या सत्ता विस्तार का माध्यम नहीं बनाया, बल्कि उसे एक ज़िम्मेदार और नैतिक कार्य तक सीमित रखा।

चुनाँचे 10 हिजरी में जब ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) को लगभग 300 सवारों के साथ यमन की ओर भेजा गया, तो आपने स्पष्ट निर्देश दिया कि पहले दअ़वत दी जाए और पहले युद्ध न किया जाए।

"यदि तुम उनकी भूमि में पहुँच जाओ, तो उनसे युद्ध मत करना जब तक वे तुम पर आक्रमण न करें"।

(इब्ने सअ़द, अत्-तब्क़ातुल कुबरा, भाग-2, पृष्ठ 146–147)

इसी प्रकार जंगे बद्र के अवसर पर भी आपने ज़ल्दबाजी से रोका और फ़रमाया-

"जब काफ़िर तुम्हारे निकट आ जाएँ तभी तीर चलाना और जब तक वे तुम पर पूरी तरह न टूट पड़ें, तलवार न निकालना"।

(इब्ने कसीर, अल्-बिदायह वन्निहायह, भाग-3, पृष्ठ 290)

De Lacy O'Leary के अनुसार-

"History makes it clear, however, that the legend of fanatical

Muslims sweeping through the world and forcing Islam at the point of the sword upon conquered races is one of the most fantastically absurd myths that historians have ever repeated."

(De Lacy O'Leary, Islam at the Crossroads, London: Kegan Paul, Trench, Trubner & & Co; 1923, Chapter 1

अनुवाद-

"इतिहास इस बात को स्पष्ट करता है कि यह धारणा कि उन्मादी मुसलमान पूरी दुनिया में फैल गये और उन्होंने विजित लोगों को तलवार की नोक पर इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर किया— इतिहास के सबसे निराधार और हास्यास्पद मिथकों में से एक है"।

● इसी प्रकार **Thomas W- Arnold** के अनुसार-

"We must not suppose that the Muslim conquerors were always accompanied by missionaries with the sword in one hand and the Qur'an in the other." **(Thomas W. Arnold, The Preaching of Islam: A History of the Propagation of the Muslim Faith, London: Introduction / Early Chapters)**

अनुवाद-

"यह समझना सही नहीं है कि मुस्लिम विजेता हमेशा एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में कुर्आन लेकर लोगों को इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर करते थे"।

● इसी प्रकार **Philip K. Hitti** के अनुसार-

"The belief that Islam was spread by the sword is one of the most persistent myths in Western historiography."

(Philip K. Hitti, History of the Arabs, London: Macmillan, 1937)

अनुवाद-

"यह धारणा कि इस्लाम तलवार के माध्यम से फैलाया गया, पश्चिमी इतिहास लेखन के सबसे अधिक प्रचलित और लम्बे समय तक बने रहने वाले मिथकों में से एक है"।

क़ुर्आन पर आपत्ति की वास्तविकता-

कुछ आलोचक क़ुर्आन की सूरः अल्-बक़रा की आयत नं० 190–193 में आने वाले शब्द وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ "उन्हें जहाँ पाओ मारो" को उसके संदर्भ से अलग करके यह प्रभाव देने की कोशिश करते हैं कि क़ुर्आन हर "ग़ैर-मुस्लिम" को जहाँ मिले वहाँ मार डालने का आदेश देता है।

इन्हीं आयतों के आधार पर इस्लाम के विरुद्ध यह प्रचार किया जाता है कि क़ुर्आन मुसलमानों को आदेश देता है कि काफ़िरों को जहाँ पाओ उनकी गर्दन मार दो।

जबकि उसी स्थान पर क़ुर्आन ने युद्ध का कारण, उसकी सीमाएँ, नैतिक नियम और युद्ध रोकने की शर्तें स्वयं स्पष्ट कर दी हैं।

यदि पूरी आयतों का संदर्भ पढ़ा जाए तो यह आपत्ति स्वतः समाप्त हो जाती है। इसकी विस्तृत व्याख्या निम्नलिखित है-

(1) मूल आदेशः युद्ध केवल "उनसे" जो युद्ध करें — अत्याचार निषिद्ध इन आयतों की शुरुआ़त ही इस सिद्धांत से होती है-

नैतिक मर्यादाएँ-

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ

अनुवाद-

"और अल्लाह की राह में उन लोगों से युद्ध करो जो तुमसे युद्ध करते हैं, लेकिन सीमा का उल्लंघन न करो"। (सूरः अल्-बक़रः 190)

यहाँ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ अर्थात "जो तुमसे युद्ध करते हैं"— युद्ध की सीमा निर्धारित करता है और وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ अर्थात् "अत्याचार न करो"— युद्ध के भीतर भी नैतिक मर्यादाएँ स्थापित करता है।

'अल् तबरी' ने وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ की तफ़्सीर में स्पष्ट लिखा है कि अत्याचार में उदाहरणत महिलाओं और बच्चों की हत्या करना तथा उन लोगों को मारना शामिल है जिन्हें मारने की अनुमति नहीं है।

(तफ़्सीर अल् तबरी, भाग-3, पृष्ठ 562–563, तफ़्सीर सूरः अल्-बक़रः आयत-190)

युद्ध को वैध करने का कारण-

इसी प्रकार अल् कुर्तुबी लिखते हैं कि यह आयत क़िताल (युद्ध) के आदेश में नाज़िल होने वाली प्रारम्भिक आयतों में से है। हिजरत से पहले मुसलमानों को युद्ध की अनुमति नहीं थी, फिर मदीना के दौर में नियमों और सीमाओं के साथ युद्ध को वैध किया गया।

(तफ़्सीर कुर्तुबी, भाग-2, पृष्ठ 348, तफ़्सीर सूरः अल्-बक़रः आयत 190)

काफ़िरों को मारो-

"उन्हें जहाँ पाओ मारो"— यह वाक्य किसके बारे में है?

अगली आयत में कहा गया है-

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ

अनुवाद-

"और उन्हें जहाँ पाओ, मारो और जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है, तुम भी उन्हें वहाँ से निकालो"। (सूरः अल्-बक़रः 191)

यह आयत किसी भी सामान्य ग़ैर-मुस्लिम के बारे में नहीं है, बल्कि उन अत्याचारियों और युद्ध करने वालों के बारे में है जिन्होंने मुसलमानों को उनके घरों से निकाला, उन पर अत्याचार किये और उनके विरुद्ध युद्ध छेड़ा अर्थात् यह आदेश एक विशेष युद्धकालीन परिस्थिति से सम्बन्धित है, न कि हर समय और हर ग़ैर-मुस्लिम के लिए कोई सामान्य आदेश।

सान्य काफ़िर के लिए आदेश नहीं-

यह वाक्य अपने से पहले दिये गये आदेश (सूरः अल्-बक़रः आयत 190 की तफ़्सीर) की शाखा है अर्थात् सम्बोधन उन्हीं लोगों के बारे में है जो युद्ध करते हैं, लोगों को उनके घरों से निकालते हैं और दीन से रोकने वाली फ़ित्ना-अंगेज़ी करते हैं। यह किसी सामान्य 'काफ़िर' के बारे में खुला और सार्वभौमिक आदेश नहीं है।

इब्ने कसीर भी इसी संदर्भ को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि यह आयत (मदीना में) क़िताल के विषय में प्रारम्भिक आयतों में से है। फिर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) "जो उनसे युद्ध करता उससे युद्ध करते और जो रुक जाता उससे रुक जाते" अर्थात् जो लड़ता उससे मुक़ाबिला करते और जो युद्ध छोड़ देता उससे युद्ध बन्द कर देते।

फ़ित्ना क्या है?

"फ़ित्ना हत्या से भी अधिक गम्भीर है" — फ़ित्ना क्या है?

आयत नं० 191 में एक मूल सिद्धांत बताया गया-

وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ "और फ़ित्ना हत्या से भी अधिक गंभीर है"।

मुफ़स्सिरीन (व्याख्याकारों) ने "फ़ित्ना" की प्रमुख व्याख्या यह की है कि लोगों को दीन से रोकना, अत्याचार करना और धार्मिक उत्पीड़न करना, यह अपराध किसी की जान लेने से भी अधिक गम्भीर है, क्योंकि यह मनुष्य के ईमान, अंतरात्मा और धार्मिक स्वतंत्रता पर आक्रमण है।

इब्ने कसीर के कथन में भी "फ़ित्ना" को कुफ़्र, शिर्क और अल्लाह के मार्ग से रोकने के अर्थ में 'हत्या' से अधिक गम्भीर बताया गया है।

युद्ध की मनाही-

मस्जिद-ए-हराम के पास युद्ध की मनाही है लेकिन यदि शत्रु स्वयं युद्ध करें तो इस संदर्भ में क़ुर्आन में है-

"और मस्जिद-ए-हराम के पास उनसे युद्ध न करो, जब तक वे स्वयं वहाँ तुमसे युद्ध न करें"। (सूरः अल्-बक़रः 191)

यह आयत स्वयं स्पष्ट कर रही है कि उद्देश्य "सामूहिक हत्या" नहीं, बल्कि आत्मरक्षा और आक्रमण का प्रतिरोध है। यदि वे युद्ध आरम्भ करें, तभी मुक़ाबिले की अनुमति है अन्यथा नहीं।

युद्ध रोकने की शर्तें-

युद्ध रोकने की शर्त- यदि वे रुक जाएँ तो तुम भी रुक जाओ।

इसी संदर्भ में आगे स्पष्ट शर्त रखी गई है-

"फिर यदि वे रुक जाएँ तो (तुम भी रुक जाओ) निस्संदेह अल्लाह अत्यंत क्षमाशील और दयावान है"। (सूरः अल्-बक़रः 192)

आगे फ़रमाया, "फिर यदि वे रुक जाएँ तो अत्याचार केवल ज़ालिमों पर है"। (सूरः अल्-बक़रः 193)

क़िताल का उद्देश्य-

यह सिद्धांत बताता है कि क़िताल का उद्देश्य अत्याचार और फ़ित्ना का अन्त करना है। जैसे ही आक्रमण बन्द हो जाए युद्ध भी समाप्त कर दिया जाए।

अत्याचार न करो-

"अत्याचार न करो" की व्यावहारिक व्याख्याः ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम) के युद्ध सम्बन्धी सुकथनों से की जा सकती है। जैसा कि क़ुर्आन में है-

क़ुर्आन के आदेश وَلَا تَعْتَدُوْا۟ अर्थात् "अत्याचार न करो" की व्यावहारिक व्याख्या ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम) के युद्धभूमि में उनके स्पष्ट निर्देशों के माध्यम से की जा सकती है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने महिलाओं, बच्चों और अन्य ग़ैर-युद्धरत व्यक्तियों (Non-combatants) की हत्या करने से कठोरता से मना किया। चुनाँचे जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम) सेना को रवाना करते तो फ़रमाते-

युद्ध के समय आदेश-

"किसी वृद्ध व्यक्ति, किसी दूध पीते शिशु, किसी बच्चे और किसी महिला की हत्या न करना"। (सुनन अबी दाऊद 2614)

● और सह़ीह़ मुस्लिम में है कि एक युद्ध में एक महिला मृतक पाई गई, तो रसूलुल्लाह (सल्लल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने महिलाओं और बच्चों की हत्या से मना फरमाया।

(सह़ीह़ मुस्लिम-1744)

यही वह 'सीमाएँ' हैं, जिन्हें क़ुर्आन ने "अत्याचार न करो" कहकर

अनिवार्य बनाया था।

हत्या और विनाश-

उपरोक्त आयतों और तफ़्सीरों से यह सत्य पूर्ण स्पष्टता के साथ सामने आता है कि क़ुर्आन ने युद्ध का कोई असीमित या आक्रामक सिद्धांत प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे कठोर नैतिक नियमों और स्पष्ट शर्तों का पालन करने का आदेश दिया है।

وَلَا تَعْتَدُوْا۟ अर्थात् "अत्याचार न करो" का आदेश इस बात का मूल प्रमाण है कि इस्लाम में क़िताल का उद्देश्य हत्या और विनाश नहीं, बल्कि अत्याचार, दमन और फ़ित्ना का अंत करना है।

युद्ध का आधार-

युद्ध की अनुमति केवल उन लोगों के विरुद्ध दी गई जो स्वयं युद्ध करें, मुसलमानों को उनके घरों से निकालें या उन्हें अपने धर्म पर चलने से रोकें। इसके अतिरिक्त केवल किसी व्यक्ति के ग़ैर-मुस्लिम होने के आधार पर उसे नुक़्सान पहुँचाने की अनुमति हरगिज़ नहीं दी जा सकती।

शाँतिपूर्ण समाज की स्थापना-

मुफ़स्सिरीन-ए-किराम — जैसे अल् तबरी, अल् क़ुर्तुबी और इब्ने कसीर सभी इस बात पर सहमत हैं कि ये आयतें रक्षात्मक प्रकृति की हैं और इनका वास्तविक उद्देश्य एक न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण समाज की स्थापना है।

इसके अतिरिक्त हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यावहारिक निर्देशों ने इस सिद्धांत को और अधिक मज़बूत कर दिया कि युद्ध में भी महिलाओं, बच्चों, वृद्धों और अन्य ग़ैर-युद्धरत व्यक्तियों को निशाना बनाना स्पष्ट अत्याचार है। अतः यह कहना कि क़ुर्आन सामान्य रूप से "काफ़िरों को जहाँ पाओ मार डालो" का आदेश देता है, आयतों को उनके संदर्भ से अलग करके प्रस्तुत करने के समान है।

शाँति की स्थापना-

जब इन आयतों को उनके पूर्ण संदर्भ और क़ुर्आनी निर्देशों के साथ पढ़ा

जाता है, तो स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम ने युद्ध को अन्तिम उपाय (Last Resort) के रूप में रखा है, जिसका उद्देश्य उपद्रव फैलाना नहीं, बल्कि शांति की स्थापना, अन्याय का अन्त और मानव जीवन तथा सम्मान की रक्षा करना है।

इस्लामी शिक्षाओं का प्रभाव-

एक हिन्दू विद्वान जगत महर्षि ने अपनी पुस्तक Jagat Maharshi में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत और शिक्षाओं के प्रभाव पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा है-

अ़रब का इतिह़ास इस बात का साक्षी है कि नुबूवत से पहले वहाँ अज्ञानता, नैतिक पतन, क़बीलाई पक्षपात, शराबखोरी और अनेक प्रकार की बुराईयाँ फैली हुई थीं, लेकिन मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षाओं ने केवल तेईस वर्षों की छोटी अवधि में उस क़ौम की तक़्दीर बदल दी।

वे मानव समानता को इस्लाम की प्रमुख विशेषता बताते हुए लिखते हैं-

इस्लाम ने मालिक और ग़ुलाम, अमीर और ग़रीब तथा गोरे और काले के बीच हर प्रकार की नस्ली और पारिवारिक श्रेष्ठता को समाप्त कर दिया और सम्मान तथा श्रेष्ठता का आधार केवल तक़्वा और अच्छे कर्मों को ठहराया।

वह आगे लिखते हैं कि इस्लाम की विरासत व्यवस्था और ज़कात प्रणाली इस बात का प्रमाण है कि यह धर्म धन के अत्यधिक केंद्रीकरण के विरुद्ध और न्यायपूर्ण आर्थिक वितरण का समर्थक है।

विरासत के नियम-

विरासत के नियम परिवार के प्रत्येक सदस्य को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करते हैं, जबकि ज़कात समाज के ग़रीब और ज़रूरतमंद वर्ग को सम्मानजनक जीवन का अवसर देती है।

उनके अनुसार ये सिद्धांत पूँजीवाद के अहंकार और शोषण के मुक़ाबिले एक न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था प्रस्तुत करते हैं।

क्षमा और उदारता-

जगत महर्षि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की क्षमा और उदारता का उल्लेख करते

हुए लिखते हैं कि आपकी एक पुत्री को इस्लाम के एक शत्रु ने अत्यंत कष्ट पहुँचाया, लेकिन जब वही व्यक्ति बाद में आपके सामने आया तो आपने अद्वितीय दया और क्षमा का व्यवहार किया।

आचरण की तलूवार-

इसी आधार पर वे इस आपत्ति का खण्डन करते हैं कि "इस्लाम तलूवार के बल पर फैला" वह कहते हैं कि यदि कोई तलवार थी, तो वह लोहे की नहीं बल्कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उच्च चरित्र, धैर्य, क्षमाशीलता और पवित्र आचरण की तलूवार थी, जिसने लोगों के दिलों को जीत लिया। उनके अनुसार अत्याचार और बलपूर्वक कोई धर्म स्थायी नहीं हो सकता। इस्लाम की स्थिरता और लोकप्रियता का रहस्य उसकी नैतिक शिक्षाओं में निहित है।

(जगत महर्षि, पृष्ठ **62–68**)

महात्मा गाँधी जी के अनुसार इस्लाम की तलूवार-

महात्मा गाँधी जी ने अपने समाचारपत्र **Young India** में इस्लाम के बारे में लिखा-

I wanted to know the best of the life of one who holds today an undisputed sway over the hearts of millions of mankind… I became more than ever convinced that it was not the sword that won a place for Islam in those days in the scheme of life."

(M. K. Gandhi, Young India, 1924 (À: C. F. Andrews, Mahatma Gandhi's Ideas, London: George Allen & Unwin, 1929, page 124)

अनुवाद-

"मैं उस महान व्यक्तित्व के जीवन के श्रेष्ठ पहलुओं को जानना चाहता था, जो आज लाखों लोगों के दिलों पर बिना किसी साझेदारी के शासन कर रहा हैऔर मैं पहले से भी अधिक इस बात का विश्वास करने लगा कि उन दिनों जीवन की व्यवस्था में इस्लाम को जो स्थान प्राप्त हुआ, वह तलवार के माध्यम से नहीं था"।

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार-

स्वामी विवेकानन्द ने अपने भाषणों में इस्लाम की सामाजिक समानता पर प्रकाश डालते हुए कहा-

"It is a mistake to think that the sword converted people to Islam. It was the equality preached by Islam that appealed to the lower classes."

(Swami Vivekananda, The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol. 3, Advaita Ashrama, 1989 reprint, page 291)

अनुवाद-

"यह समझना भूल है कि (भारत में) लोगों को तलूवार के माध्यम से इस्लाम स्वीकार कराया गया। वास्तव में इस्लाम द्वारा प्रस्तुत समानता ने निम्न वर्गों को अपनी ओर आकर्षित किया"।

De Lacy O'Leary के अनुसार-

प्रसिद्ध शोधकर्ता **De Lacy O'Leary** ने अपनी पुस्तक **Islam at the Crossroads** में लिखा-

"History makes it clear however that the legend of fanatical Muslims sweeping through the world and forcing Islam at the point of the sword upon conquered races is one of the most fantastically absurd myths that historians have ever repeated."

(D. Lacy O'Leary, Islam at the Crossroads, London: Kegan Paul, Trench, Trubner & Co 192 , Page 8)

अनुवाद-

"इतिहास इस बात को स्पष्ट करता है कि यह मिथक कि कट्टर मुसलमान पूरी दुनिया में फैल गये और तलूवार की नोक पर विजित लोगों को इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर करते रहे—उन अत्यंत निराधार और मूर्खतापूर्ण कथाओं में से है जिन्हें कुछ इतिहासकारों ने बार-बार दोहराया है"।

इन तीनों ग़ैर-मुस्लिम विद्वानों के कथनों से यह स्पष्ट होता है कि

"इस्लाम तलवार के बल पर फैला" वाला विचार ऐतिहासिक दृष्टि से सही नहीं है, बल्कि इस्लाम की नैतिक, सामाजिक और समानता पर आधारित शिक्षाएँ ही उसकी लोकप्रियता का मूल कारण थीं।

इस्लाम की नैतिक शिक्षा-

इस्लाम की शिक्षाओं की विशेषता यह है कि वे युद्ध के मैदान में भी नैतिकता के दीपक को बुझने नहीं देतीं। जिन आयतों में मुसलमानों को क़िताल (युद्ध) की अनुमति दी गई, उन्हीं में यह उच्च शिक्षा भी दी गई कि यदि शत्रु अत्याचार और आक्रमण से रुक जाए तो हाथ रोक लिया जाए क्योंकि अल्लाह अत्यंत क्षमाशील और दयावान है अर्थात् क़ुर्आन ने मुसलमानों को केवल शक्ति का प्रयोग करना नहीं सिखाया, बल्कि शक्ति के भीतर भी दया, संयम और न्याय की भावना उत्पन्न की।

अत्याचार का विरोध-

इसी विषय को क़ुर्आन की सूरः अलू-अन्फ़ाल की आयतें (39–40) इस प्रकार स्पष्ट करती हैं कि युद्ध केवल उस समय तक है जब तक फ़ित्ना अर्थात दीन के मार्ग में बाधा और अत्याचार समाप्त न हो जाए और यदि वे रुक जाएँ तो अल्लाह उनके कर्मों को देखने वाला है और वही सबसे उत्तम संरक्षक और सहायक है।

इस शैली में न प्रतिशोध की अग्नि है और न प्रभुत्व की लालसा बल्कि उद्देश्य केवल इतना है कि सत्य का मार्ग खुल जाए और मनुष्य अपने धर्म और विश्वास के चयन में स्वतंत्र हो सके।

इस्लाम ने युद्ध को किसी सांसारिक लाभ, भूमि-विस्तार या जातीय अहंकार से नहीं जोड़ा। उसका एकमात्र उद्देश्य अत्याचार का अंत और सत्य की रक्षा है, चुनाँचे विरोधियों को दो भागों में विभाजित किया गया-

वे लोग जो अत्याचार से रुक जाएँ—चाहे इस्लाम स्वीकार करें या अपने धर्म पर क़ायम रहते हुए मुसलमानों पर अत्याचार न करें। वह लोग जो व्यावहारिक रूप से युद्ध छोड़ दें।

युद्ध पर रोक–

कुर्आन का स्पष्ट आदेश है कि जब वे युद्ध छोड़ दें, तो जिहाद और युद्ध भी रोक दिया जाए।

यही वह नैतिक ऊँचाई है जो इस्लाम को केवल एक युद्ध सम्बन्धी व्यवस्था नहीं, बल्कि दया और करुणा से परिपूर्ण जीवन-व्यवस्था बनाती है— जहाँ तल्वार भी न्याय की पाबन्द है और विजय भी क्षमा और उदारता की छाया में विकसित होती है।

जंग–ए–बद्र (पहली लड़ाई)

हिज्रत-ए-मदीना के दूसरे वर्ष रमज़ानुल् मुबारक 2 हिज्री में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सूचना मिली कि मक्का के कुरैश एक सशस्त्र सेना के साथ मदीना की ओर बढ़ रहे हैं। चुनाँचे आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) लगभग 313 सह़ाबा (रज़ि०) के साथ मदीना से रवाना हुए। मुसलमानों के पास अत्यंत सीमित साधन थे कुछ घोड़े, लगभग सत्तर ऊँट जिन पर बारी-बारी से सवारी की जाती थी और हथियार भी बहुत कम थे।

जबकि कुरैश की सेना लगभग 1000 लोगों पर आधारित थी, जिनके पास पर्याप्त घोड़े, ऊँट और युद्ध सामग्री मौजूद थी। बद्र नामक स्थान पर दोनों सेनाएँ आमने-सामने हुईं और अल्लाह तआला ने मुसलमानों को स्पष्ट विजय प्रदान की।

कुरैश के लगभग 70 लोग मारे गये और लगभग उतने ही बंदी बना लिये गये। इस घटना ने मदीना की इस्लामी राज्य व्यवस्था को मज़बूत आधार प्रदान किया और आने वाले युद्धों की दिशा निर्धारित कर दी।

(इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-2, पृष्ठ 262–291)

जंग–ए–बद्र की पृष्ठभूमि–

ग़ज़्वा-ए-बद्र की पृष्ठभूमि यह थी कि हिज्रत-ए-मदीना के बाद भी मक्का के कुरैश मुसलमानों के विरुद्ध अपनी शत्रुता से बाज़ नहीं आए। उन्होंने

मक्का में मुसलमानों की संपत्तियाँ ज़ब्त कर ली थीं और मदीना में उभरती हुई इस्लामी व्यवस्था को समाप्त करना चाहते थे।

दूसरी ओर क़ुरैश के व्यापारिक काफ़िले शाम से आते-जाते समय मदीना के निकट से गुज़रते थे, जिससे राजनीतिक और आर्थिक तनाव बढ़ गया था।

जब अबू सुफ़्यान इब्ने हर्ब का व्यापारिक काफ़िला शाम से वापस लौट रहा था, तो उसने ख़तूरा महसूस करके मक्का से सहायता माँगी। परिणामस्वरूप क़ुरैश ने लगभग एक हज़ार सैनिकों का दल रवाना कर दिया।

यद्यपि काफ़िला सुरक्षित निकल गया, लेकिन क़ुरैश अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए बद्र तक आ पहुँचे, जिससे मदीना की सुरक्षा को प्रत्यक्ष ख़तूरा उत्पन्न हो गया।

ऐसी परिस्थिति में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने परामर्श के बाद रक्षात्मक क़दम के रूप में लगभग 313 सहाबा (रज़ि०) के साथ मुक़ाबला किया और यही युद्ध इतिहास में ग़ज़्वा-ए-बद्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

जंग-ए-बद्र का परिणाम और प्रभाव-

ग़ज़्वा-ए-बद्र के परिणामों ने मुसलमानों तथा मक्का और अ़रब के लोगों—दोनों पर गहरा और निर्णायक प्रभाव डाला। मुसलमानों के लिए यह विजय केवल सैन्य सफ़लता नहीं थी, बल्कि एक महान नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति का कारण बनी।

मदीना की नवस्थापित इस्लामी राज्य व्यवस्था को स्थिरता मिली, मुसलमानों का मनोबल बढ़ा और अ़रब के क़बीलों को पहली बार यह एह़सास हुआ कि यह एक संगठित और गंभीर शक्ति है जिसे नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता।

प्रतिष्ठा को ठेस-

मक्का वालों के लिए बद्र एक बड़ा आघात था। उनके प्रमुख नेता मारे गये, राजनीतिक प्रतिष्ठा को ठेस पहुँची और प्रतिशोध की अग्नि भड़क उठी, जिसने बाद में जंगे-उ़हद तथा अन्य युद्धों का रूप लिया। अ़रब के अन्य

क़बीलों ने भी परिस्थितियों का बदलता हुआ रुख देखा। कुछ ने मुसलमानों से अपने सम्बन्ध सुधार लिये।

कुछ ने सावधानीपूर्ण नीति अपनाई और कुछ ने खुला विरोध जारी रखा। इस प्रकार जंग-ए-बद्र ने अ़रब की राजनीतिक परिस्थिति को बदल दिया और इस्लामी आन्दोलन को एक नई ऐतिह़ासिक दिशा प्रदान की।

Stanley Lane-Poole के अनुसार-

ब्रिटिश इतिह़ासकार **Stanley Lane-Poole** ने अपनी पुस्तक **Speeches and Table-Talk of the Prophet Muhammad** में फ़त्ह-ए-मक्का के अवसर पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चरित्र का उल्लेख करते हुए लिखा-

"The day of Muhammad's greatest triumph was also the day of his greatest mercy. When he entered Mecca as a conqueror at the head of ten thousand men, he might have exacted a terrible revenge for years of persecution; but he freely forgave the Quraish. His entry was marked by no bloodshed, no plunder, no insult; and history affords no parallel to such a conquest."

(Stanley Lane-Poole,Speeches and Table-Talk of the Prophet Muhammad, London: Macmillan & Co, 1882, Page 46)

अनुवाद-

"ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सबसे बड़ी विजय का दिन उनकी सबसे बड़ी दया का दिन भी था। जब वे दस ह़ज़ार लोगों के साथ विजेता के रूप में मक्का में प्रवेश कर रहे थे, तब वे वर्षों की यातनाओं का कठोर प्रतिशोध ले सकते थे, लेकिन उन्होंने क़ुरैश को सामान्य क्षमा प्रदान कर दी।

उनका प्रवेश न किसी रक्तपात के साथ था, न लूटपाट के साथ और न किसी अपमान या अत्याचार के साथ। इतिह़ास ऐसी विजय का कोई दूसरा उदाहरण प्रस्तुत नहीं करता"।

Lawrence E- Brown के अनुसार-

Lawrence E- Brown ने अपनी पुस्तक **The Eclipse of Christianity in**

Asia में यरूशलेम की विजय के संदर्भ में मुसलमानों की सहिष्णुता और ग़ैर-मुस्लिम नागरिकों के अधिकारों का उल्लेख करते हुए लिखा-

"The non-Muslim inhabitants of Jerusalem were guaranteed the safety of their persons, their property, their children, their churches, their crosses, and everything that belonged to them. Their lands and their religion would not be interfered with. Their churches would not be destroyed nor damaged, and their religious property and dignity would be preserved. The people of Jerusalem were granted full freedom to practice their religion."

(Lawrence E. Brown, The Eclipse of Christianity in Asia: From the Time of Muhammad Till the Fourteenth Century,New York: The Century Co 1933, Page 39)

अनुवाद-

"यरूशलेम के ग़ैर-मुस्लिम निवासियों को उनके जीवन, सम्पत्ति, संतानों, गिरजाघरों, क्रॉसों तथा उनकी स्वामित्व वाली प्रत्येक वस्तु की सुरक्षा की गारंटी दी गई। उनकी भूमि और उनके धर्म में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।

उनके गिरजाघरों को न गिराया जाएगा और न ही उन्हें कोई क्षति पहुँचाई जाएगी, तथा उनकी धार्मिक सम्पत्तियों और सम्मान की पूर्ण रक्षा की जाएगी। यरूशलेम के लोगों को अपने धर्म का पालन करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की गई"।



ग़ैर-मुस्लिमों के अधिकारों के सम्बन्ध में इस्लाम का सिद्धांत

1. ग़ैर-मुसलमानों के साथ न्याय और सद्व्यवहार-

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ
دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا
يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا
عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

अनुवाद-

"अल्लाह तुम्हें उन लोगों के साथ भलाई और न्याय करने से नहीं रोकता जिन्होंने तुमसे धर्म के मामले में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। निस्संदेह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है।

हाँ, अल्लाह तुम्हें केवल उन लोगों से मित्रता करने से रोकता है जिन्होंने तुमसे धर्म के कारण युद्ध किया, तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकाले जाने में सहायता की और जो लोग ऐसे लोगों से मित्रता करेंगे, वही अत्याचारी हैं"। (सूरः अल्-मुम्तहिना, आयत **8-9**)

सद्व्यवहार का आदेश-

यहाँ अल्लाह तआला ने एक स्पष्ट सिद्धांत प्रस्तुत किया है कि सम्बन्धों की नींव केवल धर्म नहीं, बल्कि व्यवहार और आचरण होना चाहिए। जो ग़ैर-मुस्लिम मुसलमानों से युद्ध नहीं करते और उन्हें उनके घरों से नहीं निकालते, उनके साथ 'बिर्र' अर्थात् सद्व्यवहार, भलाई और शुभचिंतन तथा 'क़िस्त' अर्थात् न्याय और निष्पक्षता का व्यवहार करने का आदेश दिया गया

है, बल्कि अल्लाह तआ़ला ऐसे न्यायप्रिय लोगों से प्रेम करता है।

हाँ, जो लोग धर्म के आधार पर युद्ध करें, अत्याचार करें या मुसलमानों को उनके घरों से निकालने में सहायता दें, उनसे राजनीतिक और युद्ध सम्बन्धी मित्रता से रोका गया है, क्योंकि यह अत्याचार का समर्थन करने के समान है।

इस प्रकार इस्लाम शांति के बदले शांति और अत्याचार के मुक़ाबिले न्याय का संतुलित और नैतिक सिद्धान्त प्रस्तुत करता है।

2. धार्मिक बल प्रयोग का निषेध-

لَآ اِكۡرَاهَ فِى الدِّيۡنِ‌ۙ

अनुवाद-

"दीन (धर्म) में कोई बलपूर्वक बाध्यता नहीं है"। (सूरः अल्-बक़रः 256)

व्याख्या-

यह आयत इस्लामी शिक्षाओं का एक मूल सिद्धान्त प्रस्तुत करती है कि ईमान को ज़बरदस्ती थोप नहीं सकते। आस्था (ईमान) दिल के विश्वास और सजग स्वीकृति का नाम है, जो तर्क, चिंतन और हृदय की संतुष्टि से उत्पन्न होती है, न कि तल्वार, दबाव या भय से।

यदि किसी व्यक्ति से ज़बरदस्ती कलिमा पढ़वा भी लिया जाए, तो वह वास्तविक ईमान नहीं होगा, बल्कि केवल बाहरी प्रदर्शन माना जाएगा।

इस आयत से स्पष्ट होता है कि इस्लाम मनुष्य को सोचने, समझने और अपनी इच्छा से सत्य को स्वीकार करने की स्वतंत्रता देता है, क्योंकि सच्चा ईमान वही है जो हृदय की प्रसन्नता और स्वीकृति से उत्पन्न हो।

3. शत्रु को भी शरण देने का आदेश-

وَاِنۡ اَحَدٌ مِّنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ اسۡتَجَارَكَ فَاَجِرۡهُ حَتّٰى يَسۡمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبۡلِغۡهُ مَاۡمَنَهٗ‌ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَعۡلَمُوۡنَ ۝٦

अनुवाद-

"और यदि (युद्ध के दौरान) कोई मुश्रिक तुमसे शरण माँगे, तो उसे शरण दो यहाँ तक कि वह अल्लाह का संदेश सुन ले। फिर उसे ऐसी जगह पहुँचा दो जहाँ वह पूर्ण सुरक्षा में हो। यह इसलिए कि वे लोग अज्ञान रखते हैं"। (सूरः अत्-तौबः 6)

मानवाधिकार की रक्षा-

इस आयत में इस्लाम की उच्च मानवीय और नैतिक शिक्षाओं को प्रस्तुत किया गया है कि युद्ध की स्थिति में भी शत्रु के मूल मानवाधिकारों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता।

यदि कोई मुश्रिक या विरोधी पक्ष का व्यक्ति शरण माँगे, तो मुसलमानों को आदेश दिया गया है कि उसे सुरक्षा प्रदान करें, उसे अल्लाह का संदेश सुनने का अवसर दें और फिर उसे पूर्ण संरक्षण के साथ ऐसी जगह पहुँचा दें जहाँ वह सुरक्षित हो।

इससे स्पष्ट होता है कि इस्लाम युद्ध को प्रतिशोध या घृणा का माध्यम नहीं बनाता, बल्कि न्याय, दया और नैतिकता को बनाये रखता है। शत्रु को भी जीवन और सम्पत्ति की सुरक्षा, सत्य को सुनने की स्वतंत्रता तथा सुरक्षित वापसी का अधिकार देना इस्लामी न्याय और मानवीय संवेदना की एक उज्ज्वल मिसाल है।

4. न्याय का सार्वभौमिक आदेश-

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُونُوا۟ قَوَّٰمِينَ لِلَّهِ شُهَدَآءَ بِٱلْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَـَٔانُ قَوْمٍ عَلَىٰٓ أَلَّا تَعْدِلُوا۟ ۚ ٱعْدِلُوا۟ هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ

अनुवाद-

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए दृढ़ता से न्याय पर क़ायम रहने वाले और निष्पक्ष गवाही देने वाले बनो। किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर उकसाने न पाये कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यही तक़्वा के अधिक

निकट है"। (सूरः अल्-माइदाः 8)

दुश्मन के साथ भी न्याय-

यह आयत उस उच्च नैतिक मानदंड को स्पष्ट करती है कि इस्लाम में न्याय और निष्पक्षता किसी व्यक्तिगत पसंद, नापसंद या शत्रुता के अधीन नहीं है।

अल्लाह तआ़ला आदेश देता है कि किसी समुदाय की दुश्मनी या मतभेद तुम्हें न्याय छोड़ने के लिए प्रेरित न करे, क्योंकि वास्तविक तक़्वा यही है कि मनुष्य हर परिस्थिति में न्याय पर क़ायम रहे।

इससे ज्ञात होता है कि इस्लाम में न्याय भावनाओं, क्रोध और प्रतिशोध से ऊपर एक सिद्धांतगत कर्तव्य है।

यहाँ तक कि शत्रु के साथ भी अन्याय करने की अनुमति नहीं, क्योंकि न्याय ही वह आधार है जिस पर एक उत्तम और शांतिपूर्ण समाज की स्थापना होती है।

5. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के व्यावहारिक उदाहरण-

Constitution of Medina (मिसाक़-ए-मदीना)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मदीना में यहूदियों और मुसलमानों के बीच एक लिखित समझौता किया। सभी को धार्मिक स्वतंत्रता और नागरिक अधिकार प्रदान किये गये। सभी को राजनीतिक अर्थ में 'एक उम्मत' घोषित किया गया।

(इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-1, पृष्ठ 501-504)

नज़रान के ईसाइयों से समझौता-

नज़रान के ईसाइयों का प्रतिनिधिमंडल मस्जिदे नबवी में ठहरा। उन्हें अपने धर्म के अनुसार उपासना करने की अनुमति दी गई। उन पर किसी प्रकार का दबाव या बल प्रयोग नहीं किया गया।

(इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-2, पृष्ठ 224–226)

इसी प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जीवन में ऐसा एक भी उदाहरण

नहीं मिलता कि आपने किसी व्यक्ति को बलपूर्वक इस्लाम स्वीकार कराया हो। इसके विपरीत, आपके उच्च चरित्र और उत्तम व्यवहार से प्रभावित होकर असंख्य लोगों ने इस्लाम स्वीकार किया।

लोग क़ुर्आन की तिलावत सुनकर इस्लाम स्वीकार कर लेते थे और बहुत से लोग तो केवल आपके चरित्र को देखकर ही तुरन्त ईमान ले आते थे, क्योंकि इस्लाम स्वीकार करना या न करना हृदय का विषय है, बाहरी दबाव या दिखावे का नहीं।

अब हम कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जिनसे अनुमान होगा कि इस्लाम किस प्रकार फैला।

श्री सुन्दर लाल जी के अनुसार-

भारत के प्रसिद्ध हिन्दू इतिहासकार और साहित्यकार श्री सुन्दर लाल जी अपने एक लेख में लिखते हैं-

"वास्तविकता यह है कि एक शासक के रूप में हज़रत मुहम्मद साहब ने ग़ैर-मुसलमानों यहाँ तक कि मूर्तिपूजकों को भी अपनी शासन व्यवस्था के अन्तर्गत अपने धार्मिक अनुष्ठान करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी और उनकी उपासना स्थलों की रक्षा को प्रत्येक मुसलमान का कर्तव्य घोषित किया।

لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ अर्थात् 'धर्म के मामले में कोई बल प्रयोग नहीं होना चाहिए। यह एक मदनी आयत है और मुहम्मद साहब का सम्पूर्ण जीवन इस आयत की जीवित व्याख्या है।

इसके प्रमाण के रूप में ईसाइयों, यहूदियों और अन्य धर्मों के अनुयायियों के साथ मुहम्मद साहब के जो समझौते हुए, उनकी प्रतियाँ आज भी सुरक्षित हैं"। (विशाल भारत, कलकत्ता, 1923, पृष्ठ 514)

क़ुर्आन के प्रभाव से इस्लाम स्वीकार करने वाले-

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु न केवल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरोधी थे, बल्कि वे तलवार लेकर इस इरादे से निकले थे कि आज मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को (नऊज़ुबिल्लाह) क़त्ल कर दें, क्योंकि वे उनके पुराने धार्मिक विश्वासों का खण्डन करते थे, लेकिन जब उन्होंने क़ुर्आन की कुछ आयतें सुनीं, तो उनका हृदय पिघल गया और उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(सीरत इब्ने हिशाम, भाग 1, पृष्ठ 366–370)

इसी प्रकार ह़ज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) ने अपने भाई से क़ुर्आन के प्रभाव के बारे में सुना, तो वे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेवा में उपस्थित हुए और सच्चे दिल से इस्लाम स्वीकार कर लिया। (अत्तब्क़ातुल् कुब्रा, भाग 4, पृष्ठ 219)

उ़स्मान बिन मज़ऊन (रज़ि०) का इस्लाम–

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَآئِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ
الْفَحْشَآءِ وَالْمُنكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

अनुवाद–

"निस्संदेह अल्लाह न्याय करने, भलाई करने और सम्बन्धियों के साथ उत्तम व्यवहार करने का आदेश देता है तथा अश्लीलता, बुरे कार्यों और अत्याचार से रोकता है"। (सूरः नह़्ल आयत नं० 90)

इन आयतों को सुनकर ह़ज़रत उ़स्मान बिन मजऊन के हृदय पर जो प्रभाव पड़ा, उसके बारे में वे स्वयं कहते हैं, "यही वह समय था जब ईमान मेरे दिल में बस गया और मैं मुह़म्मद से प्रेम करने लगा"।

(अल् इस्तिआ़ब फ़ी मअ़रिका, भाग-3, पृष्ठ 1053)

ह़ज़रत ज़ुबैर बिन मुत्इ़म (रज़ि०) का इस्लाम–

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾ أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾

अनुवाद–

"क्या यह लोग स्वयं ही पैदा हो गये हैं या यह स्वयं अपने सृष्टिकर्ता हैं? क्या आकाशों और धरती को इन्होंने पैदा किया है? वास्तविकता यह है कि

इनके दिलों में विश्वास नहीं है। (ऐ रसूल!) क्या तुम्हारे रब के ख़ज़ाने इनके पास हैं या यह स्वयं सब पर अधिकार रखने वाले हैं"?

(सूरः तूर आयत नं० 35,36)

इन आयतों को सुनकर वे स्वयं कहते हैं, "मेरा दिल जैसे उड़ने लगा और मैंने इस्लाम स्वीकार कर लिया"। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्-तफ़्सीर, ह़दीस संख्या 4854)

तुफ़ैल इब्ने अम्र अद्दौसी-

इसी प्रकार तुफ़ैल इब्ने अम्र अद्दौसी ने जब मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुबारक ज़ुबान से क़ुर्आन सुना, तो सुनते ही मुसलमान हो गये।

(अल् असाबह फ़ी तमईज़-ए-सह़ाबा, भाग 3, पृष्ठ 473)

पूरा-पूरा समूह-

कभी ऐसा भी होता था कि पूरा का पूरा एक समूह आता और क़ुर्आन सुनकर इस्लाम स्वीकार कर लेता।

जैसे ह़ज़रत अबू उ़बैदा इब्ने अल् ज़र्राह, ह़ज़रत अबू सल्मा, ह़ज़रत अरक़म बिन अबी अरकम और ह़ज़रत उ़स्मान बिन मज़ऊन जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेवा में उपस्थित हुए तो आपने उन्हें इस्लाम समझाया और क़ुर्आन की तिलावत सुनाई। जिसके परिणामस्वरूप वे सभी मुसलमान हो गये। (उस्दुल ग़ाबा फ़ी मआ़रिफ़तुल् सह़ाबा, भाग-3, पृष्ठ 306)

मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रभावित होकर स्वीकार करने वाले-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रभावित होकर बहुत से लोग इस्लाम क़ुबूल कर लेते थे। जैसे-

ह़ज़रत सफ़्वान बिन उमय्या का इस्लाम-

एक बार एक व्यक्ति सफ़्वान बिन उमय्या ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बहुत-सी बकरियाँ माँगीं, आपने उसका अनुरोध पूरा कर दिया। इससे प्रभावित होकर उसने अपने घरवालों से कहा, "लोगों! इस्लाम स्वीकार कर लो,

क्योंकि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इतनी उदारता से देते हैं कि उन्हें स्वयं निर्धन हो जाने का भी भय नहीं होता"। (सहीह़ मुस्लिम-2312)

एक यहूदी का इस्लाम-

एक बार आपने एक यहूदी विद्वान से ऋण लिया था। अभी भुगतान की तिथि भी नहीं आई थी कि वह आकर कठोरता करने लगा यहाँ तक कि मामला बहुत बढ़ गया।

सह़ाबा (रज़ि०) ने उसे धमकियाँ दीं, मगर आपने फ़रमाया-

"अल्लाह ने मुझे किसी ग़ैर-मुस्लिम पर अत्याचार करने की अनुमति नहीं दी है"।

यह सुनने के बाद उसी दिन उस व्यक्ति ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और कहा, "मेरा आधा धन अल्लाह की राह में सद्क़ा है। मैंने आपको इसलिए परेशान किया था, ताकि तौरात में आपके बारे में जो गुण बताये गये हैं, उन्हें परख सकूँ"। (अल् मुस्तदरक़ अल् सह़ीह़ैन, भाग-3, पृष्ठ 606)

ह़ज़रत सुमय्या बिन आसाल का इस्लाम-

इसी प्रकार सुमामा बिन आसाल को बंदी बनाकर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास लाया गया, लेकिन जब आपने उन्हें बिना किसी शर्त और बिना किसी बदले के मुक्त कर दिया, तो उन्होंने तुरन्त इस्लाम स्वीकार कर लिया। (सह़ीह़ मुस्लिम, 1764 सह़ीह़ बुख़ारी, 4372)

मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के भाषण से प्रभावित होकर इस्लाम-

बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के भाषण से प्रभावित होकर इस्लाम क़ुबूल किया। जैसे-

ह़ज़रत जिमाद अल्-अज़दी का इस्लाम-

ह़ज़रत जिमाद अल्-अज़दी एक बार मक्का आए। उन्होंने मक्का के विरोधियों से सुना कि मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) (नऊज़ुबिल्लाह) पागल हो गये हैं। यह

सुनकर वे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास गये और कहा-

"मैं पागलपन का इलाज करता हूँ"।

इस पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनके सामने एक प्रभावशाली भाषण दिया, जिसका उनके दिल पर गहरा असर हुआ और वे तुरन्त मुसलमान हो गये। (सह़ीह़ मुस्लिम-868)

ह़ज़रत ह़ारिस इब्ने अ़ब्दुल् उ़ज़्ज़ा का इस्लाम-

इसी प्रकार ह़ारिस इब्ने अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा ह़ज़रत ह़लीमा (रज़ि०) के पति और आपके रज़ाई पिता जब मक्का आये तो क़ुरैश ने उनसे कहा, "तुम्हारा बेटा कहता है कि लोग मरने के बाद फिर से जीवित किये जाएँगे"।

उन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछा, "बेटा! आप यह क्या कहते हैं"? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया-

"यदि वह दिन आया तो मैं आपका हाथ पकड़कर बता दूँगा कि जो कुछ मैं कहता था वह सत्य था"।

यह सुनकर वे तुरन्त मुसलमान हो गये और इन शब्दों का प्रभाव जीवन भर उन पर बना रहा। वे कहा करते थे, "मेरा बेटा मेरा हाथ पकड़ेगा और मुझे जन्नत तक पहुँचाकर ही छोड़ेगा"।

(इब्ने हिशाम, अस्-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-1, पृष्ठ 168-170)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को देखकर स्वीकार करने वाले-

बहुत से लोग ऐसे भी थे जो केवल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को देखकर ही आपकी नुबूवत को स्वीकार कर लेते थे।

ह़ज़रत राफ़ेअ़ (रज़ि०) का इस्लाम-

ह़ज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़ि०) क़ुरैश-ए-मक्का की ओर से दूत बनकर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेवा में उपस्थित हुए थे। जब उन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को देखा तो उनके दिल में इस्लाम की इच्छा उत्पन्न हुई। उन्होंने निवेदन किया-

"मैं यहीं रुक जाना चाहता हूँ"। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "मैं दूतों को नहीं रोकता। वापस जाओ, फिर यदि चाहो तो आ जाना" बाद में वे मुसलमान हो गये। (सुनन अबी दाऊद, किताबुल् जिहाद, ह़दीस-2758)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम का इस्लाम-

इसी प्रकार ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०) ने जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का चेहरा मुबारक देखा तो उन्हें तुरन्त विश्वास हो गया कि "किसी झूठे व्यक्ति का चेहरा ऐसा नहीं हो सकता" चुनाँचे उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। (जामेअ़ तिर्मिज़ी, अबवाबुज़्-जुह्द, ह़दीस संख्या-2485)

सह़ाबा के नैतिक चरित्र का प्रभाव-

बहुत से लोग ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सह़ाबा के उच्च नैतिक चरित्र और व्यवहार से प्रभावित होकर इस्लाम स्वीकार करते थे। जैसे- बहुत से लोगों ने ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) के प्रभाव से इस्लाम स्वीकार किया। (अल् तब्क़ातुल् कुबरा, भाग-3, पृष्ठ 124-130)

- इसी प्रकार यमन के लोगों ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) के चरित्र और उत्तम व्यवहार से प्रभावित होकर इस्लाम अपनाया। (सीरत इब्ने हिशाम, भाग-2, पृष्ठ-577)
- इसी तरह़ ह़ज़रत तुफ़ैल बिन अम्र अद्-दौसी (रज़ि०) ने अपने क़बीले दौस के बहुत से लोगों को मुसलमान बनाया। (अत्तब्क़ातुल् कुबरा, भाग-1, पृष्ठ 381-384)
- क़बीला हमदान ह़ज़रत आ़मिर बिन शहर के प्रभाव से इस्लाम लाया। (अल्-बिदायह वन्निहायह, भाग 5, पृष्ठ 108)
- ह़ज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) के प्रभाव से उनके क़बीले के आधे लोग मुसलमान हो गया। (अत्तब्क़ातुल् कुब्रा, भाग-4, पृष्ठ 219)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चमत्कार का प्रभाव-

हिज्रत-ए-मदीना के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुबारक हस्ती का ज्ञानपूर्ण, नैतिक और ग़ैबी पहलू लोगों के दिलों पर गहरा प्रभाव डालने लगा। मदीना में यहूदी विद्वान ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०) आपकी सेवा में

उपस्थित हुए और उन्होंने कुछ ऐसे प्रश्न किये जिनका सम्बन्ध ग़ैबी बातों और पूर्ववर्ती आकाशीय पुस्तकों की भविष्यवाणियों से था।

जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनके प्रश्नों के सही और स्पष्ट उत्तर दिये, तो वे तुरन्त पुकार उठे कि "ये उत्तर किसी झूठे नबी के नहीं हो सकते" चुनाँचे उन्होंने बिना किसी दबाव के इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(सहीह़ बुख़ारी, किताबुल् मनाकिब, बाब हिज्रतुन्-नबी ह़दीस, 3329)

इन घटनाओं से स्पष्ट होता है कि इस्लाम में न तो तलवार के बल पर ईमान लाने की अनुमति है और न ही किसी सेनापति की गलती को धार्मिक औचित्य प्रदान किया गया है। इसी सिद्धान्त को आधुनिक पश्चिमी इतिहासकार भी स्वीकार करते हैं।

K- A- C- Creswell (क्रेसवेल) के अनुसार-

"युद्ध मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है और इस्लाम ने इस क्षेत्र में भी उच्च नैतिक सिद्धांत प्रस्तुत किये, आक्रामक युद्ध को निषिद्ध ठहराया और शक्ति के प्रयोग को नैतिक सीमाओं का पालन करने का आदेश दिया"।

(Early Muslim Architecture)

ह़ज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सीरत की ये प्रामाणिक घटनाएँ इस सत्य को उजागर करती हैं कि इस्लाम दिलों को नैतिक चमत्कारों, ज्ञान और न्याय के माध्यम से जीतता है, न कि तलवार के बल पर। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जीवन का प्रत्येक व्यावहारिक पक्ष इस बात का उज्ज्वल प्रमाण है कि इस्लाम शांति, न्याय और अंतरात्मा की स्वतंत्रता का धर्म है और यही उसके प्रसार का वास्तविक रहस्य है।

मक्का की विजय और शत्रुओं से उत्तम व्यवहार-

हिज्रत के आठवें वर्ष (रमज़ान 8 हिज्री) ह़ज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने लगभग दस हज़ार (कुछ रिवायतों के अनुसार बारह हज़ार) सह़ाबा के साथ मक्का की ओर रवाना हुए।

यह वही शहर था जहाँ आप और आपके अनुयायियों पर इक्कीस-बाईस

वर्षों तक अत्याचार, यातनाएँ, सामाजिक बहिष्कार, हत्या की साजिशें की गईं।

ऐसे अवसर पर इतिहास गवाह है कि विजेता बदला लेते हैं, नगरों को रक्त से रंग दिया जाता है और पराजित समुदायों को नष्ट कर दिया जाता है, लेकिन हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विजय प्रतिशोध नहीं, बल्कि दया बनकर प्रकट हुई। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नेमक्का में बिना व्यापक रक्तपात के प्रवेश किये और नगर की शांति को प्राथमिकता दी।

मक्का में प्रवेश के समय आम सुरक्षा की घोषणा

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने स्पष्ट और सार्वजनिक रूप से सुरक्षा की घोषणा की-

(1) जो व्यक्ति हथियार डाल दे, उस पर कोई हाथ न उठाया जाए।

(2) जो कअबः में शरण ले, वह सुरक्षित है।

(3) जो अबू सुफ़्यान इब्ने हर्ब के घर या हकीम इब्ने हिज़ाम के घर में शरण ले, वह भी सुरक्षित है।

(4) जो अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर ले, उसके लिए भी सुरक्षा है।

(5) घायलों और बंदियों की हत्या न की जाए।

मक्का वालों का सम्बोधन-

कअबः के प्रांगण में एकत्र होकर आपने मक्का वालों से फ़रमाया-

اذهبوافأنتم الطلقاء "जाओ, तुम सब आज़ाद हो" और इसी अवसर पर आपने यह ऐतिहासिक वाक्य भी कहा اليوم يوم المرحمة "आज दया का दिन है"। (इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-4, पृष्ठ 15-25)

दयालुता का दृश्य-

यह सार्वजनिक क्षमादान इस बात का उज्ज्वल प्रमाण है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की दृष्टि में विजय का अर्थ केवल प्रभुत्व प्राप्त करना नहीं, बल्कि दिलों का सुधार था।

जिन लोगों ने वर्षों तक आपको सताया था, उन्हीं के लिए सामान्य माफ़ी की घोषणा कर दी गई। न घरों का अपमान किया गया, न महिलाओं पर हाथ उठाया गया, न नगर को लूटा गया और न ही सामूहिक प्रतिशोध लिया गया।

मानव इतिहास में ऐसी महान विजय जिसमें शक्ति हाथ में होने के बावजूद क्षमा और उदारता को चुना गया हो—अपनी मिसाल आप है।

ह़ज़रत सुफ़्यान का घर शरण स्थल-

इसी अद्वितीय दयालुता का यह दृश्य था कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस व्यक्ति के घर को भी शरणस्थल घोषित कर दिया जो उस समय तक आपका सबसे कठोर विरोधी माना जाता था।

घोषणा की गई कि जो अबू सुफ़्यान इब्ने हर्ब के घर में प्रवेश कर जाएगा, उस पर कोई तलवार नहीं उठाई जाएगी।

यह सुनकर न केवल अबू सुफ़्यान, बल्कि मक्का के अन्य सरदार भी आश्चर्यचकित रह गये। जिन दिलों में वर्षों से शत्रुता, अहंकार और बैर भरा हुआ था, उन पर अचानक एक कोमल किंतु गहरा प्रभाव पड़ा। वे अपने मन में सोचने लगे-

"जिन्हें हमने सताया, जिन्हें उनके वतन से निकाला, जिन पर हमने अत्याचार के हर हथियार आज़माये, आज वही हमें सुरक्षा दे रहे हैं। यह व्यवहार किसी विजेता राजा का नहीं हो सकता, यह तो केवल एक सच्चे रसूल और पूर्णतः दयामय इंसान का चरित्र है"।

इसी नैतिक महानता ने घृणा के ताले तोड़ दिये। मक्का के बहुत-से लोगों ने उसी क्षण इस्लाम स्वीकार कर लिया बिना किसी दबाव के, बिना तलवार की छाया के।

दिलों की विजय-

यह वही व्यवहार था जो उन लोगों के साथ किया गया जिन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मातृभूमि से निकाला, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और आपके साथियों

पर वर्षों तक अत्याचार किये और हर प्रकार की यातनाएँ दीं। मानव इतिहास में विजेताओं की कमी नहीं, लेकिन ऐसा विजेता जो शक्ति के शिखर पर पहुँचकर प्रतिशोध के स्थान पर क्षमा को चुन ले— संसार में बहुत दुर्लभ है।

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विजय इसी कारण दिलों की विजय थी और यही वजह है कि आज भी उनका नाम दया और सहनशीलता का प्रतीक बनकर चमकता है।

कअ़बः का तवाफ़–

इसी प्रकार 20 रमज़ान 8 हिजूरी को हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कअ़बः का तवाफ़ किया। कअ़बा के अन्दर और उसके चारों ओर 360 मूर्तियाँ स्थापित थीं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जिस मूर्ति के पास जाते, हाथ में मौजूद लकड़ी से उसकी ओर संकेत करते और यह आयत पढ़ते जाते–

جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۚ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا

"सत्य आ गया और असत्य मिट गया। निस्संदेह असत्य मिटने ही वाला था" तो वह मूर्ति मुँह के बल गिर पड़ती। यह दृश्य केवल बाहरी विजय का नहीं था, बल्कि असत्य पर सत्य की नैतिक और वैचारिक विजय की घोषणा था। (इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-4, पृष्ठ 38–41)

इस्लाम का प्रसार–

मक्का विजय के बाद इस्लाम के प्रसार में असाधारण तीव्रता आ गई। वे कबीले जो वर्षों तक विरोध या संकोच में पड़े रहे थे, अब स्वयं मदीना और मक्का आने लगे और प्रसन्नतापूर्वक इस्लाम स्वीकार करने लगे।

इनमें बनू सकीफ़, बनू फ़जारा, बनू तमीम, बनू सअ़द, बनू किंदा, बनू अ़ब्दुल् क़ैस, बनू ह़नीफ़ा, बनू कहतान, बनू ह़ारिस, बनू मुहारिब, बनू हमदान, बनू ग़स्सान और अन्य क़बीले शामिल थे।

सीरत की पुस्तकों में इस काल को "आमुल्-उ़फ़ूद" कहा जाता है अर्थात वह वर्ष जब प्रतिनिधिमंडल पर प्रतिनिधिमंडल आकर इस्लाम में प्रवेश करने

लगे, यहाँ तक कि 10 हिज्री तक मुसलमानों की संख्या एक लाख से अधिक हो चुकी थी। (अत्तब्क़ातुल् कुब्रा, भाग-1, पृष्ठ 291–300)

वास्तव में यही इस्लाम की वास्तविक 'तलवार' थी, लोहे की नहीं, बल्कि उत्तम व्यवहार, क्षमा, उच्च नैतिकता और न्याय की तलवार, जिसने दिलों को जीत लिया।

युद्ध का उद्देश्य-

यदि यह प्रश्न उठता है कि फिर युद्ध क्यों हुए तो उसका उत्तर स्वयं ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत में मौजूद है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कभी युद्ध को उद्देश्य नहीं बनाया। प्रत्येक संघर्ष शांति की रक्षा, अत्याचार के अंत और निर्दोषों के जीवन एवं सम्मान की सुरक्षा के लिए था।

इसीलिए जब भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कोई सेना भेजते, तो कठोरता से निर्देश देते कि महिलाओं, बच्चों, वृद्धों और जो युद्ध में सम्मिलित न हो उन लोगों को कोई हानि न पहुँचाई जाए और अत्याचार से बचा जाये।

(सुनन अबी दाऊद, किताबुल् जिहाद, ह़दीस-2614)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत में युद्ध एक मजबूरी थी, जबकि शांति, क्षमा और मानवता सदैव मूल उद्देश्य रहे और यही वह संदेश था जिसने केवल अ़रब ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के दिलों को जीत लिया।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा सेना को निर्देश-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब भी किसी सेना को रवाना करते, तो सबसे पहले तक़्वा (ईश्वर-भय), आत्म-संयम और नैतिक ज़िम्मेदारी पर ज़ोर देते। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के युद्ध सम्बन्धी निर्देश केवल सैनिक आदेश नहीं थे, बल्कि एक पूर्ण नैतिक युद्ध-संहिता (Code of Conduct) थे, जिन्होंने आधुनिक मानवतावादी क़ानूनों से भी सदियों पहले मानवता की नींव रख दी थी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते थे-

"अल्लाह से डरो, अल्लाह का नाम लेकर निकलो, अल्लाह के आदेश के

अनुसार युद्ध करो और उसी से सहायता माँगो। विश्वासघात मत करना, युद्ध-लाभ में चोरी मत करना, मृत शरीरों का अपमान मत करना।

किसी वृद्ध, बच्चे, स्त्री और उस व्यक्ति की हत्या मत करना जो युद्ध में भाग न ले रहा हो।

वृक्षों को बिना आवश्यकता मत काटो, उपासना-स्थलों को मत गिराओ और पशुओं को बिना कारण मत मारो। जो तुमसे शरण माँगे, उसे शरण दो"।

यह निर्देश केवल शब्दों तक सीमित नहीं थे, बल्कि व्यवहार में भी लागू किये गये।

- आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह भी फ़रमाया-

"खजूर और अन्य फलदार वृक्षों को मत काटो, खेतों को नुक़्सान मत पहुँचाओ, उन्हें मत जलाओ।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते, घरों में आग मत लगाओ और बिना आवश्यकता किसी जीवित प्राणी को मत मारो"।

यह वह सिद्धांत हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि इस्लाम में युद्ध विनाश का नाम नहीं, बल्कि अत्याचार को रोकने का एक सीमित और नैतिक उपाय है।

(तारीख़ तबरी, भाग 3, पृष्ठ 226-228)

मानवता और करुणा के सिद्धान्त-

जब यह सत्य स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम ने युद्ध जैसे संवेदनशील और रक्त रंजित विषय को भी मानवीय संवेदना, न्याय और आत्म-संयम के सिद्धांतों का पालन करने का आदेश दिया, तो स्वयं यह प्रश्न अर्थहीन हो जाता है कि उसके सामान्य सिद्धांत कैसे होंगे।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सम्पूर्ण जीवन दया, उदारता, समानता, सत्यनिष्ठा और न्याय की सुगंध से परिपूर्ण था। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने न कभी किसी दास पर अत्याचार किया, न किसी बच्चे को कष्ट पहुँचाया, यहाँ तक कि पशुओं के साथ भी कोमलता और दया का व्यवहार किया। कटु वचन,

गाली और घृणा आपके स्वभाव से कोसों दूर थे।

युद्धभूमि में भी बंदियों के साथ सम्मान और आदर का व्यवहार किया गया, और उन्हें मनुष्य समझकर अधिकार दिये गये। न कि शत्रु समझकर अपमानित किया गया।

मख़्लूक़ पर दया–

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) विभिन्न समुदायों के नेताओं, अन्य धर्मों के विद्वानों और सम्मानित व्यक्तियों से भी गरिमा और आदर के साथ मिलते थे। जो आपके निकट थे, उनके लिए तो आपकी दुआएँ दिन-रात जारी रहती थीं, लेकिन जो विरोधी और शत्रु थे, उनके लिए भी आपकी ज़ुबान से बद्दुआ़ के बजाय मार्गदर्शन और भलाई की प्रार्थना निकलती थी।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का स्पष्ट आदेश था, "मख़्लूक़ पर दया करो" क्योंकि दया वह दीपक है जो इन्सान को वास्तविक इन्सान बनाती है।

जब हम ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत के इन उज्ज्वल सिद्धांतों को सामने रखते हैं, तो स्वस्थ बुद्धि स्वयं यह निर्णय कर लेती है कि इस्लाम की 'तलवार' लोहे की नहीं थी। वह तो मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सत्यनिष्ठा, क्षमा, पवित्र चरित्र, उच्च नैतिकता और क़ियामत तक मार्गदर्शन देने वाली शिक्षाओं की चमकती हुई तलवार थी।

ऐसी तलवार जिसने गर्दनें नहीं काटीं, बल्कि दिलों को जोड़ा, अत्याचार के अंधेरों को चीर दिया और ऐसे समाज की नींव रखी जो न्याय, शांति और मानवता पर आधारित था।

अन्तिम ह़ज और उसका ख़ुत्बा–

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अन्तिम ह़ज इस्लामी इतिह़ास में ह़ज्जतुल् विदाअ़ (विदाई ह़ज) के नाम से प्रसिद्ध है, जो 10 हिजरी में अदा किया गया। इस ह़ज में एक लाख से अधिक सह़ाबा आपके साथ थे।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) 25 ज़िल्-कअ़दा 10 हिजरी को मदीना से मक्का के लिए

रवाना हुए और ज़ुल्-हुलैफ़ा में एह़राम बाँधा। 4 ज़िल्हिज्जा को मक्का पहुँचे, कअ़बा का तवाफ़ किया, ह़ज के सभी अरकान और तरीक़े व्यावहारिक रूप से सिखाये और 9 ज़िल्ह़िज्जा को मैदान-ए-अरफ़ात में वह महान ख़ुत्बा दिया जो आपका अन्तिम ख़ुत्बा था।

मूल सिद्धान्त-

इस ख़ुत्बे का उद्देश्य उम्मत को दीन के मूल सिद्धांतों, जान और माल की पवित्रता, न्याय और इन्साफ़, मानव समानता, महिलाओं के अधिकार, सूद और अत्याचार की मनाही, अमानतदारी और क़ुर्आन व सुन्नत का दृढ़ पालन पर मज़बूती से स्थापित करना था।

यह ख़ुत्बा वास्तव में इस्लाम की नैतिक, सामाजिक और क़ानूनी जीवन-व्यवस्था का व्यापक सार और क़ियामत तक समस्त मानवता के लिए एक संदेश है। (इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-4, पृष्ठ 246–255)

अन्तिम ह़ज का व्यापक उद्देश्य-

ह़ज्जतुल् विदाअ़ का ख़ुत्बा केवल कुछ निर्देश देने के लिए नहीं था, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए एक व्यापक और स्थायी जीवन-संहिता प्रस्तुत करना उसका उद्देश्य था। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस अवसर पर यह स्पष्ट करना चाहा कि इस्लाम की नींव अत्याचार, नस्ल, क़बीले या शक्ति पर नहीं, बल्कि न्याय, तक़्वा और मानव सम्मान पर आधारित है।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मानव जीवन और सम्पत्ति की पवित्रता को कअ़बा की पवित्रता के समान घोषित करके समाज से रक्तपात और अराजकता को समाप्त करना चाहा। सूद और आर्थिक शोषण को निषिद्ध घोषित करके आर्थिक न्याय की नींव रखी।

महिलाओं के अधिकारों को स्पष्ट करके पारिवारिक व्यवस्था को सुरक्षा प्रदान की। नस्लीय और क़बीलागत घमंड को समाप्त करते हुए यह सिद्धांत स्थापित किया कि श्रेष्ठता का आधार केवल तक़्वा (धर्मपरायणता) है।

साथ ही आपने उम्मत को क़ुर्आन और सुन्नत से मज़बूती से जुड़े रहने की वसीयत करते हुए यह सन्देश दिया कि सफ़लता और मुक्ति का मार्ग क्षणिक भावनाओं या व्यक्तिगत इच्छाओं में नहीं, बल्कि ईश्वरीय मार्गदर्शन के पालन में है।

इस प्रकार अन्तिम ह़ज वास्तव में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर से एक नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वसीयत थी, जो क़ियामत तक आने वाले मानवों के लिए शांति, न्याय और पारस्परिक सम्मान की गारंटी प्रदान करती है।

ह़ज्जतुल् विदाअ़ का विश्वव्यापी संदेश

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने 9 जिल्हिज्जा 10 हिज़री को मैदान-ए-अरफ़ात में लगभग सवा लाख (एक लाख से अधिक) सह़ाबा (रज़ि०) के विशाल जनसमूह के सामने जो ख़ुत्बा दिया, वह केवल एक भाषण नहीं था, बल्कि पूरी मानवता के लिए न्याय, शांति, समानता और नैतिकता पर आधारित एक सार्वभौमिक घोषणा-पत्र था।

इस ख़ुत्बे के शब्द विभिन्न सही रिवायतों में थोड़े-बहुत अंतर के साथ आये हैं, लेकिन इसके विषय सर्वसम्मत हैं। इसी कारण शोधकर्ता इसे एक समग्र रूप में प्रस्तुत करते हैं।

(1) विदाई का एह़सास और ज़िम्मेदारी की ताक़ीद-

"लोगो! मुझे लगता है कि शायद हम और तुम इस स्थान पर फिर कभी एकत्र न हो सकें"।

व्याख्या-

इस वाक्य के माध्यम से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने श्रोताओं को सचेत किया कि यह संदेश साधारण नहीं, बल्कि अन्तिम वसीयत की तरह़ है, जिसे पूरी ज़िम्मेदारी के साथ सुरक्षित रखना और आगे पहुँचाना आवश्यक है।

(2) जान, माल और सम्मान की पवित्रता-

"लोगो! तुम्हारा रक्त, तुम्हारा धन और तुम्हारी इ़ज़्ज़त एक-दूसरे पर

उसी प्रकार ह़राम (अत्यन्त पवित्र) है जैसे यह दिन, यह शहर और यह महीना पवित्र हैं। सावधान! मेरे बाद भटक मत जाना कि एक-दूसरे की गर्दनें काटने लगो"।

व्याख्या-

यहाँ मानव जीवन, सम्पत्ति और सम्मान को पूर्ण पवित्रता प्रदान की गई। यह सिद्धान्त आधुनिक मानवाधिकार घोषणाओं से सदियों पहले प्रस्तुत किया गया था।

(3) जाहिलियत के रक्त-विवादों का अंत-

"लोगो! जाहिलियत की हर बात को मैं अपने पैरों तले रौंदता हूँऔर सबसे पहला ख़ून जिसे मैं माफ़ करता हूँ वह मेरे परिवार के रबीआ़ बिन हारिस के पुत्र का हैं"।

व्याख्या-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने परिवार से शुरुआ़त करके यह व्यावहारिक उदाहरण स्थापित किया कि क़ानून सबके लिए समान है।

(4) सूद (ब्याज) की पूर्ण मनाही-

"जाहिलियत के ज़माने का हर सूद समाप्त कर दिया गया है और सबसे पहले मैं अपने परिवार के अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब का सूद समाप्त करता हूँ"।

व्याख्या-

यह घोषणा आर्थिक शोषण के अंत और सामाजिक न्याय की बुनियाद है।

(5) महिलाओं के अधिकार और पारिवारिक व्यवस्था-

"लोगो! अपनी स्त्रियों के बारे में अल्लाह से डरते रहोऔर स्त्रियों का तुम पर यह अधिकार है कि तुम उन्हें अच्छा भोजन और अच्छा वस्त्र प्रदान करो"।

व्याख्या- स्त्री को अल्लाह की अमानत घोषित करके उसके अधिकारों को

धार्मिक और नैतिक संरक्षण दिया गया।

(6) क़ुर्आन से जुड़ाव–

"लोगो! मैं तुम्हारे बीच एक ऐसी चीज़ छोड़कर जा रहा हूँ कि यदि तुम उसे मज़बूती से पकड़े रहोगे तो कभी गुमराह नहीं होगे और वह अल्लाह की किताब क़ुर्आन है"।

व्याख्या–

यह उम्मत के लिए स्थायी मार्गदर्शन का केन्द्र निर्धारित करता है।

(7) दीन के मूल कर्म और सामाजिक व्यवस्था–

"लोगो! मेरे बाद न कोई नबी होगा और न कोई नई उम्मत, नमाज़ पढ़ो, रोज़ा रखो, ज़कात दो, ह़ज करो और अपने अमीर (नेता) की आज्ञा का पालन करो"।

व्याख्या–

अ़िबादतों के साथ सामाजिक अनुशासन और सामूहिक व्यवस्था के पालन को भी सफ़लता का माध्यम बताया गया।

(8) पैग़म्बरी की गवाही और सन्देश पहुँचाने की ज़िम्मेदारी–

"क़ियामत के दिन तुमसे मेरे बारे में पूछा जाएगा, तब तुम क्या उत्तर दोगे"?

सभी ने कहा, "हम गवाही देते हैं कि आपने अल्लाह का संदेश हम तक पहुँचा दिया, पैग़म्बरी का अधिकार पूरा कर दिया और हमें सत्य और असत्य में अंतर बता दिया"। इस पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने आकाश की ओर उँगली उठाकर तीन बार कहा–

(1) ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना।

(2) ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना।

(3) ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना।

फिर आपने फ़रमाया, "जो लोग यहाँ मौजूद हैं, वह यह संदेश उन लोगों तक पहुँचा दें जो यहाँ मौजूद नहीं हैं"।

व्याख्या-

यह समस्त मानवता तक संदेश पहुँचाने और इस अमानत को आगे बढ़ाने का आदेश है।

दीन की पूर्णता की आयत का अवतरण-

इसी अवसर पर यह वह्य (ईश्वरीय संदेश) नाज़िल हुई-

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ

अनुवाद-

"आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूर्ण कर दिया, तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन के रूप में पसन्द कर लिया"। (सूरः अल्-माइदा-3)

सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था का एलान-

इस घोषणा के साथ 23 वर्षों में नाज़िल होने वाली वह्य की पूर्णता हो गई और इस्लाम एक सम्पूर्ण जीवन-व्यवस्था के रूप में स्थापित हो गया।

इस ख़ुत्बे के बाद अ़रब, जो पहले धार्मिक और नैतिक पतन का शिकार था, पूरी मानवता के लिए एक नैतिक आदर्श बन गया। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इन्सानों से घृणा करना नहीं सिखाया, बल्कि पापों को समाप्त करने की व्यावहारिक मिसाल प्रस्तुत की। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सिद्धान्त था, "पापी से नहीं, पाप से घृणा करो"।

इसी सिद्धांत का सबसे महान उदाहरण मक्का विजय के अवसर पर दिखाई दिया, जब शक्ति होने के बावजूद प्रतिशोध के स्थान पर क्षमा को चुना गया। फलस्वरूप बिना रक्तपात के मक्का इस्लाम की गोद में आ गया।

(इब्ने हिशाम, अस-सीरतुन्नबविय्यह, भाग-4, पृष्ठ 246–255, इब्ने कसीर, अल्-बिदायह वन-निहायह, भाग-5, पृष्ठ 208–216)

ह़ज्जतुल् विदाअ़ के ख़ुत्बे का महत्वपूर्ण संदेश-

ह़ज्जतुल् विदाअ़ (Farewell Sermon) केवल एक ऐतिह़ासिक भाषण नहीं था, बल्कि Human Rights, Rule of Law, Economic Justice और Women's Rights पर आधारित एक व्यापक वैश्विक घोषणा-पत्र था। इसने ऐसे समाज की नींव रखी जो न्याय, दया और नैतिकता पर आधारित था।

यही वह संदेश था जिसने अ़रब के नैतिक पतन को मानव इतिह़ास के एक उज्ज्वल अध्याय में बदल दिया और जिसकी रौशनी आज भी मानवता के लिए मार्गदर्शन का स्रोत है।

क़ानून की सर्वोच्चता (Rule of Law)

ख़ुत्बे में जाहिलियत के सभी रक्त-विवादों और बदले की परम्पराओं को समाप्त करने की घोषणा करके क़ानून की समानता स्थापित की गई। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सबसे पहले अपने ही परिवार के व्यक्ति (रबीआ़ बिन ह़ारिस) के रक्त-दावे को माफ़ करके यह सिद्धांत व्यवहार में लागू किया कि क़ानून के सामने कोई व्यक्ति या परिवार विशेषाधिकार प्राप्त नहीं है।

इसी प्रकार सामाजिक अनुशासन और नेतृत्व की आज्ञापालन पर बल देकर समाज में व्यवस्था, स्थिरता और क़ानून की सर्वोच्चता को आवश्यक ठहराया गया।

आर्थिक न्याय (Economic Justice)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जाहिलियत के सूद (ब्याज) को पूर्णतः समाप्त घोषित कर दिया और सबसे पहले अपने निकट सम्बन्धी ह़ज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब के ब्याज को समाप्त किया।

यह घोषणा इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इस्लाम का आर्थिक ढाँचा शोषण के विरुद्ध और न्याय एवं संतुलन के पक्ष में है। सूद की मनाही ने समाज के कमज़ोर वर्गों को शक्तिशाली आर्थिक समूहों के अत्याचार से बचाने की नींव रखी।

महिलाओं के अधिकार (Women's Rights)

ह़ज्जतुल् विदाअ़ में स्त्री को अल्लाह की अमानत घोषित करके उसके सम्मान और स्थान को ऊँचा किया गया। आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने पतियों को आदेश दिया कि वे स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करें, उन्हें उचित भोजन और वस्त्र प्रदान करें और उनके अधिकारों का ध्यान रखें।

यह शिक्षा उस युग में एक क्रांतिकारी घोषणा थी, जब स्त्रियों को विरासत, सम्मान और सुरक्षा से वंचित समझा जाता था।

आध्यात्मिक और नैतिक मार्गदर्शन-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने उम्मत को वसीयत की कि यदि वे क़ुर्आन को मज़बूती से पकड़े रहेंगे तो कभी गुमराह नहीं होंगे। साथ ही ख़त्म-ए-नुबुव्वत (पैग़म्बरी की पूर्णता) की घोषणा करके यह स्पष्ट कर दिया कि अब क़ियामत तक मार्गदर्शन का स्रोत केवल क़ुर्आन और सुन्नत ही रहेंगे। अ़िबादतें, नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज वास्तव में व्यक्ति और समाज दोनों के नैतिक प्रशिक्षण का माध्यम हैं।

सार्वभौमिक ज़िम्मेदारी (Universal Responsibility)

ख़ुत्बे के अन्त में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने सह़ाबा (रज़ि०) से गवाही ली कि अल्लाह का संदेश पहुँचा दिया गया है। फिर फ़रमाया, "जो लोग यहाँ मौजूद हैं, वे यह सन्देश उन लोगों तक पहुँचा दें जो यहाँ मौजूद नहीं हैं"। इस प्रकार इस्लाम को किसी नस्ल, क्षेत्र या क़बीले तक सीमित न रखकर एक वैश्विक संदेश के रूप में प्रस्तुत किया गया।

इसी अवसर पर दीन की पूर्णता की आयत नाज़िल हुई। जिससे स्पष्ट हो गया कि इस्लाम अब एक सम्पूर्ण जीवन-व्यवस्था बन चुका है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की बीमारी-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की अन्तिम बीमारी की शुरुआ़त 28 सफ़र 11

हिज़री बुधवार के दिन हुई। प्रारम्भ में आपको तेज़ सिरदर्द और बुख़ार महसूस हुआ, लेकिन इसके बावजूद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कुछ दिनों तक अपनी पवित्र पत्नियों के घरों में आते-जाते रहे।

जब बीमारी अधिक बढ़ गई तो आपने अनुमति चाही कि शेष दिन हज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के कक्ष में बिताएँ, जहाँ आपकी सेवा और देखभाल की व्यवस्था की गई।

बीमारी के दिनों में जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मस्जिदे नबवी तक जाने में असमर्थ हो गये, तो आपने स्पष्ट आदेश दिया कि अबू बक्र (रज़ि०) लोगों को नमाज पढ़ाएँ। चुनाँचे हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने कई दिनों तक इमामत की। यह आदेश वास्तव में उम्मत की नेतृत्व-व्यवस्था के सम्बन्ध में भी एक स्पष्ट मार्गदर्शन था।

हज़रत आ़ईशा के कक्ष में-

अन्तिम दिनों में हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) उम्मत की भलाई और मार्गदर्शन पर विशेष ध्यान देते रहे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बार-बार नमाज़, गुलामों और अधीनस्थ लोगों के अधिकारों तथा आपसी सद्व्यवहार की ताकीद फ़रमाते रहे।

सोमवार के दिन 12 रबीउल् अव्वल 11 हिज़री (कुछ रिवायतों के अनुसार 13 रबीउल अव्वल) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के कक्ष में परलोक गमन फरमाया। उस समय आप हज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के यहाँ थे।

इस प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पूरी जीवन-यात्रा की तरह आपका अन्तिम समय भी उम्मत के लिए मार्गदर्शन, करुणा और शुभचिंतन का संदेश बनकर इतिहास में सुरक्षित हो गया।

(इब्ने कसीर, अल्-बिदायह वन्-निहायह, भाग-5, पृष्ठ 248–256)

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अन्तिम समय-

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपनी अन्तिम बीमारी के दौरान कभी-कभी

अपने मुबारक चेहरे से चादर हटाकर फरमाते थे, "यहूदियों और ईसाईयों पर अल्लाह की लअ़नत हो, उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सज्दा-गाह बना लिया"।

ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) इस कथन के माध्यम से उम्मत को इस बात से कठोरता के साथ सावधान कर रहे थे कि क़ब्रों को अ़िबादत-स्थल न बनाया जाए ताकि उम्मत पूर्व समुदायों की गुमराही में न पड़ जाए।

(इब्ने हिशाम, सीरत इब्ने हिशाम, भाग-2, पृष्ठ 655; इब्ने कसीर, अल्-बिदायह वन्-निहायह, भाग-5, पृष्ठ 243)

आप की वसीयत-

इसी बीमारी के दौरान ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की सबसे अधिक ताकीद और बार-बार दोहराई जाने वाली अन्तिम वसीयत यह थी-

الصلاة الصلاة وما ملكت أيمانكم "नमाज़ का विशेष ध्यान रखो और अपने अधीनस्थों, गुलामों तथा कमज़ोरों के अधिकारों को पूरा करो"।

सह़ाबा बयान करते हैं कि आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अन्तिम समय तक नमाज़ और सामाजिक न्याय पर ज़ोर देते रहे। यह इस बात का प्रमाण है कि इस्लाम में अ़िबादत और मानवाधिकार दोनों को मूलभूत महत्व प्राप्त है।

(इब्ने कसीर, अल्-बिदायह वन्-निहायह, भाग-5, पृष्ठ 244)

● ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बयान करती हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के सामने पानी का एक बर्तन रखा हुआ था। आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) उसमें हाथ डालते और अपने मुबारक चेहरे पर फेरते हुए फ़रमाते थे-

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ، إِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ

"अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, निस्संदेह मृत्यु की पीड़ाएँ होती हैं"।

इससे स्पष्ट होता है कि यद्यपि नबी अ़लैहिमुस्सलाम अल्लाह के प्रिय होते हैं, फिर भी मृत्यु की कठिनाई उन पर भी आती है, ताकि उम्मत के लिए उसमें सांत्वना और शिक्षा हो। (अल् तब्क़ात, अल् कुबरा भाग-2, पृष्ठ 263)

अन्तिम क्षण-

फिर अन्तिम क्षणों में ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने अपनी मुबारक उँगली आसमान की ओर उठाई और बार-बार फ़रमाया-

فِي الرَّفِيقِ الْأَعْلَى... فِي الرَّفِيقِ الْأَعْلَ

"मैं सबसे उच्च और महान साथी की ओर जा रहा हूँ"।

इन्हीं शब्दों के साथ आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने अपने सच्चे पालनहार से मुलाक़ात का चयन किया।

यह इस बात का संकेत था कि आपको दुनिया और आख़िरत के बीच चयन का अधिकार दिया गया था और आपने आख़िरत को प्राथमिकता दी।

(सीरत इब्ने हिशाम, भाग-2, पृष्ठ 657; इब्ने कसीर, अल्-बिदायह वन-निहायह, भाग-5, पृष्ठ 246)

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

अनुवाद-

"ऐ अल्लाह! मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और उनकी आल (परिवार) पर अपनी कृपा और रह़मत नाज़िल फ़रमा जैसे तूने इब्राहीम (अ़लै०) और उनकी आल पर कृपा और रह़मत नाज़िल फ़रमाई। निस्संदेह तू अत्यंत प्रशंसनीय और महान है"।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के विसाल (देहान्त) के बाद-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के विसाल की ख़बर फैलते ही मदीना पर ग़म और दुःख की ऐसी स्थिति छा गई जिसकी कोई मिसाल नहीं मिलती। सह़ाबा (रज़ि०) पर सद्मे का पहाड़ टूट पड़ा। यहाँ तक कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) जैसे महान और दृढ़ ह्रदय सह़ाबी भी इस दुख को सहन न कर सके और भावनाओं की तीव्रता में कहने लगे कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का इन्तिक़ाल

नहीं हुआ, बल्कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने रब से मिलने गये हैं और वापस लौट आएँगे। जो व्यक्ति यह कहेगा कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इन्तिक़ाल हो गया है, उसे दंड दिया जाएगा।

(अल् तब्क़ातुल् कुब्रा, भाग 2, पृष्ठ 263 इब्ने कसीर, अल्-बिदायह वन्-निहायह, भाग 5, पृष्ठ 248)

ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) का सम्बोधन-

इस नाज़ुक समय में ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) मस्जिदे नबवी में आये। उन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मुबारक शरीर की ज़ियारत की, माथे को चूमा और फ़रमाया-

طِبْتَ حَيًّا وَمَيِّتًا

"आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जीवन में भी पवित्र थे और विसाल के बाद भी पवित्र हैं"।

फिर वे मस्जिद में आए और लोगों को सम्बोधित करते हुए ऐतिह़ासिक शब्द कहे, जिन्होंने पूरी उम्मत को सम्भाल लिया और कहा-

"जो व्यक्ति मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अ़िबादत करता था, वह जान ले कि मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इन्तिक़ाल हो चुका है और जो अल्लाह की अ़िबादत करता है, वह जान ले कि अल्लाह सदैव जीवित हैं"।

● इसके बाद उन्होंने यह आयत तिलावत की-

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ

"मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तो केवल एक रसूल हैं"।

यह सुनकर सह़ाबा (रज़ि०) को जैसे होश आ गया और वास्तविकता स्पष्ट हो गई।

(सीरत इब्ने हिशाम, भाग-2, पृष्ठ 660; इब्ने कसीर, अल्-बिदायह वन्-निहायह, भाग-5, पृष्ठ 249)

ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की बैअ़त-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विसाल के तुरन्त बाद ख़िलाफ़त का प्रश्न सामने आया। इसलिए अन्सार और मुहाजिरीन के बीच परामर्श हुआ और

अंततः ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को उम्मत का पहला ख़लीफ़ा चुना गया। सभी सह़ाबा (रज़ि०)ने उनके हाथ पर बैअ़त की, क्योंकि उस नाज़ुक समय में उम्मत को विघटन से बचाने और नेतृत्व को बनाये रखने के लिए तत्काल निर्णय आवश्यक था। (तारीख़ अल्-तब्री, भाग-2, पृष्ठ 233)

जनाज़े की नमाज़-

चूँकि मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का विसाल ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के कक्ष में हुआ था, इसलिए सह़ाबा (रज़ि०) ने वहीं आपको ग़ुस्ल दिया। जनाज़े की नमाज़ के बारे में यह निर्णय हुआ कि कोई एक व्यक्ति इमामत न करे, बल्कि लोग थोड़े-थोड़े समूहों में कक्ष में प्रवेश करें और व्यक्तिगत रूप से नमाज़-ए-जनाज़ा अदा करें। पहले पुरुषों ने, फिर महिलाओं ने और अंत में बच्चों ने नमाज़ पढ़ी।

इसी क्रम और बड़ी संख्या के कारण दफ़्न में कुछ विलम्ब हुआ और रात के समय ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को सुपुर्द-ए-ख़ाक किया गया।

(सीरत इब्ने हिशाम, भाग 2, पृष्ठ 662)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की मुबारक क़ब्र (रौज़ा-ए-अत्हर)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का विसाल जिस मुबारक कक्ष (हुज्रे) में हुआ था, वही कक्ष आपकी अन्तिम विश्राम-स्थली बना। सह़ाबा (रज़ि०)का इस बात पर सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि नबियों अ़लैहिमुस्सलाम को उसी स्थान पर दफ़्न किया जाता है जहाँ उनका इन्तिक़ाल होता है।

इसलिए ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के कक्ष में ही क़ब्र खोदी गई। इस निर्णय की आधार वह ह़दीस थी जिसमें ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया था कि हर नबी को उसी स्थान पर दफ़्न किया जाता है, जहाँ उसकी मृत्यु होती है।

(अत्तब्क़ातुल कुब्रा, भाग 2, पृष्ठ 293; इब्ने कसीर, अल्-बिदायह वन्-निहायह, भाग 5, पृष्ठ 252)

कफ़न-दफ़न-

जब दफ़्न का समय आया तो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के निकटतम और

विश्वसनीय सह़ाबा (रज़ि०)ने आपके मुबारक शरीर को क़ब्र में उतारा। रिवायतों के अनुसार ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ह़ज़रत फ़ज़्ल इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ह़ज़रत उ़सामा बिन ज़ैद (रज़ि०) और ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने औफ़ (रज़ि०) इस कार्य में सम्मिलित थे।

उन्होंने अत्यन्त आदर और सम्मान के साथ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को लहद में रखा।

यह सम्मान उन्हीं महान व्यक्तियों को प्राप्त हुआ जो अहले बैअ़त और आपके निकटतम साथियों में सम्मिलित थे। (सीरत इब्ने हिशाम, भाग 2, पृष्ठ 662)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुबारक क़ब्र की संरचना अत्यन्त सादा रखी गई। ज़मीन से लगभग एक बालिश्त ऊँची मिट्टी रखी गई, ताकि उसकी पहचान बनी रहे, लेकिन उसमें किसी प्रकार की कोई न सामग्री रखी गई और सजावट, दिखावा या आडम्बर।

यह सादगी उम्मत के लिए एक व्यावहारिक उदाहरण है कि क़ब्रों में अतिशयोक्ति, भव्य निर्माण और अनावश्यक सजावट से बचना चाहिए।

(इब्ने क़य्यिम अल् जौज़ी, ज़ादुल् मआ़द भाग 1, पृष्ठ 513)



भाग-3

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आचरण

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आचरण

हिन्द बिन अबी ह़ाला (रज़ि०) (जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सौतेले भाई और बहुत फसीह़ व बलीग़ रावी थे) बयान करते हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमेशा आख़िरत की फ़िक्र में रहते थे। यही सोच आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ग़ालिब रहती थी।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अक्सर ख़ामोश रहते और लम्बी ख़ामोशी अख़्तियार फ़रमाते, बे-ज़रूरत बात नहीं करते थे। जब बात करते तो हर भाग साफ़ और आपस में जुड़ा हुआ होता।

न आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बहुत ज़्यादा बोलते और न बहुत कम, बल्कि दर्मियानी और मुकम्मल बात फ़रमाते थे और घमण्ड करने वालों की तरह अधूरे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल नहीं करते थे। (ज़ादुल् मआ़द, इब्ने क़य्यिम, भाग 1, पृष्ठ 166)

स्वभाव में नर्मी-

● आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मिज़ाज बेहद नर्म, रह़मदिल और करीमाना था। न तबीयत में सख़्ती थी और न बद्ज़ुबानी या बेरुख़ी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) न किसी की तौहीन करते और न अपनी ज़ात के लिए तौहीन को पसन्द करते।

अल्लाह की दी हुई नेअ़मत चाहे कितनी ही मामूली क्यों न हो, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसकी क़द्र करते और कभी उसमें ऐ़ब न निकालते।

खाने-पीने की चीज़ों की न बुराई फ़रमाते और न ह़द से ज़्यादा तअ़रीफ़ करते। अगर पसन्द होती तो खा लेते और अगर तबीयत के मुताबिक़ न होती तो ख़ामोश रहते। (सीरत इब्ने हिशाम, भाग 1, पृष्ठ 403)

क्रोध से दूरी-

● ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दुनियावी मामलों या अपनी ज़ाती बातों पर कभी

गुस्सा नहीं होते थे, लेकिन जब अल्लाह के किसी हुक्म या हक़ की बे-हुरमती होती, तो उस समय आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का गुस्सा सिर्फ़ अल्लाह के लिए होता था और फिर कोई चीज़ आपको हक़ को लागू करने से नहीं रोक सकती थी यहाँ तक कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उस बुराई का ख़ात्मा फ़रमा देते।

इसी तरह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अपनी ज़ात के लिए कभी गुस्सा नहीं आता था और न ही आपने कभी किसी से व्यक्तिगत बदला लिया।

(ज़ादुल् मआ़द, भाग 1, पृष्ठ 170)

आप की मुस्कुराहट-

● हिन्द बिन अबी हाला (रज़ि०) आगे बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब इशारा फ़रमाते तो पूरे हाथ से इशारा करते।

तअ़ज्जुब के समय हाथ को पलट देते, बातचीत के दौरान दाएँ हाथ की हथेली को बाएँ हाथ के अंगूठे से मिलाते।

नाराज़गी के समय चेहरा मुबारक दूसरी तरफ़ फेर लेते और ख़ुशी के मौक़े पर निगाहें झुका लेते। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हँसी अधिकतर मुस्कुराहट होती थी और उस समय आपके मुबारक दाँत ऐसे दिखाई देते जैसे साफ़ और चमकदार ओले हों। (दलाइलुन्नुबूव्वह, बैहक़ी, भाग 1, पृष्ठ 349)

स्वभाव-

● हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि०) जो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सबसे क़रीबी लोगों में से थे, महान आ़लिम और हिक्मत व दानाई में ऊँचा मुक़ाम रखते थे।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के गुणों को बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) न तो कठोर स्वभाव वाले थे और न सख़्त दिल। बाज़ारों में शोर मचाने वाले नहीं थे।

बुराई का बदला बुराई से नहीं देते थे, बल्कि माफ़ फ़रमा देते और दरगुज़र करते थे।

जो व्यक्ति पहली बार आपको देखता वह रोअ़ब में आ जाता और जो

आपके साथ मेल-जोल रखता, वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मुहब्बत करने लगता।

(ख़साइसुल कुब्रा, इमाम सुयूती, भाग 1, पृष्ठ 87)

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के गुण-

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बदज़ुबानी, बेहयाई और अश्लीलता से पूरी तरह दूर थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बाज़ारों में कभी ऊँची आवाज़ में बात नहीं करते थे और न शोर-शराबा पसन्द करते थे। बुराई का बदला बुराई से नहीं देते थे, बल्कि हमेशा माफ़ कर देते थे।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी पूरी मुबारक ज़िन्दगी में कभी किसी पर हाथ नहीं उठाया, न किसी ख़ादिम पर और न किसी औरत पर सिवाय अल्लाह की राह में जिहाद के।

हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने कभी आपको अपनी ज़ाती तक्लीफ़ का बदला लेते नहीं देखा।

हाँ, अगर अल्लाह के हुक्मों की बे-हुरमती होती और उसकी हुरमत को ठेस पहुँचती, तो उस समय आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सबसे अधिक गुस्सा हो जाते थे।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल् फ़ज़ायल, हदीस, 2328)

घरेलू काम-

● जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को दो कामों में अख़्तियार दिया जाता, तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमेशा आसान रास्ता अपनाते, बशर्ते उसमें गुनाह न हो। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) घरेलू ज़िन्दगी में एक आम इन्सान की तरह रहते।

अपने कपड़े ख़ुद साफ़ करते, बकरी का दूध दुहते और अपने निजी काम ख़ुद करते। इससे आपकी सादगी और अमली नमूना सामने आता है, जो उम्मत के लिए ज़िन्दगी के हर पहलू में रहनुमाई है।

(ज़ादुल् मआद, इब्नुल् क़य्यिम, भाग 1, पृष्ठ 156)

ज़बान की हिफ़ाज़त-

● हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपनी ज़बान की हिफ़ाजत फ़रमाते और सिर्फ़

वही बात करते जिसका मक़्सद और फ़ायदा होता।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) लोगों को तसल्ली देते, नफ़रत और फूट को फैलने नहीं देते, किसी क़ौम या क़बीले के सम्मानित व्यक्ति से मुलाक़ात होती तो उसका आदर फ़रमाते।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) लोगों के बारे में संतुलित बात करते और अपने अच्छे व्यवहार से किसी को महरूम नहीं रखते।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने साथियों के हालात से वाक़िफ़ रहते और उनके मामलों के बारे में पूछा करते थे। (दलाइलुन्नुबुव्वह, बैहकी, भाग 1, पृष्ठ 355)

मध्य मार्ग-

● हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अच्छी बात की प्रशंसा फ़रमाते और उसे मज़बूत करते, जबकि बुरी बात को बुरा कहते और उसे कमज़ोर कर देते।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का व्यवहार हमेशा संतुलन और मध्यम मार्ग पर आधारित था, न अति और न कमी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) किसी मामले से ग़ाफ़िल नहीं होते थे इस डर से कि कहीं लोग लापरवाही या ऊब का शिकार न हो जाएँ।

हक़ के मामले में न कमी करते और न हद से आगे बढ़ते। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ रहने वाले लोग बेहतरीन अख़्लाक़ और किरदार वाले माने जाते थे।

(ज़ादुल् मआ़द, भाग 1, पृष्ठ 170)

सम्मानित व्यक्ति-

● हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नज़र में सबसे अधिक सम्मानित वह व्यक्ति था, जो दूसरों के दुख-दर्द में शरीक हो, हमदर्द हो और नेकी में आगे बढ़ने वाला हो।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह का नाम लेकर खड़े होते और अल्लाह ही का नाम लेकर बैठते। वहाँ मजलिस में जहाँ जगह मिलती वहीं बैठ जाते और दूसरों को भी यही शिक्षा देते।

मजलिस में हर व्यक्ति पर बराबर ध्यान देते, यहाँ तक कि हर इंसान यह

महसूस करता कि वही आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नज़दीक सबसे ज़्यादा सम्मानित है।

(ख़साइसुल् कुब्रा, सियूती, भाग 1, पृष्ठ 92)

ज़रूरतमन्द के साथ नर्मी-

● अगर कोई व्यक्ति किसी ज़रूरत या सवाल के साथ हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को रोक लेता, तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पूरे सब्र से उसकी बात सुनते यहाँ तक कि वह ख़ुद ही फ़ारिग़ हो जाता। कोई सवाल करने वाला या ज़रूरतमंद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दरवाज़े से खाली वापस नहीं जाता। अगर कुछ देना सम्भव न होता तो कम से कम नर्मी और मुहब्बत भरे अल्फ़ाज़ ज़रूर कहते।

(सहीह मुस्लिम, किताबुज् ज़कात, हदीसः 2312)

समानता-

● हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का हुस्ने-अख़्लाक़ सबके लिए आम था और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उम्मत के लिए एक दयालु पिता की तरह थे। हक़ के मामले में सब लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कीनज़र में बराबर थे।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मजलिस इल्म, अिबादत, हया, सब्र और अमानत की मजलिस होती थी। न वहाँ ऊँची आवाज़ होती, न किसी की ग़ीबत, न इज़्ज़त पर हमला और न कमज़ोरियों का मज़ाक़।

सबको बराबर समझा जाता और श्रेष्ठता सिर्फ़ तक़्वा के आधार पर होती थी। लोग बड़ों का सम्मान, छोटों पर दया, ज़रूरतमंद को प्राथमिकता और मुसाफ़िरों व नये आने वालों की सेवा को अपना सम्मान समझते थे।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल् अदब, हदीस-6011)

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का स्वभाव और आदतें-

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब चलते तो ऐसा महसूस होता मानो ढलान से उतर रहे हों। आपके क़दम मज़बूत लेकिन नर्म होते थे। जब किसी की तरफ़ ध्यान देते तो पूरे शरीर के साथ उसकी ओर मुतवज्जेह होते। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की निगाह अधिकतर झुकी रहती थी और चलते समय सहाबा (रज़ि०)को अपने आगे कर देते और ख़ुद पीछे रहते। जिससे भी मुलाक़ात

होती, सलाम में पहल फ़रमाते।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) केबाल कंधों तक होते, न बहुत लम्बे और न बहुत छोटे, बल्कि दर्मियानी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) माँग निकालते, सिर में अक्सर तेल लगाते, दाढ़ी में कंघी करते और वुज़ू, कंघी या मोज़े पहनने में दाईं तरफ़ से शुरुआत करना पसन्द फरमाते।

आपके पास सुर्मा-दानी थी और रात को दोनों आँखों में तीन-तीन बार सुर्मा लगाते थे।

(अश्शमाइलुल् मुहम्मदिय्या, इमाम तिर्मिजी, हदीस **363**, **364** सुनन अबी दाऊद, हदीस, **4185**)

बद्ज़ुबानी से परहेज़-

● हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमेशा ख़ुश-मिज़ाज, बेहद विनम्र और नर्म स्वभाव वाले थे। न सख़्त मिज़ाज थे और न बद्ज़ुबान। न चिल्लाकर बात करते, न घमंड से बातचीत फ़रमाते, न किसी पर ऐब लगाते और न कंजूस थे। जो बात नापसन्द होती उससे नज़र फेर लेते। न कठोर प्रतिक्रिया देते और न मायूसी दिखाते।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तीन चीज़ों से ख़ुद को पूरी तरह बचा रखा था। झगड़ा, घमंड और बेफ़ायदा बातचीत। (सहीह मुस्लिम, किताबुल् फ़ज़ायल, हदीसः **2327**)

तीन बातों से परहेज़-

● आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) लोगों को भी तीन बातों से रोकते थे, किसी की बुराई करना, दोष लगाना और छिपी हुई बातों की टोह में पड़ना।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सिर्फ़ वही बात फ़रमाते जिसमें सवाब की उम्मीद होती।

जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बातचीत करते तो उपस्थित लोग अदब से इस तरह सिर झुका लेते मानो उनके सिरों पर परिंदे बैठे हों। आपके ख़ामोश होने पर सहाबा बात करते, मगर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मजलिस में कभी झगड़ा नहीं होता था।

अगर कोई व्यक्ति बात करता तो सब ख़ामोशी से सुनते, यहाँ तक कि

वह अपनी बात पूरी कर लेता और हर व्यक्ति को पूरा मौक़ा दिया जाता।

(सीरत इब्ने हिशाम, भाग-1, पेज नं० 404)

अजनबियों के साथ व्यवहार-

● लोग जिस बात पर हँसते, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी मुस्कुरा देते और जिस बात पर तअ़ज्जुब करते, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी तअ़ज्जुब का इज़्हार फ़रमाते। मुसाफ़िरों और अजनबियों के सवाल बड़े सब्र से सुनते और फ़रमाते-

"जब तुम किसी ज़रूरतमंद को देखो तो उसकी मदद करो"।

जब कोई व्यक्ति बात कर रहा होता तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसकी बात नहीं काटते, लेकिन अगर वह ह़द से बढ़ने लगता तो नर्मी से रोक देते या मह़फ़िल से उठ जाते। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल् अदब, ह़दीसः 6030)

सामाजिक व्यवहार-

● ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सबसे अधिक सख़ी, नर्म दिल, सच्चे और अच्छे अख़्लाक़ वाले थे। जो व्यक्ति पहली बार आपको देखता, आपकी हैबत उसके दिल पर छा जाती और जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सोह़बत में रहता, वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बेपनाह मुह़ब्बत करने लगता। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में कहने वाला कहता-

"न मैंने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पहले आप जैसा किसी को देखा और न आप के बाद"।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नसब, किरदार और अख़्लाक़ के एतिबार से सबसे अधिक सम्मानित थे।

सह़ाबा (रज़ि०) के साथ घुल-मिल कर रहते, उनके बच्चों से प्यार फ़रमाते, गुलाम और आज़ाद सबकी दअ़वत क़ुबूल करते, बीमारों की अ़यादत के लिए जाते और माफी माँगने वाले को माफ़ कर देते थे।

(सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल् फ़ज़ायल, ह़दीसः 2331)

बच्चों से प्यार-

● सह़ाबा (रज़ि०) की मजलिस में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कभी पैर फैलाकर नहीं बैठते

थे, ताकि किसी को तंगी न हो। सह़ाबा (रज़ि०) अशआ़र या जाहिलियत के दौर की घटनाएँ बयान करते तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ख़ामोश रहते या मुस्कुरा देते।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बेहद नर्म दिल और मेहरबान थे। अपने नवासों ह़सन (रज़ि०) और ह़ुसैन (रज़ि०) को गोद में बिठाते और प्यार फ़रमाते। एक मौक़े पर नवासे की नाज़ुक ह़ालत देखकर आपकी आँखों से आँसू बह निकले और फ़रमाया-

"यह रह़मत है, अल्लाह इसे अपने बंदों में से जिसके दिल में चाहता है डाल देता है"।

जंग-ए-बद्र के क़ैदियों में ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) की कराह सुनकर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को नींद नहीं आई, मगर इन्साफ़ के तक़ाज़े पर कोई समझौता नहीं फ़रमाया। (अत्तबकातुल् कुब्रा, इब्ने सअ़द, भाग 2, पेज नं० 21 अल्-बिदाया वन-निहाया, इब्ने कसीर, भाग 3, पृष्ठ 299)

आप की नसीह़त का तरीक़ा-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बेहद अच्छे अख़्लाक़ वाले, मेहरबान और रह़मदिल थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) लोगों की तबीयत की ऊब और दिलों की ह़ालत का ख़ास ख़याल रखते थे, इसलिए नसीह़त और वअ़ज हमेशा बीच-बीच में फ़रमाते, ताकि लोग थकान या बोझ महसूस न करें। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कीतअ़लीम का अन्दाज़ रह़मत और ह़िक्मत पर आधारित था, जिसमें सामने वाले की मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्थिति को पूरी अह़मियत दी जाती थी।

(ज़ादुल् मआ़द, इब्नुल् क़य्यिम, भाग 1, पृष्ठ 184)

माँ की राह़त का ख़याल-

● अगर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नमाज़ के दौरान किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनते तो नमाज़ छोटी कर देते और फ़रमाते-

"मैं नमाज़ के लिए खड़ा होता हूँ, फिर बच्चे के रोने की आवाज़ सुनकर नमाज़ को छोटा कर देता हूँ। इस ख़याल से कि उसकी माँ को तक्लीफ़ न हो"।

यह घटना आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफ़क़त, रह़मत और उम्मत के ह़ालात से

वाक़िफ़ होने का स्पष्ट प्रमाण है। (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुस्सलात, ह़दीसः 470)

शिकायत का निवारण-

● ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सह़ाबा (रज़ि०) को आपसी शिकायतों से जहाँ तक संभव हो दूर रहने की ताक़ीद फ़रमाते थे और कहते, "तुम में से कोई व्यक्ति मेरे पास दूसरे की शिकायत न लाया करे, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे पास इस ह़ालत में आऊँ कि मेरा दिल साफ़ हो"।

इस हिदायत का उद्देश्य समाज में दिलों की सफ़ाई, आपसी भरोसा और हुस्ने-जन को बढ़ावा देना था। (जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुल् बिर्र वस्सिला, ह़दीसः 2011)

समाज की ज़िम्मेदारियाँ-

● ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने राज्य और समाज की ज़िम्मेदारियों के बारे में भी उम्मत के लिए ऊँचे उसूल निर्धारित किये। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "जिसने माल छोड़ा, वह उसके वारिसों का है और अगर किसी पर कर्ज़ बाक़ी हो तो वह हमारी ज़िम्मेदारी है"।

इस फ़रमान से मालूम होता है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) समाज के कमज़ोर और क़र्ज़दार लोगों की सहायता को राज्य की ज़िम्मेदारी मानते थे।

(सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल् फ़रायज़, ह़दीस-1619)

घरेलू काम-

● ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) घरेलू जीवन में एक आ़म इन्सान की तरह़ रहते थे। ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हाफ़रमाती हैं कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने कपड़े ख़ुद साफ़ कर लेते, अपना काम ख़ुद करते, कपड़ों में पेवन्द लगा लेते और जूते भी ख़ुद मरम्मत कर लेते थे।

जब उनसे पूछा गया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) घर में किस तरह़ रहते थे, तो उन्होंने फ़रमाया-

"आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) घर के कामों में लगे रहते और जब नमाज़ का समय आता तो नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ ले जाते"। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल् अज़ान, ह़दीस 676)

घरवालों के साथ नर्मी-

● ह़ज़रत अनस बिन मालिक बयान करते हैं कि मैंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बढ़कर किसी को अपने घरवालों के साथ ज़्यादा रह़मदिल, मेहरबान और अच्छा व्यवहार करने वाला नहीं देखा।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने परिवार के साथ मुह़ब्बत, नर्मी और मुस्कुराते हुए पेश आते थे, जो उम्मत के लिये घरेलू जीवन का आदर्श नमूना है।

(सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल् फ़ज़ायल, ह़दीसः **2310**)

ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार-

● ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ग़ैर-मुस्लिमों के साथ नर्मी, इन्साफ़ और अच्छे व्यवहार का बेहतरीन नमूना थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने साफ़ फ़रमाया कि जिसने किसी ज़िम्मी (ग़ैर-मुस्लिम नागरिक) पर ज़ुल्म किया, उसके ह़क़ में कमी की, उस पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ डाला या उसकी रज़ामंदी के बिना उससे कोई चीज़ ली, तो क़ियामत के दिन मैं ख़ुद उसके ख़िलाफ़ दावा करुँगा। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ग़ैर-मुस्लिमों के जान-माल की ह़िफ़ाज़त को इस्लामी राज्य की ज़िम्मेदारी क़रार दिया और फ़रमाया कि जिसने किसी मुआ़हिद (अह़ले ज़िम्मा या सन्धि वाले ग़ैर-मुस्लिम) को नाह़क़ क़त्ल किया, वह जन्नत की ख़ुशबू तक नहीं पायेगा।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अ़मली नमूना यह था कि मदीना में यहूदी पड़ोसियों के हक अदा किये, उनकी अ़यादत की, उनके जनाज़े के सम्मान में खड़े हुए और उनके साथ लेन-देन में पूरा इन्साफ़ क़ायम रखा।

(सुनन अबी दाऊद, ह़दीसः **3052**; सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीसः **3166**; सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीसः **961**)

यहूदी की अ़यादत-

● ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ग़ैर-मुस्लिमों के साथ व्यवहार में नर्मी और भलाई चाहने को दीन का ह़िस्सा क़रार दिया।

एक यहूदी लड़के की बीमारी के दौरान आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने नर्मी से उसे

इस्लाम की दअ़वत दी और उसके इस्लाम क़ुबूल करने पर ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया।

इसी तरह़ तायफ़ में भारी तक्लीफ़ें सहने के बावजूद आपने बद्दुआ करने के बजाय हिदायत की दुआ़ फरमाई, जो ग़ैर-मुस्लिमों के साथ रह़म और शफ़क़त की उज्ज्वल मिसाल है।

(सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल् जनायज़, ह़दीसः 1356; सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीसः 3231)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सादगी-

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कभी किसी खाने में ऐ़ब नहीं निकाला। अगर पसन्द आता तो खा लेते और अगर नापसन्द होता तो छोड़ देते।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने दस वर्ष तक आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ख़िद्मत की, मगर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कभी 'उफ' तक नहीं कहा और न यह फ़रमाया कि यह क्यों किया या क्यों नहीं किया।

सह़ाबा (रज़ि०) आपकी इज़्ज़त में खड़े नहीं होते थे, क्योंकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इसे नापसन्द फ़रमाते थे।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इर्शाद फ़रमाया-

"मेरी तअ़रीफ़ में ह़द से आगे न बढ़ो, जैसे ईसाइयों ने ईसा की तअ़रीफ में ग्लू किया। मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। मुझे अल्लाह का बन्दा और रसूल ही कहो"।

(सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल् अह्मा, ह़दीसः 5409; सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल् फ़ज़ायल, ह़दीस 2309)

आप की सादगी-

● ह़ज़रत अदी बिन ह़ातिम बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें अपने घर बुलाया। एक तकिया पेश किया, मगर ख़ुद ज़मीन पर बैठ गये। इससे मुझे यकीन हो गया कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कोई बादशाह नहीं, बल्कि अल्लाह के नबी हैं।

एक व्यक्ति आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कोदेखकर काँपने लगा तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया-

"घबराओ नहीं, मैं कोई बादशाह नहीं हूँ मैं तो कुरैश की एक औरत का बेटा हूँ"।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) घर के काम ख़ुद कर लेते, बाज़ार से सामान लाते और जानवरों का ख़याल रखते थे। (अत्तबक़ातुल् कुब्रा, इब्ने सअ़द, भाग 1, पृष्ठ 366)

जानवरों पर रह़म करने का हुक्म-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जानवरों पर दया और अच्छे व्यवहार का हुक्म दिया और फ़रमाया, "अल्लाह ने हर चीज़ के साथ एह़सान करना फ़र्ज़ किया है। जब ज़ब्ह़ करो तो अच्छे तरीक़े से करो और जानवर को तक्लीफ़ न दो"। इसी तरह़ आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नेफ़रमाया कि जानवरों पर सवारी करने और उनके इस्तेमाल में अल्लाह से डरते रहो।

(सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीसः 1955; सुनन अबी दाऊद, ह़दीसः 2548)

ख़िद्मतग़ारों के साथ मेहरबानी-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "तुम्हारे मातेह़त तुम्हारे भाई हैं, जो तुम ख़ुद खाते हो वही उन्हें खिलाओ और जो तुम पहनते हो वही उन्हें पहनाओ और उन पर उनकी ताक़त से ज़्यादा बोझ न डालो"।

एक व्यक्ति ने पूछा कि नौकर को कितनी बार माफ़ करें? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया-

"सत्तर बार" और यह भी फ़रमाया, "मज़दूर को उसकी मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो"।

(सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीसः 2545; सुनन अबी दाऊद, ह़दीस, 5164)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का लिबास-

लिबास में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को कमीज़ ज़्यादा पसन्द थी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सफ़ेद कपड़े पहनने की तर्ग़ीब देते और फ़रमाते कि इन्हें कफ़न के लिए भी

इस्तेमाल करो।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मोज़ों पर मसह़ करते थे। एक जूता पहनकर चलने से मना फरमाते थे और दाएँ पैर से जूता पहनना पसन्द फ़रमाते थे।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अगूँठी-

● आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अंगूठी पहनते थे, जिस पर "मुह़म्मद रसूलुल्लाह" नक़्श था और क़ज़ा-ए-ह़ाजत के समय उसे उतार देते थे। फ़तेह़ मक्का के दिन आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) केसिर पर काली पगड़ी थी और तहबंद आधी पिंडुली तक होती थी।

(सुनन तिर्मिज़ी, ह़दीसः **1767, 1720**; सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीसः **5855**; सुनन अबी दाऊद, ह़दीसः **159**)

सरकारी मुहर-

● ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दाएँ हाथ में अंगूठी पहनते थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने चाँदी की एक अंगूठी बनवाई थी, जिस पर तीन पंक्तियों में "मुह़म्मद", "रसूल" और "अल्लाह" लिखा हुआ था और उसे सरकारी मुहर के रूप में इस्तेमाल फ़रमाते थे।

जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क़ज़ा-ए-ह़ाजत के लिए जाते तो यह अंगूठी उतार दिया करते थे।

फ़तेह़ मक्का के मौक़े पर जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) शहर में दाख़िल हुए तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सिर पर काली पगड़ी थी और जब पगड़ी बाँधते तो उसका एक सिरा दोनों कंधों के बीच छोड़ देते थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तहबंद (लुंगी) आ़मतौर पर आधी पिंडुली तक होती थी, जो तवाज़ोअ़ और सादगी की स्पष्ट मिसाल है।

(सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस, **5866**; सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीसः **2091**; सुनन अबी दाऊद, ह़दीसः **4223**)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का खाना-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) टेक लगाकर खाना नहीं खाते थे, बल्कि तवाज़ोअ़ और सादगी के साथ बैठकर खाना खाते थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को कद्दू और लौकी पसंद थी। इसी तरह हल्वा और शहद भी प्रिय थे, जबकि गोश्त

कभी-कभी ही मुयस्सर होता था।

● आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया-

● "जो व्यक्ति अल्लाह का नाम लिये बिना खाना खाता है, उसके साथ शैतान भी शरीक हो जाता है" और यह भी फ़रमाया-

● "अल्लाह इस बात से ख़ुश होता है कि बन्दा कुछ खाये या पिये, फिर उस पर अल्लाह की ह़म्द करे"।

● ठंडा और मीठा पानी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अधिक पसंद था और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "खाने और पीने का सबसे बेहतरीन बदला दूध है"।

● आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ज़मज़म का पानी खड़े होकर पीते थे, जबकि सामान्य पानी बैठकर तीन सांसों में पीते थे।

(सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीसः **5398, 5405**; सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीसः **2022, 2023**; सुनन तिर्मिज़ी, ह़दीसः **1887**)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पसन्दीदा चीज़े (ख़ुशबू)-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ख़ुशबू को पसंद फ़रमाते थे और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास एक इत्रदान होता था, जिससे आप ख़ुशबू लगाया करते थे। अगर कोई ख़ुशबू तोहफ़े के तौर पर पेश करता तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसे रद्द नहीं फ़रमाते थे।

● आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया-

● "तीन चीज़ों को रद्द न करो। तकिया, ख़ुशबू और दूध"।

● इसी तरह़ आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ख़ुशबू के आदाब भी बयान फ़रमाये कि मर्दों की ख़ुशबू वह है जिसकी महक तेज़ और रंग हल्का हो, जबकि औ़रतों की ख़ुशबू वह है जिसका रंग ज़्यादा हो और ख़ुशबू हल्की हो।

(सुनन अबी दाऊद, ह़दीस **4177**; जामेअ़ तिर्मिज़ी, ह़दीसः **2790**)

शाएर को इन्आ़म-

● ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ख़ुद शाएर नहीं थे, मगर अर्थपूर्ण और पाकीज़ा

अशआ़र को पसन्द फरमाते थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने शायरी की इजाज़त दी, उस पर इनआ़म भी अ़ता फ़रमाया और कुछ मौक़ों पर अशआ़र सुने।

एक बार आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सह़ाबी कअ़ब बिन मालिक का क़सीदा सुना और खुश होकर उन्हें इनआ़म के तौर पर एक चादर अता फ़रमाई।

(सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीसः 6145)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आराम करने का तरीक़ा-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब आराम फ़रमाते तो दाईं करवट लेटते और अपना दायाँ हाथ दाएँ गाल के नीचे रख लेते थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का बिस्तर बेहद सादा था। वह चमड़े का बना हुआ था, जिसके अंदर खजूर की छाल भरी हुई थी।

यह सादगी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जाहिदाना ज़िन्दगी और अल्लाह पर भरोसे की स्पष्ट मिसाल है। (सहीह बुखारी, हदीसः 6456; मुस्नद अह़मद, भाग 6, पृष्ठ 48)



खण्ड-ख

भाग-3

अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सुकथनों का वर्णन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अन्तिम महाईशदूत के सुकथनों का वर्णन

जो अपने लिए पसन्द करो वही दूसरे के लिए-

١۔ عن أنس بن مالك۔ رضى الله عنه ۔ عن النبى ۔صلى الله عليه وسلم۔
قال : لا يؤمن أحدكم حتى يحب لأخيه ما يحب لنفسه۔
(متفق عليه ۔البخارى ۔١٣۔و مسلم ۔٤٥)

(1) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, उस वक़्त तक तुम ईमान वाले नहीं हो सकते यहाँ तक कि वही पसन्द करो अपने भाई के लिए भी जो पसन्द करते हो अपने लिए। (बुख़ारी-13 व मुस्लिम-45)

٢۔ و عن أبى هريرة ۔رضى الله عنه۔ قال : قال رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم ۔ من لا يرحم لا يرحم ۔ (متفق عليه ۔البخارى ۔٥٩٩٧۔مسلم ٢٣١٨)

(2) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, जो इन्सानों पर दया नहीं करता अल्लाह उस पर दया नहीं करता। (बुख़ारी-5997 व मुस्लिम-4318)

ज़मीन वालों पर रह़म-

٣۔ وعن عبد الله بن عمرو بن العاص ۔ رضى الله عنهما۔ قال : سمعت رسول الله ۔ صلى الله عليه وسلم ۔ يقول : الراحمون يرحمهم الرحمٰن ، ارحموا من فى الأرض يرحمكم من فى السماء ۔ (رواه ابو داؤد ۔الأدب ۔ ٤٦٤١)

(3) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, दया करने वालों पर बड़ा दयावान अल्लाह दया करेगा। ज़मीन पर रहने वाली मख़्लूक़ (समस्त प्राणियों) पर तुम दया करो तो आसमान वाला तुम पर दया करेगा। (अबूदाऊद-4641)

वज़नी आ़माल-

(٤) عَنْ اَبِى الدَّرْداءِ؛ رَضِىَ اللّٰهُ عَنهُ عَنِ النَّبِي ﷺ قَالَ : مَامِنْ شئ ءٍ اَثْقَلُ فِئ المِيْزَانِ مِنْ حُسْنِ الْخُلُقِ (رواه ابو داؤد ، باب فى حسن الخلق، رقم، ٧٤٩٩)

(4) हज़रत अबीदर्दा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इर्शाद फ़रमाया, क़ियामत के दिन मोमिन के तराज़ू में अच्छे अख़्लाक़ से ज़्यादा भारी कोई चीज़ नहीं होगी। (अबूदाऊद-7499)

पड़ोसी से व्यवहार-

٥ـ و عـنـه أن رسول الله ـ صلى الله عليه وسلم ـ قال : من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فلا يؤذِ جاره ـ (متفق عليه : البخارى ٥١٨٥ و ٦٠١٨ـو مسلم: ٤٧)

(5) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो व्यक्ति अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान (आस्था) रखता हो, उसे चाहिए कि वह अपने पड़ोसी को कष्ट न दे। (बुख़ारी-5185 व मुस्लिम-47)

जानवरों पर दया-

٦ـ و عـنـه ـرضى الـلـه عـنـه ـ عن النبى ـ صلى الله عليه وسلم ـ قال : بينما رجل يمشى بـطـريق اشتد عليه العطش ، فوجد بئراً فنزل فيها فشرب ، ثم خرج فاذا كلبٌ يلهث يـأكل الثرى من العطش ، فقال الرجل : لقد بلغ هذاالكلب من العطش مثل الذى كان بـلـغ بى ، فنزل البئر ، فملأ خفه ثم أمسكه بفيه ، فسقى الكلب فشكر الله له ، فغفر له ، قـالـو ا : يا رسول الله ! و إن لـنـا فـى البهائم أجراً ؟ فقال : فى كل ذات كبد رطبةٍ أجرٌ ـ (متفق عليه ،واللفظ للبخارى)-[البخارى ٦٠٠٩و : ١٧٣) مسلم (٢٢٤٤)]

(6) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "एक व्यक्ति रास्ता चल रहा था कि उसे बड़ी तेज़ प्यास लगी इतने में उसे एक कुआँ मिला और उसने इसमें उतर कर पानी पिया फिर जब बाहर निकला तो देखा एक कुत्ता हांफ रहा है और प्यास की वजह से तरी को चाट रहा है। यह देख कर उस व्यक्ति ने कहा यह कुत्ता भी उतना ही ज़्यादा प्यासा मालूम होता है जितना मैं था, अतः वह फिर कुँए में उतरा और अपने जूते में पानी भरने के बाद मुँह से पकड़ कर ऊपर लाया और कुत्ते को पानी पिलाया। अल्लाह तआ़ला ने उसके इस कार्य को पसंद किया और उसकी मग़्फ़िरत (क्षमा) कर दी।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथियों ने कहा या रसूलल्लाह! क्या हमें जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने में भी सवाब (पुण्य) मिलता है? हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया हर जानदार (के साथ अच्छा व्यवहार करने) पर सवाब मिलता है। (बुख़ारी शरीफ़-6009 मुस्लिम-2244)

पेड़ पौधे लगाने वाले के लिए सद्कः-

٧- و عن أنس بن مالك - رضى الله عنه- عن النبى - صلى الله عليه وسلم- قال : ما من مسلم يغرس غرساً أو يزرع زرعاً ، فيأكل منه طيرٌ ، أو إنسانٌ أو بهيمةٌ ، إلا كان له به صدقةٌ - (متفق عليه ، واللفظ للبخارى)-(٢٣٢٠و : ٦٠١٢) مسلم (١٥٥٣)

(7) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, यदि कोई मुसलमान वृक्ष (पेड़) लगाता है और उस पेड़ से कोई इन्सान या जानवर खाता है तो पेड़ लगाने वाले के लिए वह सदकः हो जाता है। (बुख़ारी-6012 मुस्लिम-1553)

जानवरों को कष्ट न दो-

٨ - و عن عبد الله بن جعفر - رضى الله عنهما- قال : دخل رسول الله -صلى الله عليه وسلم - حائطاً لرجل من الأنصار ، فاذا فيه جملٌ ، فلما رأى رسول الله -صلى الله عليه وسلم - حَنَّ و ذَرَفَت عيناه ، فأتاه النبى صلى الله عليه وسلم - فمسح سراته و ذفراه ، فسكن ، فقال: من ربُّ هذاالجمل ؟ لمن هذا الجمل ؟ فجاء فتىً من الأنصار ، فقال : هذا لى يا رسول الله ! قال : أفلا تتقى الله فى هذه البهيمة التى ملكك الله اياها ؟؟فانه يشكو الى أنك تجيعه و تدئبه - (رواه أحمد و أبو داؤد-(٢٥٤٩)

(8) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक अन्सारी सह़ाबी के बाग़ में तशरीफ़ ले गये, वहाँ एक ऊँट था जब उस ऊँट ने आप को देखा, तो ऐसा डकारा और ऐसी दर्द भरी आवाज़ उसने निकाली (जैसी बच्चे के जुदा हो जाने पर ऊँटनी की आवाज़ निकलती है) और उसकी आँखों से आँसू भी जारी हो गये। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसके पास गये और आप ने उस पर हाथ फेरा तो वह शान्त हो गया। फिर आपने पूछा यह ऊँट किसका है? इस का मालिका कौन है? एक अन्सारी नौजवान आये और उन्होंने कहा, हज़रत

यह ऊँट मेरा है, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इस बेचारे बेज़बान जानवर के बारे में तुम उस अल्लाह से डरते नहीं जिसने तुमको इसका मालिक बनाया है। इसने मुझसे शिकायत की है कि तुम इसको भूखा रखते हो और ज़्यादा काम ले कर तुम इसको बहुत कष्ट पहुँचाते हो।

(अबू दाऊद-2549)

किसी जानदार को आग़ का अ़ज़ाब नहीं-

٩- و عن ابن مسعود -رضى الله عنه -قال : كنا مع رسول الله -صلى الله عليه وسلم - فى سفر، فانطلق لحاجته ، فرأينا حمرة معها فرخان، فأ خذنا فرخيها ، فجائت الحمرة فجعلت تفرش ، فجاء النبى -صلى الله عليه وسلم- فقال : من فجع هذه بولدها ؟ رُدوا ولدها عليها ورأى قرية نمل قد حرقتها ، فقال : من حرق هذه ؟ فقلنا : نحن قال : إنه لا ينبغى أن يعذب بالنار إلارب النار - (رواه أبو داؤد -الجهاد (٢٦٧٥)

(9) ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) कहते हैं कि हमने अपने पिता से सुना कि एक सफ़र में मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ था, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क़ज़ा-ए-ह़ाजत (लैट्रीन) के लिए गये थे कि उसी समय हमारी नज़र एक छोटी सी सुर्ख़ (लाल) चिड़िया पर पड़ी, जिसके साथ छोटे-छोटे उसके दो बच्चे भी थे हमने उन बच्चों को पकड़ लिया, वह चिड़िया आई और हमारे सरों पर मंडलाने लगी, इतने में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तशरीफ़ ले आये, आपने फरमाया, किसने इसके बच्चे पकड़ कर इसे सताया है? इस के बच्चे इस को वापस कर दो और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने चींटियों की एक बस्ती देखी हम ने वहाँ आग लगा दी थी आपने फ़रमाया, किसने इन को आग से जलाया है? हमने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हमने ही यह आग लगाई है आपने फ़रमाया, आग के पैदा करने वाले ख़ुदा के सिवा किसी के लिए यह सज़ा देने का अधिकार नहीं है कि वह किसी जानदार को आग का अज़ाब दे। (अबूदाऊद-2675)

जानवरों को बाँधने की मनाही-

١٠- و عن عبد الله بن عمر -رضى الله عنهما- قال : قال رسول الله -صلى الله عليه وسلم-

عُذِّبت إمرأةٌ فى هِرّة لم تطعمها ولم تسقها ولم تتركها تأكل من خشاش الأرض ـ

(رواه مسلم : ٢٤٤٣)

(10) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, एक बेदर्द और बेरह़म औ़रत इसलिए जहन्नम में गिराई गई कि उसने एक बिल्ली को बाँध कर भूखा मार डाला, न तो उसे ख़ुद कुछ खाने को दिया और न उसे छोड़ा कि वह ज़मीन के कीड़े मकोड़ों से अपनी गिज़ा (खाना) ह़ासिल कर लेती। (मुस्लिम-2443)

नर्म मिज़ाज-

(١١) عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بن مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ : اَلَا اُخْبِرُكُمْ بِمَنْ يَحرُمُ عَلَى النّارِ، وَبِمَنْ تَحْرُمُ عَلَيهِ النّارُ ؟ عَلٰى كُلِّ قَرِيْبٍ هَيِّن سَهْلٍ

(رواه الترمذى وقال : هذا حديث حسن غريب، باب فضل كل قريب هين سهل، رقم : ٢٤٨٨)

(11) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इर्शाद फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि वह शख़्स कौन है जो आग पर ह़राम होगा और जिस पर आग ह़राम होगी? (सुनो मैं बताता हूँ) दोज़ख़ की आग ह़राम है हर ऐसे शख़्स पर जो लोगों से क़रीब होने वाला, निहायत नर्म मिज़ाज और नर्म तबीअ़त हो। (तिर्मिज़ी-2488)

देहाती के साथ हमदर्दी-

١٢ـ و عنه ـرضى الله عنهـ قال : بال أعرابى فى المسجد فقام الناس إليه ليقعوا فيه ، فقال النبى ـصلى الله عليه وسلمـ دعوه و أريقوا على بوله سجلا من ماءٍ ، أو ذنوباً من ماءٍ،فإنما بعثتم ميسرين ، ولم تبعثوا معسّرين ـ

(رواه البخارى :٦١٢٨ و : ٢٢٠)

(12) ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक बार एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया सह़ाबा (रज़ि०) उनकी ओर दौड़े परन्तु रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, इसके पेशाब को मत रोको फिर आपने (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पानी का डोल मंगाया और पेशाब की जगह पर पानी बहा दिया। (बुख़ारी-6128)

तिजारत में धोखा न दे-

١٣- وعن ابن عمر -رضى الله عنهما- قال : ذكر رجلٌ لرسول الله -صلى الله عليه وسلم- أنه يخدعُ فى البيوع؟ فقال -صلى الله عليه وسلم- : "من بايعت ، فقل لا خلابة" - (متفق عليه) البخارى (٢١١٧)، مسلم (١٥٣٣)

(13) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, कोई भी सामान बेचते या ख़रीदते समय धोखा देकर दाम न बढ़ाओ। (बुख़ारी-2117 व मुस्लिम-1533)

नौकरों के साथ व्यवहार-

١٤- و عن أنس -رضى الله عنه- قال : ما مسِست ديباجاً ولا حريراً ألين من كف رسول الله -صلى الله عليه وسلم- ولا شممت رائحة قط أطيب مِن رائحة رسول الله -صلى الله عليه وسلم- و لقد خدمت رسول الله- صلى الله عليه وسلم- عشر سنين ، فما قال لى قط : أُفّ، ولا قال لى لشئٍ فعلته : لم فعلته ؟ ولا لشئٍ لم أفعله : ألا فعلت كذا ؟ (متفق عليه) البخارى (٣٥٦١)، مسلم (٢٣٣٠)

(14) ह़ज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने दीबा और रेशम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुबारक हथेली से ज़्यादा नर्म नहीं छुआ और कभी कोई ख़ुशबू रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ख़ुशबू से अधिक अच्छी नहीं सूंघी और मैंने आप की दस वर्ष सेवा की आपने कभी उफ़ भी नहीं कहा और न किसी काम के करने या न करने पर आपने कभी फ़रमाया कि ऐसा क्यों किया या क्यों न किया। (बुख़ारी-3561 व मुस्लिम-2330)

ज़बान का सह़ी प्रयोग-

١٥- و عن عبد الله بن عمرو بن العاص -رضى الله عنهما- قال : لم يكن رسول الله -صلى الله عليه وسلم- فاحشاً ولا متفحشاً ، وكان يقول : "إن مِن خياركم أحسنكم أخلاقاً" - (متفق عليه [البخارى -٣٥٥٩، مسلم ٢٣٢١)

(15) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जान बूझ कर या अन्जाने में कभी भी अशिष्ट बात न

निकालते थे और फ़रमाते थे कि तुम में सबसे बेहतर वह है जिस का व्यवहार अच्छा हो। (बुख़ारी-3559 व मुस्लिम-2321)

अच्छे व्यवहार का वज़न-

١٦۔ و عن أبی الدرداء ۔رضی الله عنه۔ قال : "ما من شئٍ أثقل فی میزان المؤمن یوم القیامة من حسن الخُلُق ، وإن الله یبغض الفاحش البذِیَّ "

(رواه الترمذی) [٢٠٠٣] وقال : حدیث حسن صحیح

(16) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, मोमिन (मुसलमान) बन्दे की नेकियों के तौलने के समय अच्छे व्यवहार से अधिक कोई वस्तु भारी न होगी और अल्लाह तआ़ला बकवास बकने वाले बदज़बान आदमी से घृणा करता है। (तिर्मिज़ी-4003)

हरामख़ोरी की मनाही-

١٧۔ و عن أبی هریرة ۔رضی الله عنه۔ قال : سُئلَ رسول الله ۔صلی الله علیه وسلم۔ عن أکثر ما یُدخل الناس الجنة ؟ قال : " تقوی الله و حسن الخُلُق "و سُئل عن أکثر ما یُدخل الناس النار ؟ فقال : " الفم والفرج "

(رواه الترمذی [٢٠٠٥] وقال : حدیث حسن صحیح)

(17) हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछा गया कि किसके कारण लोग जन्नत में जाएँगे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, अल्लाह के भय और एहतियात और सद्व्यवहार से और पूछा गया, दोज़ख़ में अधिकतर किस वजह से लोग जाएँगे? फ़रमाया, हरामख़ोरी और बद्कारी की वजह से। (तिर्मिज़ी-4005)

पत्नियों के साथ व्यवहार-

١٨۔ و عنه قال : قال رسول الله ۔صلی الله علیه وسلم۔ " أکمل المُؤمنین إیماناًأحسنهم خُلقاً ، و خیارکم خیارکم لنسائهم "۔

(رواه الترمذی :[٢٠٠٥] و قال : حدیث حسن صحیح

(18) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, सम्पूर्ण ईमान वाला वह है जिसके

व्यवहार अच्छे हों और तुममें सबसे अच्छा वह है जो अपनी पत्नियों से अच्छे व्यवहार से पेश आये। (तिर्मिज़ी)

अच्छे व्यवहार का दर्जा-

١٩۔ و عن عائشة ۔رضى الله عنهما۔ قالت : سمعت رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ يقول : " إن المؤمن ليدرك بحسن خُلُقه درجة الصائم القائم " ۔
(رواه أبو داؤد : ٤٧٩٨)

(19) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, मोमिन (मुसलमान) सद्व्यवहार के कारण लगातार रोज़े रखने वाले और आबिद (संयमी) का दर्जा प्राप्त कर लेता है। (अबूदाऊद-4798)

झूठ की मनाही-

٢٠۔ و عن أبى أمامة الباهِلى ۔رضى الله عنه۔ قال : قال رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ " أنا زعيمٌ ببيت فى ربض الجنة لمن ترك المِراءَ ، و إن كان مُحِقّاً ، ببيت فى وسط الجنة لمن ترك الكذِبَ وإن كان مازحاً، و ببيت فى أعلى الجنة لِمن حَسُنَ خُلُقُه " ۔ حديث صحيح (رواه أبو داؤد : ٤٨٠٠) بإسناد صحيح۔

(20) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, मैं उस व्यक्ति के लिए जन्नत के सामने एक घर की ज़मानत लेता हूँ जिसने हक़ पर होते हुए भी झगड़ा छोड़ दिया और उस व्यक्ति के लिए जन्नत के अन्दर मैं एक घर की ज़मानत लेता हूँ जिसने झूठ छोड़ दिया चाहे वह मज़ाक़ ही में बोलता था और उस व्यक्ति के लिए जन्नत की बुलन्दी में एक घर की ज़मानत लेता हूँ जिसके आचरण अच्छे हों। (अबूदाऊद-4800)

बनावटी और घमण्डी-

٢١۔ و عن جابر ۔رضى الله عنه۔ أن رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ قال : "إن من أحبكم إلى و أقربكم منى مجلساً يوم القيامة ، أحاسنكم أخلاقاً، و إن أبغضكم إلى ، و أبعدكم منى يوم القيامة ، الثرثارون والمتشدقون والمتفيهقون " قالو ا : يا

رسول الله ! قد علمنا الثرثارون والمتشدقون فما المتفيهقون ؟ قال : " المتكبرون "
(رواه الترمذى [(٢٠١٩)] وقال : حديث حسن)

(21) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन मुझसे सबसे अधिक पसंदीदा, सबसे अधिक क़रीब वह लोग होंगे जो अच्छे आचरण वाले हैं और मुझे सबसे अधिक नापसन्द और सबसे अधिक मुझसे दूर वह होंगे जो ज्यादा बातूनी, चर्ब ज़बान और बनावटी व घमण्डी लोग होंगे।
(तिर्मिज़ी-2019)

नर्मी अपनाने का फ़ायदा-

٢٢۔ و عن عائشة ۔رضى الله عنها۔ أ ن النبى ۔صلى الله عليه وسلم۔ قال : " إن الرِّفق لا يكون فى شئٍ إلا زانه ، ولا يُنزع من شئٍ إلا شانه "۔ (رواه مسلم) [٢٥٩٤]

(22) ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को फ़रमाते हुए सुना कि जिस चीज़ में नर्मी होती है वह उसको सुन्दर बनाती है और जिस चीज़ से निकल जाती है उसको बुरा कर देती है।
(मुस्लिम-2594)

आसानी पैदा करना-

٢٣۔ و عن أنس ۔رضى الله عنه۔ عن النبى ۔صلى الله عليه وسلم۔ قال : سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : " يسروا ولا تعسروا ، بشروا ولا تنفروا "۔ (متفق عليه)[البخارى ١/ ١٥٠، مسلم (١٧٣٤]

(23) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, आसानी पैदा करो सख़्ती न करो, बशारत दो, नफ़रत न दिलाओ। (मुस्लिम-1734)

नर्मी से मह़रूम-

٢٤۔ وعن جرير بن عبد الله ۔رضى الله عنه۔ قال : سمعت رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ يقول : " من يُحرم الرفق يُحرِم الخير كله "
(رواه مسلم) [٢٥٩٢]

(24) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, जो नर्मी से मह़रूम (वंचित) रहा वह हर भलाई से महरूम रहा। (मुस्लिम-2592)

क्षमा का जज़्बा–

٢٥ ـ وعـنه ـرضى الله عنه ـقال : كنت أمشى مع رسول الله ـصلى الله عليه وسلم ـ و عـليـه بُردٌ نجرانىٌّ غليظ الحاشية ، فأدركه أعرابىٌّ ، فجبذه بردائه جبذةً شديدةً ، فنظرت إلى صفحة عاتق النبى ـصلى الله عليه وسلم ـ وقد أثرت بها حـاشية الـرداء مـن شـدة جبـذتـه ،ثم قال : يا محمد ! مُر لى من مال الله الذى عندك ، فالتفت إليه ، فضحك ، ثم أمر له بعطاءٍ ـ

(متفق عليه)[البخارى ـ١/٢٣٤ و ٤٢٠، ٤٢٠ و ٤٢١، مسلم (١٠٥٧)

(25) ह़ज़रत अनस (रज़ि०) फरमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह के साथ एक बार जा रहा था कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मोटे किनारे की नजरानी चादर ओढ़े हुए थे, एक देहाती आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मिला और चादर पकड़कर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बड़े ज़ोर से खींचा, (मैंने देखा कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कांधे पर चादर के खींचने से निशान पड़ गये थे) और कहा, "ऐ मुह़म्मद! मुझे उस माल से दीजिए जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अल्लाह ने दिया है, आप ने उस की ओर देखा और मुस्कुराये फिर उसको देने का आदेश दिया। (बुख़ारी-42 व मुस्लिम-1057)

ग़ुस्सा पर क़ाबू–

٢٦ـ و عن أبى هريرة ـرضى الله عنه ـ أن رسول الله ـصلى الله عليه وسلم ـ قال: " ليس الشديد بالصُّرعة ، إنما الشديد الذى يملك نفسه عند الغضب"

(متفق عليه)[البخارى ١٢/٤٤٩، ٤٥٠، مسلم (١٧٩٢)

(26) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, पहलवान वह नहीं जो किसी को पिछाड़ दे पहलवान वह है जो ग़ुस्सा के समय अपने आप को क़ाबू में रखे। (बुख़ारी-250 व मुस्लिम-1792)

रिश्तेदारों के साथ भलाई–

٢٧ـ و عـنه ـرضى الله عنه ـ أن رجلًا قال : يا رسول الله ! إن لى قرابةً أصلهم ويـقـطـعـونـى ، و أحسـن اليهم و يسيئون الى ، و أحلم عنهم و يـجهلون

عـلـى ! فـقـال " لـئن كنت كما قلت فكأنما تسفهم المل ، ولا يزال معك من الله تعالىٰ ظهيرٌ عليهم ما دُمت على ذلك " ۔ (رواه مسلم) [٢٥٥٨]

(27) ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक आदमी हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ और उसने कहा! मेरे रिश्तेदार हैं, मैं उनसे रिश्ता जोड़ता हूँ वह काटते हैं मैं उनके साथ भलाई करता हूँ, वह मेरे साथ बुराई करते हैं, मैं अच्छे आचरण पेश करता हूँ, वह मुझ पर सख़्ती करते हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो कुछ तुम कहते हो यदि यह सह़ी है तो तुम उनके मुँह में ख़ाक डालते हो, जब तक तुम्हारा यह व्यवहार रहेगा अल्लाह की मद्द तुम्हारे साथ रहेगी। (मुस्लिम-2558)

न्याय का हुक्म-

٢٨۔ و عـن عبـد الـلـه بن عمرو بن العاص ۔رضى الله عنهما۔ قال : قال رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم ۔ : " إن المقسطين عند الله على منابر من نُورٍ : الذين يعدِلون فى حكمهم و أهليهم و ما وَلُوا " (رواه مسلم) [١٨٢٧]

(28) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, न्याय करने वाले नूर के मेम्बर पर होंगे वह जो अपनी सत्ता में अपने घरों में और जो काम उन के हवाले हुआ हो उसमें न्याय करें। (मुस्लिम-1827)

सवाल से बचो-

٢٩۔ و عـن عيـاض بن حمارٍ ۔رضى الله عنه۔ قال : سمعت رسول الله۔ صلى الله عـليـه وسـلـم۔ يقول : " أهل الجنة ثلاثةٌ : ذُو سُلطانٍ مُقسطٌ مُوفقٌ، و رجل رحيم رقيق القلب لكل ذى قربى و مُسلمٍ ، و عفيفٌ متعفِّفٌ ذُو عِيالٍ ۔ (رواه مسلم) [١٨٥٥]

(29) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, तीन आदमी जन्नत के ह़क़्दार होंगे- 1- न्यायी बादशाह जो न्याय करता हो 2- ऐसा आदमी जो हर क़रीबी रिश्तेदार मुसलमान के लिए रह़मदिल और नर्म हो। 3- वह आदमी जो सवाल (भिक्षा) से बचे यद्यपि कई सन्तानों वाला हो। (मुस्लिम-1855)

ग़ैर मुस्लिम माँ की सेवा-

٣٠ ـ و عـن أسـمـاء بنت أبى بكر ن الصديق ـرضى الله عنهماـ قالت : قدِمت عـلـى أُمى و هى مُشركةٌ فى عهد رسول الله ـصلى الله عليه وسلمـ قلتُ : قدمت على أُمى و هى راغبة ، افأصِلُ أُمى ؟ قال : " نعم صلى أُمَّكِ " ـ

(متفق عليه) [البخارى ٥/ ١٧٠، ١٧٢ و ١٠/ ٣٤٦ ٢٣٤٧ ، مسلم (١٠٠٣)

(30) ह़ज़रत अस्मा (रज़ि०) कहती हैं, हुदैबिया की सन्धि के ज़माने में मेरी विधर्मी माँ मेरे पास आयीं, मैंने ईश्वरीय दूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछा कि महाईशदूत मेरी माँ मेरे पास आयी हैं और वह इस्लाम से असन्तुष्ट हैं, क्या मैं उनकी सेवा करुँ? उन्होंने कहा कि हाँ, उनकी सेवा करो। (बुखारी-172 मुस्लिम-1003)

ग़ैर मुस्लिम की हत्या पर जहन्नम-

٣١ـ و عـن الـقـاسم بن مُخيمِرة ، عن رجل من أصحاب النبى ـصلى الله عليه وسلـمـ أن رسـول الـلـه ـصـلى الله عليه وسلمـ قال : " مَن قتل رجلاً من أهـل الـذمة ،لـم يـجـد ريح الجنة ، و إن ريحها ليوجد من مسيرة سبعين عـاماً " ـ (رواه النسائى) [٩]

(31) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, जिसने किसी ज़िम्मी (वह ग़ैर मुस्लिम जो इस्लामी शासन में रहता है) की हत्या की अल्लाह ने स्वर्ग उसके लिए ह़राम कर दिया। (नसई-9)

घमण्डी जन्नत में न जाएगा-

(٣٢) عَـن عبـدالله رضـى الله عـنه عن البى ﷺ قال : لا يدخل الجَنة من كان فى قلبه مثقال ذرة من كبر.

(رواه مسلم ، باب تحريم الكبر وبيانه، رقم : ٢٦٧)

(32) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने

इर्शाद फ़रमाया, वह शख़्स जन्नत में नहीं जाएगा जिस के दिल में ज़रा बराबर भी घमण्ड हो। (मुस्लिम-267)

बदला न लेने वाला-

(٣٣) عن ابى هريرة رضى الله عنه قال : قال رسول الله ﷺ : قال موسى ، بن عمران عَليه السلام : يا رب! من اعزُّ عبادك؟ قال: من اذا قدر غفر۔
(رواه بيهقى فى شعب الايمان٦/١٣٩)

(33) हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इर्शाद फ़रमाया, हज़रत मूसा बिन इमरान (रज़ि०) ने अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ किया, ऐ मेरे रब! आप के बन्दों में आप के नज़्दीक ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाला कौन है? अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया, वह बन्दा जो बदला ले सकता हो और फिर माफ़ कर दे। (बैहक़ी-139)

इन्साफ़ सब के साथ-

٣٤۔ و عن عائشة ۔رضى الله عنها۔ أن قريشاً أهمهم شأن المرأة المخزومية التى سرقت فقالوا : من يكلم فيها رسول الله۔ صلى الله عليه وسلم۔ ؟ فقالوا : من يجترئ عليه إلا أسامة بن زيد حِبُّ رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ ؟ فكلمه أُسامة ، فقال رسول الله ۔ صلى الله عليه وسلم : " أتشفع فى حدٍ من حدود الله تعالىٰ ؟ ! " ثم قام فاختطب ثم قال : " انما أهلك من قبلكم أنهم كانوا إذا سرق فيهم الشريف تركوه ، واذا فيهم سرق الضعيف أقاموا عليه الحد ! و أيم الله ، لو أن فاطمة بنت محمد سرقت لقطعتُ يدها "
(متفق عليه) [البخارى ١٢/٧٧، ٨٥، مسلم [١٦٨٨]

(34) हज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, ...अल्लाह की क़सम, यदि मुह़म्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करे तो मैं उसके भी हाथ काट दूँगा। (बुख़ारी-85 व मुस्लिम-1688)

मज़लूम की आह-

٣٥۔ وعن جابر ۔رضى الله عنه۔ أن رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ قال :

"إتقو االظلم ، فان الظلم ظُلُماتٌ يوم القيمة ، واتقوا الشُح فإن الشُح أهلك من كان قبلكم حملهم على أن سفكوا دمائهم واستحلوا محارمهم".

(رواه مسلم) [٢٥٧٨]

(35) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, मज़लूम (पीड़ित) की आह से बचो, क्योंकि वह अल्लाह से अपना अधिकार माँगता है और अल्लाह और पीड़ित के बीच में कोई पर्दा नहीं होता। (मुस्लिम-2578)

नौकर को सत्तर बार क्षमा-

٣٦۔ و عن عبد الله بن عمر ۔ رضى الله عنهما ۔ قال : جاء رجلٌ إلى النبى ۔ صلى الله عليه وسلم ۔ فقال : يا رسول الله ! كم أعفو عن الخادم ؟ قال : كل يومٍ سبعين مرةً ۔ (رواه ابو داؤد والترمذى) [أبو داؤد (٥١٦٤]

(36) एक बार एक व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेवा में उपस्थित हुआ और बोला 'हे ईश्वर के दूत! हमें अपने नौकर की ग़लतियाँ कहाँ तक माफ़ करनी चाहिए? हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) चुप रहे। उसने यही सवाल दोबारा किया, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फिर भी चुप रहे। तीसरी बार सवाल करने पर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा एक दिन में 70 बार। (अबूदाऊद-5164)

पड़ोसी का हक़-

٣٧۔ عن معاوية بن حيدة قال : قال رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ حَقُّ الجار إن مرض عُدته وإن مات شيّعته و إن استقرضك اقرضته وإن اعور سترته وإن أصابه خير هنّأ ته و إن أصابته مصيبة عزيته ولا ترفع بنائك فوق بنائه فتسد عليه الريح ولا تُؤذيه بريح قدرك إلا أن تعزف ۔

(رواه الطبرانى فى الكبير)

(37) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, पड़ोसी का अधिकार तुम पर यह है कि अगर वह बीमार हो जाये तो उसकी ख़बर लो, मर जाये तो उसकी शवयात्रा (जनाज़े) में जाओ, क़र्ज़ माँगे तो उसको क़र्ज़ दो, कोई

बुरा काम करे तो उस पर ध्यान न दो। उसे कोई खुशी मिले तो बधाई दो, दुख पहुँचे तो सांत्वना दो, अपना मकान इस प्रकार से ऊँचा न करो कि उसके घर की हवा रुक जाये, तुम्हारे घर में पकने वाली चीज़ों की खुशबू से उसे पीड़ा न पहुँचे, अगर खाने की खुशबू घर पहुँचती हो तो जो कुछ तुमने पकाया है उसके घर भी भेजो। (तबरानी फ़ील् कबीर)

रिश्तेदारों के साथ व्यवहार-

٣٨۔ و عن أنس ۔رضی الله عنه ۔ أن رسول الله ۔صلی الله علیه وسلم۔ قال:

"من أحب أن يُبسط له فی رزقه ، و يُنسأ له فی أثره ، فليصل رَحِمه "

(متفق علیه) [البخاری (٥٩٨٦)، مسلم (٢٥٥٧)]

(38) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, जो व्यक्ति चाहता है कि उसके अन्न एवं भोजन में वृद्धि हो एवं उसका नाम दुनिया में काफ़ी समय तक रहे तो उसे अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। (बुख़ारी-5986, मुस्लिम-2557)

बेटियों के साथ अच्छे व्यवहार पर जन्नत-

٣٩۔ و عن أبی سعید ن الخدری ۔رضی الله عنه۔ أن رسول الله ۔صلی الله علیه وسلم۔ قال : قال رسول الله ۔صلی الله علیه وسلم۔ من كانت له ثلاث بنات أوثلاث أخوات أو ابنتان أو اختان فأحسن صحبتهن واتقی الله فيهن فله الجنة "۔ (رواه الترمذی) [١٩١٦]

(39) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, जिस व्यक्ति ने दो या तीन बहनों या बेटियों की ज़िम्मेदारी निभाई उनको अच्छी शिक्षा दिलाई, उनके साथ अच्छा व्यवहार किया, तथा उनकी शादी का प्रबन्ध किया तो अल्लाह की ओर से उसके लिए स्वर्ग का निर्णय है। (तिर्मिज़ी-1916)

मोमिन की पहचान-

(٤٠) عن ابی هريره رضی الله عنه قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ الله ﷺ الْمؤمن من امنه

النّاس، علىٰ دمانهم واموالهم۔ (رواه النسائی، باب صفة المؤمن، رقم ٤٩٩٨)

(40) ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इर्शाद फ़रमाया, मोमिन वह है जिस से लोग अपनी जान और माल के बारे में अम्न में रहें। (नसई-**4998**)



लेखक एवं अनुवादक का संक्षिप्त परिचय

नामः (मुफ़्ती) मुहम्मद सरवर (फ़ारूक़ी नदवी)

जन्म तिथिः 1 जुलाई 1968 ई० (यू०पी०, भारत)

धार्मिक शिक्षाः तज्वीद कुर्आनुल् करीम (रिवायते हफ़्स)
(दारुल उलूम नद्वतुल उ़लूमा लखनऊ, उत्तर प्रदेश भारत)

प्रशिक्षण कोर्सः जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरह (सऊदी अ़रब)

विशेषज्ञताः तफ़्सीर-ए-कुर्आन करीम और फ़िक़्ह
(दारुल् उलूम नद्वतुल उ़लूमा, लखनऊ)

आधुनिक शिक्षाः हाई स्कूल एवं इण्टरमीडिएट (यू०पी० बोर्ड, इलाहाबाद)
बी०ए०, एम० ए० (लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ)

उर्दू की शिक्षाः अदीब माहिरः अदीब कामिल, मुअ़ल्लिम (जामिया उर्दू अलीगढ़)

हिन्दी एवं संस्कुत की शिक्षाः हिन्दी एवं संस्कृत की उच्च शिक्षा (इलाहाबाद)

शैक्षिक एवं शोध सेवाएँः

- शोध एवं पत्रकारिता विभाग (दारुल उलूम नद्वतुल उ़लूमा, लखनऊ)
- शिक्षकः (दारुल उलूम नद्वतुल उ़लूमा, लखनऊ)
- शोध निर्देशकः मजलिस-ए-तह़क़ीक़ात, दारुल उलूम नद्वतुल उ़लमा, लखनऊ
- अध्यक्षः जमीअ़त पयामे अम्न (लखनऊ)
- डायरेक्टरः मकतबा पयामे अम्न (लखनऊ)

कुर्आनी सेवाएँ-

(1) कुर्आन का पैग़ाम (कुर्आन मजीद का हिन्दी अनुवाद)
(2) मआ़नी अलकुर्आनुल् करीम (कुर्आन का शाब्दिक उर्दू अनुवाद)
(3) The Holy Qura'n (कुर्आन का अंग्रेज़ी अनुवाद)
(4) तफ़्सीर फ़ारूक़ी (कुर्आन की सात भागों में हिन्दी तफ़्सीर)
(5) मआ़नी अलकुर्आन (कुर्आन मजीद की संक्षिप्त तफ़्सीर (उर्दू)
(6) पवित्र कुर्आन का आसान हिन्दी अनुवाद और संक्षिप्त व्याख्या
(7) लुग़ातुल् कुर्आनुल् करीम (कुर्आन का शब्दकोश एवं व्याख्या)

अन्तिम सन्देष्टा कब, कहाँ और कौन

पैग़म्बरे अम्न व मानवजाति के उद्धारक

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

की

प्रमाणित जीवनी

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(अध्यक्ष, जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

प्रकाशक
मकतबः पयामे अम्न
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ-20 (यू०पी०) इण्डिया

अन्तिम सन्देष्टा कब, कहाँ और कौन

आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी व्याकरण,साहित्य की विधाएँ, सरकारी पत्रों की प्रकृति और नमूने, नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित है, जिससे प्राथमिक व उच्च शिक्षा के विद्यार्थी लाभवान्वित हो सकते हैं।

एम० एम० सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(एम० ए० व आचार्य-बी० एच० यू०)
हिन्दी पत्रकारिता विभागाध्यक्ष, नदवतुल उलमा, लखनऊ

प्रकाशक
पयामे अम्न, रिसर्च सेन्टर टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ-२०

अन्तिम सन्देष्टा कब, कहाँ और कौन

हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन

इसमें पत्रकारिता का महत्त्व, हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास और भारत की हिन्दी पत्रकारिता, समाचार का अर्थ, उसकी अनिवार्यताएँ तथा प्रस्तुतिकरण का कार्य संवादाताओं के प्रकार, विविध समाचार का संकलन, विज्ञापन के तत्व, फ़ीचर के भेद, इन्टरव्यू, प्रेस कान्फ्रेंस में अन्तर, फ़ोटो रिर्पोटिंग और फ़ोटोग्राफ़ी के प्रकार, रेडियो, डाटा पेजिंग सर्विस तथा कम्प्यूटर सम्बन्धी मालूमात, इन्टरनेट, ई-मेल, साइबर स्पेस और मल्टी-मीडिया तथा भारत में मानहानि क़ानून से सम्बन्धित मालूमात का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है।

एम० एम० सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(शिक्षक-पत्रकारिता एवं भाषा विज्ञान, दारुल उलूम नद्वतुल उ़लमा, लखनऊ)

प्रकाशक
जमअ़ीयत पयामे अम्न
टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ-20

अन्तिम सन्देष्टा कब, कहाँ और कौन

इस्लामी न्यायालय
के
ऐतिहासिक फ़ैसले

इस किताब में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और ख़लीफ़ाओं के वह न्यायिक फ़ैसले जो उन्होंने मज़दूरों, गुलामों और मज़लूमों के साथ किये, उनका ज़िक्र करते हुए क़ाज़ियों की ज़िहानत और इस्लामी न्यायालय के न्याय पर आधारित फ़ैसलों का ज़िक्र किया गया है।

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(साबिक़ उस्ताद दारुल उलूम नदवतुल उ़लमा, लखनऊ)

प्रकाशक
जमअ़ीयत पयामे अम्न
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ, 20 (यू०पी०) इण्डिया

अन्तिम सन्देष्टा कब, कहाँ और कौन

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की जीवनी

प्रश्न उत्तर के रूप में

इसमें ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) *का खानदान, चचा, फूफ़ियाँ, वालिद-वालिदा, रज़ाई भाई-बहन, आप* (सल्ल०) *की बीवियों और सन्तानों से सम्बन्धित मालूमात और आप की पूरी ज़िन्दग़ी का ज़िक्र प्रश्न उत्तर के रूप में किया गया है जो इब्तिदाई बच्चों के लिए बहुत मुफ़ीद है।*

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

(उस्ताज़- दारुल उलूम नद्वतुल उ़लमा, लखनऊ)

मकतबः पयामे अम्न

नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ-20 (यू०पी०) इण्डिया